विश्व की प्रसिद्ध आतंक कथाएँ

अनुवाद

उमा पाठक

सावित्री प्रकाशन

दिल्ली-110006

अनुक्रम

दो शब्द

आतंक हमारे अन्दर से जन्म लेता है, इसलिए इसकी एक निश्चित परिभाषा देना बहुत कठिन है। यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह भयानक, डरावनी चीज़ों की तरफ आकर्षित होता है। जिस चीज से हम डरते हैं, उसे बार बार देखने की कोशिश भी करते हैं। एक समय था जब आतंक कथाओं को निम्न स्तर का माना जाता था, पर समय के साथ धारणाएँ बदलती गई। 18वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटेन के लेखक होरेस ने अपने उपन्यास में आतंक को आधार बनाया। फिर धीरे-धीरे लेखकों और पाठकों का इस तरफ रुझान बढ़ने लगा। इसका प्रभाव यूरोप तथा अमरीका में दिखने लगा। इस संकलन में दो शताब्दियों की प्रसिद्ध आतंक कहानियाँ ली गई हैं। प्रत्येक कहानी में डर का अलग रूप मिलता है। अधिकांश लोगों के लिए आतंक अनजानी चीजों का होता है। इसीलिए भूतों और अति प्राकृतिक चीज़ों पर लिखी गई कहानियाँ सफल होती थीं पर बाद में इनमें मनोवैज्ञानिक तत्त्व भी जुड़ गया। शेरीडन ल फानू ने इस प्रकार की रचनाएँ लिखीं। ब्राम स्टोकर की 'ड्रेकुला का मेहमान' वैसी ही रचना है एडगर एलन पो फ़ानू के समसामयिक थे। उन्हें अमरीकी आतंक लेखको मे महत्त्वपूर्ण स्थान मिला था। उनकी रुचि आधुनिक मनोविज्ञान में थी। उनके पात्र के अन्दर शैतान छिपा रहता था, जिसका प्रमाण है 'काली बिल्ली'। हॉथौर्न पागलपन की जगह पाप पर ज्यादा बल देता है। उसके अनुसार शैतान एक सच्चाई है और उससे बचा नहीं जा सकता। 'युवक गुडमैन ब्राउन' में मानवजाति के दोहरे मक्कारी भरे चरित्र को चित्रित किया है। बीर्स की 'वह अभिशप्त चीज' परासामान्य वैज्ञानिक कथा है, जिसमें रहस्यमयता है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इंग्लैंड और अमरीका में भूतप्रेत, माध्यमो के जरिए मृतक से सम्बन्ध, रहस्यात्मक घटनाओं आदि पर कहानियाँ मिलती हैं। चार्ल्स डिकन्स ने कई अच्छी भूतों की कहानियाँ लिखीं, जिनमें 'सिगनल मैन' सर्वोत्तम है। इसी समय फ्रांस में बालजाक मोपासाँ आदि भी आतंकपूर्ण कहानियाँ लिख रहे थे

इनकी कहानियों में डर, व्यंग्य और सनकीपन का चित्रण है। भौतिक डर और अति-प्राकृतिक डर अलग-अलग होता है पर कभी कभी भौतिक डर की कहानी से अतिप्राकृतिक डर भी पैदा हो सकता है। मोपासाँ की क्रूर कहानी 'बदला' भौतिक डर का अच्छा उदाहरण है। बालजाक की 'रहस्यमय हवेली' एडगर एलवन पो के प्रिय विषय जिन्दा दब जाने के भय को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती है; कॉलिन्स की कहानी 'एक अजीब भयानक पलंग' बुरे सपने को सच होता दिखाती है। ह्यू वॉलपोल की जादुई टोपी' कँपा देने वाली पैशाचिक शक्ति से भरी कहानी है। जैकब की कहानी 'बन्दर का पंजा' में पुराने तिलिस्म की अजीब और जादुई विशेषताएँ हैं।

पुरानी आतंक कथाओं में ज्यादातर भूत के वश में होने वाले पात्र किसी दूर देश के होते थे। इसके पीछे विदेशी चीजों के प्रति शक ही एक कारण होता था। अन्धविश्वासी ईसाई पूर्वाग्रह के कारण हिन्दू देवी-देवताओं में शैतान की उपस्थिति मानते थे। किपलिंग की कहानी 'जानवर का निशान' में जादू का भयानक प्रभाव दिखाया है जो इंग्लैंड पर आधारित नहीं दिखाया जा सकता था। भारत को तो अंग्रेज़ सदा से जादू का देश मानते ही आए थे। इसलिए यहाँ कुछ भी हो सकता था किन्तु हर देश से जुड़ा प्रार्थना का रहस्यमय प्रभाव अवश्य कहानियों में मिलता है। हंट की 'वह प्रार्थना' और लॉरेंस की 'झूलने वाले घोड़े का विजेता' इस विषय को लेकर लिखी गई कहानियाँ हैं। इन कहानियों में वातावरण बहुत महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि वही पाठक को उत्तेजित कर कहानी के चरमबिन्दु तक ले जाने में सहायक होता है। इसी पर लेखक की सफलता निर्भर करती है। इस संकलन में इसी दृष्टि से कहानियाँ सँजोयी गई हैं। इस अनुवाद की प्रेरणा श्री सुधीर पुरी ने दी। श्री अतुल माहेश्वरी ने इसे रूपाकार दिया। यह अपने आप में एक अनूठा प्रयास रहा। आशा है पाठकों को ये कहानियाँ रुचिकर लगेंगी।

—उमा पाठक

हुकुम का इक्का

ए. एम. पुश्किन

हर्मन ने अपने आप से हाथ मिलाया। उसे एक चिट्ठी मिली थी जिसमें एक ऐसी भेंट की खबर थी जो उसकी खतरनाक योजना को आगे बढ़ाकर उसे आसानी से धनवान बना सकती थी।

वह 'इंजीनियर्स' का एक जवान अफसर था जो बाहर से शान्त दिखने पर भी ज्वलन्त आकांक्षा रखता था। उसे धन पाने की तीव्र लालसा थी।

दो या तीन हफ्ते पहले उसने घुड़सवार सेना के लेफ्टिनेंट नॉरमॉफ से एक अजीब कहानी सुनी थी।

यह कहानी नॉरमॉफ की दादी काउंटेस अन्ना फेडोतोवना के बारे में थी। वे छियासी वर्ष की अपने समय की सुन्दरी थीं।

बहुत पहले पेरिस में वे ताशों में बहुत रुपये हार गईं। उन्होंने अपने पति से मदद माँगी पर उन्होंने इनकार कर दिया। तब उन्होंने सनकी और बदनाम काउंट द सेंट-जरमैन से विनती की।

काउंट ने इस शर्त पर कि वे अपना पैसा वापस जीतने के बाद फिर कभी नहीं खेलेंगी और इस रहस्य को अपने तक रखेंगी, उन्हें तीन पत्तों के बारे में बताया जो उन्हें एक-एक करके खेलने थे। काउंटेस ने वही तीन पत्ते खेले और अपने खोए हुए रुपयों से कहीं ज्यादा जीत गई।

बहुत लोगों ने उनसे उन जितानेवाले पत्तों का रहस्य जानना चाहा पर उन्होंने अपना वायदा रखा और सिवाय अपने प्रिय बेटे के किसी को उनका रहस्य नहीं बताया।

यह कहानी हर्मन को परेशान करती रही। वह अपने दिमाग से उसे निकाल नहीं पा रहा था। उसे लगता था कि अगर वह काउंटेस से मिल पाता तो शायद

पीछे पड़कर या जबरदस्ती उनसे उन पत्तों का रहस्य जान लेता और फिर बहुत स रुपया जीत लेता।

उसने काउंटेस के घर पर नजर रखनी शुरू कर दी। उसकी किस्मत ने उसका साथ दिया। उसे खिड़की पर एक खूबसूरत युवती बैठी दिखी जो शायद उस वृद्धा के साथ रहती थी। वह तब तक उसे घूरता रहा जब तक कि उस युवती ने नजर नीची नहीं कर ली। पर पलभर बाद ही उसने फिर नजर उठाई और शरमा गई।

यह एक मौन मैत्री थी। लिज़ाबेटा ईवानोवा ने इसे बहुत गम्भीरता से लिया क्योंकि वह उस तंग करने वाली वृद्धा से छुटकारा पाना चाहती थी।

एक दिन वह काउंटेस को गाड़ी में बिठा रही थी। हर्मन ने जो हरदम उस पर नज़र रखता था, उसे सलाम किया और एक पुर्जा थमाकर चला गया।

सैर से लौटने पर इज़ाबेटा ने वह पुर्ज़ा पढ़ा। उसमें प्यार की बातें लिखी थी। इसके बाद से हर्मन घर पर आने वाले एक व्यापारी के हाथ उसके लिए चिट्ठियाँ भेजने लगा।

उसने भी हर चिट्ठी का गर्मजोशी से जवाब भेजना शुरू कर दिया। एक दिन वह रात के समय घर पर मिलने के लिए तैयार हो गई। उसने चिट्ठी में विस्तार से घर में घुसने (का रास्ता) और अपने कमरे तक पहुँचने का रास्ता समझाकर लिखा। यह स्पष्ट कर दिया कि उसे काउंटेस की तरफ वाले हिस्से में नहीं जाना है।

हर्मन का अंग-अंग उस चीते की तरह काँपने लगा, जिसे अपना शिकार दिख रहा हो। वह अच्छे या बुरे किसी भी ढंग से धनवान बन जाना चाहता था और इसके लिए काउंटेस से मिलकर पत्तों का रहस्य जानना चाहता था।

यह तय हुआ था कि काउंटेस और लिज़ाबेटा के नाच के लिए जाने के बाद वह अन्दर घुस जाएगा। सब कुछ योजना के अनुसार हुआ पर वह लड़की के कमरे की जगह काउंटेस के बड़े से शयन कक्ष में जाकर छिप गया।

ठीक समय पर वृद्धा लिजाबेटा के साथ लौटी, उनके साथ मदद के लिए तीन नौकरानियाँ गईं। काउंटेस को नींद नहीं आती थी इसलिए वह कपड़े बदलने के बाद सीधी बिस्तर पर न जाकर कुर्सी पर बैठ गई।

इस कमरे में केवल चित्रों के सामने रोशनी थी, और इतनी कम रोशनी मे वह जिन्दा से ज्यादा मृत लग रही थी।

हर्मन उसके सामने आ गया, तब भी वह वैसी ही लग रही थी। वह धीमी सधी आवाज़ में बोला, "तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है, बिल्कुल नहीं, पर मेरा तुमसे अकेले में मिलना ज़रूरी था। मैं जो जानना चाहता हूँ, वह अगर तुम बता दो, तो जैसा मैंने पहले कहा, तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है।"

वृद्धा चुपचाप उसे ऐसे देखती रही जैसे कुछ समझ ही न पा रही हो। हर्मन ने सोचा वह बहरी है इसलिए उसके कानों से होंठ लगाकर उसने अपने शब्द दुहराए।

काउंटेस तब भी चुप रही।

"तुम मुझे जीवन भर की खुशी दे दोगी" वह बोलता रहा, "और तुम्हे उसकी कोई कीमत नहीं देनी पड़ेगी...क्योंकि तुम उन तीन पत्तों का रहस्य जानती हो जो..."

हर्मन रुक गया, उसे लगा कि वह समझ गई है।

वह बोली, "वह सिर्फ एक मजाक था। मैं कसम से कहती हूँ वह मजाक था।"

अब उसका गुस्सा बढ़ने लगा। वह बोला, "यह सच नहीं है, तुमने वह रहस्य अपने बेटे को बताया था..."

काउंटेस कुछ परेशान हुई, उसने बेवकूफों जैसी भंगिमा बना ली।

"क्या तुम मुझे उन पत्तों के बारे में नहीं बता दोगी?"

काउंटेस चुप रही। अब वह उसके आगे घुटनों पर बैठ गया "जीवन में अगर तुमने कभी प्यार किया है, हर्षोन्माद पाया है, अगर तुममें मानवीयता है तो मैं तुम्हे एक पति, एक प्रेमी, एक माँ के प्यार का, जीवन में जो कुछ पवित्र है सबका वास्ता देकर पूछ रहा हूँ, मुझे बता दो..."

"तुम बूढ़ी हो, तुम्हें ज्यादा दिन जीना नहीं है। पर मैं...जवान हूँ। अगर तुम मुझे वह रहस्य बता दो तो मैं तुम्हारे सब पापों का बोझ उठाने को तैयार हूँ, और भगवान के सामने उनका जवाब देने को तैयार हूँ।

बूढ़ी काउंटेस चुप ही रही। हर्मन उठा। "कम्बख्त बुढ़िया," वह दाँत पीसते हुए चीखा, "मेरे पास कुछ ऐसा है जिससे तुम्हारे होंठ खुलेंगे।

उसने एक पिस्तौल निकाली। हथियार देखकर काउंटेस जिन्दा दिखने लगी। उसके चेहरे पर डर दिखा। उसका सिर ऐसे हिलने लगा जैसे लकवा मार गया हो। उसने बाँहें ऐसे ऊँची कीं जैसे अपने आप को पिस्तौल से बचाना चाह रही हो, फिर सहसा कुर्सी पर पीछे गिरी और स्थिर हो गई।

हर्मन ने बूढ़ी औरत का हाथ पकड़कर कहा, "बेवकूफी मत करो। आखिरी बार पूछ रहा हूँ। तुम मुझे उन तीन पत्तों के बारे में बताओगी या नहीं?"

काउंटेस फिर भी चुप रही। हर्मन ने देखा वह मर चुकी थी...हर्मन लिज़ाबेटा के कमरे में गया। उसे सब कुछ बताया और यह भी कि काउंटेस मर गई। वह बहुत शर्मिन्दा हुई। अब वह समझ गई कि उसके प्यार की गरमाई से भरे प्यारे खत सब झूठे थे, वह सिर्फ धन चाहता था।

वह अपनी संरक्षिका के हत्यारे, एक चोर का साधन बनी। वह बुरी तरह रोने लगी।

उसका चेहरा और आँसू उस कठोर आदमी को ज़रा भी नहीं छू रहे थे। उसे अपने किये का कोई दुःख नहीं था, न ही काउंटेस के मरने का दुःख था। उसे तो

यह ख्याल मारे डाल रहा था कि जिस रहस्य की उसे इतनी इच्छा थी। वह अब उसे कभी नहीं मिलेगा।

लिज़ाबेटा ने लम्बी चुप्पी तोड़ते हुए चीख़कर कहा, "तुम राक्षस हो।" वह ठडे स्वर में बोला, "मेरा उसे मारने का सवाल ही नहीं उठता था। पिस्तौल में गोलियाँ नही थीं।"

"मुझे तुम्हें बाहर निकालना होगा," वह बोली, "पर मुझे डर है कि तुम्हें काउटेस के कमरे से ही निकलना होगा।"

उससे चाभी लेकर और रास्ता समझकर हर्मन फिर उसी कमरे में गया जहाँ काउंटेस कुर्सी पर बैठी थी। वह कुछ समय तक उसे घूरता रहा, मानो उस सच्चाई पर विश्वास करना चाहता हो, फिर घर से निकल गया।

हर्मन काउंटेस के अन्तिम संस्कार के लिए लौटा। संस्कार से पहले वह देह के पास घुटनों के भार बैठा और चेहरे की तरफ देखा। उस वक्त वह कसम खा सकता था कि काउंटेस की एक आँख उसे छेड़ रही थी, फिर वह दबी। वह सारा दिन परेशान रहा।

होटल में खाना मँगवाया पर वह खा नहीं सका बल्कि हमेशा से ज्यादा पीता रहा। वक्त पर वह अपने कमरे में लौटा और बिना कपड़े बदले बिस्तर पर पड़कर गहरी नींद में सो गया।

जब उसकी आँख खुली, तब भी रात थी, उसके कमरे में चाँदनी आ रही थी। उसने अपनी घड़ी देखी, पौने तीन बजे थे।

वह और सोना नहीं चाहता था। बिस्तर पर बैठकर वह बूढ़ी काउंटेस के बारे मे सोचने लगा। कोई खिड़की से घूर रहा था, पर उसने उधर ध्यान भी नहीं दिया। फिर उसे लगा किसी ने बैठक का दरवाज़ा खोला है।

यह सोचकर कि वह चौकीदार होगा जो सुबह के वक्त पीकर आ जाता था, उसने कोई ध्यान नहीं दिया। फिर उसे अपरिचित पैरों की आवाज़ सुनाई दी।

तभी...तभी सोने के कमरे का दरवाजा खुला, एक औरत सफ़ेद कपड़ों में कमरे मे आई और बिस्तर के पैताने की तरफ बढ़ी।

हर्मन ने देखा, वह बूढ़ी काउंटेस थी।

"मैं न चाहते हुए भी आई हूँ," वह बोली, "क्योंकि मैं तुम्हारी विनती का जवाब देने को मजबूर हो गई...तीन-सात-इक्का, अगर इसी क्रम में खेले जायें, तो तुम्हे इच्छानुसार जिता देंगे। पर...पर तुम्हें चौबीस घन्टे में केवल एक पत्ता खेलना है। उसके बाद फिर कभी ताश नहीं छुओगे। मैं अपनी मृत्यु के लिए तुम्हें माफ करती हूँ। पर एक शर्त है, वह यह कि तुम मेरी संगिनी लिज़ाबेटा ईवानोवना से शादी करोगे।"

इसके बाद बूढ़ी काउंटेस कमरे से चली गई। हर्मन गूँगा सा हो गया। बाद

में जब वह बेठक में गया तो उसने देखा कि चौकीदार जमीन पर सो रहा था और तभी दरवाज़े के ताले में चाभी घूमी थी।

हर्मन प्रसिद्ध रईस चेकालिंस्की के जुआ घर में गया। जिस नॉरमॉफ ने पत्तो की अजीब कहानी सुनाई थी, उसी ने वहाँ उसका परिचय करवाया।

एक कमरे में मेज़ पर चेकालिंस्की बैंकर की तरह बैठा था। वहाँ फारो खेल चल रहा था। इस खेल में बैंकर हर खिलाड़ी को एक पत्ता देता है। फिर वह दो और पत्ते मेज़ पर रखता है। अगर खिलाड़ी का पत्ता बैंकर द्वारा रखे पत्ते से मिलता है तो खेलनेवाले को दाँव पर लगाए रुपयों का दुगुना मिलता है।

हर्मन ने परिचय होने के बाद पूछा कि क्या वह एक पत्ता ले सकता है।

चेकालिंस्की ने इजाज़त दे दी। नॉरमॉफ ने हर्मन को खेलने का निश्चय करने के लिए बधाई देते हुए शुभकामना दी।

हर्मन ने जो पत्ता लिया था, उसी पर दाँव की रकम लिख दी। बैंकर ने पलक झपकते हुए पूछा, "कितना? मेरी नजर अब पहले जैसी नहीं रही है।"

"सैंतालीस हज़ार रूबल," हर्मन ने जवाब दिया।

सुनते ही सबके सिर ऊपर उठ गए। नॉरमॉफ को लगा कि उसका दोस्त पागल हो गया है। हर वक्त मुस्कराने वाले बैंकर ने कहा, "काफी बड़ा दाँव लगाया है। मै तुम्हारे दे सकने की शक्ति पर शक नहीं करता पर मैं चाहूँगा कि तुम अपने पत्ते पर कुछ रुपये रखो।

हर्मन ने एक नोट निकाला, बैंकर ने उसे देखकर पत्ते पर रख दिया। फिर फेटकर उसने दो पत्ते निकाले। दाईं तरफ एक दहला था और बाईं तरफ एक तिक्की।

हर्मन ने अपना पत्ता एक तिक्की दिखाते हुए कहा, "मैं जीत गया।" भरी हुई मेज़ पर ताज्जुब फैल गया। पलभर को बैंकर चुप रह गया फिर पहले की तरह मुस्कराने लगा।

"क्या हिसाब कर दूँ?" उसने विजेता से पूछा।

"अगर आपको बुरा न लगे तो।"

बैंकर ने जेब से एक किताब निकाली, उसमें से कुछ रुपये निकाले और हर्मन को दे दिए। उसने उन्हें जेब में डाला और मेज़ छोड़ दी। लेमनेड पी और घर जाकर सो गया।

अगली शाम वह फिर जुआघर में लौटा और वही मेज ढूँढ़ी जहाँ चेकालिस्की बैकर था। बाकी खेलने वालों ने उसका इज्ज़त से अभिवादन किया और उसके लिए जगह बनाई।

हर्मन नई बारी की इन्तज़ार करता रहा। फिर उसने एक पत्ता लिया और उस पर सैंतालीस हज़ार ही नहीं, पिछली जीत के रुपये भी लगा दिए। बैंकर ने ताश फेंटे और बाँटने शुरू किए दाईं तरफ़ गुलाम और बाईं तरफ सत्ता फेंका।

हर्मन ने अपना सत्ता दिखाया।

सब तरफ ताज्जुब फैल गया। बैंकर कुछ परेशान सा लगा। उसने चौरानवे हज़ार (94,000) रूबल हर्मन को गिनवा दिए। उसने शान्ति से लिये और वहाँ से चल दिया।

अगली शाम वह फिर आया। उसे देखते ही सब खिलाड़ियों ने अपना खेल छोड़ दिया और उसकी मेज़ पर आ गए। वे देखना चाहते थे कि हर्मन की आश्चर्यजनक किस्मत अब भी साथ देगी या नहीं, चेकालिंस्की उसे देखते ही पीला पड़ गया, पर किसी तरह मुस्कराकर खेलने को तैयार हुआ।

चेकालिंस्की ने नए ताशों का बन्डल फेंटा और हर्मन को एक पत्ता दिया। उसने पत्ते को नोटों के ढेर से ढक दिया। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कुश्ती की तैयारी कर रहा हो। वह पत्ते बाँटने लगा, उसके हाथ काँप रहे थे। उसने दाएँ हाथ पर बादशाह और बाएँ पर इक्का फेंका।

हर्मन ने अपना पत्ता दिखाते हुए कहा, "मेरा इक्का जीत गया।

बैंकर ने विजयी ढंग से जवाब दिया, "तुम्हारी बेगम हार गई।"

हर्मन तेज़ी से काँपने लगा, उसने देखा उसके हाथ में इक्के की जगह हुकुम की बेगम थी। वह अपनी आँखों पर विश्वास कहीं कर पा रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उससे ऐसी गलती कैसे हुई।

उसकी आँखें उस भयानक पत्ते पर जम गईं। उसे लगा कि हुकुम की बेगम ने उसे आँख मारी है और उसे देखकर उसका मजाक उड़ाती हुई मुस्करा रही है। फिर उसने दुबारा देखा तो उसे हुकुम की बेगम और मृत काउंटेस में भयानक समानता दिखाई दी। वह डर से मरने को हो गया।

भाड़ में जाये वह बूढ़ी औरत! हर्मन ने अपने आप से कहा। चेंकालिंस्की ने अपनी जीत को हाथों से बटोरा। हर्मन पत्थर बन गया था। बहुत देर तक वह हिला भी नहीं। आखिर जब वह कमरे से निकल गया तो लोगों ने बातचीत शुरू की।

खिलाड़ियों ने टिप्पणी की, "क्या शर्त लगाने वाला था!"

हर्मन पागल हो गया। अब वह पागल खाने में हैं। उससे बात करो तो जवाब नहीं देता। बस, अपने आप दुहराता है। 'तिक्की—सत्ता—इक्का! तिक्की—सत्ता—बेगम।

लिज़ाबेटा ने शादी कर ली। वह खुश है।

रहस्यमय हवेली

ओनारे द बालजाक

वेडोम शहर से कोई सौ गज दूर, लोयरे की सीमा पर ऊँची मुँडेरों वाला स्लेटी रग का एक पुराना घर है। यह इतनी वीरानी जगह पर है कि आम तौर पर छोटे शहरो मे घुसने से पहले जैसी छोटी मोटी सराय वगैरह मिलती हैं वैसी भी कोई इसके आसपास नहीं है।

इस घर के सामने नदी की तरफ एक बगीचा है। पगडण्डी के दोनों तरफ अच्छी तरह रखी गई सदाबहार हरी झाड़ियाँ थीं जो अब बेतरतीब फैली हुई हैं। चारो तरफ लगी बाड़ पर लोयरे से निकलती हुई कई लताएँ तेजी से फैल रही हैं। उन्होने घर को छिपा-सा दिया है। ढाल पर भद्दे खरपतवार का फैलाव है। पिछले दस सालो से उपेक्षित फलों के पेड़ अब फल नहीं देते। उनसे निकलते पौधों से झाड़-झंखाड़ बन गया है। दीवारों के साथ साथ बाड़ की तरह भित्तिफल उग रहे हैं। जिस पगडण्डी पर किसी जमाने में बजरी पड़ी थी वही अब काई से भरी है। और सच कहो तो पगडण्डी का कहीं नामोनिशान नहीं है। पहाड़ी की ऊँचाई से वेण्डोम के ड्यूकों के पुराने महलों के खण्डहर जुड़े हुए हैं। वहाँ एक जगह से नीचे घर के घेरे में नजर पडती है। देखकर लगता है कि कोई ऐसा अनिश्चित समय रहा होगा जब यह ज़मीन का टुकड़ा गाँव के किसी भले आदमी की खुशी का कारण रहा होगा। उसने यहाँ गुलाब और ट्यूलिप उगाकर बागवानी का अभ्यास किया होगा। वह फलों का भी प्रेमी रहा होगा। अभी तक एक कुंज या यो कहो कि कुंज का खण्डहर दिखाई देता है जिसमें एक मेज़ रखी है जो वक्त भी खराब नहीं कर पाया। जैसे एक अच्छे व्यापारी की कब्र पर लगे पत्थर को पढ़कर उसके जीवन का अन्दाज लगाया जा सकता है, उसी तरह बगीचे के इस हिस्से को देखकर बीते वक्त की शान्तिपूर्ण प्रादेशिक उदासी और खुशी का संकेत मिलता है। एक दीवार पर लोक प्रचलित ईसाई उक्ति

"ultima cogita" से सजी एक धूप घड़ी है, जिससे व्यक्ति की आत्मा में सुख और दुःख के मिले जुले विचारों का प्रमाण मिलता है। इस घर की छत बुरी तरह टूटी हे, खिड़कियाँ सदा बन्द रहती हैं, छज्जे अबाबील के घोंसलों से ढके हैं, दरवाजे भी बराबर बन्द हैं, सीढ़ियों की दरारों में घास की हरी लकीरें-सी हैं, ताले और चिटकनियों जंग लगी हैं। सूर्य चन्द्रमा, सर्दी, गर्मी ने बारी बारी से दरवाजों को कमज़ोर, तख्तो को टेढ़ा और रंगों को ख़त्म कर दिया है। इधर से उधर भागते, लड़ते और एक-दूसरे को काटते पक्षी, चूहे, बिल्ली इस उदास चुप्पी के रहस्य को तोड़ा करते हैं। सच में, यहाँ एक अनदेखे हाथ ने रहस्य शब्द खोद दिया है।

अगर उत्सुकतावश आप इस घर को सड़क की तरफ से देखें तो दरवाज़े मे बच्चों के किए छेद दिखाई देंगे। बाद में मैंने सुना कि यह दरवाजा पिछले दस साल से बन्द है। छेद में से अन्दर झाँकने पर पता चलता है कि बगीचे और आँगन मे पूरा तालमेल है। दीवारों में बड़ी-बड़ी दरारें हैं जिनके काले किनारों से बढ़ते हुए पौधों के सैकड़ों हार लिपटे हुए हैं। सीढ़ियाँ जोड़ पर से अलग हो रही हैं। घण्टी के तार जंग खाए हुए हैं, पाइप टूटे हैं। यहाँ आसमान से कौन सी बिजली टूटी थी? किस अदालत ने इस घर पर नमक छिड़कने का आदेश दिया था? क्या किसी ने भगवान् को गाली दी थी? क्या फ्रांस को धोखा दिया गया था? ये प्रश्न हम अपने आप से करते हैं। पर इस भुतही जगह पर घूमती चीजें कोई जवाब नहीं देतीं। यह खाली और वीरान घर एक ऐसी पहेली है जिसकी चाभी खो गई है। पुराने वक्त में यह ग्रांद ब्रेतश नाम की एक छोटी सी जागीर थी।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि मेरी भली मकान-मालकिन ने यह रहस्य सिर्फ मुझे नहीं बताया होगा और कहानी सुनने को तैयार हो गया।

वे बोलीं, श्रीमान्, जब बादशाह ने स्पेन के युद्ध कैदियों और कुछ दूसरों को यहाँ भेजा तो मेरे पास वेंडोम में सरकार ने जेल से छुट्टी दिलाकर एक स्पेनिश युवक को भेजा। पेरोल पर होने की परवाह किए बिना वह रोज़ पुलिस अधिकारी से मिलने जाता था। वह निश्चित रूप से कुलीन था। उसका नाम कुछ इस तरह था 'बर्गोस द फेरेडिया' मेरी किताबों पर उसका नाम लिखा है चाहो तो पढ़ सकते हो। सभी स्पेनिश लोग बदसूरत कहे जाते हैं। पर वह एक खूबसूरत जवान आदमी था। उसकी लम्बाई कुल पाँच फुट और कुछ इंच थी पर शारीरिक गठन अच्छी थी। उसके हाथ छोटे थे और वह उनका बहुत ध्यान रखता था। ओह, काश तुम देख पाते ! एक औरत अपने पूरे श्रृंगार के लिए जितने ब्रश रखती है, उतने वह सिर्फ अपने हाथो के लिए रखता था। उसके बाल घने और काले थे, आँखें जलती हुई थीं; उसका रग ताम्बई था, पर मुझे वह देखने में अच्छा लगता था। हालाँकि यहाँ पहले भी संभ्रान्त लोग रह चुके हैं, किन्तु मैंने उसके जैसा बढ़िया कपड़े पहनने वाला कोई नहीं देखा। वह कम खाता था; व्यवहार में नम्र और खुशमिजाज़ था। वह किसी को नाराज़ होने

का मौका नहीं देता था। हालाँकि उससे बात करना असम्भव था, क्योंकि वह दिन भर में चार बार से ज्यादा मुँह नहीं खोलता था, पर फिर भी वह मुझे पसन्द था। आप उससे बात करें तब भी वह जवाब नहीं देता था। मैंने लोगों को कहते सुना था कि उन सबको ऐसी सनक होती थी। वह एक पादरी की तरह अपनी धर्म पुस्तक पढता था, नियमित रूप से चर्च में जाता था और धार्मिक पूजापाठ में भाग लेता था। वह कहाँ बैठता था? मैडम द मीरे की जगह से दो कदम की दूरी पर। पहली बार जब उसने वह जगह ली, तो ऐसा करने में किसी को उसकी नीयत पर कोई शक नहीं हुआ। इसके अलावा, वह बेचारा अपनी प्रार्थना पुस्तक से नज़र भी नही उठाता था। इसके बाद श्रीमान्, वह शाम को पहाड़ों और खण्डहरों में सैर के लिए चला जाता था। इनसे उसे अपने देश की याद ताज़ा हो जाती थी। उस बेचारे का यही एकमात्र मनोरंजन था। लोग कहते हैं कि स्पेन में केवल पहाड़ हैं। गिरफ्तारी की शुरूआत से ही वह देर में लौटता था। मुझे जब पता चला कि वह आधी रात से पहले घर नहीं लौटता तो मैं परेशान हुई, पर धीरे धीरे हम उसकी इस सनक के आदी हो गए। वह दरवाज़े की चाभी ले जाता था। और हमने उसकी इन्तजार मे बैठना बन्द कर दिया। वह हमारे रू दे कैसर्न स्थित एक घर में रहता था।

एक शाम हमारी घुड़साल के एक आदमी ने बताया कि जब वह घोड़ों को पानी पिलाने के लिए नदी पर लेकर गया तो उसे लगा कि वह कुलीन स्पेनिश नदी मे जीवित मछली की तरह तैर रहा था; जब वह लौटा तो मैंने उसे जल के तेज प्रवाह का ध्यान रखने को कहा, वह पानी में देखे जाने के कारण गुस्सा दिख रहा था। आखिर एक दिन, या एक सुबह, वह अपने कमरे में नहीं मिला। वह लौटा ही नहीं था। सब जगह ढूँढ़ने के बाद मुझे मेज़ की दराज़ में कुछ लिखा हुआ एक कागज़ मिला। उसके साथ स्पेन की पचास सोने की गिन्नियाँ थीं जिन्हें 'डबलून' कहा जाता है। उनकी कीमत पाँच हज़ार फ्रैंक थी; साथ ही एक छोटे सीलबन्द डिब्बे मे दस हज़ार फ्रैंक की कीमत के हीरे थे। कागज पर लिखा था कि यदि वह न लौटे तो जो पैसे और हीरे उसने छोड़े हैं, वे हमारे हैं, पर शर्त यह थी कि हम उसके भाग जाने के लिए भगवान् का धन्यवाद देने को प्रार्थना करवायेंगे ताकि उसे मुक्ति मिले। उन दिनों मेरे पति जीवित थे। उन्होंने उसे सब जगह ढूँढा।

"और अब कहानी का अजीब हिस्सा सुनो। उन्हें महल की तरफ वाले नदी के किनारे पर एक बड़े पत्थर के नीचे दबे उसके कपड़े मिले जिन्हें वे ले आए। वह जगह ग्रांड द ब्रेतेश की उल्टी तरफ थी। मेरे पति इतनी सुबह निकल गए थे कि कोई उन्हें देख नहीं पाया था। उन्होंने पत्र पढ़ने के बाद उसके कपड़े जला दिए और हमने काउंट फेरेडिया की इच्छा के अनुसार सबसे यह कह दिया कि वह भाग गया। फ्रांस के प्रशासन अधिकारी ने सारे सिपाही उसके पीछे दौड़ाए, पर मेरे ख्याल से वे उसे पकड़ नहीं पाए। लुपा का विचार था कि उसने डूब कर आत्महत्या कर

ली, पर मे ऐसा नही सोचती, मुझ लगता है कि उसका मैडम द मीरे के मामले से कुछ ताल्लुक था, क्योंकि रोज़ाली ने मुझे बताया था कि उसकी मालकिन एक चाँदी और आबनूस से बने सलीब को इतना चाहती थी कि उसने उसे अपने साथ दफनाने को कहा था। जब बर्गोस द फेरेदिया यहाँ रहता था, तब उसके पास भी एक ऐसा ही सलीब था जो बाद में उसके पास नहीं दिखा था। श्रीमान्, क्या अब आपको नहीं लगता कि मुझे फेरेदिया के पन्द्रह हज़ार फ्रैंक लेने में संकोच नहीं होना चाहिए ओर उन पर मेरा हक़ है?"

"निश्चय ही; पर आपने रोज़ाली से पूछताछ नहीं की?" मैंने कहा।

"जी हाँ, श्रीमान्, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। लड़की पत्थर जैसी हो गई है। वह कुछ जानती है, पर उसे बुलवाना असम्भव है।

कुछ और बातें करने के बाद मकान मालकिन मुझे अस्पष्ट और उदास विचारों का शिकार बनाकर चली गई। मेरे मन में एक रोमांटिक उत्सुकता के साथ एक धार्मिक डर भी जाग उठा, ठीक वैसा जैसा रात को किसी अँधेरे चर्च में घुसने पर ऊँचे गुम्बदों की हल्की रोशनी दिखने पर जागता है या जैसे जब एक अस्पष्ट छाया पास से गुज़रने पर—एक पोशाक की खसखसाहट सुनने पर हम काँप उठते हैं।

सहसा मेरे सामने ग्रांड द ब्रेतेश, उसके ऊंचे खरपतवार, उसकी बन्द खिड़कियाँ, जंग खाई लोहे की चीजें, उसके बंद दरवाज़े, वीरान घर एक सुन्दर भुतहा आकार लगने लगा। मैं उस रहस्यमय घर में जाने और उस भयानक कहानी के—उस नाटक के जिसमें तीन आदमी मारे गए—बारे में जानने के विषय में सोचने लगा। मेरी नज़र में रोज़ाली वेंडोम की सबसे रहस्यपूर्ण हस्ती बन गई। जब मैं उसे गहराई से देखने लगा तो मैंने देखा कि उसकी मोटी आकृति पर स्वास्थ्य की चमक के बावजूद एक चिन्ता की झलक है, उसमें पश्चात्ताप या यों कहो कि आशा का एक कीड़ा था, उसके रवैये में एक रहस्य दिखता था, उसका रवैय्या एक अतिशय पूजा करने वाले धर्मान्ध का सा, या उसका सा था जिसने बच्चा मार दिया और उसे उसकी आखिरी चीख सुनाई दे रही हो। पर उसका व्यवहार रूखा और खरा था—उसकी बेवकूफी भरी मुस्कान एक अपराधी की सी नहीं थी। अगर आप उसके जामुनी और नीले सूती गाउन पर झालर की तरह लगे बड़े से रूमाल को देखते जो उसकी बड़ी छाती के चारों तरफ लिपटा होता था, तो आप उसे भोली कहते। मैंने तय किया, नही, मैं उस हवेली का इतिहास जाने बिना वेंडोम से नहीं जाऊँगा। अगर इसके लिए जरूरत पड़ी तो रोज़ाली से दोस्ती जोड़ूँगा।

एक शाम मैंने कहा, "रोज़ाली?"

"श्रीमान्!"

"तुम शादीशुदा नहीं हो?"

वह हल्की सी चोकी फिर हसते हुए बोली ओह जब मे परेशान होना चाहूगी तो मुझे बहुत आदमी मिल जायेंगे।"

जल्दी ही वह अपनी भावनाओं पर काबू पा गई क्योंकि सभी स्त्रियाँ, वे आभिजात्य वर्ग की हों या सराय की नौकरानी, एक विशेष मानसिक सन्तुलन रखती है।

"तुम इतनी सुन्दर हो और तुम्हें सब पसन्द करते हैं। फिर तुम्हें प्रेमियों की कमी क्यों है? रोज़ाली यह बताओ कि मैडम द मीरे को छोड़ने के बाद तुमने सराय मे नौकरी क्यों ली? क्या वे तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ गईं?"

"ओह ज़रूर! पर श्रीमान्, पूरे बेंडोम में मैं सबसे अच्छी जगह हूँ।" जज या वकील के हिसाब से जवाब टालने वाला था। मुझे लगा रोज़ाली इस रोमांटिक इतिहास के बीच ऐसे थी जैसे शतरंज की बिसात के बीच में स्थित चौकोर खाना। वह सच्चाई और मुख्य कुतूहल के मूल में थी; मुझे लगा वह उस गाँठ से जुड़ी थी। रोज़ाली को जीतना कोई मामूली बात नहीं थी—इस लड़की में उपन्यास का अन्तिम अध्याय केन्द्रित था, इसलिए मेरा उसकी तरफ ख़ास रूझान हुआ।

एक सुबह मैंने उससे कहा, "मुझे मैडम के बारे में सब कुछ बताओ" उसने डरते हुए कहा, "ओह, मासियो होरेस, मुझसे उस बारे में मत पूछिए।"

उसका सुन्दर चेहरा मुरझा गया—साफ चमकीला रंग फीका पड़ गया और उसकी आँखों की भोली चमक गायब हो गई।

"ठीक है", वह बोली, "अगर आप जानना चाहते हैं तो मैं बताऊँगी, पर आपको वायदा करना पड़ेगा कि आप मेरी बात को गुप्त रखेंगे।"

"मैं वायदा करता हूँ। तुम अच्छी लड़की हो। मैं तुम्हारा भेद, चोर की इज्जत की तरह जो संसार में सबसे अधिक ईमानदार होती है, छिपाकर रखूँगा।"

अगर मैं रोज़ाली की सारी बातें ज्यों की त्यों लिखता तो पूरी किताब बन जाती अतः संक्षेप में कहता हूँ।

"ब्रेतेश में मैडम नीचे के कमरे में रहती थी। दीवार की चौड़ाई में चार फुट गहरी जगह उसकी आलमारी का काम करती थी। जिस घटनापूर्ण शाम की बात मै बताने जा रहा हूँ, उससे तीन महीने पहले मैडम इतनी बीमार हो गई थीं कि उनके पति उन्हें उनके कमरे में छोड़कर पहली मंज़िल के कमरे में रहने लगे थे। कुछ बातें ऐसी होती हैं कि उनके बारे में हम पहले से कुछ नहीं जान पाते। ऐसी ही होनी उस दिन हुई। उनके पति जो रोज क्लब जाकर या अखबार पढ़ते थे या यहाँ बैठे लोगों से राजनीतिक चर्चा करते थे, उस दिन रोज़ से दो घंटे देर में लौटे। उनकी पत्नी ने सोचा कि वे घर पर अपने बिस्तर में सो रहे हैं। पर उस दिन फ्रास का हमला एक जीवन्त विवाद का विषय था; बिलियर्ड का मैच बढ़िया था जिसमे वह चालीस फ्रैंक हार गया था। वेंडोम में जहाँ लोग जमा करते थे यह एक बड़ी

रकम थी। वहा व्यवहार शालीनता की सीमा मे बधा होता था ओर उससे उन्हे बडी खुशी मिलती थी, जबकि पेरिस के निवासियों को इसका मोह नहीं होता था। कुछ समय से वे रोज़ाली से पत्नी का हाल पूछकर सन्तुष्ट हो जाते थे। उसका उत्तर हॉ में होता था और वे सन्तुष्ट होकर खुशी-खुशी अपने कमरे में चले जाते थे। उस दिन घर में घुसते ही उनका मन हुआ कि पत्नी के कमरे में जाकर उसे अपनी हार के बारे में बताएँ, इससे शायद उन्हें तसल्ली मिलती। रात के भोजन के समय उनकी पत्नी बड़ी सजी हुई थी। क्लब जाते समय उन्हें लगा कि अब उनकी पत्नी स्वस्थ हो रही थी और आराम करने के कारण उसकी सुन्दरता बढ़ गई थी। अन्य पतियो के समान उन्हें भी यह समझने में समय लग गया था। उन्होंने रोज़ाली को नही बुलाया जो रसोइये और कोचवान के बीच होते खेल को देखती रहती थी, स्वयं लालटेन लेकर उसकी रोशनी में पत्नी के कमरे तक पहुँच गए। फिर लालटेन को पहली सीढी पर रख दिया। गलियारे में उनके पैरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। जैसे ही उन्होने पत्नी के कमरे के दरवाज़े का हैंडल घुमाया, उन्हें लगा कि आलमारी का दरवाजा बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी, पर जब वे अन्दर गए तो उन्होंने देखा कि मैडम ॲगीठी के सामने अकेली खड़ी थी। पति को पूरा विश्वास था कि रोज़ाली उस छोटी आलमारीनुमा कोठरी में होगी। पर उनके दिमाग में एक शक जागा जिसने उन्हें सावधान कर दिया। उन्होंने अपनी पत्नी की तरफ देखा, तो उसकी आँखों में डर की छाया दिखी।

वह बोली, "आप बहुत देर में आए हैं!" उसकी पवित्र मीठी आवाज उन्हे बदली हुई-सी लगी।

उन्होंने जवाब नहीं दिया, क्योंकि उसी समय रोज़ाली कमरे में आई। उन पर मानो बिजली गिरी। वे बाँहें मोड़कर मशीनी ढंग से कमरे में एक खिड़की से दूसरी तक चक्कर लगाने लगे।

"आपने कोई बुरी ख़बर सुनी है या तबियत ठीक नहीं है?" पत्नी ने धीमे से पूछा। रोज़ाली उनके कपड़े बदलवा रही थी।

वे चुप रहे।

"तुम मुझे अकेली छोड़ दो," मैडम ने अपनी नौकरानी से कहा, "मैं बाल अपने आप बाँध लूँगी।"

पति की भाव-भंगिमा से उसे लगा कि कोई परेशानी आने वाली है, अतः वह उनके साथ अकेली होना चाहती थी। जब रोज़ाली चली गई, या कहो कि जब यह लगा कि वह चली गई (क्योंकि वह कुछ देर गलियारे में रुककर सुनने की कोशिश कर रही थी) तब वे पत्नी के सामने खड़े होकर बड़ी ठंडी आवाज़ में बोले, "मैडम, आपकी आलमारी में कोई है?"

उसने शान्तिपूर्वक पति को देखा ओर सीधे ढंग से कहा, "जी नहीं।" वे उस

जवाब से बहुत दुखी हुए क्योकि उन्हे उस पर विश्वास नही हुआ, पर पत्नी भी अब से पहले इतनी पवित्र कभी नहीं दिखी थी। वे उठे कि आलमारी का दरवाजा खोलकर देखें।

मैडम ने उनका हाथ पकड़ा, उदास भाव से देखा और सपाट आवाज़ में कहा, याद रखिएगा कि अगर वहाँ कोई नहीं हुआ तो हमारे सम्बन्ध ख़त्म हो जाएँगे।''

पत्नी के व्यवहार की गम्भीरता ने पति में फिर से विश्वास पैदा किया। उन्हे एक ऐसे निश्चय की प्रेरणा मिली जिससे अमर होने के लिए केवल एक बड़े स्टेज की कमी रह जाती है।

''नहीं,'' वे बोले, ''जोसेफीन, मैं वहाँ अन्दर नहीं जाऊँगा। उससे हम हर हालत मे अलग हो जाएँगे। सुनो, मैं जानता हूँ कि तुम दिल से कितनी पवित्र हो और तुम्हारा जीवन भी साफ़ है। तुम अपना जीवन बचाने के लिए कोई पाप नहीं करोगी।''

मैडम ने यह सुनकर पति पर एक थकी नज़र डाली।

''ये अपना सलीब पकड़ो'', वे बोलते गए, ''भगवान की कसम खाओ कि वहाँ कोई नहीं है। मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगा और वह दरवाज़ा कभी नहीं खोलूँगा।''

मैडम ने सलीब पकड़ा और कहा, ''मैं कसम खाती हूँ।''

''और ज़ोर से,'' पति बोले, ''और दुहराओ, मैं भगवान के समक्ष कसम खाती हूँ कि वहाँ अन्दर कोई नहीं है।''

उसने शान्तिपूर्वक वाक्य दुहरा दिया।

''इतना काफी है,'' पति ने ठंडेपन से कहा।

एक पल की चुप्पी के बाद बोले, ''मैंने यह सुन्दर खिलौना पहले नहीं देखा,'' वे उस आबनूस के चाँदी से जड़े और कलात्मक ढंग से तराशे गए सलीब को देख रहे थे।

''मुझे यह डुविवियर्स के यहाँ मिला। पिछले साल उसने वेंडोम से जाते कैदियो मे से एक स्पेनिश साधु से इसे खरीदा था।''

''अहा!'' वे बोले और उन्होंने सलीब को वापस कील पर टाँग दिया। फिर घन्टी बजाई। रोज़ाली ने उन्हें इन्तज़ार नहीं करवाया, तभी आ गई। वे उससे बात करने के लिए आगे बढ़े। उसे बगीचे की तरफ खुलने वाली चौड़ी खिड़की की तरफ ले गए और फुसफुसाते हुए बोले, ''सुनो मैं जानता हूँ कि गोरेनफ्लोट तुमसे शादी करना चाहता है, रुकावट सिर्फ गरीबी के कारण है। तुमने उससे कहा है कि तुम उसकी पत्नी तभी बनोगी जब वह अपने को एक अच्छे मिस्त्री की तरह जमा लेगा। जाओ, उसे लाओ, उससे कहो कि अपने औज़ार लेता आये। घर में उसके सिवाय किसी और को मत जगाना; तुम्हारी कामना से ज्यादा उसकी किस्मत चमक उठेगी और अब बिना बक बक किए, इस कमरे से चली जाओ, नहीं तो...'' उन्होने त्यौरी चढ़ाई, रोज़ाली जाने लगी, उसे वापस बुलाकर बोले, ''यह मेरी चाभी ले

जाओ।''

"जो!" गलियारे में बिजली की सी कड़कती आवाज़ में उन्होंने पुकारा। जो उनका कोचवान होने के साथ ही विश्वसनीय नौकर भी था। वह ताश का खेल छोड़कर आ गया।

"तुम सब सोने जाओ," मालिक ने कहा। फिर इशारे से उसे पास बुलाकर धीमी आवाज़ में कहा, जब वे सब सो जाएँगे—तुमने सुना?—सो जाएँगे—तब तुम नीचे आकर मुझे बता जाना।"

पूरे आदेश के दौरान उन्होंने पत्नी को दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया, फिर चुपचाप उसके पास आकर क्लब की बातें बिलियर्ड्स के खेल वगैरह के बारे में बताते रहे। रोज़ाली जब लौटी तो उसने देखा दोनों हँसी-खुशी बातचीत कर रहे हैं।

काउंट ने कुछ ही दिन पहले नीचे की बैठक की छत की मरम्मत करवाई थी। वेंडोम में 'प्लास्टर ऑफ पेरिस' मिलना मुश्किल हैं, गाड़ियाँ दाम बढ़ा देती है। काउंट ने अच्छी कीमत पर काफी मात्रा में खरीद लिया था, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि जितना बचेगा, उसके लिए बहुत से खरीदार मिल जाएँगे। जो वे करना चाहते थे उसकी प्रेरणा उन्हें इस कारण भी मिली।

"श्रीमान्, गोरेनफ्लोट आ गया है", रोज़ाली ने धीरे से कहा।

काउंट ने ऊँची आवाज़ में कहा "उसे अन्दर लाओ।"

मिस्त्री को देखकर मैडम पीली पड़ गई।

"गोरेनफ्लोट," उसके पति ने कहा, "जाओ, जाकर बग्घीखाने से इतनी ईंटे ले आओ कि आलमारी के दरवाज़े को चिन सको। दीवार बनाने के लिए मेरे पास वो प्लास्टर ऑफ पेरिस है, वह ले लेना।"

फिर रोज़ाली और मिस्त्री को अलग ले गए और बोले, "सुनो गोरेनफ्लोट।" वे धीरे से बोले, "तुम आज रात यहीं सोओगे। कल तुम्हें विदेश के लिए पासपोर्ट मिल जाएगा जो उस देश का होगा जहाँ मैं तुम्हें भेजूँगा। रास्ते के लिए मैं तुम्हे छ हज़ार फ्रैंक दूँगा। तुम दस साल उस शहर में रहोगे, अगर तुम्हें वह शहर अच्छा न लगे तो उसी देश के किसी और शहर में जा सकते हो। तुम पेरिस से गुजरोगे, वहाँ मेरा इन्तज़ार करना। मैं वायदे के मुताबिक छः हजार फ्रैंक तुम्हें दूँगा। पर वह तुम्हे लौटते वक्त अपना वायदा पूरा करने पर दूँगा। आज रात तुम जो कुछ करोगे उसके बारे में पूरी चुप्पी की यह कीमत होगी। रोज़ाली, जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम्हें मैं तुम्हारी शादी के दिन दस हज़ार फ्रैंक दूँगा, पर यह तब जब तुम गोरेनफ्लोट से शादी करोगी; अगर तुम किसी और से शादी करना चाहोगी तो तुम्हें अपनी जबान बन्द रखनी होगी। नहीं तो—दहेज नहीं।"

"रोज़ाली", मैडम द मीरे ने कहा, "मेरे बाल बना दो।"

पति शान्तिपूर्वक कमरे में ऊपर से नीचे चक्कर लगाता रहा, वह दरवाज़े मिस्त्री

ओर पत्नी पर बराबर नज़र रखे था, पर कोइ अपमानजनक सन्देह व्यक्त नही कर रहा था। जिस वक्त मिस्त्री ईंटें उतार रहा था और पति कमरे के दूसरे सिरे पर थे, तब मैडम ने रोज़ाली से कहा: 'हज़ार फ्रैंक सालाना, मेरी बच्ची, अगर तुम गोरेनफ्लोट से एक झिरी रखने को कह सको तो।' फिर अपनी आवाज़ में बोली, "जाओ, उसकी मदद करो।"

गोरेनफ्लोट ईंटें चिनता रहा। पति-पत्नी पूरा समय चुप थे। पति की चुप्पी के कारण पत्नी को दुहरे अर्थ की कोई बात कहने का मौका नहीं मिल रहा था। मैडम के लिए यह मर्यादा या व्यवहारकुशलता की बात थी। जब दीवार आधी ऊँची उठ गई, तब उस धूर्त मिस्त्री ने अपनी तरफ काउंट की पीठ होने के पल का फायदा उठाते हुए दरवाज़े के शीशे पर अपनी कन्नी मार दी। मैडम को यह देखकर पता चल गया कि रोज़ाली ने गोरेनफ्लोट से बात कर ली है।

तीनों ने एक आदमी का चेहरा देखा; वह निस्तेज और उदास लग रहा उसके बाल काले थे और आँखें जल सी रही थीं। इससे पहले कि उसके पति घूमते बेचारी औरत को उस आदमी को इशारा करने का वक्त मिल गया, इससे शायद उसे कुछ उम्मीद हुई होगी।

सितम्बर का महीना था। सुबह चार बजे चिनाई ख़त्म हुई। मिस्त्री को जो के हवाले कर दिया गया, और काउंट पत्नी के कमरे में पलंग पर लेट गए।

सुबह उठने पर वे लापरवाही से बोले, "ओह आफत है! मुझे पासपोर्ट के लिए जाना होगा" उन्होंने अपना हैट पहना, तीन कदम दरवाज़े की तरफ बढ़ाए, फिर दिमाग बदल गया। लौटे और सलीब उठा लिया।

पत्नी खुशी से काँप उठी। उसने सोचा वे डुविवियर के पास जा रहे हैं। काउट के जाते ही मैडम ने रोज़ाली को बुलाने के लिए घण्टी बजाई; फिर अजीब सी आवाज मे बोली, "कन्नी, कन्नी, जल्दी करो। मैंने देखा था कि गोरेनफ्लोट ने क्या किया था। हमारे पास छेद करके मरम्मत करने का वक्त ही है।"

पलक झपकते रोजाली अपनी मालकिन के पास कन्नी ले आई और वह तेजी से दीवार तोड़ने लगी। उसने कुछ ईंटें तोड़ीं और एक जोरदार हाथ मारने ही वाली थी कि उसे लगा उसके पीछे काउंट है। वह बेहोश हो गई।

काउंट ने सर्द आवाज़ में कहा, "मैडम को बिस्तर पर लिटा दो।" वे जानते थे कि उनके पीछे से क्या होगा। दरअसल उन्होंने अपनी पत्नी को फँसाने के लिए ही यह जाल डाला था। उन्होंने मेयर को पत्र लिखकर डुविवियर को घर पर ही बुलवा लिया था, दीवार चिनने तक वह आ भी गया था।

काउंट ने पूछा, "डुविवियर, क्या यह सलीब तुमने स्पेनिश लोगों से खरीदा था?"

"नहीं सर।"

"बस इतना ही पूछना था, शुक्रिया।" व बोले। पत्नी को घूरा।

"जो!" 'उन्होंने कहा। "देखो, मेरा खाना मेरी पत्नी के कमरे में ही भेज दिया जाए; वे बीमार हैं, जब तक ठीक नहीं होंगी, मैं उन्हें अकेले नहीं छोड़ूँगा।"

क्रूर पुरुष बीस दिन तक पत्नी के साथ रहा। शुरू में दीवार के पीछे से आवाजें आती रहीं, जोसेफीन मरते हुए आदमी पर तरस खाने की विनती आँखों में लिये पति की तरफ देखती रही, पर उन्होंने उसे एक शब्द भी कहने का मौका दिए बिना कहा, "तुमने सलीब की कसम खाई है कि वहाँ अन्दर कोई नहीं है।"

काली बिल्ली

एडगर एलन पो

मै जो कहानी लिखने जा रहा हूँ वह भयानक होने के साथ ही भद्दी भी है। मैं उस पर विश्वास किए जाने की न उम्मीद करता हूँ, न विनती। मेरी अपनी आँखो ने जिसे देखकर अस्वीकार किया उस पर किसी और के विश्वास की उम्मीद करने का पागलपन मैं नहीं करूँगा। पर मैं पागल नहीं हूँ और न ही सपने देखता हूँ। कल मै मरूँगा और आज अपनी आत्मा का बोझ उतारना चाहता हूँ। मैं सीधे-सादे, थोड़े से शब्दों में बिना अपनी तरफ से कुछ जोड़े सारी घटनाओं को दुनिया के सामने रखना चाहता हूँ। उन घटनाओं के फलस्वरूप मैं डरा–सताया गया और बरबाद हो गया। फिर भी मैं उनकी व्याख्या नहीं करूँगा मेरे लिए वे डरावनी हैं--पर और बहुत से लोगों को वे भयानक कम और अनोखी ज्यादा लगेंगी। अब शायद कुछ बुद्धिमान लोग इसे मेरा मामूली भ्रम कहें, कुछ दूसरे बौद्धिक जो अधिक शान्त और बुद्धिवादी हैं और मुझसे कम उत्तेजित होते हैं, उन परिस्थितियों को जिनका मैं वर्णन कर रहा हूँ, उन्हें कारण और परिणाम के सहज क्रम से ज्यादा कुछ नहीं मानेंगे।

बचपन से मुझे सीधा और संवेदनशील माना जाता था, यहाँ तक कि मेरी कोमलता के लिए मेरे साथी मेरा मज़ाक उड़ाते थे। मुझे जानवरों से ख़ास प्यार था ओर मेरे माता-पिता ने मेरी खुशी के लिए बहुत तरह के पालतू जानवर ला दिए थे। मैं अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त उन्हीं के साथ बिताया करता था। उन्हें खिलाने और पुचकारने में बहुत खुश होता था। मेरी उम्र के साथ-साथ मेरे चरित्र की यह विचित्रता बढ़ती गई और पूरी तरह वयस्क होने पर यही मेरी खुशी का मुख्य आधार बन गयी। जिन लोगों को ईमानदार और होशियार कुत्ते से बेहद प्यार है उन्हें मुझे यह नहीं बताना पड़ेगा कि इस प्यार से कितना तीव्र सन्तोष मिलता है। इस जानवर के निस्वार्थ और आत्मबलिदानपूर्ण प्रेम में कुछ ऐसा होता है जो सीधा हृदय को

छूता है और बहुत बार इन्सान की तुच्छ दोस्ती और कमज़ोर वफादारी का इम्तहान लेता है।

मैंने जल्दी शादी कर ली थी और खुश था कि मुझे ऐसी पत्नी मिली थी, जिससे मेरा स्वभाव उल्टा नहीं था। मेरा घरेलू जानवरों के प्रति प्रेम जानने के कारण वह घर में रखने लायक जानवर लाने का कोई मौका नहीं छोड़ती थी। हमारे यहाँ चिडियाँ, एक अच्छा कुत्ता, लाल मछली, खरगोश, एक छोटा बन्दर और एक बिल्ला था।

बिल्ला बिल्कुल काला, काफी बड़ा और सुन्दर था। वह आश्चर्यजनक रूप से चतुर था। मेरी पत्नी में अन्धविश्वास ज़रा भी नहीं था पर उसकी बुद्धिमानी की बात करते समय वह बहुत बार पुरानी मान्यता की ओर इशारा करती थी जिसके अनुसार काली बिल्ली बदले वेश वाली चुड़ैल मानी जाती थी। वह इस बात को गम्भीरता से लेती हो ऐसा नहीं था—और मैं अभी इसकी ओर इशारा किसी ख़ास वजह से नही करके इसलिए कर रहा हूँ कि इसे याद रखना है।

मेरा प्रिय पालतू और खेल का साथी प्लूटो जहाँ मैं जाऊँ, मेरे पीछे-पीछे जाता था। मैं मुश्किल से उसे अपने पीछे सड़कों पर आने से रोकता था।

हमारी ऐसी दोस्ती बहुत साल तक चली। पर धीरे-धीरे उग्रता के कारण मेरा स्वभाव बहुत बदलता चला गया (मुझे मानने में भी शरम आ रही है) हर दिन मै ज्यादा चिड़चिड़ा, गुस्सैल और दूसरों की भावनाओं की तरफ से लापरवाह होता गया। मै पत्नी से अनियंत्रित भाषा में बोलने लगा था। बाद में तो उस पर हाथ भी छोडने लगा था। मेरे पालतू जानवरों को भी मेरे स्वभाव के इस बदलाव को झेलना पडता था। मैं केवल उनकी उपेक्षा ही नहीं उनके साथ बुरा व्यवहार भी करने लगा था। फिर भी प्लूटो के प्रति अब भी मेरे मन में इतना प्यार था कि मैं उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करता था, जबकि खरगोश, बन्दर या कुत्ते में से कोई गलती से या प्यार से मेरे रास्ते में आ जाए तो भी मैं उन्हें बहुत तंग करता था। मेरी बीमारी बढती गई—क्योंकि शराब से बढ़कर क्या बीमारी हो सकती है? और अब प्लूटो को भी—जो अब बूढ़ा और चिड़चिड़ा होता जा रहा था—मेरी बददिमागी के असर को झेलना पड़ता था।

एक रात, शहर के एक अड्डे से नशे में चूर लौटने पर, मुझे लगा प्लूटो मेरे सामने नहीं आ रहा, मैंने उसे पकड़ा, मेरी हिंसा से डरकर उसने मेरे हाथ पर हल्का-सा दाँत गड़ा दिया। मुझ पर फौरन एक वहशी गुस्सा हावी हो गया। मैं अपने को पहचान नही पा रहा था। ऐसा लगा कि उस वक्त मेरी आत्मा शरीर छोड़कर उड़ गई थी, दुष्ट दुर्बुद्धि मेरे शरीर की एक-एक नस को अपने फंदे में बाँध रही थी। मैंने अपनी जैकेट की जेब से एक छोटा चाकू निकाला, बेचारे जानवर को गले से पकड़ा और जानबूझकर उसकी एक आँख बाहर निकाल ली। इस निष्ठुरता के बारे में लिखते हुए भी शर्मिन्दा हूँ, काँप उठता हूँ।

सुबह के साथ विवेक लौटा—रात की दुष्टता और गुस्से का आवेश सोकर हट चुका था—मुझे अपने किए पाप का डर और अफसोस था, लेकिन वह भावना कमज़ोर और सन्देहपूर्ण थी। मेरी आत्मा उससे अछूती रही। जल्दी ही मैं फिर वैसी ही हरकतें करने लगा। शराब ने उस कुकर्म की याद भी भुला दी।

इस बीच बिल्ला धीरे धीरे ठीक होता गया। यह सच है कि खोई हुई ऑख का गड्ढा एक डरावना दृश्य था, पर ऐसा नहीं लगता था कि अब उसे कोई दर्द महसूस होता होगा। वह पहले की तरह घर में घूमता था। पर जैसा कि स्वाभाविक था, वह मुझे देखते ही बहुत डरकर भागता था। मुझमें पुरानी भावनाएँ इतनी बची थी कि पहले पहल अपने से प्यार करने वाले जानवर की साफ दिखती नापसन्दगी मुझे दुखी करती थी। पर धीरे-धीरे इसकी जगह चिढ़ ने ले ली। और फिर जैसे इस हार की वजह से मुझमें एक दुष्ट आत्मा आ गई। दर्शन इस बात को नहीं मानता पर मैं अपनी आत्मा के अस्तित्व की तरह इस बारे में भी विश्वास करता हूँ कि हर इन्सान के हृदय में दुष्टता की भावना होती है। वह एक ऐसी मूल भावना है जो मनुष्य के चरित्र को बनाती है। कितनी बार ऐसा नहीं होता कि एक व्यक्ति यह जानते हुए भी कि उसे वैसा नहीं करना चाहिए सैकड़ों बार एक घृण्य या बेवकूफी भरा काम करता है। क्या हम जानते हुए भी बार-बार कानून नहीं तोड़ते? मेरे विचार से मुझमें यह दुष्टता मेरी आखिरी हार के कारण आई। हरेक की आत्मा में बुरा काम करने की अथाह भावना होती है—वह गलत काम सिर्फ इसलिए करता है क्योंकि गलत काम करना है—वह अपने स्वभाव से उल्टा काम करता है—उसी भावना ने मुझे उकसाया और मैं उस निर्दोष को चोट पहुँचाता रहा। एक दिन मैंने नृशंसता के साथ उसके गले में फंदा डालकर पेड़ की डाल से लटका दिया—मेरी आँखो से ऑसू बह रहे थे, मेरे दिल में बहुत अफसोस था—मैंने उसे टाँगा क्योंकि मैं जानता था कि वह मुझे प्यार करता था, क्योंकि मैं जानता था कि उसने मुझे ऐसा काम करने का कोई कारण नहीं दिया। उसे लटका दिया हालाँकि में जानता था कि ऐसा करके मैं पाप कर रहा हूँ—एक ऐसा भयानक पाप जो मेरी अमर आत्मा को परम दयालु ईश्वर और भयानक ईश्वर की अमर कृपा की पहुँच से दूर एक जोखिम में डाल देगा।

जिस रात मैंने यह क्रूर काम किया, उस रात 'आग आग' की आवाज़ से नीद से जागा। मेरे बिस्तर के पर्दे लपटों में थे। पूरा घर जल रहा था। बड़ी मुश्किल से मैं अपनी पत्नी और नौकर के साथ उस अग्नि-दाह से बच पाया। सब कुछ नष्ट हो गया। मेरी सारी भौतिक सम्पत्ति खत्म हो गई थी। उसके बाद में निराशा में डूब गया। मैं उस क्रूरता ओर दुर्घटना के बीच कारण और परिणाम के क्रम को ढूँढने की कमज़ोरी से ऊपर हूँ। पर मैं तथ्यों की श्रृंखला का विस्तार दे रहा हूँ। और एक भी कड़ी को अधूरा छोड़ने की इच्छा नहीं रखता। एक दीवार को छोड़कर सब दीवारे

गिर गई थीं। ऐसा उस कमरे की दीवार के साथ हुआ जो बहुत मोटी भी नहीं थी और घर के बीच वाली थी। मेरे पलंग का सिरहाना उस दीवार की तरफ था। यहाँ का पलस्तर आग से काफी बच गया था—मेरा ख्याल था कि ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि वह नई बनी थी। इस दीवार के पास बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई थी। बहुत से लोग एक हिस्से को बड़ी बारीकी और बेचैनी से देख रहे थे। "ताज्जुब है!" "सिर्फ यह!" ऐसे शब्द मेरी उत्सुकता को तीव्र कर रहे थे। जब मैं वहाँ गया तो देखा। सफेद दीवार पर एक बिल्ली का सा आकार खुदा था, वह काफी हद तक सही लग रहा था। उसकी गरदन के चारों तरफ रस्सी थी।

जब मैने वह आकार देखा—क्योंकि इससे कम वह कुछ नहीं था—मेरा अचरज और डर बहुत अधिक था। पर बाद में एक विचार ने मेरी मदद की। मुझे याद आया कि मैंने वह बिल्ला घर के पास वाले बगीचे में लटकाया था। आग दीखने पर इस बगीचे में भीड़ भर गई थी। शायद किसी ने मुझे नींद से जगाने के लिए उस बिल्ले को पेड़ से उतार कर खिड़की से मेरे कमरे में फेंक दिया होगा। मेरी क्रूरता का शिकार बिल्ला उस नए लगे पलस्तर से चिपक गया होगा; मुझे जो आकार दिखाई दे रहा था वह शायद पलस्तर के चूने और आग तथा बिल्ले के शव से निकले एमोनिया के कारण होगा।

विवेक से मैंने यह सोच लिया, पर मेरी अन्तरात्मा ने इसे स्वीकार नहीं किया। मैने जिन चौंका देने वाले तथ्यों का अभी ब्यौरा दिया है उन्होंने मेरी कल्पना पर गहरा असर डाला। महीनों तक मैं बिल्ले की कल्पना से छूट नहीं पाया; और इन दिनों मेरे मन में एक भाव आया जो अफसोस का लगते हुए भी नहीं था। मुझे उस जानवर को खोने का दुःख भी हुआ था। और मैं अपने आस पास, जिन घटिया जगहों पर जाने लगा था वहाँ उसी जाति का दूसरा जानवर ढूँढ़ता था जो दिखने में वैसा ही हो ताकि उसकी जगह ले सके।

एक रात मैं अनमना सा एक बदनाम अड्डे पर बैठा था कि मेरा ध्यान एक काली चीज़ की ओर आकर्षित हुआ जो उस जगह के प्रमुख फर्नीचर रम या जिन के बड़े पीपे के ऊपर बैठा था। मैं कुछ पल टकटकी लगाकर देखता रहा और मुझे इस बात का अचरज हुआ कि उसे देखते ही मैं उसकी तरफ बढ़ा, मैंने उसे अपने हाथ से छुआ। वह एक काला बिल्ला था—बहुत बड़ा—उतना ही बड़ा जितना प्लूटो था। सिवाय एक चीज़ के वह हर तरह उससे मिलता था। प्लूटो के पूरे शरीर पर एक भी सफेद बाल नहीं था जबकि इसके बहुत बड़ा प्रायः पूरी छाती को ढकता एक सफेद धब्बा था।

मेरे छूते ही वह फौरन उठा, जोर से गुर्राने लगा। मेरे हाथ के साथ अपने को रगड़ने लगा, ऐसा लगा कि मेरे ध्यान देने से वह खुश था। यही वह जानवर था जिसकी मुझे तलाश थी। मैंने वहाँ के मालिक से उसे खरीदना चाहा; पर वह

उसका नहीं था न ही वह उसके बारे में कुछ जानता था--उसने उसे पहले देखा भी नहीं था।

मैं उसे सहलाता रहा, और जब घर जाने को तैयार हुआ तो वह साथ चलने को तैयार था। मैंने उसे चलने दिया। बीच-बीच में मैं झुककर उसे थपथपा देता था। घर पहुँचते ही उसने घर को अपना लिया। पत्नी से भी फौरन दोस्ती हो गई।

जहाँ तक मेरा सवाल था, जल्दी ही मुझमें उसके प्रति नफरत जाग उठी। मैं जो उम्मीद कर रहा था, यह उससे बिल्कुल उल्टा था; पर—मैं नहीं जानता कि ऐसा कैसे और क्यों था--मेरे प्रति उसका प्यार मुझमें और ज्यादा खीझ और गुस्सा भर रहा था। धीरे-धीरे यह खीझ और गुस्सा नफरत की कड़वाहट में बदल गया। अपनी पहले की गई क्रूरता की याद और एक तरह की शर्म मुझे उसे शारीरिक कष्ट पहुँचाने से रोक रही थी, अतः मैं उसकी उपेक्षा करता था। कुछ हफ्तों तक न मैंने न उसे मारा, न उसके प्रति कोई हिंसा की, पर धीरे-धीरे—मुझे उससे इतनी नफरत हो गई कि मैं बता नहीं सकता, मैं उसकी घिनौनी उपस्थिति से ऐसे भागने लगा जैसे लोग प्लेग की हवा से भागते हैं।

उसे घर लाने के बाद वाली सुबह से मेरी उस जानवर के प्रति नफरत बढ़ गई। निस्सन्देह इसका कारण यह जानकारी थी कि उसकी भी प्लूटो की तरह एक ऑख नहीं थी। इस कमी की वजह से मेरी पत्नी को उससे बहुत प्यार हो गया था क्योंकि उसमें जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूँ काफी मानवीयता थी जो कभी मेरी विशेषता हुआ करती थी और जिसके कारण मेरी खुशियाँ बहुत सारी और पवित्र हुआ करती थीं।

ऐसा लगता था कि इस बिल्ले के प्रति मेरी नफरत जितनी बढ़ रही थी, उतना ही बिल्ले का मेरे प्रति प्यार बढ़ रहा था। पाठकों को समझाना मुश्किल है कि वह किस ज़िद से मेरे कदमों का पीछा करता था। जब भी मैं बैठता था वह मेरी कुर्सी के नीचे बैठ जाता था या फिर मेरे घुटनों पर चढ़कर अपने घृण्य प्यार से मुझे भर देता। अगर मैं चलने के लिए खड़ा होता तो वह मेरे पैरों के बीच में आकर मुझे प्रायः गिरा देता था या मेरे कपड़ों में अपने तेज़ लम्बे पंजे नाखून गड़ाकर मेरी छाती तक चढ़ जाता था। ऐसे समय मेरा मन करता था कि एक हाथ मारकर उसे खत्म कर दूँ। पर पहले पाप की याद से और—एक बार मान ही लूँ--उस जानवर से डर के कारण मैं अपने को ऐसा करने से रोकता था।

यह डर शारीरिक अनिष्ट का डर नहीं था--पर मैं किसी और तरह इसे बता भी नहीं सकता। मुझे मानने में शर्म आती है—हाँ इस अपराधियों की कोठरी में भी मुझे मानने में शर्म आती है कि उस जानवर ने मेरे अन्दर जो डर और खौफ पैदा किया था वह सिर्फ एक झूठी कल्पना से इतना बढ़ गया था। मेरी पत्नी ने कई बार मेरा ध्यान उस बिल्ले के सफेद बालों वाले हिस्से की ओर खींचा। मैं उसकी

बात पहले कर चुका हूँ कि जिस जानवर को मैंने मारा था उसमें और इसमें सिर्फ इतना ही फर्क दिखता था। पाठक को याद होगा कि पहले यह निशान बड़ा होते हुए किसी निश्चित आकार का नहीं था; पर धीरे-धीरे अनजाने ही वह एक स्पष्ट आकार लेता जा रहा था। बहुत समय से मेरा विवेक उसे कल्पना मानकर ठुकरा रहा था। वह एक ऐसा आकार ले रहा था कि जिसका नाम लेने से भी मैं काँप उठता हूँ। शायद इसीलिए मै उससे डरने के साथ-साथ इतनी नफरत करता था कि अगर हिम्मत होती तो उस राक्षस से छुटकारा पा लेता—अब मैं कह सकता हूँ कि वह भयानक आकार, एक भद्दी छाया—फाँसी के फन्दे की थी! डर और पाप—दु ख ओर मृत्यु का भयानक हथियार थी!

अब मैं इन्सान के साधारण दुःख से परे, दुर्भाग्य से भर उठा था। एक क्रूर जानवर, जिसके साथी को मैंने नफरत से भरकर मार दिया था—वह मेरे लिए, उस आदमी के लिए जिसे भगवान के समकक्ष माना जाता है—असह्य दुःख जुटा रहा था। अफसोस! अब मेरे पास आराम का वरदान नहीं था! दिन में वह जानवर पल भर को भी मुझे अकेला नहीं छोड़ता था; और रात में मैं हर घण्टे में अनजाने डर से चौंककर उठ जाता था, उसकी गरम साँसें अपने चेहरे पर महसूस करता था। और उसका भारी वजन हर समय मेरी दिल पर वज़न डालता था। मुझमें उस साक्षात् बुरे स्वप्न को हटाने की ताकत नहीं थी।

ऐसी मानसिक यंत्रणा के दबाव के कारण, मुझमें जो थोड़ी बहुत अच्छाई बची थी, वह भी खत्म हो गई। बुरे से बुरे भयानक विचार मेरे एकमात्र साथी हो गए। मेरे स्वभाव में जो गुस्सा था वह बढ़कर सब चीज़ों और इन्सानों के प्रति नफरत में बदल गया। बहुत बार मैं अचानक गुस्से से बेकाबू हो जाता था पर मेरी पत्नी बिना शिकायत किए बिल्कुल स्वाभाविक ढंग से धैर्यपूर्वक सब सहती थी।

गरीबी से मजबूर होकर हम एक पुराने मकान में रह रहे थे। एक दिन घर के किसी काम से मेरी पत्नी मेरे साथ तहखाने में गई। सीढ़ियाँ बहुत सीधी थीं। बिल्ला मेरे पीछे से आया उसकी वजह से मैं सिर के भार गिरने वाला हो गया। मै गुस्से से पागल हो उठा, और उस डर को भूल गया जिसकी वजह से मैंने अब तक उसे मारा नहीं था। मैंने एक कुल्हाड़ी उठाकर उस जानवर को निशाना बनाकर फेकनी चाही। अगर वह निशाने पर गिरती तो वह निश्चित रूप से मर जाता, पर मेरी पत्नी ने अपने हाथ से मुझे बीच में ही रोक लिया। इस बाधा से मुझमें राक्षसी गुस्सा भर गया, मैंने उसकी पकड़ से अपना हाथ छुड़ाया और कुल्हाड़ी पत्नी के सिर पर दे मारी। वह बिना आवाज़ किए वहीं ढेर हो गई।

यह भयानक कत्ल करने के बाद मैं योजना बनाकर उसकी देह छिपाने के काम में लग गया। मैं जानता था कि दिन हो या रात, पड़ोसियों की नज़र में पडे बगैर शरीर को घर से ले जाना सम्भव नहीं था। मेरे दिमाग में बहुत ख्याल आये।

एक बार यह भी सोचा कि शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े करके आग में डाल दूँ, तो दूसरी बार तहखाने की ज़मीन खोद कर दफनाने का विचार आया। फिर सोचा, आँगन मे बने कुँए में फेंक दूँ—या किसी बक्से में बन्द करके मजदूर से उठवा दूँ। अन्त मे मुझे एक सबसे अच्छा तरीका सूझा। मैंने तय किया कि तहखाने की दीवार मे चिन दूँ—जैसे मध्यकाल में संन्यासी अपने शिकार को दीवार में चिन देते थे।

इस काम के लिए तहखाने की दीवार ठीक थी। इसकी दीवारों पर हाल ही मे पलस्तर किया गया था। सीलन की वजह से वह अभी पूरी तरह जम नहीं पाया था। इसके अलावा एक दीवार पर नकली चिमनी के कारण आगे को उभार था जो तहखाने की बाकी दीवारों से मिलाने के लिए किया गया था। मुझे इस बारे में कोई शक नहीं था कि वहाँ की ईंटें हटाना मुश्किल नहीं होगा। तय था कि लाश रखकर फिर से पहले जैसी चिनाई करने पर किसी को शक नहीं हो सकता था।

इस दृष्टि से मैंने धोखा नहीं खाया। एक कुदाल की मदद से आसानी से ईंटे हटाई, फिर अन्दर की दीवार के सहारे लाश रखी, उसे खड़ा किया और बिना किसी कठिनाई के फिर से पहले जैसी दीवार चिन दी। पूरी सावधानी के साथ मसाला तैयार किया और पुराने पलस्तर से मिलता जुलता पलस्तर नई चिनाई पर भी कर दिया। काम खत्म करने पर मैं सन्तुष्ट था कि सब ठीक से हो गया। दीवार में कोई फर्क नहीं था। मैंने बड़े ध्यान से ज़मीन पर से सारा कूड़ा उठाया, सब तरफ एक विजेता की सी नजर डाली और अपने आप से कहा, "मेरी मेहनत बेकार नहीं गई।"

मेरा अगला काम उस जानवर को ढूँढ़ना था जिसके कारण यह कुकर्म हुआ, क्योंकि मैंने तय कर लिया था कि उसे जान से मार दूँगा। अगर वह तभी मुझे मिल जाता तो उसकी यही किस्मत होती, पर लगा कि वह धूर्त जानवर मेरे पिछले गुस्से मे की गई हिंसा से डर गया था, वह मेरी वर्तमान मनःस्थिति में मेरे सामने आना नही चाहता था। उस घृण्य जानवर के न होने से मेरे दिल में जो तसल्ली और खुशी थी उसकी कल्पना या वर्णन असम्भव था। वह रात को भी नहीं लौटा। उसके इस घर में आने के बाद से यह पहली रात थी जब मैं शान्ति से गहरी नींद सोया, हाँ मन पर हत्या का बोझ अवश्य था।

दूसरा और तीसरा दिन भी बीत गया। मुझे सतानेवाला नहीं आया। मैं फिर एक बार आज़ाद इन्सान की तरह साँस लेने लगा। वह शैतान डरकर हमेशा के लिए भाग गया था। पर मुझे अपने कुकर्म की ग्लानि तंग कर रही थी। मैंने उस बिल्ले के बारे में कुछ खोज की, पर कुछ पता नहीं चला। अब मुझे भविष्य की खुशी सुरक्षित लग रही थी।

हत्या के चौथे दिन, बिना किसी आशंका के एक पुलिस दल आ गया। उन्होने बडी गहराई से घर में खोजबीन की। मैं लाश को छिपाने वाली जगह के बारे मे पूरी तरह निश्चिंत होने के कारण बिल्कुल परेशान नहीं था। अफसरों ने खोज के

समय मुझे अपने साथ रहने को कहा। उन्होंने कोई कोना बिना देखे नहीं छोडा। आखिर वे तीसरे या चौथी बार तहखाने में गए। मैं बिल्कुल नहीं घबराया, मेरा दिल सहज रूप से धड़कता रहा, जैसे मैं बिल्कुल निर्दोष और भोला था। मैं तहखाने के एक सिरे से दूसरे तक गया। मैंने बाँहें छाती पर मोड़ रखी थीं, और सहज ढंग से टहल रहा था। पुलिस वाले पूरी तरह सन्तुष्ट होकर लौटने को तैयार हुए। मेरे दिल की खुशी समा नहीं रही थी। मैं जीत का एक शब्द कहने को बेचैन था और साथ ही उन्हें अपने निर्दोष होने की पूरी तसल्ली करवा देना चाहता था।

पुलिसदल सीढ़ी पर चढ़ने लगा। आखिर मैंने कह ही दिया, ''आप लोगों का शक दूर होने से मैं बहुत खुश हूँ। मैं आप सबके स्वास्थ्य कामना करता हूँ। देखिए, यह—यह घर कितना अच्छा बना है। (मैं सहज दिखने के चक्कर में क्या कहूँ समझ नही पा रहा था) ये दीवारें—आप जा रहे हैं? ये दीवारें बड़ी मज़बूत बनी हैं' ओर अपनी बहादुरी दिखाते हुए मैंने अपने हाथ की छड़ी दीवार के उस हिस्से पर जोर जोर से मारी जिसके पीछे मेरे दिल की रानी, मेरी पत्नी की लाश थी।

पर भगवान् मुझे अत्याचारी के जहरीले दाँत से बचाए—मेरे वार की आवाज अभी शान्त भी नहीं हुई थी कि उस कब्र से आवाज़ आई—एक चीख़, पहले दबी ओर टूटी सी जैसे कोई बच्चा सिसक रहा हो, और फिर ऊँची लम्बी चीख होती गई, पूरी तरह असाधरण और अमानवीय—एक गुर्राहट—एक ऐसी चीख जिसमें डर और जीत का भाव था, जो नरक से आ रही थी, और किसी अभिशप्त, दर्द से भरे गले से निकल रही थी।

मेरे विचारों के बारे में बात करना बेवकूफ़ी है। मैं लड़खड़ाता हुआ, बेहोशी की-सी हालत में दूसरी तरफ की दीवार से लगकर खड़ा हो गया। पूरा पुलिस दल पलभरा के लिए डर और ताज्जुब से पत्थर जैसा हो गया। दूसरे ही पल दर्जन भर मजबूत हाथ दीवार पर काम में लग गए। दीवार गिरा दी गई। देखने वालों के सामने बुरी तरह सड़ी, खून जमी लाश सीधी खड़ी थी। लाल मुँह लिए, आग से भरी एक ऑख वाला वह जानवर उसके सिर पर बैठा था। उसी ने चालाकी से मुझे हत्या करने को उकसाया और उसी की आवाज़ ने मुझे जल्लाद तक पहुँचाया। मैंने अनजाने मे उस राक्षस को दीवार में चिन दिया था।

सिगनल मैन

चार्ल्स डिकन्स

"हलो! वहाँ नीचे!"

जब उसने अपने को बुलाती आवाज़ सुनी, तब वह अपने कमरे के दरवाज़े पर छोटे से डण्डे पर लिपटा एक झण्डा हाथ में लिये खड़ा था। उसकी जगह कोई और होता तो आवाज़ आने की दिशा में देखता; पर वह ऊपर की तरफ देखने की जगह पूरा घूमा और नीचे रेलवे लाइन की तरफ देखने लगा। उसकी इस हरकत मे कुछ इतना अजीब था कि मैं बता नहीं सकता। वह आगे से छोटा, छाया में और नीचे था, मैं उसके ऊपर था, फिर भी उसने मेरा ध्यान आकर्षित किया। वह क्रुद्ध सूर्यास्त की चमक में इतना घिरा हुआ था कि उसे देखने के लिए मुझे अपनी आँखों को हाथों की आड़ देनी पड़ रही थी।

"हलो! नीचे!"

वह लाइन की तरफ देख रहा था, फिर से पूरा घूमा, और अब आँखें उठाकर उसने मेरी तरफ देखा।

"नीचे आने का कोई रास्ता है जो मैं आकर तुमसे बात कर सकूँ?"

उसने मेरी तरफ देखा पर कोई जवाब नहीं दिया। मैंने अपने व्यर्थ प्रश्न को दुहराए बिना उसकी तरफ देखा। तभी धरती और हवा में एक अस्पष्ट सा कंपन हुआ, जो जल्दी ही तेज़ थरथराहट में बदल गया। मैं चौंककर पीछे हट गया क्योंकि मुझे लगा कि तेज़ गति में जैसे कोई ताकत थी जो मुझे नीचे खींचना चाहती थी। तभी तेजी से जाती ट्रेन का धुँआ मेरी ऊँचाई से ऊपर उठकर वातावरण में फैल गया। मैंने फिर नीचे देखा, ट्रेन निकल चुकी थी और वह जो झंडा दिखा रहा था, अब उसे डण्डे पर लपेट रहा था।

मैंने फिर अपना प्रश्न पूछा। उसने रुककर कुछ ध्यान से मुझे देखा और फिर

अपने लिपटे हुए झंडे से मेरे स्तर पर कोई दो तीन सौ गज की दूरी पर इशारा किया। मैंने जवाब में कहा, "अच्छा!" और उस दिशा में चल दिया। वहाँ अपने आसपास ध्यान से देखने पर मुझे वह टेढ़ा-मेढ़ा, ऊबड़खाबड़ रास्ता दिखा जिसे मैंने पकड़ लिया।

बहुत सीधी उतराई थी और अस्वाभाविक रूप से नीचे जा रही थी। पगडण्डी पत्थरों से बनी थी, मेरे उतरने के साथ वे ज्यादा गीले होते जा रहे थे। इसलिए मुझे उतरने का वह रास्ता बहुत लम्बा लगा। मैं सारे रास्ते सोचता रहा कि वह आदमी रास्ता बताना नहीं चाहता था।

मैं उस टेढ़े मेढ़े रास्ते पर इतना नीचे आ गया कि वह दुबारा दिख सकता था तो मैंने देखा कि वह जहाँ से अभी ट्रेन गई थी उन पटरियों के बीच में खडा मानो मेरा इन्तज़ार कर रहा था। उसकी बाईं कोहनी छाती पर टिके दाएँ हाथ पर थी और बायाँ हाथ ठोड़ी के नीचे था। उसक चेहरे के भावों में कुछ ऐसी उम्मीद और सावधानी थी कि मैं पल भर को रुककर सोचने लगा। मैंने फिर उतरना शुरू किया। जब मैं रेल की पटरी के और उस आदमी के पास पहुँचा तब देखा कि वह पीले से रंग का आदमी था, जिसकी दाढ़ी काली और भौंहें घनी थीं। उसका कमरा बहुत अकेली और भयानक जगह पर था। मैंने ऐसी जगह देखी तक नहीं थी। दोनों तरफ नुकीले पत्थरों की टपकती दीवारें थीं जिनके कारण सिवाय आकाश के ज़रा से टुकड़े के कुछ दिखाई नहीं देता था; एक तरफ का दृश्य उस बड़ी सी काल कोठरी का टेढ़ा फैलाव था; दूसरी तरफ एक उदास लाल रोशनी थी और एक काली अन्धेरी गुफा में जाने का रास्ता था जिसकी बनावट में नृशंसता और वर्जना का भाव था। उस जगह सूर्य की रोशनी इतनी कम जा पाती थी कि वहाँ मिट्टी की सील भरी भयानक दुर्गन्ध थी। तभी ऐसी तेज़ ठण्डी हवा आई कि मैं सिहर उठा, मुझे लगा जैसे मैं सामान्य संसार छोड़कर कहीं आ गया हूँ।

उसके हिलने से पहले मैं उसके इतना पास पहुँच चुका था कि उसे छू सकता था। फिर भी उसने मुझ पर से अपनी नज़र नहीं हटाई, एक कदम पीछे हटा और अपना हाथ ऊपर उठा लिया।

मैंने कहा, "इन्सान के रहने के लिए यह बहुत अकेली जगह है।" जब मै ऊपर से नीचे की ओर देख रहा था तब भी मेरा ध्यान इस ओर गया था। मेरे ख्याल से यहाँ कोई आगंतुक कभी-कभी ही आता होगा। पर मुझे यह आशा थी कि उसका आना बुरा नहीं लगता होगा? मेरी बातचीत से उसे ऐसा लगा था कि जैसे सारी जिन्दगी कैद में बन्द आदमी छूटने पर हर काम में बड़ी रुचि दिखाता हो और इसीलिए इतना बोल रहा हो; हालाँकि मुझे यह भी नहीं याद कि मैं क्या बात कर रहा था, क्योंकि मैं बातचीत शुरू करने में कभी खुश नहीं होता था और उस आदमी में कुछ ऐसा था जो मुझे डरा रहा था।

उसने गुफा के मुँह के पास वाली लाल रोशनी को बड़ी उत्सुकता से देखा,

फिर सब तरफ ऐसे नज़र डाली जैसे कोइं चीज़ वहाँ से गायब हो गइं हो, तब उसने मुझे देखा।

वह लाल रोशनी उसके काम का हिस्सा थी? नहीं थी?

उसने धीरे से जवाब दिया, "क्या तुम नहीं जानते कि वह है?" उसकी स्थिर आँखों और मुर्दे जैसी शक्ल को देखकर मेरे मन में यह भयानक ख्याल गया कि यह आदमी नहीं, कोई आत्मा है। बाद में भी मैं सोचता रहा कि उसके दिमाग मे कोई छूत की बीमारी तो नहीं थी।

मैं पीछे हटा, पर ऐसा करते समय मैंने उसकी आँखों में अपने प्रति एक अव्यक्त डर देखा। इससे मेरे दिमाग से वह डरावना ख्याल उड़ गया।

मैंने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा, "तुम मुझे ऐसे देख रहे हो, जैसे मुझसे डर रहे हो।"

उसने जवाब में कहा, "मुझे यह शक था कि मैंने पहले तुम्हें देखा है।'

"कहाँ?"

उसने उस लाल रोशनी की तरफ इशारा किया जिसे वह देख रहा था। "वहाँ?" मैंने पूछा।

गहरी नज़र से मुझे देखते हुए उसने बिना आवाज़ के "हाँ" कहा।

"भले आदमी, मैं वहाँ क्या करता? जो भी हो, भले ही तुम कसम खाओ, पर मैं वहाँ कभी नहीं गया।"

"मेरे ख्याल से मैं कसम खा सकता हूँ," वह बोला, "हाँ मैं निश्चित रूप से कसम खा सकता हूँ।"

मेरी तरह उसका व्यवहार भी ठीक हो गया। वह मेरे प्रश्नों का अच्छी तरह चुने हुए शब्दों में जवाब देने लगा। क्या उसे वहाँ बहुत काम करना पड़ता था? हॉं, मतलब जिम्मेवारी बहुत थी; उससे पूरी सावधानी की उम्मीद की जाती थी—और असली काम, मतलब शारीरिक श्रम—नहीं के बराबर था। सिगनल बदलना, रोशनी ठीक रखना, बीच-बीच में उस लोहे के हैंडल को घुमाना, सिर्फ यही करना पडता था। मुझे अकेलेपन के घंटे बहुत लम्बे लगते थे, जबकि वह उसके जीवन की दिनचर्या थी, उसे उसकी आदत पड़ गई थी। उसने अपने आपको यहाँ एक भाषा सिखाई थी जिसे वह देखकर जानता था, और अपने अनगढ़ विचारों को उच्चारण देता था। उसने दशमलव और भाग आदि पर थोड़ा काम किया था और थोड़ा बीजगणित भी करने की कोशिश की थी पर हिसाब में वह बचपन से ही कमज़ोर था। क्या काम के वक्त उसे हमेशा उस सीली हवा में रहना ज़रूरी था, क्या वह उन ऊँची पत्थर की दीवारों के बीच से होकर धूप में नहीं जा सकता था? वह समय और परिस्थिति पर निर्भर करता था। कभी रेल की लाइन पर कम और दूसरों के नीचे ज्यादा काम होता था तो कभी कम। और यही बात दिन-रात के घण्टों के बारे में थी। जब मौसम

खुला होता था, तब वह इन परछाइयों से ऊपर उठने का मौका निकालता था; पर किसी भी वक्त बुलावे के लिए बिजली की घण्टी बज़ सकती थी। इसलिए आराम कम और दुगुनी चिन्ता रहती थी कि आवाज़ सुनाई देगी या नहीं।

वह मुझे अपने कमरे में ले गया। वहाँ आग जल रही थी, एक मेज़ थी, जिस पर ऑफिस की कॉपी थी, जिसमें कुछ भर्तियाँ की हुई थीं। एक तार देने की मशीन थी जिसमें डायल, सुइयाँ आदि थीं। और वह छोटी घण्टी थी जिसके बारे में उसने बताया था। मेरे यह कहने पर कि वह मुझे माफ करे पर मेरे विचार में वह उस जगह के लिए बहुत शिक्षित था (मुझे आशा थी कि वह यह कहने पर नाराज़ नही था) उसने जवाब दिया कि ऐसा अकेलापन बहुत कम पसन्द किया जाने पर भी होता था। उसने सुना हुआ था कि कई काम की जगहों पर, पुलिस में, यहाँ तक कि फौज में भी ऐसा मिलता था; और यह भी कि वह जानता था कि कम हो या ज्यादा ऐसा रेलवे कर्मचारियों में भी मिलता था। वह बता रहा था कि जब वह छोटा था (उस कमरे में बैठकर मेरे लिए यह मानना मुश्किल था) तब भौतिक विज्ञान का छात्र था और उस पर भाषण भी सुनता था, पर वह बिगड़ गया और मौको का दुरुपयोग करने लगा, फिर गिरा तो गिरता गया और दुबारा उठ नहीं पाया था। किन्तु इस बात की उसे कोई शिकायत नहीं थी, उसने जो बिस्तर बिछाया उसी पर उसे सोना था। दूसरा बिछाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। मैं जो कुछ यहाँ लिख रहा हूँ, उसने वह सब बड़े शान्त ढंग से मुझे और आग को देखते हुए बताया। बीच-बीच में वह 'सर' शब्द का प्रयोग करता था, खासकर जब अपनी जवानी की बात बताता था। ऐसा लग रहा था कि वह मुझे यह समझाना चाहता था कि जैसा वह दिख रहा था उससे ज्यादा वह मुझे दिखाना नहीं चाहता था। बीच-बीच में वह घण्टी बाधा डाल रही थी। उसे सन्देश पढ़कर जवाब देने पड़ते थे। एक बार उसे दरवाजे के बाहर खड़े होकर झंडी भी हिलानी पड़ी क्योंकि कोई ट्रेन निकल रही थी, उसने ड्राइवर से बात भी की। मैंने देखा कि वह अपने काम में पूरी तरह सावधान था, अपनी बात को बीच में ही रोककर पहले अपना काम पूरा करता था।

संक्षेप में कहूँ तो मैं उसे अपने काम में सबसे सही मानता, पर एकाध बार वह मुझसे बात करते करते अचानक रुक गया। उसका रंग उतर गया। घण्टी के बिना बजे भी उसने अपना चेहरा उस तरफ घुमा लिया, कमरे का दरवाज़ा खोला (दरवाज़ा उस अस्वस्थ सीलन को बाहर रोकने के लिए बन्द रखा हुआ था) और गुफा के प्रवेश के पास वाली लाल रोशनी को देखने लगा। दोनों मौकों पर जब वह वापस आग के पास आया तो उसके चेहरे पर कुछ ऐसा अवर्णनीय भाव होता था जिसे मैं बता नहीं सकता हालाँकि हम दूर दूर थे।

जब मैं जाने के लिए खड़ा हुआ तो मैंने कहा, "तुम्हें देखकर मैं यह सोचने को मजबूर हूँ कि तुम सन्तुष्ट हो।"

(मुझे यह मानना पड़ेगा कि मैंने ऐसा उसे उकसाने के लिए कहा)

उसने पहले जैसी धीमी आवाज़ में कहा, "पहले मैं था, पर अब मैं परेशान हूँ, सर, मैं परेशान हूँ।"

अगर सम्भव होता तो वह अपने शब्द वापस ले लेता, पर अब वह कह चुका था और मैंने उन्हें झट से पकड़ लिया।

"क्यों? तुम्हारी मुश्किल क्या हैं?"

"सर, कहना मुश्किल है। बहुत मुश्किल है। अगर आप फिर कभी मेरे पास आओगे, तो मैं बताने की कोशिश करूँगा।"

"मैं जल्दी ही आने की सोच रहा हूँ। कहो कब आऊँ?"

"मैं सुबह जल्दी निकल जाता हूँ। रात को दस बजे से ड्यूटी पर आ जाता हूँ।"

"मैं ग्यारह बजे आऊँगा।"

उसने मुझे धन्यवाद दिया और मेरे साथ दरवाजे तक आया। फिर बड़ी ख़ास धीमी आवाज़ में कहा, "मैं आपको सफेद रोशनी दिखाऊँगा, ताकि आपको ऊपर का रास्ता मिल जाए। जब मिल जाए तो आप पुकारना नहीं। ऊपर पहुँचकर भी आवाज नहीं देना!"

उसके व्यवहार से वह जगह और भी सर्द लगने लगी ; पर मैंने 'अच्छा' के अलावा कुछ नहीं कहा।

"जब कल रात को आएँगे तब भी आवाज़ मत दीजिएगा! जाते जाते मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ आज रात आपने चिल्लाकर ऐसा क्यों कहा, "हलो! वहाँ नीचे!"

मैंने कहा, "भगवान जाने! मैंने वैसा कुछ कहा तो था—"

"वैसा कुछ नहीं, सर यही शब्द थे। मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

"मैं मानता हूँ कि यही शब्द थे, मैंने वे इसलिए कहे थे क्योंकि मुझे तुम नीचे दिखे थे।

"और किसी वजह से नहीं?"

"और क्या वजह हो सकती थी?"

"आपको ऐसा नहीं लगता कि आप तक वे शब्द दैवी रूप में भेजे गए?"

"नहीं।"

उसने मुझसे 'शुभरात्रि' कही और अपनी रोशनी ऊँची की। मैं तब तक पटरियों के किनारे किनारे चलने लगा जब तक कि रास्ता नहीं मिला (मुझे बराबर यह लग रहा था कि मेरे पीछे से ट्रेन आ रही है) चढ़ना उतरने से ज्यादा आसान रहा और मैं बिना किसी परेशानी के अपनी सराय तक पहुँच गया।

अगली रात, कहे हुए वक्त पर पाबन्दी के साथ पहुँचने के लिए मैंने जब

उस टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर पहला कदम रखा तब दूर घड़ी में ग्यारह के घण्टे वजे थे। वह नीचे मेरा इन्तज़ार कर रहा था, उसकी सफेद रोशनी जल रही थी जब मैं उसके पास पहुँचा तब मैंने कहा "मैंने आवाज़ नहीं लगाई थी पर क्या मैं अब बोल सकता हूँ?"

"जरूर सर"

"शुभ रात्रि। यह रहा मेरा हाथ।"

"शुभ रात्रि, सर। और यह रहा मेरा हाथ।"

इसके बाद हम एक दूसरे के साथ चलते हुए उसके कमरे तक पहुँचे, घुसे, दरवाज़ा बन्द किया और आग के पास बैठ गए।

जैसे ही हम बैठे, उसने आगे झुककर, फुसफुसाहट से थोड़ी ऊँची आवाज मे कहा, "मैंने सोच लिया है सर कि आपको दुबारा पूछना नहीं होगा कि मुझे क्या परेशानी है। मैंने कल शाम आपको कोई और समझा था। इसी से परेशान था।"

"उस गलती से।"

"नहीं, उस किसी और से।"

"वह कौन है?"

"मैं नहीं जानता"

"वह मेरे जैसा है?"

"मैं नहीं जानता। मैंने उसका चेहरा कभी नहीं देखा। बाई बाँह चेहरे के ऊपर थी और दाई बाँह वह ज़ोर से हिला रहा था। ऐसे! मैंने अपनी आँखों से उसे एक बॉह से इशारा करते देखा। वह उसे पूरे ज़ोर से हिला रहा था, 'भगवान के लिए। रास्ता साफ कर दो!' वह आदमी फिर बोला, 'वह एक चाँदनी रात थी। मैं यहाँ बैठा था कि मैंने एक आवाज़ सुनी, 'हलो! वहाँ नीचे!' मैं चौंक उठा, और दरवाजे के बाहर देखा, कोई आदमी गुफा के पास वाली लाल रोशनी के साथ खड़ा हुआ वैसे ही बाँह हिला रहा था जैसे मैंने अभी दिखाई है। चिल्ला-चिल्ला कर उसकी आवाज भर्रा गई थी। वह फिर चिल्लाया, 'देखो! उधर देखो!' और फिर बोला, 'हलो! वहाँ नीचे! उधर देखो!' मैंने अपना लैंप उठाया, उसे लाल रोशनी पर किया, उस आकृति की तरफ दौड़ा और पूछा, 'क्या परेशानी है? क्या हुआ? कहाँ?' वह गुफा के बाहर अँधेरे में खड़ा था। मैं उसके बिल्कुल पास पहुँच गया पर फिर भी वह बाँह से आँखे ढके खड़ा था। मुझे अचरज हुआ। मैंने और पास जाकर उसकी बाँह हटाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि वह गायब हो गया।"

मैंने पूछा, "गुफा में?"

"नहीं, मैं गुफा में पाँच सौ गज तक उसके पीछे भागता रहा। मैं रुका, अपनी रोशनी ऊँची उठाई और एक निश्चित दूरी पर वह आकृति देखी, दीवारों पर महराब के बीच से बहकर आ रहे पानी के गीले निशान थे। मैं जितनी तेज़ी से अन्दर गया

था, उससे ज्यादा तज़ी से बाहर निकल आया क्योंकि मुझे उस जगह से नफरत थी मैंने अपनी रोशनी से उस लाल रोशनी के आस पास देखा, फिर मैं लोहे की सीढी से चढ़कर ऊपर की गैलरी तक गया, बाद में नीचे आया, और यहाँ तक भागता हुआ आया। मैंने दोनों तरफ तार दिए। 'अलार्म दिया गया था, क्या कुछ गड़बड है?' दोनों ओर से जवाब आया, 'सब ठीक है।'

मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी पर एक बर्फीली उँगली का धीमा स्पर्श महसूस हो रहा था। पर उसे नकारते हुए मैंने उस आदमी से कहा कि वह आकृति उसकी नजर का धोखा भी तो हो सकता है। बीमारी से कमज़ोर नाड़ियों के कारण दुखी मरीजों को कई बार नज़र में ऐसा धोखा हो जाता है। कुछ लोग तो अपनी बीमारी को समझकर अपने ऊपर प्रयोग द्वारा यह प्रमाणित भी कर चुके हैं। मैंने कहा, "काल्पनिक आवाज़ का तो यह है कि यहाँ इस अस्वाभाविक घाटी में जहाँ हम बोल भी इतना धीरे से रहे हैं, चाहो तो हवा की आवाज़ को भी सुन सकते हो, तार के तारों की आवाज़ को वाद्य की तरह बजता सुन सकते हो।"

वह वापस गया। थोड़ी देर तक हम बैठकर आवाजें सुनते रहे फिर वह बोला, "वह सब ठीक है, बहुत बार लम्बी सर्दियों की रातें वहाँ अकेले बिताने के कारण वह हवा और तारों की आवाजें सुन चुका था पर अभी उसकी बात खत्म नहीं हुई थी।

मैंने उससे माफी माँगी। उसने मेरी बाँह छूते हुए ये शब्द जोड़े, "उसके दिखने के छः घन्टे बाद इस लाइन पर वह भयानक दुर्घटना हुई और दस घंटे के अन्दर गुफा से मुर्दे और घायल ठीक उसी जगह लाए गए जहाँ वह आकृति खड़ी थी।"

मुझमें एक अवांछनीय सिहरन दौड़ गई पर मैंने उसे दबाने की कोशिश की। उससे मैंने कहा कि इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि यह एक अदभुत संयोग था, जिसका उसके दिमाग पर गहरा असर पड़ा। पर ऐसे संयोग बार-बार नहीं होते, यह हमें ध्यान में रखना चाहिए। मुझे लगा कि वह मेरी बात काटने वाला है। पर मैने जोड़ा कि समझदार लोग जीवन में ऐसे संयोगों को महत्त्व नहीं देते।

उसने फिर विनती करते हुए कहा कि उसकी बात पूरी नहीं हुई है। मैंने फिर उससे बीच में टोकने के लिए माफी माँगी।

उसने फिर मेरी बाँह पर हाथ रखा और अपने कन्धे के ऊपर खोखली नज़र से देखते हुए बोला, "यह एक साल पहले की बात है। छः या सात महीने बीते थे। मैं आश्चर्य और परेशानी से उबर आया था। तभी एक सुबह दिन निकलने वाला था, मैं दरवाजे पर खड़ा हुआ उस लाल रोशनी को देख रहा था कि मैंने फिर वही प्रेतच्छाया देखी।" वह रुक गया और मुझे पथराई नज़र से देखने लगा।

"क्या वह चिल्लाई?"

"नहीं, वह मौन थी।"

"क्या उसने बाँह हिलाई?"

"नहीं, उसने रोशनी की किरण का सहारा लिया हुआ था, दोनों हाथ चेहरे के सामने थे ऐसे।"

मैंने फिर एक बार अपनी आँखों से उसकी मुद्रा को देखा। वह दुःख की मुद्रा थी। मैंने अक्सर कब्रों के ऊपर लगे पत्थरों पर ऐसे भाव खुदे देखे हैं।

"क्या तुम उसके पास गए?"

"मैं अन्दर आ गया और बैठ गया। मैं अपने विचारों को समेटना चाहता था, दूसरे मैं बेहोश होने को था। जब मैं फिर दरवाजे तक गया, तो दिन की रोशनी ऊपर जा चुकी थी और भूत जा चुका था।"

"फिर कुछ हुआ? इसके बाद तो कुछ नहीं हुआ?"

उसने दो-तीन बार अपनी तर्जनी से मेरी बाँह छुई और हर बार बड़े भयानक ढग से गरदन हिला रहा था। "उसी दिन जैसे ही एक ट्रेन गुफा से बाहर आयी, मैंने अपनी तरफ वाली एक डिब्बे की खिड़की में हाथों और सिरों को हड़बड़ाते देखा, तभी किसी ने अन्दर से हाथ भी हिलाया जैसे ही मैंने वह देखा मैंने ड्राइवर को रुकने का सिगनल दिया, उसने ट्रेन बन्द करके ब्रेक-लगाए पर तब तक ट्रेन यहाँ से डेढ़ सौ गज या कुछ ज्यादा दूर जा चुकी थी। मैं पीछे-पीछे भागा, जाते जाते मुझे भयानक चीखें और रोने की आवाज़ें सुनाई देती रहीं। किसी डिब्बे में एक सुन्दर युवती उसी वक्त मर गई थी। उसे यहाँ लाया गया, और यहाँ हमारे बीच की ज़मीन पर रखा गया।"

अनजाने में ही अपनी कुर्सी पीछे खिसकाते हुए मैं उन तख़्तों को देखने लगा जिनकी तरफ उसने इशारा किया था।

"सच सर, सच। मैं आपको बिल्कुल वही बता रहा हूँ जो हुआ था।"

मैं कुछ कहने की सोच भी नहीं पाया। मेरा मुँह बहुत सूख गया था। हवा और तार उस कहानी को लम्बी रोती चीख की आवाज़ में फैलाते रहे।

उसने फिर कहा, "अब सर, ध्यान देकर सुनिए और बताइये कि मेरा दिमाग कैसे परेशान है। वह छाया एक हफ्ते पहले फिर आई थी। तब से वह जब तब यहाँ आती रहती है।"

"रोशनी पर?"

"ख़तरे की रोशनी पर..."

"तुम्हें क्या लगता है कि वह क्या कह रही है?"

उसने पहले वाली मुद्रा और भी जोश और तेज़ी से दुहराई और कहा, "भगवान के लिए रास्ता साफ कर दो।"

फिर वह बोलता गया, "मुझे उसकी वजह से न शान्ति है न आराम। वह मुझे कई क्षणों तक दर्द भरी आवाज़ में पुकारती हैं, 'वहाँ नीचे! देखो! देखो!' वह

मुझे देखकर हाथ हिलाती है, मेरी छोटी घण्टी बजाती है..."

मैंने वहीं पकड़ लिया। "क्या कल शाम को जब मैं यहाँ था तब भी उसने घण्टी बजाई थी? क्या इसीलिए तुम दरवाज़े तक गए थे?"

"दो बार।"

मैंने कहा, "देखो, कैसे, तुम्हारी कल्पना तुम्हें गलत रास्ते पर ले जा रही है। मेरी आँखें घन्टी पर थीं। मेरे कान खुले थे। अगर मैं जीवित इन्सान हूँ तो उस वक्त वह नहीं बजी थी। नहीं और न ही किसी और वक्त, सिवाय तब के जब स्टेशन से तुम्हें सम्पर्क किया जा रहा था।"

उसने सिर हिलाया, "मैंने उस बारे में कभी गलती नहीं की, सर। मैंने कभी प्रेतच्छाया की घन्टी को इन्सान की नहीं समझा। भूत की घन्टी से इस घन्टी मे एक अजीब सी सनसनाहट होती है जो और किसी से नहीं होती। और मैंने यह नही कहा कि घन्टी आँख को हिलती हुई दिखती है। मुझे आपके न सुनने पर अचरज नही है। पर मैंने सुनी थी।"

"जब तुमने बाहर देखा तो वह प्रेतच्छाया थी?"

"थी।"

"दोनों बार?"

उसने दृढ़ता से कहा, "दोनों बार।"

"क्या तुम मेरे साथ दरवाज़े तक आकर फिर उसे देखोगे?"

उसने नीचे का होंठ काटा, जैसे कुछ अनिच्छुक हो, फिर उठा। मैंने दरवाजा खोला और सीढ़ी पर खड़ा हुआ। वह दरवाज़े में खड़ा था। ख़तरे की बत्ती थी। गुफा का मुँह उदास लग रहा था। पहाड़ से काटी गई ऊँची गीली पत्थर की दीवारे थी। ऊपर सितारे चमक रहे थे। मैंने उसके चेहरे को ख़ास तौर पर देखते देखते पूछा, "क्या वह दिख रही है?" उसकी आँखें बड़ी और थकी हुई लग रही थीं, पर उसी तरफ देखती मेरी आँखों से ज्यादा थकी नहीं हो सकती थीं।

"नहीं", उसने जवाब दिया, "वह वहाँ नहीं है।"

"मैं भी यही मानता हूँ", मैंने कहा।

हम अन्दर लौट गए। दरवाज़ा बन्द करके अपनी अपनी जगह बैठ गए। जब उसने सहज रूप से बातचीत शुरू की तब मैं सोच रहा था कि कैसे इस मौके का फायदा उठाऊँ। मैं ऐसा ज़ाहिर करना चाहता था कि हमारे बीच तथ्यों को लेकर कोई गम्भीर प्रश्न नहीं है और न ही मैं कमज़ोर स्थिति में हूँ।

वह बोला, "अब तक आप पूरी तरह समझ गए होंगे कि मुझे सबसे ज्यादा एक प्रश्न परेशान करता है और वह यह कि वह प्रेतच्छाया क्या कहना चाहती है?"

मैंने उससे कहा, "मैं ऐसा नहीं कह सकता कि मैं पूरी तरह सब समझ गया हूँ।"

वह सोचते हुए बोला, "वह किसके खिलाफ चतावनी दे रही है?" उसकी आँखें आग पर टिकी थीं, पर बीच बीच में मेरी तरफ मुड़ता था। "क्या ख़तरा है? कहाँ है? लगता है इस लाइन पर कहीं ख़तरा है। कोई भयानक दुर्घटना होने वाली है। पहले जो कुछ हो चुका है, उसके बाद तीसरी बार इस पर शक नहीं किया जा सकता। पर मेरे पीछे पड़ना क्रूरता है। मैं क्या कर सकता हूँ?"

उसने अपना रूमाल निकाला और तपते हुए माथे पर से पसीने की बूँदें पोंछी, "अगर मैं अपने दोनों तरफ या एक तरफ ख़तरे का तार भेजता हूँ तो उसका कारण क्या दूँ?" अपने हाथों की हथेलियाँ पोंछता हुआ वह बोलता रहा। मैं फायदा कुछ कर नहीं पाऊँगा बल्कि खुद परेशानी में पड़ जाऊँगा। वे सोचेंगे, मैं पागल हो गया हूँ। क्योंकि तार ऐसे जाएगा, "सन्देश–ख़तरा! ध्यान रखें!" जवाब होगा–कैसा ख़तरा? कहाँ?" सन्देशा–मैं नहीं जानता, पर भगवान् के लिए ध्यान रखो!" वे मुझे नौकरी से हटा देंगे। और कर भी क्या सकते हैं?"

उसकी दिमागी तकलीफ बहुत दुःखदायी थी। वह एक ईमानदार मेहनती इन्सान की दिमागी यातना थी जो जीवन से जुड़ी होते हुए भी समझ से परे होने के कारण असह्य थी।

अपने काले बालों को सिर पर पीछे करते हुए, हाथों को कनपटी पर ऐसे रखते हुए जैसे बहुत परेशान हो, वह कहता गया, "जब वह पहली बार ख़तरे की रोशनी के नीचे खड़ी थी तभी-क्यों नहीं बता दिया कि अगर दुर्घटना होनी है तो कहाँ होनी है? मुझे बताती क्यों नहीं कि उसे कैसे टाला जा सकता है–टाला जा सकता है या नहीं? दूसरी बार जब उसने चेहरा छिपाया तो छिपाने की जगह यह क्यों नहीं बताया कि एक युवती मर जाएगी, उसे उसके घर पर ही रोक लिया जाए? अगर दोनों मौकों पर वह प्रेतच्छाया केवल मुझे यह बताने आई थी कि उसकी चेतावनी सच है और वह मुझे तीसरी के लिए तैयार करना चाहती थी तो अब मुझे सीधे-सीधे सावधान क्यों नहीं करती? मैं, भगवान् मेरी मदद करें, इस अकेले स्टेशन पर एक मामूली सिगनलमैन हूँ! वह किसी ऐसे व्यक्ति के पास क्यों नहीं जाती जिस पर सब विश्वास करेंगे, जो कुछ करने की ताकत रखता है?"

जब मैंने उसे इस हाल में देखा तो मुझे लगा कि उस बेचारे आदमी के लिए और जनता की सुरक्षा के लिए मुझे उस समय उसका दिमाग शान्त करना चाहिए। अतः सच और झूठ के सारे प्रश्न अपने बीच से हटाकर मैंने उसे समझाया कि इन्सान को जो भी काम करना है, ठीक से करना चाहिए, इससे उसे यह शान्ति अवश्य मिलेगी कि उसने अपना काम समझा था, चाहे वह गड़बड़ करने वाले तत्त्वों को नहीं भी समझा हो। उसे समझाने और दोष भावना से उबारने की कोशिश में मै काफी सफल हुआ। वह शान्त हो गया। रात के साथ-साथ उसका काम भी बढ़ने लगा, मैं सुबह दो बजे उसके पास से लौट आया। मैं रात रहने को तैयार था पर

वह यह बात सुनना भी नहीं चाहता था।

मुझे यह छिपाने की बात नहीं लगती कि मैं जैसे-जैसे सड़क पर उतर रहा था, कई बार मुड़कर लाल बत्ती को देखता रहा। मुझे वह पसन्द नहीं थी। अगर मेरा बिस्तर उसके नीचे होता तो शायद मैं बहुत कम सो पाता। मुझे दोनों दुर्घटनाओं का क्रम, उस लड़की का मरना ठीक नहीं लगा, और इसे छिपाने का कोई फायदा नही है।

पर मेरे विचारों में सबसे जयादा यह बात थी कि इस रहस्य को जानने के बाद मेरा क्या कर्त्तव्य है? मैं यह प्रमाणित कर चुका था कि वह आदमी बुद्धिमान, सजग, कष्ट उठाने को तैयार और सही था, पर उस मनःस्थिति में वह कब तक वैसा रह सकता था? पद की दृष्टि से नीचे होते हुए भी उसका काम महत्त्वपूर्ण और विश्वास का था। क्या मैं अपना जीवन उसके सही काम करते रहने की सम्भावना पर छोड़ सकता हूँ?

मुझे लगा कि अगर मैं उसके ऊँचे अधिकारियों को उसकी बताई बात बता दूँ तो उसके साथ धोखा होगा। मुझे पहले उसी से सीधे बात करके कोई बीच का रास्ता निकालना चाहिए। आखिर मैंने उसका यह समाधान निकाला कि मैं (अभी उसका रहस्य अपने तक रखूँगा) उसके साथ उधर ही की तरफ के किसी अच्छे डॉक्टर के पास जाकर उसकी राय लूँगा। उसने मुझे बताया कि अगली रात उसकी ड्यूटी बदल जाएगी। सूर्योदय के घण्टे दो घण्टे बाद से सूर्यास्त तक वह खाली होगा। मैंने उसी हिसाब से लौटने का तय किया।

अगली शाम एक सुन्दर शाम थी। मैं जल्दी घूमने के लिए निकल पड़ा, ताकि उसका आनन्द ले सकूँ। जब मैं खेतों से होता हुआ उस गहरे काट के ऊपर पहुँचा, तब भी सूरज डूबा नहीं था। मैंने अपने आप से कहा कि मैं एक घण्टा और घूमूँगा। आधा घन्टा आने का और आधा घन्टा जाने का—तब तक सिगनल मैन के कमरे पर जाने का वक्त हो जाएगा।

सैर शुरू करने से पहले मैं किनारे तक गया और मशीनी तौर पर नीचे झाँका जहाँ मैंने पहली बार उसे देखा था। जब मैंने गुफा के मुँह पर एक आदमी को बाईं बाँह आँखों पर रखकर दाँई बाँह तेजी से हिलाते हुए देखा तो जो रोमांच हुआ उसका मै वर्णन भी नहीं कर सकता।

जो अनजाना डर मुझे आतंकित कर रहा था वह पलभर में दूर हो गया, क्योंकि उस पल में ही मैंने देख लिया कि वह एक आदमी ही था। उससे थोड़ी दूर पर दूसरे आदमियों का एक दल खड़ा था। ऐसा लगा कि वह उस दल के लिए अपने इशारों की रिहर्सल कर रहा था। खतरे की बत्ती अभी जली नहीं थी। बत्ती के खम्भे के पास एक छोटी नीची बिस्तर के नाप की लकड़ी और तिरपाल के सहारे बनी झोपड़ी थी जो मेरे लिए बिल्कुल नई थी।

मुझे लगा, कुछ गड़बड़ हो गई है। मेरे मन में अपने प्रति शर्म और डर कौंध गया, कि मैं उस आदमी को वहाँ अकेला छोड़ गया था। लगा कि यह बहुत बुरा भयानक काम हो गया। मुझे लगा कि मैंने किसी को उसे देखने और यह जाँचने के लिए नहीं भेजा कि वह अपना काम ठीक कर रहा है या नहीं। इसी से दुर्घटना हुई होगी। उस तंग रास्ते पर मैं जितनी जल्दी उतर सकता था, उतरा।

"क्या हुआ है?" मैंने उन आदमियों से पूछा।

"सर, आज सुबह सिगनल मैन मारा गया।"

"वह आदमी तो नहीं जो उस कमरे में रहता था?"

"हाँ, सर।"

"वह तो नहीं, जिसे मैं जानता था?"

"अगर आप जानते थे, तो आप पहचान लेंगे, सर।" सबकी तरफ से बोलने वाले आदमी ने कहा और तिरपाल का एक कोना उठाया, "क्योंकि उसका चेहरा एकदम शान्त है।"

"ओह! ऐसा कैसे हुआ? कैसे हुआ?" मैंने एक आदमी से दूसरे की तरफ जाते हुए पूछा।

"वह एक इंजन से कट गया, सर। इंग्लैंड में कोई भी उस आदमी की तरह अपना काम नहीं जानता था। पर न जाने कैसे वह पटरी से दूर नहीं था। दिन का वक्त था। उसने बत्ती जलाई और लैम्प उसके हाथ में था। जैसे ही इंजन गुफा से बाहर गया, उस आदमी की इंजन की तरफ पीठ थी और उसने उसे काट दिया। जो आदमी चला रहा था, वह बता रहा था कि कैसे सब हुआ। टॉम, इनको भी दिखाओ।"

उस आदमी ने गहरे रंग के कपड़े पहने हुए थे। वह वापस गुफा के मुँह तक गया।

"गुफा के मोड़ पर आते ही, आखिर की तरफ वह मुझे दिखा, जैसे मुझे शीशे मे दिख रहा हो। गति कम करने का समय नहीं था। मैं जानता था कि वह बहुत सावधान आदमी था। मैंने इंजन बन्द कर दिया क्योंकि लगा कि वह सीटी की आवाज की परवाह नहीं कर रहा था। इंजन उसकी तरफ दौड़ा जा रहा था, मैं जितनी ज़ोर से चिल्ला सकता था चिल्ला रहा था।"

"तुम क्या कह रहे थे?"

वह बोला, मैंने कहा, "वहाँ नीचे! देखो, देखो! भगवान् के लिए रास्ता साफ कर दो!'

मैं चौंक उठा।

"आह सर, वह भयानक समय था। मैंने चिल्लाना बन्द नहीं किया। मैंने यह बाँह आँखों के ऊपर ढक ली क्योंकि मैं देखना नहीं चाहता था, और आखिर तक

ग्रह बाँह हिलाता रहा, पर कोई फायदा नहीं हुआ।

इस विवरण को लम्बा किए बिना, उन विचित्र परिस्थितियों की बात किए बिना मैं यह संयोग बताते हुए बन्द करता हूँ कि इंजन ड्राइवर की चेतावनी में सिर्फ वही शब्द नहीं थे जो उस अभागे सिगनलमैन ने बताए थे कि उसको तंग कर रहे थे बल्कि वे शब्द भी थे, जो उसने नहीं मैंने अपने दिमाग में जोड़े थे और वे इशारे भी थे जिनकी उसने नकल उतारी थी।

एक अजीब डरावना पलंग

विल्की कॉलिन्स

कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म होने के कुछ ही समय बाद मैं अपने एक अंग्रेज़ मित्र के साथ पेरिस में रह गया था। उस वक्त हम दोनों युवा थे। सैर के लिए आकर उस मस्ती भरे शहर में हम बेलगाम जीवन जी रहे थे। एक रात रॉयल पैलेस के पास हम खाली वक्त में यह सोच रहे थे कि अगला मनोरंजन क्या हो। मेरे दोस्त ने फ्रास्काती जाने का सुझाव दिया। पर वह मुझे पसन्द नहीं आया। फ्रास्काती के बारे मे मैं फ्रांसीसी कहावत के अनुसार, सब कुछ जानता था; मैंने वहाँ पाँच फ्रैंक के खेल में कई बार हार जीत झेली थी। पहले मैं केवल मनोरंजन के लिए जाता था। पर जल्दी ही वह सिर्फ मनोरंजन नहीं रहा; सच पूछो तो मैं एक इज्जतदार जुआघर जैसी सामाजिक असंगति की भयानक सम्माननीयता से तंग आ चुका था। मैंने अपने दोस्त से कहा,."भगवान् के लिए किसी ऐसी जगह चलो जहाँ थोड़ा सच्चा, बदमाशी ओर गरीबी वाला खेल देख सकें, जहाँ झूठी दिखावे की चमक न हो। इस फैशनेबुल फ्रास्काती से हटकर एक ऐसे घर में चले जहाँ मामूली फटे कोट वाले या बिना कोट वाले, चिथड़ों में या दूसरी तरह के आदमियों को आने देने मे एतराज़ न हो।" "ठीक है," मेरे दोस्त ने कहा, "तुम जैसे लोगों का साथ चाहते हो उसके लिए हमें रॉयल पैलेस से बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। बिल्कुल हमारे सामने वैसी बदमाशी से भरी जगह है। खबरों से लगता है यह वैसी ही जगह है जैसी तुम चाहते हो।" एक मिनिट में हम दरवाज़े पर पहुँचे और उस घर में घुस गए।

ऊपर पहुँकर हमने अपने हैट और छड़ी दरबान को दिए। हम मुख्य जुए के कमरे में घुसे। वहाँ बहुत आदमी नहीं थे, पर जो थे उन्होंने ऊपर नज़र कर हमे देखा। वे सब तरह के—अलग-अलग वर्ग के लोग थे।

हब बदमाशों को देखने आए थे, पर ये आदमी और भी बुरे थे। सब बदमाशो

मे थोड़ा या बहुत मज़ाकिया पक्ष भी होता है जिसकी सब प्रशंसा करते हैं—पर यहाँ केवल त्रासदी थी—मौन भयानक त्रासदी। कमरे का सन्नाटा भयानक था, एक दुबला-पतला, मलिन, लम्बे बालों वाला जवान आदमी था, जिसकी धँसी हुई आँखे बडी तेज़ी से पत्तों का फेंटना देख रही थीं, वह कुछ बोल नहीं रहा था; एक मोटा मोटे मुँह वाला, चेहरे पर दानों वाला खिलाड़ी था जो अपने सामने वाले ताशों को लगातार खींचे जा रहा था, वह देखना चाहता था कि कितनी बार काला जीत रहा है और कितनी बार लाल,—पर वह भी बोल नहीं रहा था; एक गिद्ध जैसी आँखो वाला, गन्दा, झुर्रियोंदार आदमी था जिसने रफू किया हुआ लम्बा कोट पहना हुआ था, जो अपना आखिरी रुपया भी खो देने के कारण खेल नहीं सकता था, पर निराशा के साथ देख रहा था—वह भी एक बार भी नहीं बोला, कमरे के वातावरण में जुआरियो के खजान्ची की आवाज़ अजीब तरह से नीरस और भारी सी लग रही थी। मैं वहाँ हँसने आया था, पर मेरे सामने का दृश्य रोने लायक था। मुझे लगा कि जो मन की उदासी मुझ पर हावी हुई जा रही है उससे उबरने के लिए कुछ उत्तेजनापूर्ण करना होगा। दुर्भाग्य से मैं साथ वाली मेज़ पर जाकर खेलने लगा। जैसा कि बाद में होने वाली घटनाओं ने सिद्ध किया, और भी बदकिस्मती यह हुई कि मैं तेज़ी से, अविश्वसनीय और असाधारण ढंग से जीतने लगा। रोज के खिलाड़ी मेरे चारों तरफ भीड लगाकर खड़े हो गए और भूखी तथा अन्धविश्वासपूर्ण नज़रों से मेरी हर बाजी को घूरते हुए एक दूसरे से फुसफसाकर कहने लगे कि यह अजनबी अंग्रेज़ बैंक तोड देगा।

रूज़-ए-न्वार* खेला जा रहा था। मैं यूरोप के हर शहर में यह खेल खेल चुका था, पर जुआरियों के लिए जो संयोग का सिद्धान्त पारसमणि है, उसके अध्ययन की चिन्ता या इच्छा के बिना खेलता रहा। सही माने में मैं एक जुआरी नहीं रहा। मेरा दिल खेल के नष्ट करने वाले जोश से आज़ाद था। मेरा खेल केवल खुशी के लिए होता था। मैं कभी पैसों की ज़रूरत की वजह से खेलने नहीं गया, क्योंकि मै नहीं जानता था कि पैसा चाहना क्या होता है। मैं कभी लगातार इतना नहीं खेलता था कि इतना हार जाऊँ जो बरदाश्त न कर सकूँ या इतना जीतूँ कि चुपचाप जेब मे रखने के बजाय खुशकिस्मती मेरा सन्तुलन बिगाड़ दे। संक्षेप में मैं जुए की मेज पर कई बार गया—पर वैसे ही जैसे बॉल रूम या ऑपेरा हाउस जाता हूँ—क्योंकि उनसे मुझे आनन्द मिलता था और क्योंकि खाली वक्त में मेरे पास करने के लिए इससे बेहतर कोई काम नहीं था।

पर यह मौका अलग था—अपने जीवन में पहली बार मैं खेल की लालसा को

---

* ताशों से खेला जाने वाला जुआ, जो ऐसी मेज़ पर खेला जाता है जिस पर दो लाल और दो काले ईंट के आकार की जगह बनी होती है जिस पर खिलाड़ी अपना दाँव रखते हैं।

महसूस कर रहा था। शुरू मे मेरी जीत ने मुझ घबराहट मे डाल दिया था, पर फिर बिल्कुल सही अर्थ लिया जाए तो मुझे एक नशे से भर दिया। यह अविश्वसनीय लगेगा, पर मैं जब-जब संयोग और पिछले हिसाब को ध्यान में रखकर खेलता, तब हार जाता था और जब बिना कुछ सोचे, सब कुछ किस्मत पर छोड़कर बाज़ी लगाता तब निश्चित रूप से जीतता था—चाहे हर सम्भावना बैंक के पक्ष में होती थी। शुरू मे कुछ मौजूद लोगों ने अपना रुपया सावधानी के साथ मेरे ढंग से लगाया, पर मैने जल्दी ही दाँव इतना बढ़ा दिया कि लोग उतने रुपये लगाने का खतरा नहीं लेने के कारण हटते गये। एक के बाद एक ने खेलना बन्द कर दिया और साँस रोककर मेरा खेल देखने लगे।

और मैं, वक्त के साथ, दाँव ऊँचा करता गया और जीतता गया। कमरे मे उत्तेजना की गर्मी बढ़ती गई। कमरे की चुप्पी लोगों के अपनी-अपनी अलग भाषाओं मे कसमें खाने और ताज्जुब व्यक्त करने से टूटने लगी, हर बार जब मेज़ पर मेरी तरफ रुपये खिसकाए जाते रहे—तो अब तक अविचलित खजांची ने मेरी जीत पर आश्चर्य के आवेग में अपना पंजा ज़मीन पर दे मारा। पर एक आदमी अब भी सयमित था और वह मेरा दोस्त था। वह मेरे पास आया और अंग्रेजी में फुसफुसाकर बोला कि जितना जीत चुका हूँ उससे सन्तुष्ट होकर उस जगह को छोड़ दूँ। उसके प्रति न्याय करते हुए मुझे यह मानना पड़ेगा कि उसने अपनी चेतावनी और खुशामद बार-बार दुहराई। यहाँ तक कि उस रात उसके लिए मुझसे बात करना असम्भव हो चुका था (मैं तो हर तरह से जुए के नशे में डूब चुका था) मेरे उसकी सलाह न मानने पर वह मुझे छोड़कर चला गया।

उसके जाने के कुछ ही देर बाद मेरे पीछे एक भर्राई सी आवाज़ चिल्लाई 'सर, मुझे इजाज़त दीजिए कि आपके जो दो नेपोलियन* (सिक्के) गिर गए हैं, उन्हें उनकी जगह रख दूँ। सर, आपकी किस्मत बड़ी अच्छी है! मैं पुराना सैनिक होने के नाते आपसे कसम खाता हूँ कि अपने इतने लम्बे अनुभव में मैंने आप जैसी किस्मत नही देखी! कभी नहीं! चलते जाइए सर, हिम्मत से खेलते जाइए और बैंक तोड़ दीजिए।''

मैं घूमा और देखा, एक लम्बा आदमी चुन्नटवाला बटन लगा ओवरकोट पहने बड़ी विनम्रता से मुझे देखकर सिर हिलाता हुआ मुस्करा रहा था।

अगर मैं अपने होश में होता तो उसे एक सन्देहपूर्ण व्यक्ति के रूप में सोचता। उसकी बाहर निकली हुई टकटकी बाँधकर देखती लाल आँखें, रूसी मूँछें और टूटी नाक थी। उसकी आवाज़ खिलाड़ियों को उकसाने वाली भद्दी आवाज़ थी।

उसके हाथों जैसे गन्दे हाथ मैंने कभी फ्रांस तक में नहीं देखे थे। पर उसके व्यक्तित्व की ये छोटी-छोटी विशिष्टताएँ मुझमें विरक्ति पैदा नहीं कर रही थीं...उस

---

* 20 फ्रैंक

लापरवाह जीत के पागल उन्माद के पलों में जो भी मुझे खेलने को उकसा रहा था मै उससे दोस्ती के लिए तैयार था। मैंने बूढ़े सैनिक की दी हुई सुँघनी ली, उसकी पीठ पर हाथ मारा और कसम खाते हुए कहा कि वह मुझे मिलनेवाला संसार का सबसे ईमानदार व्यक्ति और महान् सेना की भव्य निशानी था। "चलते जाइए।" मेरे सैनिक दोस्त ने उत्तेजना में उँगली चटकाते हुए कहा—"चलिए और जीतिये। बैंक का दीवाला निकलवा दीजिए। मेरे वीर अंग्रेज़ दोस्त, दीवाला निकलवा दीजिए।"

और मैं चलता गया—इस रफ्तार से चला कि पन्द्रह मिनिट में खजांची ने आवाज दी . "लोगो आज रात के लिए बैंक बन्द होता है।" बैंक का पूरा रुपया और सोना मेज पर मेरे हाथों के नीचे था, उस जुआघर में जितना धन था, सब मेरी जेबो मे आ गया।

जैसे ही मैंने ढेर में हाथ लगाया, बूढ़ा सैनिक बोला, "सर, जेब से रूमाल निकालकर सब पैसा बाँध लीजिए, ऐसे ही जैसे हम सेना में अपने लिए खाना बॉध लेते थे। आपकी जीत का धन किसी भी पैंट की जेब के लिए भारी होगा। यह हो गया!—सब भर लो नोट भी! रुको! एक और नेपोलियन ज़मीन पर पड़ा है अब सर, आपकी आज्ञा से दोनों तरफ कसकर दुहरी गाँठ लगा देते हैं, बस पैसा सुरक्षित हो गया। इसे छुइए! छुइए किस्मत वाले महाशय! यह एक गोले की तरह गोल और सख्त है—आह, काश उन्होंने ऐसे गोले हम पर आस्ट्रलिट्ज़* में फेंके होते! और अब एक पुराने तोपची के नाते, फ्रांसीसी सेना के पहले सैनिक के नाते मेरे लिए क्या करना बचा है? मैं पूछता हूँ क्या? केवल यह कि अलग होने से पहले मैं अपने माननीय अंग्रेज मित्र से अपने साथ शैम्पेन की एक बोतल पीने को कहूँ, हम किस्मत की देवी के नाम पर झाग-भरे गिलासों से पीएँ!"

"बहुत बढ़िया भूतपूर्व वीर! खुशमिजाज़ पुराने जुआरी! निश्चित रूप से शैम्पेन! एक पुराने सैनिक के लिए अंग्रेज़ी खुशी! हुर्रे! हुर्रे! किस्मत की देवी के नाम पर एक अंग्रेज की वाहवाही! हुर्रे! हुर्रे! हुर्रे! आओ अंग्रेज़ खुशी से भरपूर, शालीन अंग्रेज जिसकी नसों में फ्रांस का जोशीला खून बहता है! एक और गिलास दूँ? बोतल खाली हो गई? कोई परवाह नहीं! पुराने सैनिक, एक और बोतल मँगवाओ, साथ में आधा पाउंड मिठाई भी।"

"नहीं नहीं, भूतपूर्व वीर, कभी नहीं—पुराने तोपची! पिछली बार तुम्हारी बोतल, अब मेरी। इसे देखो! पीओ! फ्रांसीसी सेना! महान् नेपोलियन! यह साथ! खजांची! ईमानदार खजांची की पत्नी और बेटियाँ—अगर हैं तो! स्त्रियाँ! दुनियाभर!"

जब तक शैम्पेन की दूसरी बोतल ख़त्म हुई, मुझे लगा जैसे मैं आग पी रहा

---

* 1805 में नेपोलियन ने रशियन और ऑस्ट्रलियन सेना को यहीं हराया था। यह चेकोस्लोवाकिया का एक शहर है।

था—मेरा दिमाग जलने लगा। इससे पहले मेरे जीवन में ज्यादा शराब पीने का ऐसा असर कभी नहीं हुआ था। क्या मेरे बहुत उत्तेजित होने के कारण शराब ने मुझे और भड़का दिया था? क्या मेरा पेट विशेष रूप से खराब हो रहा था? या शैम्पेन ही ज्यादा तेज़ थी?

उत्तेजना के पागलपन में मैं चिल्लाया, "फ्रांसीसी सेना के भूतपूर्व सैनिक, मुझमे आग लग गई है! तुम कैसे हो? मुझे तो तुमने जला दिया है। ऑस्टरलिट्ज़ के हीरो, क्या तुम सुन रहे हो? हम शैम्पेन की तीसरी बोतल मँगाते हैं जिससे यह आग बुझे।"

उस बूढ़े सैनिक ने अपना सिर हिलाया, लाल आँखें ऐसे घुमाईं कि मुझे लगा वे बाहर निकल आएँगी। अपनी गन्दी तर्जनी गन्दी टूटी नाक के पास रखी, गम्भीरता से बोला, "कॉफी" और फौरन अन्दर वाले कमरे की तरफ भागा।

उस अनुभवी सनकी द्वारा कहे गए शब्द का मौजूद लोगों पर जादू का सा असर हुआ। वे सब एक साथ जाने को उठ खड़े हुए। शायद वे मेरे नशे का फायदा उठाने की उम्मीद लगाए थे, पर यह जानने पर कि मेरा नया दोस्त कृपा करके मुझे नशे से उबारने की कोशिश कर रहा था, उन्हें मेरी जीत की खुशी से लगी उम्मीद छोडकर जाना पड़ा। उनका उद्देश्य कुछ भी हो, पर वे एक साथ चले गए। जब वह बूढ़ा सैनिक लौटकर मेज़ पर मेरे सामने बैठा, तब कमरे में सिर्फ हम थे। इस कमरे के बाहर खुलने वाले एक छोटे से कमरे में अकेला खजांची खाना खा रहा था। सन्नाटा पहले से और गहरा हो गया।

सहसा उस भूतपूर्व वीर में एक बदलाव आया। उसने अनिष्टकारी गम्भीर रूप धारण कर लिया था। जब वह फिर मुझसे बोला तो बातचीत में कसमों की सजावट नहीं थी, न ही वह उँगलियाँ चटका रहा था और न ही किसी आश्चर्यजनक शब्द का प्रयोग कर रहा था।

उसने रहस्यपूर्ण गोपनीय आवाज़ में कहा, "मेरे प्रिय सज्जन, सुनो, एक बूढे सैनिक की सलाह सुनो। मैं इस घर की मालकिन से मिलकर आया हूँ। बड़ी आकर्षक स्त्री है, खाना बनाने में प्रवीण है! मैंने उससे हम लोगों के लिए तेज़ कॉफी बनाने को कहा है। मेरे अच्छे दोस्त, घर जाने से पहले तुम्हें अपनी उत्तेजना कम करने के लिए कॉफी पीनी चाहिए। आज रात इतना पैसा लेकर घर जाने से पहले तुम्हें अपने होशोहवास ठीक करने चाहिए। बहुत लोगों ने आज रात तुम्हें इतने रुपये जीतते देखा है। वे सब अच्छे लोग हैं, पर इन्सान हैं और इन्सान में कमज़ोरियाँ हैं! क्या मेरे कुछ और कहने की ज़रूरत है? नहीं, नहीं! तुम मुझे समझ गए हो। अब तुम्हे यह करना चाहिए कि जब फिर से ठीक महसूस करने लगो तो एक मोटरकार बुआओ—अन्दर घुसते ही सारे शीशे चढ़ा लो और ड्राइवर से चौड़ी, रोशनी से भरी, भीड वाली सड़कों से होकर घर ले जाने को कहो। ऐसा करो तो तुम और तुम्हारा पैसा सुरक्षित रहेगा। और कल तुम इस बूढ़े सैनिक को एक ईमानदार सलाह देने

क लिए धन्यवाद दोग।''

जैसे ही उस भूतपूर्व सैनिक ने आँसू भरी आवाज में अपना भाषण ख़त्म किया, वैसे ही दो प्याले कॉफी आ गई। मेरे फिक्रमन्द दोस्त ने झुककर एक कप मुझे पकड़ाया। मै बहुत प्यासा था, एक घूँट में पी गया। प्रायः एकदम ही मुझे चक्कर आने लगे ओर मुझे पहले से भी ज्यादा नशा हो गया। मेरे चारों तरफ कमरा ज़ोर-ज़ोर से घूमने लगा। मुझे वूढ़ा सैनिक भाप के इंजन के पिस्टन की तरह लगातार ऊपर नीचे होता दिख रहा था। मेरे कानों में गाने की इतनी तेज़ आवाज़ आ रही थी कि मैं बहरा हुआ जा रहा था; मुझ पर घबराहट, बेबसी और बेवकूफी पूरी तरह हावी हुई जा रही थी। मैं मेज़ पकड़कर सन्तुलन बनाता हुआ कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, और हकलाते हुए बोला कि मेरी तबियत बहुत ख़राब है, इतनी ज्यादा कि मैं नहीं जानता कि मे घर कैसे जाऊँ।''

''मेरे प्रिय दोस्त,'' बूढ़े सैनिक ने जवाब में कहा। उसकी आवाज़ भी ऊँची नीची हो रही थी—''मेरे प्रिय दोस्त, तुम्हारी हालत में घर जाना पागलपन होगा। तुम जरूर पैसे खो बैठोगे। कोई भी आसानी से तुम्हें लूट लेगा, या कत्ल कर देगा। मे यही सो रहा हूँ। तुम भी सो जाओ—इस घर में वे लोग अच्छा बिस्तर दे देते है, तुम एक ले लो—शराब का नशा उतर जाने दो, कल दिन की रोशनी में अपनी जीत के रुपयों के साथ सुरक्षित रूप से घर जाना।''

मेरे दिमाग में सिर्फ दो बातें थीं—एक तो मुझे अपने रुपयों से भरे रूमाल को बिल्कुल नहीं छोड़ना है, दूसरे मैं कहीं फौरन लेट जाऊँ और गहरी नींद में सो जाऊँ। इसलिए मैंने बूढ़े सैनिक के बिस्तर के सुझाव को मान लिया और उसकी बढी हुई बाँह थामकर दूसरे हाथ में अपना पैसा सँभाल लिया। हम खजान्ची के पीछे की तरफ से कुछ गलियारे पार करते हुए, सीढ़ी चढ़कर एक सोने के कमरे में पहुँचे जहाँ मुझे रहना था। भूतपूर्व सैनिक ने बड़ी गरमाई से मुझसे हाथ मिलाया, कहा कि हम साथ ही नाश्ता करेंगे और फिर मुझे रात के लिए छोड़ गया, उसके पीछे खजांची था।

मैं हाथ धोने के लिए बेसिन की तरफ भागा, जग में से कुछ पानी पीया, बाकी बेसिन में डालकर उसमें अपना मुँह डुबा दिया। फिर एक कुर्सी पर बैठकर अपने को शान्त करने की कोशिश करने लगा। जल्दी ही मुझे बेहतर लगने लगा। मेरे फेफड़ों को जुआघर के बदबूदार वातावरण की जगह इस कमरे की ठंडक अच्छी लग रही थी, वैसा ही ताज़गी भरा फर्क आँखों को मिला क्योंकि वहाँ की तेज़ रोशनी के बाद सोने वाले कमरे में धीमे धीमे जलती एक मोमवत्ती ही थी। इसके अलावा ठडे पानी ने भी मुझमें ताज़गी भर दी। मेरे चक्कर दूर हो गए और मुझे फिर से थोडा ठीक लगने लगा। मुझे पहला ख़तरा जुआघर में रात को सोने में था; और दूसरा बड़ा ख़तरा यह था कि कैसे इस बन्द घर से निकलकर रात के समय इतना

पैसा लेकर पेरिस की सड़कों से अपने घर जाऊँ। अपनी यात्रा के दौरान मैं इससे बुरी जगहों पर सो चुका था; इसलिए मैंने चिटकिनी और ताला लगाकर, दरवाजे को अटकाकर सुबह तक देखने का निश्चय किया।

इस तरह मैंने बाहर से आनेवालों की तरफ से अपने को सुरक्षित किया; पलग के नीचे झाँका, आलमारी में देखा, खिड़की की चिटकिनी देखी और फिर यह सोचकर सन्तुष्ट हो गया कि मैंने सारी सावधानी बरत ली है। मैंने ऊपर के कपड़े उतारे, धीमी सी मोमबत्ती को अंगीठी की लकड़ियों की राख के बीच रखा और बिस्तर पर चढ़ गया। रुपयों वाला रुमाल मैंने अपने तकिए के नीचे रख लिया था।

जल्दी ही मुझे लगा कि मैं सो नहीं सकता—कि मैं आँखें भी बन्द नहीं कर सकता। मैं पूरी तरह जगा हुआ था, मुझे तेज़ बुखार था। मेरे शरीर की एक-एक नाडी काँप रही थी—मेरी हर इन्द्रिय अति प्राकृतिक ढंग से तेज़ हो गई थी। मैं उलटता पलटता रहा, हर स्थिति में लेटने की कोशिश करता रहा, और बिस्तर पर कोई ठडा हिस्सा ढूँढ़ता रहा, पर कोई फायदा नहीं हुआ। कभी मैं बाँहें चादर के ऊपर निकालता, कभी मैं टाँगे बिस्तर के नीचे तक फेंकता, कभी जितना मोड़ सकता था मोडता, अपनी ठोड़ी तक ले जाता; कभी अपने तकिए को हिलाता, पलटता, सीधा करता और पीठ के भार लेट जाता, कभी उसे दुहरा करके पलंग के किनारे तक ले जाता और बैठने की कोशिश करता। हर कोशिश बेकार रहती; मैं परेशान होकर कराह रहा था, क्योंकि मैं समझ गया था कि रात बिना सोए कटेगी।

मैं क्या करता, मेरे पास पढ़ने को किताब नहीं थी। अब मैं पूरी तरह से जान गया था कि जब तक ध्यान नहीं बदलूँगा मैं डरावनी बातें ही सोचता रहूँगा, और फिर मेरा दिमाग हर सम्भव और असम्भव खतरे की चिन्ता में लगा रहेगा; थोडे मे कहूँ तो अब निश्चित था कि यह रात हर तरह के सोचे जा सकने वाले डर से भरी रहेगी।

मैं कोहनी पर भार डालकर उठा, और कमरे में सब तरफ देखा—खिड़की से आती सुन्दर चाँदनी से कमरा चमक रहा था—मैं देखना चाहता था कि क्या मेरी पहचान की कोई फोटो या कोई सजावट का सामान था। मेरी आँखें एक दीवार से दूसरी पर घूम रही थीं तभी मुझे Le Maidre की बढ़िया किताब Voyage autour de ma chambre याद आई। मैंने उस फ्रांसीसी लेखक की नकल करने का निश्चय किया और सोचा कि जागते रहने की थकान से बचने के लिए अपने को मज़ेदार लगने वाला कोई काम करूँ। मैं कमरे में रखे हर सामान की मन में सूची बनाऊँ। फिर यह कल्पना करने की कोशिश करूँ कि यह कुर्सी, मेज़ या हाथ धोने की बेसिन का स्टैण्ड किस किसका रहा होगा, उसके साथ किनकी यादें होंगी।

पर दिमाग की घबराहट भरी अस्थिर स्थिति में कुछ सोचने से ज्यादा आसान सूची बनाना था। इसलिए मैंने जल्दी ही सोचने की बात छोड़ दी। बल्कि कमरे की

अलग-अलग चीज़ों को देखा, किया कुछ भी नहीं।

सबसे पहले तो उस कमरे में एक पलंग था जिस पर मैं लेटा था; वह चार डण्डों पर चँदोबा तना एक पलंग, संसार भर की सब चीज़ों में पेरिस में मिलने वाला वह पलंग! हाँ, एक बड़ा भद्दा चार डंडों वाला अंग्रेज़ी पलंग जिसकी छत पर छीट का कपड़ा लगा था—चारों तरफ किनारों पर बराबर झालर लगी थी—दमघोंटू भद्दे पर्दे लगे थे, जिन्हें जब मैं पहली बार कमरे में घुसा था तब बिना कुछ देखे मशीनी तोर पर खिसका दिया था, इसके अलावा वहाँ हाथ धोने की पत्थर की चिलमची थी जिसमें मैंने पानी गिराया था, क्योंकि मैं उसे जल्दी से बहा देना चाहता था, वह अब भी धीरे-धीरे ईंटों के फर्श पर टपक रहा था। वहाँ दो छोटी कुर्सियाँ थीं जिन पर मैंने अपनी पैंट और बास्कट फेंके थे। एक बड़ी बाँह वाली कुर्सी थी जो गन्दे सफेद मोटे कपड़े से ढकी थी जिस पर मेरी कमीज़ और गुलुबन्द पड़े थे। फिर एक आलमारी थी जिसमें दराजें थीं जिनमें से दो के पीतल के हैंडल टूटे हुए थे, एक भद्दा टूटा हुआ चीनी का स्याही का स्टैण्ड ऊपर सजावट की तरह रखा था। एक शृंगार मेज़ थी, जिसमें एक छोटा सा आईना था, और एक बड़ा पिनकुशन था। एक खिड़की थी—ज्यादा ही बड़ी खिड़की थी, पतली-सी मोमबत्ती की धीमी रोशनी मे बहुत पुरानी एक तसवीर दिखी। तस्वीर में ऊँचा हैट लगाए एक आदमी था। हैट पर बहुत ऊँची, परों की एक कलगी लगी हुई थी। वह एक साँवला बहुत भयानक बदमाश आदमी लग रहा था, जो अपनी आँखों पर हाथ से छाया करता हुआ, बडे ध्यान से ऊपर की तरफ देख रहा था—मानो किसी ऊँचे फाँसी के तख्ते की ओर देख रहा हो, जिस पर उसे चढ़ाया जाना था। और वह उसी के लायक दिख रहा था। उस तस्वीर के कारण मुझे पलंग के ऊपर देखने में बाधा आ रही थी। वैसे भी वह बहुत ही उदास और अरुचिकर दिख रहा था, इसलिए मैंने वापस तस्वीर की तरफ देखा। मैंने आदमी के हैट के पंख गिने—तीन सफेद, दो हरे थे। मैंने उस हैट का ऊपरी हिस्सा देखा जो नुकीले आकार का और (Guido Fawkes) द्वारा अपनाए गए फैशन के अनुरूप था। मैं सोच रहा था वह क्या देख रहा होगा। तारे तो हो नहीं सकते क्योंकि ऐसा गुंडा ज्योतिषी या खगोलशास्त्री क्या होगा, वह ज़ुरूर फॉसी का तख्ता होगा और उसे तभी फाँसी पर चढ़ाया जा रहा होगा। क्या जल्लाद को उसका नुकीला, ऊँचा, पंखों की कलंगी वाला हैट मिल गया होगा? मैंने फिर पर गिने—तीन सफेद, दो हरे।

इस बेहतर और बौद्धिक काम में लगे हुए मेरे विचार भटकने लगे। कमरे में आती चाँदनी से मुझे इंग्लैण्ड की एक चाँदनी रात याद आने लगी—वेल्श घाटी में पिकनिक पार्टी की रात थी। चाँदनी में नहाकर सुन्दर दिखते खूबसूरत दृश्यो के बीच से घर लौटते वक्त की एक-एक घटना मुझे याद आ रही थी, हालाँकि सालो से मैंने उस पिकनिक के बारे में सोचा भी नहीं था और अगर चाहता भी तो शायद

बहुत पहले हुए उस मौके के बारे में बहुत कम या कुछ भी याद नहीं कर पाता। याद हमारी वह सुन्दर क्षमता है जो हमें यह बताने में मदद करती है कि हम अमर है, और सच्चाई को सुन्दर ढंग से बताती हैं। यहाँ मैं बहुत ही सन्देहपूर्ण चरित्र के अजीब से घर में था। स्थिति अनिश्चित ही नहीं, परेशानी भरी थी। ऐसे में मेरे पुरानी बातों के बारे में सोचने का प्रश्न ही नहीं उठता था, पर फिर भी बिना किसी कोशिश के मैं उस जगह, लोग, बातचीत और हर तरह की बारीक से बारीक स्थिति को याद कर रहा था। मैं सोचता था कि मैं उन बातों को सदा के लिए भूल चुका था, और अच्छी स्थिति में शायद मैं चाहकर भी उन्हें याद नहीं कर सकता था। फिर इस समय यह अजीब उलझा हुआ रहस्यमय प्रभाव कैसे आया? कुछ नहीं है, सिर्फ मेरे सोने वाले कमरे की खिड़की आनेवाली चाँदनी के कारण ऐसा हुआ होगा।

मैं फिर पिकनिक की बातें सोचने लगा—घर लौटते समय कितने खुश थे—वह भावुक युवती चाँदनी से प्रभावित होकर हैरोल्ड की पुस्तक के उद्धरण सुना रही थी। मे पुरानी खुशियों और दृश्यों में खोया हुआ था कि पलभर में मेरी यादें जिस धागे से लटक रही थीं वह टूटकर एकदम अलग हो गया, मेरा ध्यान वर्तमान की ओर लौट आया और मैं नहीं जानता कि क्यों और कैसे मैं फिर उस तस्वीर को देखने लगा।

क्या देख रहा था?

हे भगवान्! आदमी ने अपना हैट माथे पर खींच लिया था! नहीं, हैट गायब था! वह नुकीला हैट कहाँ गया? वे तीन सफेद, दो हरे पर कहाँ गए? वहाँ नही थे। हैट और परों की जगह वह क्या चीज़ थी जो उसके माथे, आँखों और हाथ को ढक रही थी?

क्या बिस्तर हिला था?

मैं पलटकर पीठ के भार लेटा और ऊपर की तरफ देखा। क्या मैं पागल हो गया हूँ? सपना देख रहा हूँ या फिर चक्कर आ रहे हैं?—या पलंग का ऊपर का हिस्सा सच में हिल रहा था—धीरे-धीरे, लगातार, चुपचाप, भयानक ढंग से वह अपनी पूरी लम्बाई और चौड़ाई के साथ मुझ लेटे हुए के ऊपर आ रहा था!

मेरा खून जम गया। मैंने तकिए पर अपना सिर हिलाना चाहा पर एक भयानक निर्जीव कर देने वाली ठंडक मुझ पर उतरती गई। मैंने तय किया कि मैं तस्वीर वाले आदमी की जगह अपनी नज़र पलंग के ऊपरी हिस्से पर रखूँगा कि वह हिल रहा है या नहीं।

दुबारा उस तरफ देखना काफी था। मेरे ऊपरवाली, फीकी, काली, बदबूदार झालर उसकी कमर से एक इंच बराबर थी। मैं साँस रोककर देखता रहा। और धीरे लगातार—बहुत धीरे—मैंने वह आकार देखा और उस आकृति के नीचे वाले फ्रेम की लकीर गायब हो गई क्योंकि झालर उसके ऊपर लटक आई थी।

मैं शारीरिक तौर पर कुछ भी हूँ, कमज़ोर नहीं हूँ। कई बार मेरा जीवन ख़तरे मे पड़ चुका है, मैंने पलभर को भी अपना काबू नहीं खोया पर जब मुझे यह विश्वास हो गया कि पलंग का ऊपरी हिस्सा सचमुच हिल रहा है, और बराबर मेरे ऊपर उतरता आ रहा है, तब मैं बेबसी और डर से काँप उठा, जहाँ मैं लेटा था वहाँ हत्या का भद्दा यन्त्र धीरे-धीरे मेरे ऊपर आकर मेरा दम घोटकर मारने को तैयार था।

मैं बिना हिले, बिना बोले, साँस रोके पड़ा था। मोमबत्ती पूरी जलकर बुझ चुकी थी। पर चॉदनी से कमरा अब भी चमक रहा था। नीचे और नीचे, बिना रुके, बिना आवाज़ किए, पलंग का ऊपरी हिस्सा आ रहा था और मैं डर के कारण जहॉ लेटा था वहीं पड़ा रहा जैसे गद्दे ने मुझे बाँध रखा हो—वह नीचे आता गया, यहॉ तक कि चन्दोवे की धूलभरी गन्ध मेरे नथुनों में भर गई।

उस अन्तिम पल में आत्मरक्षा के भाव ने मुझे चौंकाकर उस बेहोशी से उबार लिया, आखिर मैं हिला। अब बस इतनी जगह बची थी कि मैं करवट लेकर पलग से उतर गया। जब मैं बिना आवाज़ किए ज़मीन पर गिरा, तब उस कातिल चन्दोबे के किनारे ने मेरे कन्धे को छुआ।

बिना साँस लिये, चेहरे से ठंडा पसीना पोंछे बिना मैं फौरन घुटनों के भार बैठकर चन्दोबे को देखने लगा। मैं उसके जादू में फँस गया था। अगर मेरे पीछे पैरो की आवाज़ आती तब भी शायद मैं घूम नहीं पाता; अगर किसी चमत्कार से मुझे बचने का रास्ता मिलता तो भी मैं उसका फायदा उठाने के लिए हिल नहीं पाता। उस पल मेरा पूरा जीवन मेरी आँखों में सिमट आया था।

वह पूरा चन्दोबा झालर समेत नीचे आ गया था—नीचे, बिल्कुल पास, इतना पास कि बिस्तर और चंदोबे के बीच एक उँगली की भी जगह नहीं थी। मैंने किनारे पर छुआ तो तब जान पाया कि जो मुझे नीचे से हल्का लग रहा था, वह वास्तव मे एक चौड़ा मोटा गद्दा था जो चारों तरफ बराबर लगी झालर से छिपा था। मैने ऊपर देखा तो चारों डण्डे नंगे और भद्दे लग रहे थे। पलंग के ऊपर बीचोंबीच एक बडा सा लकड़ी का पेच था जिससे उस गद्दे को नीचे उतारा गया होगा, जैसे आमतोर पर किसी चीज़ को दबाने के लिए मामूली दबाने की मशीन में दबाया जाता है। वह भयानक यन्त्र बिना हल्की-सी आवाज़ किए चल रहा था। उसके नीचे आने पर कोई आवाज नहीं हुई, न ऊपर वाले कमरे से कोई हल्की सी भी आवाज आई। भयानक चुप्पी के बीच मैंने अपने सामने 19वीं शती की सभ्य फ्रांस की राजधानी मे एक ऐसी मशीन देखी जो रहस्यात्मक रूप से दम घोटकर मारने के काम लाई जा रही थी, जैसा कि कभी सरकारी जॉच के बुरे वक्त में (Hartz Mounteins) की अकेली सरायों में (westaphalia) रहस्यमय कचहरी में किया जाता होगा। फिर भी मैं उसे देखकर हिल नहीं पा रहा था, मैं मुश्किल से साँस ले रहा था, पर मेरी सोचने की ताकत लौट आई और तभी मैंने एक पल में अपने खिलाफ कत्ल की

साजिश की भयानकता को समझ लिया।

मेरे कॉफी के प्याले में दवा, तेज़ दवा मिलाई गई होगी। मैं किसी नींद की ज्यादा दवा के कारण दम घुटकर मरने से बच गया। बुख़ार की सी तेज़ी के कारण मैं कैसे अपने को रगड़ता, घिसता रहा, इसलिए सो नहीं पाया और मेरी जान बच गई। मैंने उन दोनों दुष्टों पर जो मुझे इस कमरे में लाए थे कितनी बेवकूफी से विश्वास कर लिया था। उन्होंने मेरी जीत का पैसा मुझसे लेने के लिए मुझे नींद मे ही मार देने का कितना पक्का और भयानक तरीका तय किया था! न जाने कितने आदमी जीत के बाद मेरी तरह इस बिस्तर पर सोए होंगे और फिर कभी किसी ने न उन्हें देखा होगा, न उनके बारे में कुछ सुना होगा। मैं इस विचार-मात्र से कॉप उठा।

पर अभी बहुत देर हुई भी नहीं थी कि वह कातिल चन्दोबा फिर हिला, मेरे विचार वहीं रुक गए। मेरे ख्याल से कोई दस मिनिट तक पलंग पर रहने के बाद वह चन्दोबा फिर ऊपर जाने लगा। जो दुष्ट उसे ऊपर से चला रहे थे उन्होंने सोचा होगा कि उनका काम पूरा हो गया। चुपचाप, धीरे-धीरे वह नीचे गया था वैसे ही वापस अपनी जगह आने लगा जब डण्डों के ऊपर पहुँचा तो छत तक पहुँच गया, अब छेद और पेच कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, बिस्तरा फिर मामूली बिस्तरा दिखने लगा—चंदोबा साधारण चंदोबा लग रहा था, चाहे कोई कितना भी शक की नज़र से देखता कोई फर्क नहीं था।

अब मैं पहली बार हिला—अपने घुटनों के भार उठा—ताकि यह सोच सकूँ कि ऊपर के कपड़े पहनूँ और कैसे यहाँ से भागूँ। अगर हल्की सी आवाज़ से भी उन्हें पता चलता कि वे मुझे मारने में असफल हुए हैं तो वे ज़रूर मेरा कत्ल कर देते। मुझसे कोई आवाज़ तो नहीं हुई? मैं ध्यान से दरवाजे की तरफ नज़र टिकाकर सुनने लगा।

नहीं! बाहर गलियारे में कोई आवाज नहीं थी—हल्के या भारी कदमों की आवाज ऊपर कमरे से भी नहीं आ रही थी। सब तरफ पूरी तरह सन्नाटा था। मैंने अपने दरवाजे की अन्दर से चिटकिनी और ताला लगाया, इसके अलावा पलंग के नीचे पड़ी एक लकड़ी की आलमारी दरवाज़े में अड़ा दी। उसे हटाते वक्त कोई आवाज न होती यह असम्भव था, और वैसे भी रात के लिए बन्द किए गए इस घर से भागने की सोचना भी पागलपन था। मेरे लिए सिर्फ एक रास्ता था—खिड़की। मै पजों के बल वहाँ गया।

मेरा सोने का कमरा नीचे की मंजिल से थोड़ा ऊपर पहली मन्जिल पर था और पिछली गली में खुलता था। मैंने खिड़की खोलने के लिए हाथ उठाया। मैं जानता था कि मेरे बचने का मौका सिर्फ इसी पर निर्भर करता था। जहाँ कत्ल करते थे, वहाँ बड़ा सजग पहरा रहता होगा। अगर खिड़की का दरवाज़ा बोल पड़ता या जोड

कड़क उठता तो मैं ख़त्म था। मुझे शायद पाँच मिनिट लगे होंगे, पर डर और दुविधा के कारण पाँच घण्टे लग रहे थे। खैर मैं चोर की-सी होशियारी से सब करने मे सफल हो गया। कूद कर नीचे जाना निश्चित मौत होती। फिर मैंने मकान के कोनो की तरफ देखा। बाईं तरफ एक मोटा पानी का पाइप था--वह खिड़की के बाहरी किनारे के पास से जा रहा था। पाइप देखते ही मैं समझ गया कि मैं बच जाऊँगा। जब से मैंने चन्दोबे को अपने ऊपर उतरता देखा था तब से अब पहली बार मुझे खुलकर साँस आने लगी।

कुछ लोगों के विचार में मेरा बचने का तरीका मुश्किल और खतरनाक हो सकता था--पर मुझे पाइप के सहारे गली में उतरना ख़तरनाक नहीं लग रहा था। अब भी कसरत का अभ्यास करते रहने के कारण मैं स्कूल के दिनों की तरह के साहसिक काम और चढ़ाई करने की क्षमता रखता था। मैं जानता था कि मेरा सिर हाथ, पैर उतरने या चढ़ने में जो भी मुश्किल होगी उसे ईमानदारी से दूर करेंगे। मैंने खिड़की की चौखट पर टाँग चढ़ा दी तब याद आया कि पैसों का रूमाल तो तकिए के नीचे ही रह गया था। मैं उसे छोड़ सकता था पर बदले की भावना से भरकर मैं उस जुआघर के बादमाशों को उनकी लूट और शिकार से वंचित करना चाहता था। इसलिए मैं वापस गया और मैंने रूमाल निकाल कर गुलूबन्द से पीठ के साथ बाँध दिया।

जैसे ही मैंने उसे कसकर ठीक जगह बाँधा तो मुझे लगा कि दरवाज़े के बाहर साँस की आवाज़ आ रही थी। मुझमें डर की ठंडी लहर दौड़ गई, मैंने फिर सुनना चाहा। नहीं! गलियारे में अब भी पूरा सन्नाटा था। मुझे रात की ठंडी हवा की आवाज सुनाई दी होगी। अगले ही पल मैं खिड़की की चौखट पर था--और फिर मैंने हाथो ओर घुटनों से पानी के पाइप को कसकर पकड़ लिया था।

मैं आसानी से चुपचाप गली में फिसला, जैसा मैंने सोचा था, मैं वैसे ही उतरा और फिर पूरी तेज़ गति से पड़ोस में स्थित उपप्रशासक के दफ्तर की ओर चल दिया। वह स्वयं और कई उसके नीचे वाले जाग रहे थे। शायद उन दिनों पेरिस मे चर्चित एक रहस्यमय हत्या के गुनहगारों को पकड़ने की योजना बना रहे थे। जब मैंने जल्दी जल्दी टूटी फूटी फ्रेंच में अपनी कहानी शुरू की तो वह मुझे किसी को लूटकर आनेवाला एक पियक्कड़ अंग्रेज़ समझ रहा था। पर जब मैं बोलता गया तो उसका ख्याल बदल गया, और इससे पहले कि मैं अपनी बात पूरी करता, उसने अपने सामने रखे कागज़ों को दराज में खिसका दिया, हैट पहना, मुझे एक हैट दिया (मैं नंगे सिर था), सैनिकों की एक टुकड़ी बुलाई, अपनी पसन्द से लोगों को चुनकर दरवाज़ा तोड़ने और ईंट व फर्श उखाड़ने के औजारों को लेने को कहा, फिर बड़े दोस्ती के ढंग से मेरी बाँह पकड़ी और मुझे लेकर उस घर से निकल पड़ा। मैं यह दावे से कह सकता हूँ कि जब वह बचपन में पहली बार नाटक देखने गया होगा

तब भी इतना खुश नहीं हुआ होगा जितना इस समय जुआघर जाने की सोचकर था।

हम गलियों से होते हुए अपने मुश्किल काम के लिए जा रहे थे और वह मुझे एक ही साँस में बधाई भी दे रहा था और तहकीकात भी कर रहा था। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे सामने और पीछे पहरेदार तैनात कर दिए गए और ज़ोरों से दरवाजा खटखटाना शुरू किया गया; खिड़की में एक रोशनी दिखी, मुझसे पुलिसवालों के पीछे छिपने को कहा गया; फिर और खटखटाहट की गई और पुकारा गया, कानून के नाम पर दरवाज़ा खोलो! इस सख़्त आवाज़ पर चिटकनियाँ और ताले ऐसे खुल गए जैसे किसी अदृश्य हाथ ने खोल दिए हों, और जैसे ही उप-प्रशासक दरवाज़े में घुसा उसके सामने एक वेटर पीला ज़र्द चेहरा लिये आधे कपड़े पहने खड़ा था। उस वक्त छोटी सी यह बातचीत हुई।

"हम इस घर में सो रहे अंग्रेज़ को देखना चाहते हैं।"

"वह घण्टों पहले चला गया।"

"ऐसा कुछ नहीं है। उसका दोस्त गया था, वह यहीं हैं, हमें उसके कमरे मे ले चलो।"

"मैं कसम खाता हूँ कि वह यहाँ नहीं है! वह—"

"मैं कसम खाता हूँ कि वह यहाँ है, वह यहीं सोया था—उसे तुम्हारा पलग ठीक आरामदेह नहीं लगा—उसने हमसे शिकायत की—अब हम देखने आए हैं कि क्या उसके बिस्तर में खटमल हैं, रेनॉडिन, (उसने अपने नीचे काम करने वाले एक आदमी को आवाज लगाकर वेटर की तरफ इशारा किया) इस आदमी को गिरफ्तार करो और इसके हाथ पीछे बाँध दो। अब चलो ऊपर चलें।

उस घर के हर आदमी और औरत को गिरफ्तार कर लिया गया उनमें सबसे पहला वह बूढ़ा सैनिक था। फिर मैंने वह पलंग पहचाना जिस पर मैं सोया था, इसके बाद हम ऊपर वाले कमरे में गए।

कमरे के किसी हिस्से में कोई ख़ास चीज़ नहीं दिखी। उस अधिकारी ने चारो तरफ देखा, सबको चुप रहने का आदेश दिया। दो बार फ़र्श पर पैर मारा, एक मोमबत्ती मँगाई, जहाँ पैर मारा था वहाँ ध्यान से देखा और वहाँ का फर्श उखाड़ने को कहा। जरा सी देर में वह उखड़ गया। रोशनी लाई गई और हमने देखा कि उस कमरे के फर्श और नीचे वाले कमरे की छत के बीच की शहतीर में एक गहरी खोखली दीवार थी। उसके बीच में एक सीधा लोहे का तेल से चिकना खोल था जिसमें एक पेच था जो नीचे पलंग के चन्दोबे से जुड़ा था। ज्यादा लम्बा, तेल लगा पेच, गरम कपड़े से ढका लीवर, एक भारी प्रेस का पूरा ऊपरी हिस्सा—नीचे गड़ी चीज़ के साथ जोड़कर बनाया गया था। जब अलग टुकड़ों में बाँटा जाता तो छोटे से कंपस (compass) में बदल जाता। यह सब चीज़ें निकालकर फर्श पर रखी गईं। सब कुछ

कितनी दुष्टता पर होशियारी से जोड़ा गया था। अलग अलग खुले मशीन के हिस्सो को थोड़ी मुश्किल से उप-प्रशासक ने जोड़ लिया फिर अपने आदमियों से उसे चलाने को कहकर मेरे साथ सोने के कमरे में उतर आया। फिर वह दम घोंटने वाला चन्दोवा उतारा जाने लगा। जब वह उतर रहा था तो पहले जैसा बिना आवाज के नहीं था। मैने यह बात उप-प्रशासक को बताई। उसने सीधा पर महत्त्वपूर्ण जवाब दिया। वह बोला, मेरे आदमी पहली बार उसे उतार रहे हैं जबकि जिनसे तुमने पैसा जीता था वह ऐसा करते रहने के आदी थे।

दो पुलिस वालों की निगरानी में घर छोड़कर हम चल दिए—उन सबको जेल भेज दिया गया। उप-प्रशासक ने अपने दफ्तर में मेरा बयान लिया, फिर मेरे साथ होटल गया ताकि मेरा पासपोर्ट ले सकें। उसे देते वक्त मैंने पूछा, "क्या तुम्हें लगता है कि उन्होंने जैसे मुझे मारना चाहा वैसे किसी और को भी मारा होगा?"

उसने कहा, "मैंने मुर्दाघर में दर्जनों डूबकर मरे लोगों की लाशें देखी हैं। उनकी जेब में चिट्ठियाँ होती थीं कि वे जुए में सब कुछ हार जाने की वजह से सेन (Seine) मे डूबकर आत्महत्या कर रहे हैं। हमें क्या पता कि जिस जुआघर में तुम गए थे, उसमें और कितने आदमी गए होंगे? तुम्हारी तरह जीते होंगे? तुम्हारा वाला पलग लिया होगा—उस पर सोये होंगे ?—मार दिए गए होंगे! फिर चुपचाप नदी में फेंक दिए गए और हत्यारों ने जेब में आत्महत्या की चिट्ठी रख दी? कौन जाने कि कितने आदमी उस दुर्भाग्य का शिकार हुए जिससे तुम बच गए। जुआघर के लोगो ने हमसे—पुलिस तक से अपनी मशीन छिपाकर रखी। बाकी रहस्य मृतकों के साथ चला गया। अच्छा श्रीमान्, शुभ रात्रि या कहो शुभ प्रातः। नौ बजे मेरे दफ्तर पहुँच जाना। विदा!"

बाकी कहानी जल्दी ही ख़त्म होती है। बार बार मुझसे तहकीकात की गई। जुआघर को ऊपर से नीचे तक पूरी तरह ढूँढ़ा गया, कैदियों से अलग-अलग पूछताछ की गई और उनमें से जो दो कम दोषी थे उन्होंने सब कुछ मान लिया। मुझे पता चला कि वह बूढ़ा सैनिक जुएघर का मालिक था—कानून ने पता लगाया तो जाना कि बरसों पहले बदमाशी करने के कारण उसे सेना से निकाल दिया गया था और तब से वह हर तरह की बदमाशी करता था। उसके पास जो चोरी का सामान था वह असली हकदारों ने पहचान लिया। वह बूढ़ा, खजान्ची, मुझे कॉफी देने वाली ओरत, सब पलंग के रहस्य में शामिल थे। उनके नीचे काम करने वाले लोग दम घोटने वाली मशीन के बारे में जानते थे या नहीं, यह पूरी तरह न जानने के कारण उन्हें सन्देह का लाभ दिया गया और सिर्फ मामूली चोर और बदमाश करार दिया गया। बूढ़े सैनिक और उसके दो प्रमुख नौकरों को नीचे चौड़े डेक वाले जहाज़ पर भेज दिया गया जिसे कैदी ही चलाते हैं; जिस औरत ने मेरी कॉफी में दवा मिलाई थी, उसे न जाने कितने साल की कैद हुई, जुआ घर के दूसरे नौकरों को सन्देह

के कारण निगरानी में रखा गया, और मैं पूरे हफ्ते के लिए (जो कि लम्बा समय है) पेरिस के समाज में एक प्रमुख और प्रसिद्ध व्यक्ति बन गया। तीन नामी नाटककारों ने मेरी जोखिम और साहस पर नाटक लिखे, पर वे कभी खेले नहीं जा सके क्योंकि सेंसर ने जुआघर के पलंग का सच्चा प्रतिरूप मन्च पर दिखाने पर रोक लगा दी।

मेरे जोखिम का एक फायदा हुआ, जिसे सेंसर ने भी पसन्द किया होगा—मैं आइन्दा कभी खुशी के लिए भी ताश नहीं खेला। मेरे मन में हरे कपड़े पर ताशों की गड्डियों और रुपयों के ढेर के साथ, रात के अँधेरे और सन्नाटे में चन्दोबे का नीचे उतरना, मेरा दम घोटने की कोशिश करना, सदा याद रहेगा।

बदला

मोपासाँ

बॉनीफेसिओ की चारदीवारी के पास बने एक औसत घर में पालो सवेरिनी की विधवा अपने बेटे के साथ अकेली रहती थी। उस शहर से सारडीनिया तक जाने वाला पथरीला सॅकरा रास्ता दिखाई देता था। पहाड़ के फैलाव पर बना कहीं-कहीं बिल्कुल समुद्र पर लटकता वह रास्ता समुद्र तक जाता था। दूसरी तरफ से उसे पूरी तरह घेरे हुए एक चट्टान थी जिसके बीच में स्थिर दरार एक गलियारे जैसी थी जो बन्दरगाह का काम करती थी। इस लम्बी नहर से शुरू के मकानों तक, छोटी-छोटी इटालियन तथा सारडीनियन मछली पकड़ने वाली नावें और पन्द्रह दिन में एक बार अजाकियो से एक बेकार पुराना जहाज़ चला करते थे। सफ़ेद पहाड़ी की तरफ साथ साथ बने मकानों का एक झुण्ड सफेदी पर धब्बा सा लगता था। चट्टान से लटकते उस भयानक सॅकेरे रास्ते पर जहाँ कोई जहाज कभी नहीं आता, वे घर शिकारी पक्षी के घोंसले जैसे लगते थे। समुद्र और उसका बन्जर किनारा प्रिस पर थोड़ी सी छितरी घास के अलावा कुछ नहीं था, हर वक्त उन तेज़ बेचैन हवाओं से सताए जाते थे जो सॅकरी जगह से होती हुई दोनों किनारों को नष्ट करती रहती थी। पानी के बीच से असंख्य पत्थरों के काले कोने झाँकते थे जिन पर से लहरों की सतह पर काँपती और बहती सफ़ेद झाग की लकीरें, कपड़ों की लीरों की तरह बहती थीं।

विधवा सवेरिनी का घर चट्टान के किनारे पर था और उसकी तीन खिड़कियाँ इस निर्जन, वीरान जगह की तरफ खुलती थीं। वह अपने बेटे एंटोइन और कुत्ते सेमिलान्त के साथ वहाँ रहती थी। सेमिलान्त लम्बे, खुरदुरे बालों वाला गड़रियों के कुत्ते की जाति वाला बड़ा हिंसक और भयानक कुत्ता था। वह युवक उसे अपने साथ शिकार पर ले जाता था।

एक शाम को झगड़े में निकोलस रेवोलाती ने धोखे से ऐंटोइन सवेरिनी को

छुरा मार दिया। मारने के बाद वह उसी रात सारडीनिया चला गया।

आते जाते लोगों ने लाश घर पहुँचा दी। उसे देखकर बुढ़िया ने आँसू नहीं बहाए। वह चुपचाप अपने मृत बेटे को देखती रही, फिर शव पर अपना झुर्रीदार हाथ रखकर उसने बदला लेने का वायदा किया। उसने किसी को अपने पास रुकने नहीं दिया। सबके जाने के बाद मृत शरीर के साथ अपने को कमरे में बन्द कर लिया। उसके साथ सिर्फ कुत्ता था जो पलंग के पैताने खड़े होकर, मालिक की तरफ अपना सिर किए, टाँगों के बीच पूँछ दबाए रोता रहा। उन दोनों में से कोई भी नहीं हिला, न कुत्ता न बुढ़िया माँ जो अब शरीर पर झुकी हुई लगातार उसे देख रही थी और चुपचाप आँसू बहा रही थी। लड़का सीधा लेटा था जैसे सो रहा हो, उसने अपनी जैकेट पहनी हुई थी जो छाती पर से फटी थी। पर उसके सब तरफ खून था—उसकी कमीज़, जो फाड़ दी गई थी ताकि घाव दिख सके, जैकेट, पतलून, चेहरा, हाथ सब पर खून था। उसकी दाढ़ी और बाल भी खून के कतरों से भरे थे।

माँ उससे बातें करने लगी, उसकी आवाज़ सुनकर कुत्ते ने रोना बन्द कर दिया।

"डरो मत, डरो मत, मेरे बेटे, मेरे छोटे से बच्चे, अभागे बच्चे, मैं तुम्हारा बदला लूँगी। तुम शान्ति से सो जाओ। मैं तुम्हें बता रही हूँ, तुम्हारा बदला लूँगी। तुम्हारी माँ का तुमसे वायदा है और तुम जानते हो कि तुम्हारी माँ वायदा कभी नहीं तोड़ती।"

वह धीरे से झुकी और उसने अपने ठंडे होंठ अपने मृत बेटे के ठंडे होंठों पर रखे।

सेमिलान्त फिर से एक लम्बी, दिल हिला देने वाली और भयानक आवाज में रोने लगा। सुबह तक बुढ़िया और कुत्ता ऐसे ही रहे।

अगले दिन एन्टोइन सबेरिनी को दफना दिया गया और जल्दी ही बॉनफेसिओ में उसका नाम भी लिया जाना बन्द हो गया।

उसका कोई भाई या करीबी पुरुष रिश्तेदार नहीं था। परिवार में कोई आदमी नहीं था जो बदला लेता, सिर्फ उसकी माँ थी, बूढ़ी माँ जो सोचती रहती थी।

सुबह से रात तक वह सँकरे रास्ते के पार किनारे पर एक सफेद धब्बा सा देखती थी जो सारडीनिया का गाँव लौंगोसारडो था। पीछा होने पर कॉर्सीकन लुटेरे वहाँ जाकर शरण लेते थे। उस गाँव की पूरी आबादी उन्हीं की थी। वे अपने शहर के किनारे यही इन्तज़ार करते थे कि कब फिर से घर लौटकर अपना काम शुरू करें। बुढ़िया जानती थी कि निकोलस रेवोलोती ने भी उसी गाँव में शरण ली थी।

वह सारा दिन अकेली खिड़की के पास बैठकर दूसरी तरफ के किनारे को देखती रहती थी। और बदले की बात सोचती थी। वह क्या करती क्योंकि कोई उसकी मदद के लिए नहीं था। वह कमज़ोर और मौत के मुँह पर खड़ी थी। फिर भी अपने बेटे की लाश से किए वायदे को वह भूल नहीं पा रही थी। और न ही देर कर सकती थी। क्या करे? वह रात को भी सो नहीं पाती थी, उसे एक पल का आराम या शान्ति नहीं थी। उसका दिमाग बराबर चलता रहता था। उधर उसके

परों पर सोता कुत्ता बीच बीच में सिर ऊंचा कर हिला देने वाली आवाज निकालता था। अपने मालिक के गायब होने के बाद में यह जैसे, उसकी आदत बन गई थी। मानों वह भी तसल्ली नहीं कर पाने के कारण, उसे बुलाता था। उसमें मरे हुए की अमिट याद सजी थी।

एक रात जब कुत्ते ने रोना शुरू किया तो बुढ़िया माँ के मन में बदले की तीव्र तथा भयानक प्रेरणा आई। उसने सुबह तक उसके बारे में सोचा। सुबह उठी, चर्च गई। पत्थर के फर्श पर उल्टे लेटकर भगवान् से मदद माँगी कि वह उसके कमजोर थके शरीर में बेटे का बदला लेने की ताकत दे। फिर वह घर लौटी। आँगन में एक लम्बा ढोल के आकार का पीपा था, जिसका एक छोर अन्दर चला गया था। उसमें ऊपर से बारिश का पानी भर जाता था। उसने उसे उलटकर खाली किया, फिर ज़मीन पर पत्थरों और कीलों के सहारे जमा दिया। इसके बाद सेमिलान्त को उससे बाँध कर घर में चली गई।

उसकी आँखें सार्डीनिया के तट पर लगी हुई थीं। वह बेचैनी से कमरे में नीचे ऊपर चक्कर लगाती रही। उसके बेटे का हत्यारा वहाँ था।

कुत्ता दिन भर भौंकता रहा। अगली सुबह बूढ़ी औरत ने उसे सिर्फ एक कटोरा पानी दिया। खाना, सूप, डबल रोटी कुछ नहीं दिया। एक और दिन बीत गया। सेमिलान्त थककर सो गया। अगली सुबह उसकी आँखें चमक रही थी। उसकी खाल काँप रही थी। वह चेन को बेचैनी से खींच रहा थीं, बुढ़िया ने फिर भी कुछ खाने को नहीं दिया। भूख से विलबिलाता सेमिलान्त भौंक-भौंक कर थक गया। एक और रात बीत गई।

सुबह विधवा अपने पड़ोसी से घास के दो गट्ठर माँगकर लाई। उसने अपने पति के कुछ पुराने कपड़े लेकर उनमें भूसा भरकर उसे आदमी का सा आकार दिया। फटे पुराने कपड़ों से सिर बनाया। फिर सेमिलान्त के खूँटे के सामने एक कील गाडकर उस पुतले को खड़ा कर दिया।

भूख से अधमरे होने पर भी कुत्ते ने उस आकार को ताज्जुब से देखा और भौंकना बन्द कर दिया।

बुढ़िया कसाई के पास गई। उससे चर्बी का बड़ा सा टुकड़ा माँगकर लाई। घर आकर उसने आँगन में कुत्ते के खूँटे के पास लकड़ी से आग जलाई और चर्बी को तला। सेमिलान्त पागलों की तरह उछलने लगा, मुँह से झाग निकलने लगे। उसकी आँखें उसी आग पर जमी थीं जहाँ से मांस की पागल कर देने वाली गन्ध आ रही थी।

उसकी मालकिन ने उस चर्बी को उठाकर पुतले के गले से टाई की तरह लपेट दिया। उसे अन्दर को फँसा दिया। काम पूरा करने के बाद कुत्ते की चेन खोल दी।

एक भयानक छलाँग में सेमिलान्त उस पुतले के गले की तरफ लपका। उसके

कन्धे पर अपने पंजे टिकाकर उसने उसे फाड़ना शुरू कर दिया। जबड़े में शिकार का एक टुकड़ा लेकर वह पीछे गिरा फिर लपका, अपने दाँतों से रस्सी काटी, थोडी सी चर्बी काटी, पल भर को गिरा फिर नए गुस्से से लपका। उसके बाद तो अपने भयानक हमलों से पुतले का पूरा चेहरा फाड़ डाला, गरदन के चिथड़े कर डाले।

बूढ़ी औरत बिना हिले-डुले चुपचाप जलती आँखों से सब कुछ देखती रही। फिर उसने कुत्ते को बाँधा। फिर दो दिन भूखा रखा, और वही अजीब कार्यक्रम दुहराया। तीन महीने तक वह इस तरीके के हमले का अभ्यास करवाती रही, ताकि कुत्ते को इस तरह खाना छीनने की आदत हो जाए। अब उसने उसे बाँधना बन्द कर दिया। उसके इशारे पर वह पुतले के गले पर लपकता था।

जब गले पर खाना न हो, तब भी वह उस पुतले को फाड़ डालता था। बाद मे उसे इनाम के तौर पर मालकिन की पकाई चर्बी मिलती थी।

पुतले को देखते ही सेमिलान्त उत्तेजना से काँपती हुई अपनी मालकिन को देखता था, जो अपनी उँगली उठाकर तीखी आवाज़ में चीखती थी, "उसे फाड़ दो।"

इतवार की सुबह उसे लगा अब समय आ गया है। वह बूढ़ी विधवा पहले प्रार्थना के लिए गई। उसने अपना पाप स्वीकार किया। फिर उसने एक भिखारिन का रूप धरा, सार्डीनिया के एक मछुआरे से सौदा किया और वह उसे, उसके कुत्ते के साथ दूसरे तट पर ले गया।

वह कपड़े के एक थैले में चर्बी का लम्बा सा टुकड़ा लेकर चली थी। सेमिलान्त को दो दिन से भूखा रखा हुआ था। बीच बीच में उसे मांस की खुशबू सुँघाकर उत्तेजित कर रही थी।

दोनों गाँव में घुसे। बुढ़िया ने एक रोटी वाले से निकोलस के घर का पता पूछा। उसने अपना पुराना काम शुरू कर दिया था। वह दूकान के पिछवाड़े में अकेला काम कर रहा था।

बुढ़िया ने दरवाज़ा खोलकर आवाज़ लगाई, "निकोलस! निकोलस!" वह मुडा। बुढिया ने कुत्ते की चेन उतार कर चिल्लाकर कहा, "फाड़ दो, फाड़ दो!"

पागल कुत्ता उसके गले पर लपका, आदमी ने बाँहें फैलाई और उस हिंसक कुत्ते से जूझने लगा, दोनों ज़मीन पर इकट्ठे लुढ़क रहे थे। कुछ देर वह लड़ा, ज़मीन पर पैर मारता रहा। फिर स्थिर हो गया। और सेमिलान्त ने उसके गले के चिथडे कर दिए।

अपने अपने दरवाजों पर बैठे दो पड़ोसियों को याद आया कि एक बूढ़ा भिखारी निकोलस के घर से निकला था जिसके पीछे एक पतला काला कुत्ता था। चलते चलते वह मालिक के देने पर कुछ कत्थई सी चीज़ खा रहा था।

शाम तक बुढ़िया अपने घर पहुँच गई।

उस रात वह चैन से सोई।

बन्दर का पंजा

डब्ल्यू. डब्ल्यू जेकब

बाहर रात बड़ी ठंडी और सीली सी थी। पर लेक्सनामविला की छोटी सी बैठक की खिडकियाँ बन्द थीं और आग तेज़ी से जल रही थी। पिता-पुत्र शतरंज खेल रहे थे। पिता खेल में कुछ ऐसे नए तरीके अपना रहा था कि उसका बादशाह बिना ज़रूरत के ख़तरों में पड़ रहा था, यहाँ तक कि आग के पास बैठी बुनाई करती, सफेद बालो वाली बूढ़ी औरत आलोचना करने को मजबूर हो जाती थी।

व्हाईट ने बहुत बड़ी ग़लती कर दी। ठीक करने के लिए देर हो चुकी थी। उसे डर था कि बेटा देख न ले इसलिए उसका ध्यान बँटाने को बोला, "हवा को सुनो!"

"मैं सुन रहा हूँ," बेटे ने शतरंज की बिसात को बड़ी गम्भीरता से देखते हुए कहा, फिर हाथ बढ़ाकर बोला 'शह'।

पिता ने बोर्ड पर हाथ रखते हुए कहा, "मुझे नहीं लगता कि वह आज रात आएगा।"

"मात", बेटे ने जवाब दिया।

सहसा व्हाईट बिना बात गुस्से से भरकर बोला, "यह रहने के लिए सबसे बुरी जगह है, सब जगहों से दूर, जंगली, दलदल से भरी। यह सबसे ख़राब जगह है। घर में आने की पगडण्डी कीचड़ से भरी है तो सड़क पानी से। न जाने लोग क्या सोचते हैं। मुझे लगता है कि क्योंकि इस सड़क के केवल दो घर किराए पर चढ़े हैं। वे सोचते हैं कि कोई फर्क नहीं पड़ता।"

पत्नी ने तसल्ली दिलाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, प्रिय, शायद तुम अगली बारी जीत जाओ।"

व्हाईट ने झटके से ऊपर देखा और उसकी नज़र माँ-बेटे के बीच के इशारे

पर पड़ी। उसके शब्द होठों तक ही रुक गए। उसने अपनी हल्की सफेद दाढी मे एक अपराधी मुस्कान छिपा ली।

तभी फाटक ज़ोर से बजा और भारी पैरों की आवाज़ आई, हरबर्ट व्हाईट ने कहा, "वह आ गया।"

वृद्ध स्वागत करने की जल्दी में फौरन उठा, दरवाजा खोला और आने वाले से सहानुभूति दिखाई। आने वाले ने खुद अपने प्रति हमदर्दी जाहिर की। इस पर श्रीमती व्हाईट च्च, च्च कर उठी। पति के कमरे में आने पर वह हल्के से खाँसी। उसके पीछे एक लम्बा, तगड़ा आदमी था, जिसकी आँखें छोटी और चमकदार थी तथा चेहरा लाल था।

पति ने आने वाले का परिचय दिया, "सार्जेंट मेजर मॉरिस"

सार्जेंट मेजर ने हाथ मिलाया, फिर आग के पास जिस कुर्सी पर बैठने को कहा गया, बैठ गया। मेज़बान ने व्हिस्की और गिलास निकाले और एक छोटी सी ताम्बे की केतली आग पर चढ़ा दी। वह सन्तुष्ट भाव से देखता रहा। तीसरे गिलास पर उसकी आँखों की चमक तेज़ हो गई और वह बोलने लगा। दूर से आए इस मेहमान को यह छोटा सा परिवार घेरे हुए रुचिपूर्वक देख रहा था। उसने कुर्सी पर बेठे बैठे ही अपने चौड़े कन्धे सीधे किए और अजीब दृश्यों, भयानक कामों, लड़ाइयो, प्लेग और अजीब लोगों की बातें करता रहा।

व्हाईट ने अपनी पत्नी और पुत्र की तरफ देखते हुए गरदन हिलाते हुए कहा, "इक्कीस साल हो गए। जब यह वहाँ गया तब माल गोदाम में काम करने वाला एक जवान लड़का था। अब इसे देखो।"

श्रीमती व्हाईट ने नम्रतापूर्वक कहा, "इसे कुछ नुकसाान हुआ नहीं लगता।"

वृद्ध बोला, "मैं खुद हिन्दुस्तान जाकर कुछ देखना चाहूँगा।"

सार्जेंट मेजर ने सिर हिलाते हुए कहा, "आप जहाँ हो वहीं ठीक हो।" उसने अपना खाली गिलास नीचे रखा, हल्की सी साँस ली और फिर सिर हिलाया।

"मैं वहाँ के पुराने मन्दिर, फकीर, जादूगर सब देखना चाहता हूँ।" वृद्ध बोला। "उस दिन तुम मुझे बन्दर के पंजे के बारे में क्या बात बताने वाले थे, मॉरिस?"

"कुछ नहीं," सैनिक जल्दी से बोला, "कोई सुनने लायक बात नहीं थी।"

श्रीमती व्हाईट ने उत्सुकता से पूछा "बन्दर का पंजा?"

"आप शायद उसे थोड़ा जादू कह सकते हैं" सार्जेंट मेजर ने एकदम कहा। उसके तीनों श्रोता उत्सुकता से आगे झुक गए। आगंतुक ने अनमने भाव से खाली गिलास अपने होंठों से लगाया और फिर नीचे रख दिया। उसके मेज़बान ने फिर उसे भर दिया।

सार्जेंट मेजर ने अपनी जेब टटोलते हुए कहा, "देखने में तो यह एक मामूली पंजा है जो सूखी ममी जैसा दिखता है।"

उसने जेब से कुछ निकालकर आगे किया श्रीमती व्हाइट पीछे हट गई पर उनके बेटे ने उसे लेकर उत्सुकता से देखा।

"इसमें क्या ख़ास बात है?" व्हाईट ने बेटे से लेकर देखा और मेज़ पर रखते हुए पूछा।

"इस पर एक बूढ़े फकीर ने मन्त्र फूँका था," सार्जेंट मेजर ने बताया।

"वह एक पवित्र आत्मा था। वह दिखाना चाहता था कि किस्मत मनुष्य के जीवन को चलाती है। जो उसमें दखल देते हैं, उन्हें दुःख उठाना पड़ता है। उसने इस पर मन्त्र फूँका ताकि तीन अलग अलग आदमी इससे तीन तीन इच्छाएँ माँग सके।"

उसका बात करने का ढंग इतना प्रभावशाली था कि उसके श्रोताओं को लगा कि उनकी हँसी उसे खटकी होगी।

हर्बर्ट व्हाईट ने चतुराई से पूछा "आपने तीन इच्छाएँ क्यों नहीं माँगीं?"

सैनिक ने उसे ऐसे देखा जैसे उम्रवाले लोग जिद्दी युवक को देखने के आदी होते हैं। "मैंने माँगी", उसने धीरे से कहा और उसका चेहरा सफेद पड़ गया।

बूढ़ी औरत ने पूछा, "किसी और ने भी माँगी?"

"पहले आदमी की तीनों इच्छाएँ पूरी हुई।" उसने जवाब दिया। "मुझे नही मालूम पहली दो क्या थीं पर तीसरी मौत की थी। और इस तरह मुझे यह पजा मिला।"

उसकी आवाज़ इतनी गम्भीर थी कि सब में चुप्पी छा गई।

"मौरिस, जब तुमने तीनों इच्छाएँ माँग लीं तो यह तुम्हारे काम का तो रहा नही। फिर तुमने इसे क्यों रखा हुआ है?" आखिर बूढ़े ने पूछा।

सैनिक ने सिर हिलाते हुए कहा, "मेरे ख्याल से झुकाव के कारण। पहले मैंने इसे बेचना चाहा था। पर अब नहीं। यह पहले ही बहुत शैतानी कर चुका है। इसके अलावा लोग खरीदेंगे भी नहीं। कुछ सोचते हैं कि जादू वाली बात काल्पनिक है तो कुछ और यह चाहते हैं कि आजमा कर पैसे देंगे।"

"अगर तुम तीन और इच्छाएँ माँग सकते होते तो क्या माँगते?" वृद्ध व्यक्ति ने पूछा।

"मैं नहीं जानता," वह बोला, "नहीं जानता।"

उसने पंजा उठाया, पहली उँगली तथा अँगूठे के बीच लटकाया, फिर सहसा उसे आग में फेंक दिया। व्हाईट ने हल्की सी चीख़ के साथ उसे आगे झुककर निकाल लिया।

सैनिक ने गम्भीरता से कहा, "इसे जलने दो, वही बेहतर होगा।"

"मौरिस, अगर तुम्हें यह नहीं चाहिए तो मुझे दे दो।" बूढ़े ने कहा।

"मैं नहीं दूँगा। मैंने इसे आग में फेंक दिया था।" मौरिस ने हठपूर्वक कहा।

"इसे रखने से अगर कुछ बुरा हो तो मुझे दोष मत देना। अक्लमन्द इन्सान की तरह इसे फिर से आग में फेंक दो।"

उसने सिर हिलाया, हाथ में पकड़े पंजे को ध्यान से देखा फिर पूछा, "इच्छा कैसे माँगते हो?"

"दाएँ हाथ में पकड़कर ऊँची आवाज़ में इच्छा माँगनी होती है पर मैं फिर तुम्हें नतीजे के बारे में सावधान करता हूँ।" सार्जेंट मेजर ने कहा।

श्रीमत्ती व्हाईट उठी और खाना लगाते लगाते बोली, "अरेबियन नाइट की बातें लगती हैं। तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें मेरे लिए चार हाथ माँग लेने चाहिए?"

उसके पति ने उस जादुई पंजे को जेब से निकाला, तीनों ज़ोर से हँस पडे, पर सार्जेंट मेजर के चेहरे पर डरा हुआ भाव था। उसने उसकी बाँह पकड़कर रूखे ढंग से कहा, "अगर तुम्हें माँगना ही है तो कोई अक्ल की चीज़ माँगो।"

व्हाईट ने उसे फिर से जेब में डाल लिया; कुर्सी लगाकर दोस्त को खाने के लिए मेज़ पर बुलाया। खाने में लगकर सब उसके बारे में भूल गए। बाद में तीनों सैनिक से भारत में हुई अनहोनी बातों की दूसरी किश्त सुनते रहे।

आखिरी ट्रेन पकड़ने के लिए मेहमान के जाने के बाद हर्बर्ट ने कहा, "हो सकता है बन्दर के पंजे की कहानी उसकी सुनाई हुई दूसरी कहानियों की तरह ही बहुत सच्ची नहीं हो। हम उसके बारे में ज्यादा नहीं सोचेंगे।"

पत्नी ने पति को ध्यान से देखते हुए पूछा "क्या तुमने उसे कुछ रुपये दिए?"

"थोड़े से। वह तो लेना नहीं चाहता था, पर मैंने ज़बरदस्ती दिए। वह मुझ पर यही ज़ोर डालता रहा कि मैं इसे फेंक दूँ," वह बोला।

हर्बर्ट ने बनावटी डर से कहा, "नहीं नहीं, हम इससे रईस, प्रसिद्ध और खुश होंगे। पिताजी आप राजा होने की इच्छा व्यक्त करो तब आपको बीवी का गुलाम होकर नहीं रहना पड़ेगा।"

और वह मेज़ के चारों तरफ दौड़ने लगा, क्योंकि जिस माँ की खिंचाई कर रहा था वह कुर्सी का गिलाफ लेकर उसका पीछा कर रही थी।

व्हाईट ने जेब से पंजा निकाला और सन्देह के साथ देखते हुए धीरे से बोला, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या मागूँ। सच तो यह है कि मुझे लगता है कि मुझे जो चाहिए वह सब मेरे पास है।"

हर्बर्ट ने उनके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "अगर आप घर छुड़ा सकते तो बहुत खुश होते, नहीं? दो सौ पाउंड माँग लो, उतना काफी होगा।"

अपने विश्वास पर शर्मिन्दा पिता ने पंजा उठाया। उनके बेटे ने गम्भीर चेहरा बनाकर माँ की तरफ देखते हुए आँख मारी, फिर अपने आप प्यानो पर बैठकर कुछ अच्छी धुन बजाने लगा।

वृद्ध ने स्पष्ट स्वर में कहा, "मुझे दो सौ पाउन्ड की इच्छा है।"

प्यानो से निकली आवाज़ ने शब्दों का स्वागत किया, तभी वृद्ध सिहर कर चीख उठा। पत्नी और बेटा उसके पास गए।

जमीन पर पड़े पंजे को नफरत से देखते हुए बूढ़े ने कहा, "यह हिला था। जैसे ही मैंने इच्छा व्यक्त की यह मेरे हाथों में साँप की तरह ऐंठने लगा।"

"पर मुझे पैसा तो नहीं दिख रहा", बेटे ने कहा और पंजे को उठाकर मेज पर रख दिया, "और मैं शर्त लगा सकता हूँ कि मुझे दिखेगा भी नहीं।"

पत्नी ने पति को चिन्तापर्बूक देखते हुए कहा, "शायद आपको वहम हुआ हो।" उन्होंने सिर हिलाया, "छोड़ो, कोई नुकसान नहीं हुआ। मैं बहुत डर गया था।"

वे लोग फिर से आग के पास बैठ गए, दोनों आदमियों ने चुरुट ख़त्म किए। बाहर हवा पहले से तेज़ हो गई। ऊपर एक दरवाज़े के बजने से वृद्ध घबराकर चौक उठा। एक असामान्य और उदासी भरी चुप्पी तीनों पर तब तक छाई रही जब तक कि दोनों वृद्ध सोने नहीं चले गए।

हर्बर्ट ने 'शुभ रात्रि' कहते हुए मज़ाक किया, "मुझे लगता है कि तुम्हारे बिस्तर के बीच में एक बड़े थैले में बँधे हुए रुपये रखे होंगे। जब तुम गलत तरीके से मिले इस रुपये को अंटी लगा रहे होगे, तब आलमारी के ऊपर बैठकर कोई भयानक चीज तुम्हें देख रही होगी।

II

अगले दिन सुबह जब नाश्ते की मेज़ पर सर्दियों के सूरज की चमक आ रही थी तब हर्बर्ट अपने डर का मज़ाक उड़ा रहा था। कमरे में एक स्वस्थ भाव था जो पिछली रात नहीं था, और वह गन्दा सूखा पंजा लापरवाही से साइडबोर्ड पर पडा था जिससे पता चल रहा था कि उसके गुणों पर कोई ख़ास विश्वास नहीं किया गया था।

श्रीमत्ती व्हाईट बोली, "मैं सोचती हूँ सभी सैनिक एक से होते हैं और हम उसकी बेवकूफी भरी बातें सुनते रहे। आजकल के जमाने में ऐसे इच्छाएँ पूरी कैसे हो सकती हैं? और अगर वे हो सकतीं तो दो सौ पाउन्ड तुम्हें तकलीफ थोड़े ही देते?"

हर्बर्ट ने छिछोरेपन से कहा "शायद आकाश से सीधे उनके सिर पर गिर जाएँ।" उसके पिता ने कहा, "मॉरिस कह रहा था कि चीज़ें इतने सहज ढंग से होती है कि अगर तुम चाहो तो उन्हें संयोग कह सकते हो।"

"अच्छा मेरे लौटने से पहले पैसे हासिल मत कर लेना,"

हर्बर्ट ने मेज़ पर से उठते हुए कहा, "मुझे डर हैं कि पैसे पाकर कहीं तुम

इतने लालची आदमा न बन जाओ कि हम तुम्हें छोड़ना पड़े।''

उसकी माँ हँसती हुई उसके पीछे दरवाज़े तक गई। उसे सड़क पर जाता हुआ देखती रही। फिर नाश्ते की मेज़ पर लौटी। वह पति के भोलेपन पर हँस रही थी। पर जब डाकिए ने दरवाजा खटखटाया तो भागी हुई दरवाजे तक गई। उसके दर्जी का बिल देने पर वह सेवानिवृत्त सार्जेंट मेजरों की पियक्कड़ आदतों की आलोचना करने से नहीं रुकी।

जब वह खाने के लिए बैठी तो बोली, ''घर लौटने पर हर्बर्ट मज़ाक करने से बाज नहीं आएगा।''

मि. व्हाईट अपने लिए बीयर डालते हुए बोले, ''सच पर कुछ भी कहो, मे कसम खा सकता हूँ कि वह चीज़ मेरे हाथ में हिली थी।''

''तुम्हें लगा था कि हिली थी,'' वह बोला, ''सोचने की बात नहीं है, मुझे बस—क्या हुआ?''

उसकी पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। एक आदमी रहस्यमय ढंग से बाहर घूम रहा था, वह उसे ही देख रही थी। वह आदमी घर के बाहर से ऐसे अनिश्चित ढग से झाँक रहा था जैसे अन्दर आने के लिए मन बना रहा हो।

वह आदमी अच्छे कपड़े पहने था और चमकीला नया रेशमी हैट लगाए था। दिमाग में दो सौ पाउन्ड की बात होने के कारण उसे उन दोनों में सम्बन्ध लगा। वह आदमी तीन बार फाटक पर रूका, और आगे चला गया। चौथी बार आया फाटक पर हाथ रखा, फिर निश्चय के साथ खोला और अन्दर आया।

श्रीमत्ती व्हाईट ने फौरन हाथ पीछे करके एप्रैन के फीते खोले और उसे उतार कर कुर्सी की गद्दी के नीचे रख दिया।

वह उस परेशान से अजनबी को अन्दर लाई। वह आदमी चोर नज़र से उसे देख रहा था। वृद्धा कमरे की बेतरतीबी के लिए माफी माँग रही थी और वह अनमने ढग से सुन रहा था। एक कुर्सी पर उसके पति का बगीचे में काम करने वाला कोट पडा था। वह धीरज से उस आदमी के बात शुरू करने का इन्तजार कर रही थी पर वह अजीब ढंग से चुप था।

''मुझे यहाँ भेजा गया है,'' आखिर वह बोला और झुककर पतलून पर से रूई हटाने लगा, ''मैं मौ और मेगीन्स कम्पनी से आया हूँ।''

अब बुढ़िया चौंकी। उसने साँस रोककर पूछा, ''क्या बात है? क्या हर्बर्ट को कुछ हुआ है? क्या है? क्या है?''

उसके पति ने उसे टोका और जल्दी से कहा, ''बेकार अन्दाजे मत लगाओ। श्रीमान्, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि आप कोई बुरी खबर नहीं लाए हैं,'' उसने फिक्र से पूछा।

''मुझे अफसोस है''—आगंतुक ने शुरू किया।

'क्या उसे चोट लगी है? मॉं ने पूछा।

आगंतुक ने हामी भरते हुए झुककर कहा, "बहुत बुरी तरह, पर अब उसे कोई दर्द नहीं है।"

बूढ़ी औरत ने हाथ जोड़कर कहा, "भगवान का शुक्र है, भगवान का शुक्र है "

फिर वह बीच में ही रुक गई। सहसा उसे उस तसल्ली का भयानक अर्थ समझ में आया और उस आदमी के झुके हुए चेहरे ने उसके डर को पक्का कर दिया। उसने साँस रोक ली और अपने कम समझ वाले पति के हाथ पर अपना काँपता हुआ हाथ रख दिया। एक लम्बी चुप्पी रही। आखिर आगंतुक ने धीमी आवाज मे कहा, "वह मशीन में आ गया था।"

"मशीन में आ गया!" व्हाईट ने स्तब्ध ढंग से कहा।

"हाँ" वह खाली नज़रों से खिड़की के बाहर देखता रहा और अपनी पत्नी के हाथों को अपने हाथों के बीच में लिया, ऐसे दबाया जैसे चालीस वर्ष पहले दोस्ती के दौरान दबाता था।

"हमारे पास केवल वही बचा था," उसने आगंतुक की तरफ मुड़कर कहा, "यह सहना बहुत मुश्किल है।"

आगंतुक खाँसा, उठा, धीरे से खिड़की तक गया। "मुझे कम्पनी ने आपके इस बड़े नुकसान के वक्त पर सच्ची सहानुभूति प्रकट करने के लिए भेजा है।" उसने मुड़े बिना कहा, "मेरी विनती है कि आप मुझे समझें कि मैं सिर्फ उनका नौकर हूँ और उनके आदेश का पालन भर कर रहा हूँ।"

कोई जवाब नहीं आया, बूढ़ी औरत का चेहरा सफेद पड़ चुका था, उसकी आँखें सिर्फ घूर रही थीं, उसकी साँस सुनाई भी नहीं दे रही थी। उसके पति के चेहरे पर ऐसा भाव था जैसा उसके दोस्त सार्जेंट के चेहरे पर पहले हमले के वक्त रहा होगा।

आगंतुक ने कहा, "मुझे यह कहना है कि मौ और मेगीन्स इस दुर्घटना के लिए अपने को उत्तरदाई नहीं मानते। पर जिम्मेवारी न मानने पर भी वे आपके बेटे के काम को दृष्टि में रखते हुए हर्जाने के रूप में कुछ रुपये देना चाहते हैं।"

व्हाईट ने पत्नी का हाथ छोड़ते हुए खड़े होकर अपने पर आए व्यक्ति को डरी हुई नज़र से देखा और सूखे होंठों से पूछा, "कितने रुपये?"

जवाब था, "दो सौ पाउन्ड।"

अपनी पत्नी की चीख से बेखबर बूढ़ा हल्के से मुस्कराया, अन्धे की तरह हाथ आगे फैलाए और गिरा दिए। बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया।

III

दो मील दूर, एक बड़े नए कब्रिस्तान में बूढ़े लोगों ने उस लड़के के शव को दफनाया, फिर अन्धेरे और चुप्पी से भरे घर में लौट आए। सब कुछ इतनी जल्दी ख़त्म हो गया कि पहले तो वे कुछ समझ ही नहीं पाए; अब ऐसा लग रहा था कि वे कुछ ओर होने की इन्तज़ार में थे—कुछ ऐसा जिसके होने से बूढ़े दिलों को अपना भारी वजन सहना कुछ हल्का हो जाता।

पर दिन बीतते गए, उम्मीद चुपचाप दुःख सहने की आदत में बदल गई। बूढो की निराशापूर्ण दुःख की वृत्ति को कई बार तटस्थता मान लिया जाता है। कभी कभी तो ये दोनो आपस में एक शब्द भी नही बोलते थे, क्योंकि अब उनके पास कहने को कुछ रह ही नहीं गया था। उनके लम्बे दिन थकान भरे थे।

उसके एक हफ्ते बाद एक रात सहसा वृद्ध की आँख खुल गई। बिस्तर पर हाथ फैलाया तो देखा अकेला था। कमरे में अँधेरा था। खिड़की के पास से रोने की दबीदबी आवाज़ आ रही थी। उसने बिस्तर पर ऊँचे उठकर सुना।

फिर नरमाई से बोला, "वापिस आ जाओ, तुम्हें ठंड लग जाएगी।" बूढ़ी औरत ने कहा, "मेरे बेटे के लिए तो ज्यादा ठंड है, "और नए सिरे से रोने लगी।

बूढ़े के कानों में उसकी सिसकियों की आवाज़ धीमी होती गई। बिस्तर गरम था, उसकी आँखें नींद से झुकी जा रही थीं। वह पहले झपकी ले रहा था, फिर सो गया। तभी पत्नी की चीख ने उसे चौंका कर जगा दिया।

"बन्दर का पंजा"! वह चीखी "बन्दर का पंजा!"

वह डर से चौंक पड़ा "कहाँ? क्या हुआ?"

वह लड़खड़ाती हुई कमरा पारकर पति के पास गई और बोली, "मुझे चाहिए। तुमने उसे ख़त्म तो नहीं किया?"

"वह बैठक में दीवालगिरि (ब्रेकेट) पर है। क्यों?" उसने जवाब दिया।

वह एक साथ रोने और हँसने लगी, झुकी और उसके गाल को चूम लिया। "मै अभी सोच रही थी कि पहले क्यों नहीं सोचा? तुमने क्यों नहीं सोचा? वह पागलो की तरह बोली।

"क्या नहीं सोचा?" उसने पूछा।

वह जल्दी से बोली—"बाकी की दो इच्छाएँ। हमने तो एक ही माँगी है।" वह तेज़ी से बोला, "क्या वह काफी नहीं थी?"

"नहीं", उसने विजयी भाव से कहा, "हम एक और माँगेंगे। नीचे जाओ और जल्दी से उसे ले आओ, और यह इच्छा माँगो कि हमारा बेटा जिन्दा हो जाए।"

आदमी बिस्तर पर बैठ गया। उसने काँपते हुए अपने हाथ पैरों पर से चादर फेकी, डर से हक्का बक्का होकर वह चिल्लाया, "हे भगवान्, तुम पागल हो गई

हो।'' उसके पति ने माचिस जलाकर मोमबत्ती रोशन की। फिर काँपती आवाज़ मे कहा, ''बिस्तर पर जाओ। तुम नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो।''

वह औरत फिर उत्तेजित होकर चीखी, ''हमारी एक इच्छा पूरी हुई है ना, फिर दूसरी क्यों न माँगें?''

बूढ़े ने हकलाते हुए कहा, ''वह एक संयोग था।''

''लाओ और माँगो'', बूढ़ी औरत ज़ोर से बोली और उसे दरवाज़े की तरफ घसीट कर ले गई।''

वह अँधेरे में नीचे गया, टटोलता हुआ बैठक में गया, और फिर दीवालगिरी (ब्रैकेट) तक। वह जादुई पंजा अपनी जगह पर था। उसे बहुत डर लगा कि कही बिना माँगे भी इच्छा के अनुसार कमरे से निकलने से पहले ही बेटे का क्षतविक्षत शरीर उसके सामने न आ जाए। हड़बड़ी में वह दरवाज़े की दिशा ही भूल गया। उसने साँस खींच लिया। उसके माथे पर ठंडा पसीना आ गया। उसने मेज के पास टटोलते हुए रास्ता ढूँढ़ा, दीवार के सहारे चलता चलता, हाथ में उस भयानक पजे को लिए वह छोटे गलियारे तक पहुँचा।

कमरे में घुसने पर उसे लगा कि उसकी पत्नी का चेहरा बदल गया है। वह सफेद और उम्मीद-भरा था। उसे डर के कारण पत्नी का चेहरा अस्वाभाविक लग रहा था। वह उससे डरने लगा।

''माँगो?'' वह ताकतवर आवाज में चिल्लाई।

उसने हकलाते हुए कहा, ''यह बेवकूफी और दुष्टतापूर्ण होगा।'' पत्नी ने दुहराया, ''माँगो!''

उसने अपना हाथ ऊँचा उठाया और बोला, ''मैं अपने बेटे को फिर से ज़िन्दा माँगता हूँ।''

पंजा ज़मीन पर गिर गया, बूढ़ा काँपता हुआ उसे देखने लगा। जब वह बूढी औरत जलती आँखों से खिड़की तक गई और उसने खिड़की खोल ली, तब वह काँपता हुआ कुर्सी पर बैठ गया।

वह बैठा बैठा जमा जा रहा था, बीच बीच में बूढ़ी औरत की तरफ देख लेता था जो खिड़की से बाहर झाँक रही थी। मोमबत्ती का सिरा जो चीनी के मोमबत्ती के स्टैण्ड के किनारों से नीचे चला गया था, एक तेज़ चमक के साथ बुझ गया। बूढ़ा आदमी यह सोचकर कि जादुई पंजा असफल रहा, एक अवर्णनीय तसल्ली से भर उठा, वह वापस बिस्तर में चला गया और एक दो पल बाद बुढ़िया भी चुपचाप तटस्थता से उसके पास आ गई।

दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला, चुपचाप घड़ी की टिकटिक सुनते रहे, सीढी चरमराई, एक चूहा आवाज़ करता हुआ दीवार से निकल गया। अँधेरा हावी हुआ जा रहा था, कुछ देर लेटने के बाद हिम्मत बटोरकर बूढ़े ने माचिस की डिबिया ली

और एक तीली जलाकर मोमबत्ती लेने नीचे गया।

नीचे पहुँचने पर माचिस की तीली बुझ गई, वह रुका कि एक और तीली जला ले, तभी मुख्य द्वार पर धीरे से इतना धीरे कि मुश्किल से सुनी जा सके, खटखटाने की आवाज़ आई।

उसके हाथ से माचिस गिर गई। वह बिना हिले डुले खड़ा रह गया, साँस भी जैसे रुक गई। फिर दुबारा आवाज़ आई वह मुड़ा और तेज़ी से ऊपर सोने वाले कमरे की तरफ भागा और अपने पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लिया। तीसरी बार की खटखटाहट पूरे घर में गूँज उठी।

"यह क्या है?" बुढ़िया उठते हुए चिल्लाई।

काँपती आवाज़ में बूढ़े ने कहा, "चूहा, एक चूहा। वह सीढ़ियों में मेरे पास से भागा था।"

उसकी पत्नी बिस्तर पर बैठकर सुनने लगी। एक तेज़ आवाज़ घर में गूँज उठी।

"हर्बर्ट है!" वह चीखी, "वह हर्बर्ट है!"

वह दरवाज़े तक भागी पर पति उसके आगे खड़ा हो गया और उसने कसकर उसकी बाँह पकड़ ली।

"तुम क्या करने जा रही हो?" उसने भर्राई आवाज़ में फुसफुसाकर पूछा।

"मेरा बेटा; वह हर्बर्ट है!" वह मशीनी ढंग से छूटने को झगड़ती हुई चिल्लाई "मैं भूल गई थी कि वह दो मील दूर था। तुम मुझे पकड़ क्यों रहे हो? जाने दो। मुझे दरवाज़ा खोलना है।

बूढ़े ने काँपते हुए कहा, "भगवान् के लिए उसे अन्दर मत आने दो।"

उसने छूटने के लिए झगड़ते हुए कहा, "तुम अपने बेटे से डरते हो? मुझे जाने दो। मैं आ रही हूँ हर्बर्ट, मैं आ रही हूँ!"

फिर खट खट हुई। फिर एक बार बूढ़ी औरत ने झटका दिया और अपने को छुड़ाकर कमरे से भागी। उसका पति उसके पीछे पीछे गया। वह तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर रही थी, और वह उससे विनती करता जा रहा था। फिर उसने सुना कि जंजीर हटी है, धीरे से नीचे की चिटकिनी खुली, फिर परेशान हाँफती बुढ़िया की आवाज आई।

वह ज़ोर से बोली, "ऊपर की चिटकिनी, नीचे आओ, मेरा हाथ नहीं पहुँच रहा।"

पर पति ज़मीन पर उकडू बैठकर पागलों की तरह पंजा ढूँढ़ रहा था। उस चीज़ के अन्दर आने से पहले वह उसे ढूँढ़ लेना चाहता था।

खटखटाने की आवाज़ बराबर घर में गूँज रही थी। उसने पत्नी के कुर्सी घसीटकर दरवाज़े तक ले जाने की आवाज़ सुनी, तभी उसे पंजा मिल गया, उसने पागलों की

तरह अपनी तासरी ओर आखिरी इच्छा माँग ली।

सहसा खटखटाहट बन्द हो गई, केवल उसकी गूँज बाकी बची थी। उसने कुर्सी वापस खिसकने और दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी। ठंडी हवा सीढ़ियों से ऊपर आई, निराशा और दुःख से भरी पत्नी की ऊँचे ऊँचे, लम्बे रोने की आवाज़ ने उसे उसके पास जाने की हिम्मत दी, फिर दोनों फाटक और उसके बाहर तक गए। शान्त और निर्जन सड़क पर दूसरी तरफ सड़क की एक बत्ती टिमटिमा रही थी।

वह अभिशप्त चीज़

एम्ब्रोस बीर्स

I

कोई हमेशा वही नहीं खाता जो मेज़ पर होता है।

एक आदमी खुरदुरी मेज़ के कोने पर रखी मोमबत्ती की रोशनी में किताब मे से कुछ पढ़ रहा था। वह पुरानी हिसाब की किताब थी, बहुत फटेहाल, उसकी लिखाई बहुत साफ नहीं थी क्योंकि कभी-कभी वह आदमी पन्ने को रोशनी के पास ले जाता था जिससे तेज़ रोशनी में पढ़ सके। ऐसे वक्त पर किताब से पड़ती छाया में आधा कमरा अँधेरा हो जाता था, कई चेहरे और आकार छिप जाते थे क्योंकि पढ़ने वाले के अलावा वहाँ आठ आदमी और थे। सात लकड़ी की खुरदुरी दीवार के सहारे चुपचाप, स्थिर बैठे थे। कमरा छोटा होने के कारण कोई भी मेज़ से बहुत दूर नहीं था। बाँह फैलाने पर आठवें आदमी को छुआ जा सकता था। वह मेज़ पर पड़ा था, उसका मुँह ऊपर की तरफ था, बाँहें दोनों तरफ थीं, चादर से थोड़ा बहुत ढका था, वह मृत था।

किताब वाला आदमी ज़ोर से नहीं पढ़ रहा था। बाकी के लोग कुछ नहीं बोल रहे थे; ऐसा लगता था कि सबको कुछ होने का इन्तजार था सिर्फ मृत आदमी को कोई उम्मीद नहीं थी। खिड़की की तरह की खुली जगह से बाहर के अँधेरे के साथ वीरानी रात की अपरिचित आवाजें आ रही थीं--दूर से भेड़िए की लम्बी चीख, पेडो के कीड़ों की अनथकी मौन सिहरन; रात के पक्षियों की अजीब चीखें जो दिन के पक्षियों से बिल्कुल अलग होती हैं; बड़े और भद्दे भौंरों की भनभनाहट, और वह रहस्यमय छोटी छोटी आवाज़ों की सामूहिक ध्वनि जो हमेशा अचानक बन्द हो जाने पर भी कुछ कुछ सुनाई देती रहती है, ऐसा लगता है कि वे सामाजिक नीति का उल्लघन

किए जाने के बारे मे जानते है। पर इस झुंड को कुछ पता नहीं चल रहा था। ये सभी व्यावहारिक दृष्टि से महत्त्वहीन कामों में कोई रुचि नहीं रखते थे, यह उनके असंस्कृत चेहरे की हर लकीर से—एक मोमबत्ती की धीमी रोशनी में भी साफ दिखाई दे रहा था। वे सब स्पष्ट रूप से आसपास के किसान या लकड़हारे थे।

पढ़ने वाला आदमी कुछ अलग था; कोई भी यही कहता कि वह दुनिया का इन्सान था, जो दुनियादारी जानता था, हालाँकि उसकी पोशाक अपने आसपास से मिलती जुलती थी। उसका कोट सॉन फ्रांसिस्कों में इज्ज़त नहीं पा सकता था, उसके जूते शहरी नहीं थे, और वह हैट जो उसके पास ज़मीन पर रखा था (सिर्फ वही नंगे सिर था) ऐसा था कि आदमी की सजावट बढ़ाने वाला नहीं कहा जा सकता था। उसकी आकृति देखने में आकर्षक होते हुए भी, थोड़ी सख़्त थी, जो कि शायद अधिकारी होने के नाते अपनाई या सीखी हो। पद के लिए वह उपयुक्त होती है। वह अकालमृत्यु परीक्षक था। पद के अधिकारी के कारण मृत व्यक्ति के सामान मे मिली वह किताब उसके पास थी जिसमें से वह पढ़ रहा था ; मृत व्यक्ति का सामान उसके केबिन में था जहाँ अब जाँच हो रही थी।

अकालमृत्यु परीक्षक ने पढ़ना ख़त्म करने के बाद उस किताब को अपनी छाती वाली जेब में रख लिया। उसी वक्त दरवाजा खोला गया और एक जवान आदमी अन्दर आया। साफ था कि वह न तो पहाड़ों पर जन्मा था और न ही पाला गया था ; वह शहरी पोशाक में था पर सफर के कारण उसके कपड़े धूल से भरे थे। वास्तव में वह इस पूछताछ के लिए पहुँचने के लिए काफी देर से घुड़सवारी करता रहा होगा।

सिर्फ परीक्षक ने गरदन हिलाई, बाकी किसी ने उसका स्वागत नहीं किया। अधिकारी ने कहा, "हम तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे थे, यह काम आज रात को होना ज़रूरी था।" वह जवान मुस्कराया। बोला, "मुझे दुःख है कि आपको इन्तज़ार करना पडा। मैं चला गया था, आपके सम्मन से बचने के लिए नहीं बल्कि अपने अख़बार का वह ब्यौरा डाक से भेजने के लिए गया था जिसके बारे में पूछताछ करने को मुझे वापिस बुलाया गया है।"

परीक्षक मुस्कराया।

वह बोला, "जो विवरण तुमने अपने अखबार को भेजा है, शायद यहाँ कसम उठाकर जो कहोगे वह उससे अलग हो।"

जवान ने गुस्से से लाल चेहरे के साथ कहा, "आप जो ठीक समझें। मैने बहुत से कागज इस्तेमाल किए थे, और जो भेजा है उसकी कॉपी मेरे पास है। वह एक ख़बर की तरह नहीं बल्कि कहानी की तरह लिखा गया है क्योंकि वह अविश्वसनीय है। वह मेरे कसम लेकर दिए गए कथन का हिस्सा हो सकता है।"

"पर तुम कहते हो वह अविश्वसनीय है।"

"अगर मैं कसम खाकर कहूँ कि वह सच है, तो आपको इससे क्या?"

परीक्षक कुछ देर चुप रहा, उसकी आखे ज़मीन पर गड़ा थी। कबिन के किनारा पर बैठे लोग फुसफुसा कर बातें कर रहे थे, पर लाश पर से उनकी नज़र नहीं हट रही थी। फिर परीक्षक ने आँखें उठाईं और कहा, "हम जाँच ज़ारी रखेंगे।" आदमियों ने अपने हैट उतार लिए। गवाह को कसम दिलाई गई।

परीक्षक ने पूछा "तुम्हारा नाम क्या है?"

"विलियम हार्कर।"

"उम्र?"

"सत्ताईस।"

"तुम मृतक ह्यू मॉर्गन को जानते थे?"

"हाँ।"

"मौत के वक्त तुम उसके साथ थे?"

"उसके पास था।"

"ऐसा कैसे हुआ—मेरा मतलब तुम वहाँ कैसे थे?"

"मैं इस जगह उसके पास शिकार करने और मछली पकड़ने आया था। पर मेरा एक उद्देश्य और था, वह यह कि मैं उसकी अजीब एकाकी ज़िन्दगी के बारे में जानना चाहता था। वह कहानी के एक पात्र का अच्छा मॉडल लगा था। मैं कभी कभी कहानियाँ लिखता हूँ।"

"मैं कभी-कभी पढ़ता हूँ।"

"धन्यवाद।"

"कोई भी कहानी—तुम्हारी नहीं।"

कुछ पंच हँसे। गम्भीर पृष्ठभूमि में कोई हँसे तो बहुत चुभता है। लड़ाई के बीच सैनिक आसानी से हँसता है पर मौत के कमरे में मज़ाक से लोग ताज्जुब में पड़ जाते हैं।"

परीक्षक ने कहा, "इस आदमी की मौत की परिस्थितियों को बयान करो। तुम जो कागज़ या नोट इस्तेमाल करना चाहो कर सकते हो।"

गवाह समझ गया। उसने अपनी जेब से हस्तलिखित प्रति निकाली, मोमबत्ती के पास ले जाकर तब तक कागज़ पलटता रहा जब तक वह जगह नहीं मिली जहाँ से वह पढ़ना चाहता था। और उसने पढ़ना शुरू कर दिया।

II

जंगली जई के खेत में क्या हो सकता है?

जब हमने घर छोड़ा तब

अभी सूय पूरी तरह निकला भी नही था, हम बटेर ढूढ़ रहे थे. हम दानो के पास बन्दूकें थीं पर कुत्ता एक ही था। मॉर्गन ने इशारे से बताया कि सबसे अच्छी जगह ऊँची ज़मीन के दूसरी तरफ होगी। हम ओक की घनी झाड़ियों के बीच के एक रास्ते से उसे पार कर गए। दूसरी तरफ इधर की तुलना में समतल ज़मीन थी जो जंगली जई के पौधों से भरी थी। जब हम उस झुरमुट से निकले तो मॉर्गन कुछ गज आगे था। अचानक हमारे दाईं तरफ और कुछ सामने थोड़ी दूर पर झाडियो मे किसी जानवर के पटके जाने की आवाज आई। हम समझ सकते थे कि वे काफी गुस्से में थे।

मैंने कहा, "हमने हिरन को डरा दिया है। काश हम राइफल लाए होते।" मॉर्गन कुछ नहीं बोला, वह बड़े ध्यान से झुरमुट की तरफ देख रहा था, पर उसने अपनी बन्दूक की नली ऐसे तैयार रखी थी जैसे निशाना लगाने को हो। उसे कुछ उत्तेजित देखकर मुझे ताज्जुब हुआ क्योंकि उसके बारे में मशहूर था कि अचानक आने वाली परेशानी के क्षणों में भी बहुत शान्त रहता था।

मैंने फिर कहा, "ओह चले आओ। तुम क्या बटेर की गोली से हिरन को मारोगे?"

उसने फिर भी जवाब नहीं दिया। बल्कि जब मेरी तरफ थोड़ा सा मुँह घुमाया तो उसकी नज़र में जो तीखापन था उससे मैं आहत हो गया। पर मैं यह समझ गया कि हम किसी बड़े झमेले में फँस गए हैं। मेरा पहला अनुमान था कि हमने किसी बड़े रीछ को छेड़ दिया है। मैं अपनी बन्दूक तैयार करके मॉर्गन की तरफ बढ़ा।

झाड़ियाँ अब चुप थीं, आवाज़ें बन्द हो गई थीं। पर मॉर्गन उसी तरह गौर से देख रहा था।

"क्या है? यह क्या दुष्ट चीज़ है?" मैंने पूछा।

"वह अभिशप्त चीज़ है!" उसने बिना सिर घुमाए जवाब दिया। उसकी आवाज भारी और अस्वाभाविक थी, वह काँपता हुआ लग रहा था।

मैं आगे बोलने वाला था कि मैंने देखा जिस जगह गड़बड़ हुई थी, वहाँ के जगली जई के पौधे अवर्णनीय ढंग से हिल रहे थे। मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। ऐसा लग रहा था जैसे हवा उन्हें हिला रही थी, झुका ही नहीं रही थी बल्कि नीचे दबा रही थी, ऐसे कुचल रही थी कि वे उठ नहीं पा रहे थे और यह हलचल हमारी तरफ बढ़ती आ रही थी।

इस अपरिचित और अवर्णनीय दृश्य ने मुझे इतना प्रभावित किया, जितना अब तक की देखी किसी चीज़ ने नहीं किया था, पर फिर भी मुझे ऐसा याद नही आता कि मैं डरा था। मुझे याद है—यहाँ इसलिए बता रहा हूँ कि मुझे तब याद आया था—कि एक बार लापरवाही से खुली खिड़की से बाहर देखने पर मुझे पलभर

क लिए पास का एक छोटा पड़ दूर के बड़े पड़ो के झुण्ड जेसा लगा था। वह औरो जैसा लग रहा था, पर निश्चित रूप से गहराई से देखने पर उन जैसा नहीं था। वह हवा में दिखने वाला झूठ था पर उसने मुझे डरा दिया था, चौंका दिया था। हम प्रकृति के परिचित और नियमित ढंग से चलने के इतने आदी हो जाते हैं कि उनमें बदलाव हमें डराता है, लगता है कि यह किसी दुर्घटना की चेतावनी है। इसलिए बिना कारण के हुई यह हलचल और उसका हमारी तरफ आना परेशान कर रहा था। मेरा साथी वाकई डरा हुआ दिख रहा था। जब मैंने देखा कि उसने अचानक बन्दूक कन्धे पर रखकर उस हलचल पर गोली दाग दी तो मैं अपनी इन्द्रियों पर विश्वास नहीं कर पाया। गोली चलने के बाद का धुआँ ख़त्म भी नहीं हुआ था कि एक तेज़ राक्षसी चीख आई--जैसे कोई जंगली जानवर चीखा हो--और मॉर्गन अपनी बन्दूक ज़मीन पर फेंककर वहाँ से भागा। धुएँ की वजह से कुछ दिख नहीं रहा तभी किसी चीज़ ने मुझे ऐसा ज़ोरदार धक्का दिया कि मैं गिर पड़ा--कोई नरम भारी-चीज मेरे साथ गिरी।

मेरे हाथों से बन्दूक गिर गई, जब तक मैं बन्दूक उठाकर खड़ा होता तब तक मुझे मॉर्गन की दर्दनाक चीख और उसके साथ एक भारी जंगली आवाज़ सुनाई दी, जैसे कुत्तों की लड़ाई हो रही हो। मैं बता नहीं सकता कि मैं कितना डर गया। मैंने खड़े होकर उस तरफ देखा जिधर मॉर्गन गया था। भगवान् करे मुझे ऐसा दृश्य फिर कभी देखने को न मिले। तीस गज से भी कम की दूरी पर मेरा दोस्त एक घुटने पर टिका था, उसका सिर भयानक ढंग से पीछे मुड़ा था, सिर पर हैट नहीं था, उसके लम्बे बाल फैले हुए थे। उसका पूरा शरीर इधर से उधर आगे पीछे हिल रहा था। उसकी दाईं बाँह ऊपर उठी हुई थी पर हाथ गायब था--कम से कम मुझे नहीं दिख रहा था। दूसरी बाँह गायब थी। कभी कभी जब मैं उस दृश्य को याद करता हूँ तो ध्यान आता है कि मुझे उसके शरीर का केवल एक हिस्सा दिख रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे उसे छिपा दिया गया था--मैं और किसी तरह बता नहीं सकता था--जब वह अपनी जगह बदलता था तभी दिखाई देता था।

यह सब कुछ पलों में ही हो गया होगा, उस वक्त मॉर्गन एक पहलवान की तरह सब हथकण्डे आज़मा रहा था पर उससे बड़ी ताकत और वज़न उसे हरा रहा था। मैं सिर्फ उसे देख रहा था पर वह हर वक्त साफ नहीं दिख रहा था। इस पूरी घटना के दौरान उसके चिल्लाने और गाली देने की आवाजें आ रही थीं। लग रहा था कि कोई गुस्से से भरकर चिल्ला रहा था पर मैंने ऐसी आवाज़ न किसी इन्सान की सुनी है न राक्षस की पलभर के लिए मैं कुछ तय किए बिना खड़ा रहा फिर बन्दूक फेंककर दोस्त की मदद के लिए भागा। मुझे एक धुँधला सा विश्वास था कि उसे दौरा पड़ा है। मेरे उस तक पहुँचने से पहले वह शान्त होकर नीचे पड़ा था। सब आवाज़ें थम चुकी थीं। पर इस सारी घटना से भी ज्यादा मैं तब डरा जब

मैंने फिर जंगली जई को रहस्यमय ढंग से हिलते हुए देखा। यह हलचल गिरे हुए आदमी के पास से होती हुई जंगल के किनारे तक गई। उसके जंगल तक पहुँचने के बाद मैंने वहाँ से नज़र हटाकर अपने साथी को देखा। वह मर चुका था।

III

एक आदमी नंगा होते हुए भी चिथड़ों में हो सकता है।

परीक्षक अपनी जगह से उठा और मृत आदमी के पास खड़ा हुआ। चादर का किनारा कुछ ऊपर उठाते हुए उसने हटा दिया, इससे पूरा शरीर दिखने लगा। वह नंगा था और मोमबत्ती की रोशनी में मिट्टी जैसा लग रहा था। लेकिन उस पर बड़े-बड़े नीले दाग थे जो अन्दरूनी चोट में खून बहने से पड़े थे। छाती और बगलें भयानक ढंग से कटी फटी ऐसी लग रही थीं जैसे डण्डे से मारा गया हो।

परीक्षक मेज़ के सिरे की तरफ से घूमकर ऊपर की तरफ गया और मृतक की ठोड़ी से ले जाकर ऊपर सिर पर बाँधे गए एक रेशमी रूमाल को खोला। रूमाल के हटने पर गला दिखा। कुछ पंच जो अच्छी तरह देखने की उत्सुकता में खड़े हुए थे पछताते हुए हटे और उन्होंने मुँह घुमा लिए। गवाह हार्कर खुली खिड़की की तरफ गया और चौखट से बाहर झुका, वह बेहोशी सी महसूस कर रहा था और उसे उल्टी आ रही थी। मुर्दे के गले पर रूमाल फेंककर अधिकारी कमरे के एक कोने में गया और कपड़े के ढेर पर से एक-एक कपड़ा ऊपर उठाकर दिखाने लगा। सारे कपडे फटे और खून से सने थे। पंचों ने पास से देखने की कोशिश नहीं की। ऐसा लगा कि उनकी उसमें रुचि नहीं थी। दरअसल वे सब पहले ही देख चुके थे, उनके लिए सिर्फ हार्कर का बयान नया था।

अधिकारी बोला, "सज्जनो, हमारे पास और कोई सबूत नहीं है। आपको आपका काम पहले ही बताया जा चुका है। अगर आपको और कुछ नहीं पूछना है तो बाहर जाकर अपने निर्णय के बारे में सोचें।

मोटे कपड़े पहने, लम्बा दाढ़ी वाला साठ साल का आदमी जो प्रमुख पंच था खड़ा हुआ।

वह बोला, "परीक्षक महोदय, मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ, आपका आखिरी गवाह किस पागलखाने से भागकर आया है?

परीक्षक ने बड़ी गम्भीरता और शान्ति से पूछा, "मि. हार्कर, आप किस पागलखाने से भागे थे?"

हार्कर फिर लाल हो उठा, पर कुछ नहीं बोला, सातों पंच उठकर केबिन से बाहर चले गए।

जब हार्कर अफसर और मृत व्यक्ति के साथ अकेला रह गया, तब बोला, "श्रीमान्, अगर आप मेरी बेइज़्ज़ती कर चुके हों तो मेरे ख्याल से मैं जाने के लिए आज़ाद हूँ।"

"हाँ।"

हार्कर जाने को तैयार हुआ, पर दरवाजे के हैंडिल पर हाथ रखकर रुका। अपने व्यवसाय के कारण उसमें खोजबीन की आदत, आत्मसम्मान की भावना से ज्यादा तेज़ थी। वह मुड़ा और बोला, "आपके पास जो किताब है वह मॉर्गन की डायरी है। आप उसमें बहुत रुचि ले रहे थे; जब मैं बोल रहा था तब आप उसे पढ रहे थे। क्या मैं उसे देख सकता हूँ? जनता चाहेगी कि...

अफसर ने डायरी अपने कोट की जेब में डालते हुए कहा कि इस किताब से कुछ नहीं होगा। इसमें जो कुछ लिखा है वह लेखक की मौत से पहले का है।

हार्कर जब कमरे से निकल रहा था, तब तक पंच वापिस आ गए और मेज के पास खड़े हुए। लाश पर चादर ढक दी गई थी। प्रमुख पंच मोमबत्ती के पास बैठा, उसने अपनी जेब से एक कागज़ का टुकड़ा और पेंसिल निकाला और बडी मेहनत से यह फैसला लिखा, जिस पर सबने पूरी कोशिश से हस्ताक्षर किए : "हम पच जान गए हैं कि उसका अन्त पर्वतीय शेर के हाथों हुआ, पर हम में से कुछ का विचार है कि उसे दौरा पड़ा था।"

IV

कब्र से व्याख्या

दिवगत ह्यू मॉर्गन की डायरी में कुछ रुचिकर बातें लिखी हुई थीं जो शायद वैज्ञानिक महत्त्व का सुझाव दे सकें। उसकी शव परीक्षा के समय डायरी को प्रमाण के तौर पर नहीं रखा गया था; शायद अधिकारी पंचों को गड़बड़ाहट में नहीं डालना चाहता था। डायरी में पहले पन्ने की तारीख तय नहीं की जा सकती थी क्योंकि कागज का ऊपरी हिस्सा फटा हुआ था, बचे हुए हिस्से में यह लिखा था :

"...आधे गोलचक्कर में भागता था, सिर हमेशा बीच की तरफ रखता था, फिर वह बिल्कुल स्थिर खड़ा हो जाता था, जोर से भौंकता था। आखिर वह जितनी तेज भाग सकता था भागकर झाड़ियों में चला गया। पहले मुझे लगा कि वह पागल हो गया है, पर घर लौटने पर उसके व्यवहार में दंड के डर के अलावा कोई फर्क नही था।"

"क्या कुत्ता नाक से देख सकता है? क्या गन्ध जिस चीज़ की हो उसका प्रभाव दिमाग के किसी हिस्से पर पड़ सकता है?...

2 सितम्बर पिछली रात घर की पूर्वी दिशा मे पहाडी के ऊपर उठते तारो का देखकर लगा कि वे एक के बाद एक करके बाएँ से दाईं तरफ गायब होते जा रहे है। हर तारा पलभर को छिप जाता, एक बार में कुछेक ही छिपते थे, पर पहाडी की पूरी लम्बाई के साथ, चोटी से एक दो डिग्री के अन्दर जितने थे वे सब छिप गए। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे और उनके बीच में कुछ आ गया था जिसे मैं देख नहीं पाया था। तारे इतने घने नहीं थे कि निकलने वाली चीज़ का आकार स्पष्ट होता। मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा...''

कई हफ्तों की प्रविष्टियाँ नहीं थीं, डायरी से तीन पन्ने फाड़े हुए थे।

27 सितम्बर--वह फिर यहाँ आया था--मुझे हर दिन उसके यहाँ होने का प्रमाण मिलता है। मैं कल रात भरी हुई बन्दूक हाथ में लिये छिपकर देखता रहा। सुबह फिर पहले की तरह ताजे पैरों के निशान थे, हालाँकि मैं कसम खा सकता हूँ कि मै सोया नहीं था—मैं मुश्किल से सोता हूँ। यह बहुत भयानक स्थिति है असहनीय है। अगर यह आश्चर्यजनक अनुभव सच है तो मैं पागल हो जाऊँगा, अगर यह मेरी कल्पना है तो मैं पागल हो चुका हूँ।

3 अक्टूबर—मैं नहीं जाऊंगा—वह मुझे भगा नहीं सकते। नहीं, यह मेरा घर है, मेरी जमीन है। भगवान् कायर से नफरत करते हैं।

5 अक्टूबर—अब मैं और नहीं सह सकता; मैंने हार्कर को कुछ हफ्ते अपने साथ बिताने के लिए बुलाया है—वह सन्तुलित दिमाग का है। उसके व्यवहार से मैं जान जाऊँगा कि क्या वह मुझे पागल समझता है।

7 अक्टूबर—मेरे पास रहस्य का समाधान है; यह मुझे कल रात को मिला, जैसे कोई रहस्य खुल गया हो। कितना सहज—कितना ज्यादा सहज।

कुछ आवाज़ें होती हैं जिन्हें हम सुन नहीं पाते। इन्सान के कान उस अधूरे वाद्य की तरह होते हैं जिसके दोनों छोरों पर ऐसे स्वर होते हैं जो उसके कोई तार झकृत नहीं करते। वे या तो बहुत ऊँचे होते हैं या बलहीन। मैंने एक पेड़ की पूरी फुनगी पर—बल्कि कई पेड़ों पर—कोयल की जाति के पक्षियों का झुण्ड देखा, सब ऊँची आवाज़ में गा रहे थे। सहसा—एक पल में—सब हवा में उड़ गए। कैसे? वे दूसरे पड़ों की ऊँचाई के कारण एक-दूसरे को देख नहीं सकते थे। और एक नेता तो किसी भी तरह सबको नहीं दीख सकता था। चेतावनी का कोई इशारा या आदेश जरूर रहा होगा जो सब आवाज़ों से ऊँचा और तीखा होते हुए भी मुझे सुनाई नही दिया। मैंने यह भी देखा था कि जब सब शान्त था तब भी न केवल कोकिल की जाति वाली चिड़ियाँ बल्कि और भी जैसे बटेर, जो झाड़ियों के कारण काफी दूर थीं—यहाँ तक कि पहाड़ की दूसरी तरफ वाली भी--उनके साथ ही उड़ गईं।

नाविक जानते हैं कि ह्वेलों का दल जो समुद्र की सतह पर मीलों के फासले पर खेल रहा होता है या यूँ ही धूप में पड़ा होता है, अपने बीच पृथ्वी की ऊँचाई

होते हुए भी, कभी-कभी एक ही समय पर जल में छलाँग लगाता है—पलभर में दृष्टि से ओझल हो जाता है। जब सिगनल बजता है—तो मस्तूल के सिरे पर खड़े नाविक या जहाज की छत पर खड़े उसके साथियों के लिए बलहीन होता है पर वे जहाज में उसकी तरंग महसूस कर पाते हैं, जैसे कैथेड्रल के पत्थर वाद्य की झंकार से काँप उठते हैं।

जैसा ध्वनि के साथ है वैसा ही रंगों का है। रसायन शास्त्री सौरमंडल के रंगों के अन्त पर रासायनिक किरणों की उपस्थिति देख पाता है। वे रंगों का—रोशनी के निर्माण से जुड़े रंगों का प्रतिनिधित्व करती हैं—जिन्हें हम जानने में असमर्थ हैं : मानवीय आँख अपूर्ण माध्यम है, इसकी सीमा असली गीत के सरगम के आसपास के समूह में होती है। मैं पागल नहीं हूँ। ऐसे रंग होते हैं जिन्हें हम देख नहीं पाते।

और भगवान मेरी रक्षा करें! वह अभिशप्त चीज़ वैसे रंग की है।

ड्रैकुला का मेहमान

ब्राम स्टोकर

भूमिका

जब हमने अपनी यात्रा शुरू की तब म्यूनिख़ पर सूर्य तेजी से चमक रहा था और हवा में गरमी की शुरूआत की खुशी भरी हुई थी। हम चलने को ही थे कि जिस होटल में मैं ठहरा था, उसका मालिक डेलब्रुक नंगे सिर गाड़ी तक आया, मेरी शुभ यात्रा की कामना की, फिर गाड़ी के दरवाज़े का हैंडल पकड़े-पकड़े कोचवान से कहा, "रात से पहले लौटने की बात याद रखना। आसमान साफ दिख रहा है पर उत्तरी हवा में कंपन है जिससे लगता है कि अचानक तूफान आ सकता है। पर मैं जानता हूँ कि तुम देर नहीं करोगे।" वह मुस्कराया और बोला, "क्योंकि तुम जानते हो कि आज कौन सी रात है।"

जोहान ने बलपूर्वक जवाब दिया, "हाँ सर," और अपने हैट को छूकर तेज़ी से गाड़ी चलाने लगा। शहर से बाहर निकलते ही मैंने उसे रुकने का इशारा करते हुए पूछा, "जोहान, मुझे बताओ आज रात क्या है?"

उसने सलीब का निशान बनाते हुए नपे तुले शब्दों में कहा, "वालपर्गीस नाइट" (यह पहली मई से पूर्व की रात होती है जब पुराने जर्मन अन्धविश्वास के अनुसार भूतनियाँ आधी रात को उत्सव मनाती हैं) फिर उसने अपनी पुराने चलन की शलजम जितनी बड़ी एक चाँदी की जर्मन घड़ी निकाली, भौंहों में बल डालकर अधीरता से कन्धे उचकाते हुए उसे देखा। मैं जान गया कि यह बिना ज़रूरत देर के खिलाफ आदरपूर्वक नाराज़गी दिखाने का ढंग था, और वापिस गाड़ी में बैठ गया। उसे चलने का इशारा भर किया कि वह ऐसे तेज़ी से चलाने लगा जैसे व्यर्थ गए वक्त को पूरा कर लेना चाहता था। बीच-बीच में घोड़े सिर ऊपर फेंककर हवा में शक से

कुछ सूँघते से लगते थे। ऐसे मौकों पर मैं डरकर पीछे मुड़कर देखता था। सडक काफी वीरान थी क्योंकि जिस सड़क पर हम चल रहे थे वह ऊँची और हवादार जमीन पर थी। जाते वक्त मैंने देखा कि एक सड़क नीचे थोड़ी घुमावदार घाटी मे उतरती लग रही थी पर वह ऐसी लग रही थी जैसे बहुत कम इस्तेमाल में आती हो। वह सड़क मुझे बुलाती-सी लग रही थी, और यह खतरा होते हुए भी कि वह गुस्सा होगा मैंने उससे रुकने को कहा। उसके गाड़ी रोकने पर मैंने उससे कहा कि मे उस सड़क पर जाना चाहता हूँ। वह तरह तरह के बहाने बनाने लगा और बोलते वक्त बार-बार सलीब का निशान बना रहा था। इससे मेरी उत्सुकता और बढ़ गई, तो मैंने उससे बहुत से सवाल पूछे। वह बचता हुआ जवाब दे रहा था और बार बार अपनी घड़ी की तरफ देख रहा था। आखिर मैंने कहा, ''जोहान, मैं इस सडक पर जाना चाहता हूँ। अगर तुम नहीं चाहते तो मैं तुमसे ज़बरदस्ती नहीं करूँगा; पर मे सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि तुम क्यों नहीं जाना चाहते।'' जवाब में वह अपनी गद्दी से नीचे कूदा और जल्दी से ज़मीन पर उतर आया, फिर उसने विनती करते हुए अपने हाथ मेरी तरफ फैलाए और कहा कि मैं वहाँ न जाऊँ। वह जर्मन में बस इतनी अंग्रेजी मिला पा रहा था कि मैं उसकी बातचीत का रुख समझ रहा था। वह मुझे कुछ बताना चाहता था पर बताने के ख्याल से भी डर रहा था; हर बार वह सलीब का निशान बनाते हुए कहता था : ''वालपर्गीस नाइट''।

मैं उससे बहस करना चाहता था पर भाषा न जानने के कारण बहस करना मुश्किल था। फायदा उसी को था। वह अंग्रेजी में बोलना शुरू तो करता था पर वह बड़ी अनगढ़ और टूटी फूटी होती थी, फिर वह उत्तेजित होकर अपनी देशी भाषा मे बोलने लगता था—इसके साथ ही घड़ी भी देखने लगता था। कुछ समय बाद घोडे बेचैन होने लगे और हवा सूँघने लगे। इस पर वह पीला पड़ गया और डरे हुए ढंग से चारों तरफ देखने लगा। फिर वह अचानक आगे कूदा, घोड़ों को लगाम से पकड़ा और कोई बीस फीट तक उन्हें ले गया। मैं पीछे पीछे गया और पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया। उसने जवाब में फिर सलीब का निशान बनाया फिर उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ से हम आए थे और गाड़ी को दूसरी सड़क पर ले गया, एक सलीब की ओर इशारा किया और पहले जर्मन में फिर अंग्रेज़ी में बोला, ''यहाँ उसे दफनाया गया, उसे जिसने अपने आप को मारा था।''

मुझे पुराना रिवाज याद आया कि आत्महत्या करने वालों को चौराहों पर दफनाया जाता था। आह! आत्महत्या। पर मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि घोड़े क्यों डर रहे थे।

बातें करते हुए हमें एक आवाज़ सुनाई दी जो कुत्ते के कराहने और भौंकने के बीच की सी थी। वह आवाज़ दूर पर थी , पर घोड़े बहुत बेचैन थे और जोहान पूरा वक्त उन्हें शान्त करने की कोशिश कर रहा था। वह पीला पड़ गया था, बोला,

"यह भेड़िए की सी आवाज़ है, पर यहाँ कोई भेड़िया नहीं है।"

मैंने पूछा, "नहीं है? क्या शहर के पास से भेड़िए बहुत समय से दूर नही चले गए हैं?"

"बहुत पहले से नहीं हैं—वसन्त, गर्मी से; पर बर्फ के दिनों में वे आते रहे।

वह घोड़ों को थपथपाकर शान्त करने की कोशिश कर रहा था कि तभी आकाश पर काले बादल तेज़ी से आ गए। धूप चली गई, ठंडी हवा का एक झोंका हमारे पास से निकल गया। झोंका सच होने की जगह एक चेतावनी जैसा लगा, क्योकि फिर तेज़ धूप निकल आई। जोहान ने अपने उठे हुए हाथ के नीचे से क्षितिज की तरफ देखा और बोला, "जल्दी ही बर्फ का तूफान आने वाला है।" फिर उसने दुबारा घडी की तरफ देखा, वह लगाम कसकर पकड़े हुए था। क्योंकि घोड़े अब भी बेचैनी से जमीन पर पैर पटक रहे थे और सिर हिला रहे थे—वह गाड़ी पर ऐसे चढ़ा जेसे लौटने का वक्त हो गया हो।

मुझे थोड़ी ज़िद हो गई, मैं फौरन गाड़ी पर नहीं चढ़ा।

मैंने नीचे की तरफ इशारा करते हुए पूछा कि "मुझे बताओ कि यह सडक कहॉ जाती है।"

उसने जवाब देने से पहले फिर सलीब का निशान बनाया और बड़बड़ाया, "वह अपवित्र है।"

मैंने पूछा, "क्या अपवित्र है?"

"गाँव।"

"तो वहाँ एक गाँव है?"

"नहीं नहीं। सैकड़ों सालों से वहाँ कोई नहीं रहता,"

मेरी उत्सुकता जागी, "पर तुमने तो कहा वहाँ गाँव था।"

"वहाँ था।"

"अब कहाँ है?"

इसके बाद उसने मिलीजुली जर्मन और अंग्रेज़ी में एक लम्बी कहानी सुनाई। मै ठीक-ठीक से समझ नहीं पाया पर इतना अन्दाज़ा अवश्य लगाया कि बहुत पहले, सैकड़ों साल पहले वहाँ जो आदमी मरे उन्हें कब्र में दफना दिया गया; फिर मिट्टी के नीचे से आवाज़ें आने लगीं। जब कब्रें खोदी गई तो मरे हुए स्त्री पुरुष जीवित थे और उनके मुँह खून से लाल थे। अपना जीवन बचाने की जल्दी में (अपनी आत्मा भी।—उसने फिर सलीब का निशान बनाया) जो जीवित थे वे दूसरी जगहों पर चले गए जहाँ जिन्दा लोग बसते थे और मरे हुए मृत ही थे—कुछ और नहीं—आखिरी शब्दों को बोलने में वह डर रहा था। जैसे जैसे वह आगे बोलता गया वैसे वैसे और उत्तेजित होता गया। ऐसा लगा कि उसकी कल्पना उस पर हावी होती जा रही थी। उसने डरते डरते अपनी बात खत्म की। चेहरा सफ़ेद पड़ गया था पसीना पसीना

ही रहा था, काँपते हुए इधर उधर ऐसे देख रहा था जैसे वहाँ चमकती धूप में भी कोई भयानक चीज़ आ जाएगी। अन्त में वह निराशा से भरकर चिल्लाया, "वालपर्गीस नाइट!" और मुझे गाड़ी में चढ़ने का इशारा करने लगा। मेरा अंग्रेज खून उत्तेजित हो उठा। मैंने पीछे हटते हुए कहा, "जोहान, तुम डर रहे हो। घर जाओ, मैं अकेला लौट आऊँगा; मेरे लिए सैर अच्छी रहेगी।" गाड़ी का दरवाजा खुला था, मैंने सीट पर से अपनी छड़ी उठाई—मैं छुट्टियों में घूमने जाते वक्त हमेशा उसे ले जाता हूँ—और दरवाज़ा बन्द कर दिया, म्यूनिख़ की तरफ इशारा करते हुए कहा, "जोहान, घर जाओ—वालपर्गीस नाइट अंग्रेजों को परेशान नहीं करती।"

घोड़ों की बेचैनी बढ़ती जा रही थी और जोहान उन्हें रोकने की कोशिश के साथ साथ मुझसे उत्तेजित होकर विनती कर रहा था कि मैं ऐसी बेवकूफी न करूँ। मुझे उस बेचारे पर तरस आ रहा था, वह बहुत गम्भीर था, पर मैं अपनी हँसी रोक नहीं पा रहा था। अब वह अंग्रेजी भूल गया था। अपनी परेशानी में वह यह भी भूल गया था कि मुझे समझाने का सिर्फ एक ही तरीका था और वह था मेरी भाषा में कहना पर वह प्रादेशिक जर्मन में बके जा रहा था। मुझे अब यह मुश्किल लगने लगा। मैंने उसे इशारा किया "घर!" और चौराहे से घाटी में उतरने को तैयार हुआ।

निराश होकर जोहान ने घोड़े म्यूनिख़ की तरफ मोड़े। मैं अपनी छड़ी पर टिककर उसकी तरफ देखता रहा। वह कुछ समय तक धीरे-धीरे चलता रहा। तभी पहाडी पर एक लम्बा पतला आदमी आया। दूर से मैं सिर्फ इतना ही देख पाया। जैसे ही वह घोड़ों के पास पहुँचा कि घोड़ों ने कूदना और पैर फेंकना शुरू कर दिया। फिर वे हिनहिनाने लगे। जोहान उन पर काबू नहीं रख पा रहा था। वे सड़क पर पागलों की तरह दौड़ने लगे। मैं उन्हें नज़र से ओझल होते हुए देखता रहा, फिर उस अजनबी को देखना चाहा पर वह जा चुका था।

मैं हल्के मन से नीचे वाली उस सड़क पर मुड़ा जिस पर जाने को जोहान मना कर रहा था। मुझे उसके एतराज का कोई कारण दिखाई नहीं दे रहा था; मै कुछ घण्टों तक समय और दूरी की चिन्ता के बिना घूमता रहा। मुझे कोई इन्सान या घर नहीं दिखा। जहाँ तक जगह का सवाल था वह वीरान थी। पर मैंने उस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। तभी मुझे सड़क के एक मोड़ के किनारे पर छितरा हुआ जंगल सा दिखा; तब मुझे ध्यान गया कि उस जगह की वीरानगी ने ही मुझे अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया था।

मैं सुस्ताने के लिए बैठकर इधर-उधर देखने लगा। मुझे लगा कि सैर शुरू करने से अब तक में ठंड बढ़ गई थी—ऐसा लगा जैसे कोई मेरे पास साँस ले रहा था और उसके साथ बीच-बीच में ऊपर से एक घुटी हुई गर्जना सुनाई दे रही थी। मैंने ऊपर की तरफ देखा तो जाना कि बहुत ऊँचाई पर गहरे काले बादल तेज़ी से उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहे हैं। हवा के ऊँचे स्तर पर तूफान के आने का संकेत

था। मुझे थोड़ी ठंड लगने लगी। मैंने सोचा कि चलने की कसरत के बाद बैठने के कारण ऐसा लग रहा होगा और मैंने फिर चलना शुरू कर दिया।

जिस जगह से मैं अब गुज़र रहा था वह और भी सुन्दर थी। वहाँ कोई भी चीज आँखों को अलग से दीखने वाली नहीं थी, पर कुल मिलाकर सुन्दर थी। मैंने समय की ओर ध्यान नहीं दिया। जब अँधेरा उतरने लगा तब मुझे यह चिन्ता हुई कि घर का रास्ता कैसे मिलेगा। दिन की रोशनी चली गई थी, हवा में ठंडक थी ओर ऊपर आसमान में बादलों का चलना बढ़ गया था। उनके साथ कहीं दूर से दोडने की आवाज़ आती थी और बीच बीच मं एक रहस्यमय चीख सुनाई देती थी जिसे ड्राइवर भेड़िए की बता रहा था। थोड़ी देर को मैं झिझका पर मैंने ही कहा था कि मैं उस उजाड़ गाँव को देखना चाहता था, इसलिए आगे बढ़ गया और एक खुली जगह पहुँचा, जिसके चारों तरफ पहाड़ थे। उनके किनारो पर पेड़ थे जो नीचे की समतल जगह तक फैले हुए थे। बीच-बीच में हल्की ढलान या इधर उधर गड्ढे दिखाई दे रहे थे। मैंने घुमावदार सड़क को देखा तब जाना कि वह पेड़ों के समूह के पास होकर उसके पीछे खो गई थी।

जिस समय मैं इधर उधर देख रहा था, तभी हवा में बड़ी कँपकँपाहट आई ओर बर्फ गिरने लगी। मैं उस उजड़े गाँव के उन मीलों लम्बे फैलाव के बारे में सोचने लगा जो मैं पारकर आया था। बर्फ से बचने के लिए मैंने सामने वाले जंगल मे शरण ली। आकाश और गहरा होता गया। भारी बर्फ तेज़ी से तब तक गिरती रही जब तक कि मेरे सामने और आसपास ज़मीन चमकते सफेद कालीन की तरह नही हो गई। फैलाव का दूर का छोर कोहरे के धुँधलके में छिप गया। सड़क यहीं थी पर बनी हुई नहीं थी। जहाँ एक सी थी वहाँ उसका किनारा इतना साफ नहीं था, जितना वहाँ जहाँ वह कटी हुई थी, और थोड़ी देर में मुझे लगा कि मैं ज़रूर भटक गया हूँ क्योंकि मेरे पैरों के नीचे की जमीन ठोस नहीं थी, मेरे पैर घास और काई मे धँसते जा रहे थे। फिर हवा और तेज़ हो गई। कोई उपाय न सूझने के कारण मे आगे भागने लगा। हवा बर्फीली हो गई। कसरत के बावजूद मुझ पर असर होने लगा। बर्फ अब बवंडर की तरह मेरे चारों ओर घूमकर ऐसे गिर रही थी कि मेरे लिए आँखें खोलना मुश्किल हो रहा था। थोड़ी थोड़ी देर के बाद तेज़ बिजली आसमान को चीरे डाल रही थी, और उस चमक में मुझे अपने सामने सरू और यू के पेड़ो के झुण्ड दिखाई दिए जो बर्फ से लदे थे।

जल्दी ही मैं पेड़ों की छाया में पहुँच गया और वहाँ तुलनात्मक सन्नाटे मे मै ऊपर चलती तेज़ हवा की आवाज़ सुन पा रहा था। अब तूफान का अँधेरा आर रात का अँधेरा एक हो गया था। धीरे-धीरे लगा कि तूफान थमने वाला था अब वह बीच-बीच में रुक जाता था। और तब भेड़िए की भयानक आवाज़ और उससे मिलती जुलती आवाज़ें एक साथ गूँजने लगती थीं।

कभी कभी चलते हुए काले बादलों के बीच छितरी सी चाँदनी की किरण आ जाती थी, जिससे सारे फ़ैलाव में चमक आ जाती थी। उस चमक में मैंने देखा कि यू और सरू के पेड़ों के घने झुण्ड के जिस किनारे पर मैं था वहाँ बर्फ गिरनी बन्द हो गई थी। इसलिए मैं आड़ से निकलकर और ध्यान से देखने लगा। मुझे लगा कि मैंने बहुत जगह पुरानी नींवे छोड़ी हैं। शायद कोई टूटा-फूटा घर अब भी बचा हो जहाँ मैं थोड़ी देर के लिए शरण ले सकूँ। जैसे ही मैं झाड़ियों से बचता हुआ निकला तो मैंने देखा कि एक नीची दीवार उसे घेरे थी। उसके सहारे चलते-चलते मुझे एक खुली जगह मिली। यहाँ सरू के पेड़ों से एक चौकोर सी किसी इमारत के पास तक एक गली बनी थी। जैसे ही यह मेरी नज़र में आया कि उड़ते बादलो ने चाँद को ढक दिया। मैंने वह रास्ता अँधेरे में पार किया। हवा और ठंडी हो गयी होगी। क्योंकि मुझे लगा कि मैं चलते हुए काँप रहा था; पर आश्रय मिलने की उम्मीद मे मैं टटोलकर रास्ता बनाता गया। मैं रुका क्योंकि अचानक सन्नाटा छा गया था। तूफान जा चुका था और शायद प्रकृति की चुप्पी से सहानुभूति रखते हुए मेरे दिल ने भी धड़कना बन्द कर दिया था, पर शायद यह पलभर को हुआ, क्योंकि अचानक बादलों के बीच चाँदनी निकल गई। मैंने देखा कि मैं कब्रिस्तान में था, और वह जो चौकोर सी चीज़ थी, वह एक बड़ा सा संगमर्मर का मकबरा था। वह उस बर्फ जैसा सफेद था जो उस पर चारों ओर पड़ी थी। चाँदनी के साथ फिर से तूफान की तेज़ साँस आई। ऐसा लगा कि वह बहुत से कुत्तों या भेडियों की लम्बी, नीची चीख के साथ लौट आया था। मैं घबरा गया और मुझे लगा कि ठंड मुझ पर हावी होती जा रही थी। उसने मेरे दिल को पकड़ लिया था। चाँदनी संगमर्मर की कब्र पर पड़ रही थी, तभी तूफान जैसे उसी रास्ते फिर से लौट गया। मैं मन्त्रमुग्ध-सा उस कब्र तक गया ताकि देखूँ कि वह क्या है और ऐसी जगह पर अकेली क्यो है। मैं उसके चारों तरफ घूमा ग्रीक दरवाज़े पर जर्मन मे लिखा हुआ पढ़ा :

*स्टीरिया के
*ग्राज़ की काउंटेस डॉलिनजन
ने यहाँ मौत ढूँढ़ी और पायी
1801

कब्र के ऊपर उस ठोस संगमर्मर के बीच से—क्योंकि वह निर्माण कुछ बडे पत्थरों से बना था—एक बड़ी लोहे की कील गड़ी थी। पीछे जाने पर देखा, बड़े रूसी अक्षरों में खुदा था :

मृत तेज़ी से सफ़र करते हैं

---

* दक्षिणपूर्वी ऑस्ट्रीया का प्रदेश

* राजधानी ग्राज़

वहाँ कुछ इतना भयानक और डरावना था कि पूरी चीज़ ने मुझे हिला दिया। मुझे लगा कि मैं बेहोश हो जाऊँगा। पहली बार मुझे लगा कि मुझे जोहान की बात मान लेनी चाहिए थी। इस वक्त की रहस्यमय परिस्थितियों में एक ख्याल ने मुझे जबरदस्त धक्का पहुँचाया। यह वालपर्गीस की रात थी।

सैकड़ों लोगों के विश्वास के अनुसार यह वह रात होती है जब शैतान बाहर होता है, जब धरती, हवा और पानी की सब बुरी चीज़ें रंग रेलियाँ मनाती हैं। ड्राइवर ने ख़ासकर इस जगह के लिए मना किया था। शताब्दियों पहला वीरान गाँव था, जहाँ आत्महत्याएँ होती थीं;' मैं यहाँ अकेला था—कमज़ोर, बर्फ से घिरा, ठंड से काँपता, एक तेज़ तूफान मुझ पर घिरता आ रहा था। मैं अपने दर्शन, धर्म-जो मुझे पढाया गया था और आत्मशक्ति के कारण ही डर से बेहोश नहीं हुआ।

अब एक पूरा तूफान मुझ पर टूट पड़ा। जमीन ऐसे काँप रही थी जैसे हजारो घोडे उस पर दौड़ रहे थे; और इस बार तूफान के बर्फीले पंखों पर बर्फ नहीं बडे बडे ओले थे, जो इतनी तेज़ी से आ रहे थे जैसे चमड़े की गुलेल से फेंके जा रहे हों—ऐसे ओले जो पत्ते, डाल सभी कुछ तोड़े डाल रहे थे। और अब सरू की शरण का कोई फायदा नहीं था। वह मानो दुर्बल भुट्टे की डाल जैसा था। पहले मैं पास वाले पेड़ की तरफ भागा, पर जल्दी ही उसे छोड़कर संगमर्मर की कब्र के गहरे दरवाजे की तरफ भागा क्योंकि वही मुझे आश्रय दे सकता था। उस बड़े ताम्बे के दरवाजे के सहारे झुककर मुझे ओलों की मार से थोड़ा बचाव मिला, क्योंकि अब वे ज़मीन से टकराकर या संगमर्मर के किनारे से टकराकर मुझ तक आ रहे थे।

जैसे ही मैं दरवाज़े के सहारे टिका, वह थोड़ा सा हिला और अन्दर को खुल गया। ऐसे निर्मम तूफान में एक कब्र से सहारे का भी स्वागत था। मैं अन्दर घुसने वाला ही था कि एक काँटे के से आकार की बिजली चमकी जिसने पूरा आकाश चौंधा दिया। उस पल में, एक जिन्दा इन्सान होने के नाते मेरी आँखें कब्र के अँधेरे की ओर गई। मैंने देखा एक खूबसूरत औरत जिसके गाल गोल-गोल और होंठ लाल थे, अर्थी पर सोती सी लग रही थी। जैसे ही ऊपर बिजली टूटी, मुझे लगा जैसे किसी दैत्य ने मुझे हाथ से पकड़कर बाहर तूफान में फेंक दिया। सब कुछ इतना अचानक हुआ कि जब तक मैं इस झटके को नैतिक और शारीरिक तौर पर समझ पाता, ओलों ने मुझे मारना शुरू कर दिया। उस समय मुझे लगा कि मैं अकेला नही हूँ। मैंने कब्र की तरफ देखा। उसी वक्त एक और अन्धा कर देने वाली चमक आई जो कब्र के ऊपर की कील पर पड़ी। कील के सहारे जैसे आग की एक लहर नीचे जमीन तक गई और उसने संगमर्मर को चूर-चूर कर उड़ा दिया। मृत औरत दर्द से बेचैन होकर पलभर को उठी तभी लपटों ने उसे पकड़ लिया। उसकी दर्द भरी चीख बिजली के गिरने की आवाज में डूब गई। मैंने भयानक आवाज़ों की मिली जुली ध्वनि सुनी फिर मुझे राक्षसी पकड़ ने अलग खींच लिया, ओले मुझे मारते रहे,

आस पास की हवा में भेड़ियों के गुर्राने की आवाज़ गूँजती रही। मुझे जो आखिरी दृश्य याद था वह एक धुँधली सफेद चलती हुई भीड़ का था। ऐसा लगा जैसे मेरे आस पास सभी कब्रों ने अपने मुर्दो के भूत बाहर भेज दिए थे और वे गिरते ओलो की सफ़ेद धुन्ध से होते हुए मेरे पास आते जा रहे थे।

धीरे-धीरे होश में आने की अस्पष्ट सी शुरूआत हुई; और फिर एक भयानक थकान लगने लगी। थोड़ी देर मुझे कुछ याद नहीं था; धीरे धीरे मेरी पूरी चेतना लौटने लगी। मेरे पैर बुरी तरह दुख रहे थे पर मैं उन्हें हिला नहीं पा रहा था। वे सुन्न हो गए थे। मेरी गरदन के पीछे से लेकर पूरी रीढ़ की हड्डी तक बर्फीली अनुभूति थी, मेरे कान मेरे पैरों की तरह बेजान थे पर बहुत दुख रहे थे, मेरी छाती में जो गरमाई थी वह बहुत अच्छी लग रही थी। वह एक बुरे स्वप्न जैसा था—एक शारीरिक दु:स्वप्न, अगर ऐसा कहा जा सकता हो तो; क्योंकि गरमाई का कारण मेरी छाती पर का भारी वजन था जो मुझे साँस लेने में भी मुश्किल पैदा कर रहा था।

काफी देर तक मुझ पर एक आलस्य सा छाया रहा, फिर या तो मैं सो गया या मूर्छित हो गया। फिर मुझे एक अजीब सी अनुभूति होने लगी। जैसे समुद्र तट पर जी मिचलाना शुरू होने लगे—जैसी किसी से छूटने की तीव्र इच्छा हो रही हो—किससे—मैं नहीं जानता था, फिर एक नफरत सी आने लगी। एक सन्नाटे ने मुझे घेर लिया। ऐसा लगा जैसे सारी दुनिया या तो सो रही है या ख़त्म हो गई है—सिर्फ किसी जानवर की पास से आ रही हाँफती आवाज़ इस सन्नाटे को तोड रही थी। मुझे लगा मेरे गले पर एक गर्म खरखराहट सी है। फिर एक भयानक सच्चाई की चेतना ने मेरे दिल को सर्द कर दिया। खून तेज़ी से दिमाग की तरफ दौडने लगा कोई बड़ा सा जानवर मेरे ऊपर लेटा हुआ मेरे गले को चाट रहा था। मैं हिलने मे भी डर रहा था। दूरदर्शिता ने मुझे स्थिर लेटे रहने को कहा। पर शायद वह दुष्ट मुझमें आए फर्क को समझ गया था, क्योंकि उसने अपना सिर उठाया मैंने पलको के बीच से एक बड़े भेड़िए की दो बड़ी और जलती हुई आँखें देखीं। उसके खुले लाल मुँह में तीखे सफ़ेद दाँत चमक रहे थे, और मैं उसकी गर्म साँसों की तेज़ी और तीखापन अपने ऊपर महसूस कर रहा था।

कुछ समय के लिए मुझे कुछ याद नहीं रहा। फिर मुझे एक धीमी गुर्राहट, बाद में दर्द भरी गुर्राहट बार बार सुनाई देने लगी। फिर ऐसा लगा कि कहीं दूर बहुत सी आवाज़ें इकट्ठी होकर पुकार रही हों "हलो! हलो!" सावधानी से सिर ऊँचा करके मैंने उस तरफ देखने की कोशिश की पर कब्रिस्तान ने मेरी नज़र को रोक लिया। भेड़िया अभी भी अजीब ढंग से गुर्रा रहा था, फिर आवाज़ के साथ एक लाल रोशनी सरू के पेड़ों के चारों तरफ घूमने लगी। जैसे जैसे आवाज़ें पास आने लगीं, भेड़िया और जल्दी और ज़ोर से गुर्राने लगा। मैं हिलने या बोलने में डर रहा था। मेरे आसपास फैले अँधेरे से होकर रोशनी पास आने लगी। फिर एकदम पेडो

के पीछे से टार्च उठाए घुड़सवारों की एक टुकड़ी आई। भेड़िया मेरी छाती पर से उठकर कब्रिस्तान की तरफ चला गया। मैंने एक घुड़सवार को देखा (टोपी और लम्बे लबादे से वे सैनिक लग रहे थे) उसने अपनी बन्दूक उठाकर निशाना लगाया। एक साथी ने उसकी बाँह में धक्का मारा और गोली मेरे सिर के ऊपर से निकल गई। उसने मेरे शरीर को भेड़िया समझा था। दूसरे ने जानवर को भागते देखा और गोली मार दी। फिर सैनिक आगे आए—कुछ मेरी तरफ, कुछ बर्फ ढके सरू के पेड़ के पीछे गायब होते भेड़िए के पीछे गए।

उनके पास आने पर मैंने हिलना चाहा, पर मुझमें ताकत ही नहीं थी। मैं सिर्फ अपने आस-पास जो हो रहा था, वह देख-सुन पा रहा था। दो-तीन सैनिक अपने घोड़ों से कूदे और मेरे पास घुटने टेककर बैठ गए, एक ने मेरा सिर ऊँचा किया और मेरी छाती पर हाथ रखा।

"खुशखबरी, साथियो!" वह चिल्लाया। "इसका दिल अभी धड़क रहा है।" फिर मेरे गले में ब्रांडी डाली गई; उससे मुझमें ताकत आई और मैं पूरी तरह आँखें खोलकर चारों तरफ देखने लायक हुआ। पेड़ों के बीच रोशनी और परछाइयाँ घूम रही थीं। मुझे एक दूसरे को पुकारते आदमियों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वे इकट्ठे आए और डरे हुए से बोल रहे थे। फिर और रोशनी आई। कब्रिस्तान से अस्त व्यस्त कुछ और लोग निकले जैसे भूत उनके पीछे पड़े हों। दूर वाले लोग जब पास आए तो हमारे पास वाले लोगों से उत्सुकता से पूछा, "क्या वह मिला?"

जल्दी से जवाब आया, "नहीं! चलो, जल्दी, जल्दी! यह रहने की जगह नहीं है, और वह भी आज की रात!"

अलग-अलग सुरों में एक ही प्रश्न पूछा जा रहा था, "वह क्या था?" जवाब अलग अलग और अनिश्चित थे जैसे हर आदमी एक आवेग में बोलने को विवश था, उनके ख्यालों में एक जैसा डर था जिसके कारण वे अपने को रोक रहे थे।

एक व्यक्ति जो हिम्मत खो चुका था, बड़बड़ाया, "वह-वह!"

दूसरे ने काँपते हुए कहा, "एक भेड़िया, पर भेड़िया नहीं!"

तीसरे ने ज्यादा सहजता से कहा, "धार्मिक पवित्र गोली के बिना उसे पकड़ने की कोशिश बेकार है।"

"आज की रात बाहर निकलने का नतीजा हमें मिल गया! हमने सच में अपने हजार मार्क कमा लिए!" चौथे ने कहा। एक और ने रुककर कहा—"टूटे संगमर्मर पर खून था। वह बिजली के गिरने से नहीं आ सकता। और वह आदमी—वह सुरक्षित है! उसका गला देखा? देखो साथियो, भेड़िया उसके ऊपर लेटकर उसे गरमाई देता रहा।"

अफसर ने मेरा गला देखा और जवाब में कहा, "यह ठीक है; खाल फाड़ी नहीं है। इसका क्या मतलब हुआ? अगर वह भेड़िया न चिल्लाता तो यह हमें कभी

न मिलता.

जिस आदमी ने मेरा सिर उठा रखा था, उसने पूछा, "उसका क्या हुआ?" वह और लोगों से कम डरा हुआ था क्योंकि उसके हाथ स्थिर थे, काँप नहीं रहे थे। उसकी बाँह पर मँझले ओहदे के अफसर की पट्टी लगी थी।

"वह अपने घर चला गया," लम्बे, पीले चेहरे वाले आदमी ने जवाब दिया, वह डरे हुए ढंग से अपने चारो ओर देख रहा था और काँप रहा था। "यहाँ बहुत सी कब्रें हैं, वह कहीं भी लेट सकता है। चलो साथियो—जल्दी चलो! हमें इस अभिशप्त जगह को छोड़ देना चाहिए।"

अफसर ने यह आदेश देते हुए मुझे बिठाया फिर कई लोगों ने मिलकर मुझे घोड़े पर बिठाया. अफसर कूदकर मेरे पीछे बैठ गया उसने मुझे अपनी बाँहों में थामा और चलने का हुक्म दिया, सरू के पेड़ों की तरफ से मुँह घुमाकर हम तेज़ी से सैनिक ढंग से चल दिए।

मैं जबरन चुप था क्योंकि मेरी जबान अपना काम नहीं कर रही थी। फिर शायद मैं सो गया था क्योंकि अगली बात जो मुझे याद है वह यह थी कि मैं दो सैनिकों के सहारे खड़ा था। दिन की रोशनी निकलने लगी थी। उत्तर में सूर्य की लाल रोशनी की लकीर बर्फ पर खून की लकीर के समान लग रही थी। अफसर अपने आदमियों से जो देखा था उसके बारे में किसी से कुछ न कहने को कह रहा था, और यह भी कि उन्हें सिर्फ यह कहना था कि अंग्रेज़ अजनबी मिल गया था। एक बड़ा कुत्ता उसकी रक्षा कर रहा था।

"कुत्ता! वहाँ कोई कुत्ता नहीं था। मेरे ख़्याल से मैं भेड़िए को पहचानता हूँ," डरे हुए आदमी ने कहा।

जवान अफसर ने शान्ति से कहा, "मैंने कहा एक कुत्ता।"

दूसरे ने व्यंग्य से कहा "कुत्ता!" लग रहा था कि सूर्य की रोशनी के साथ उसकी हिम्मत लौट रही थी, मेरी तरफ इशारा करके वह बोला उसके गले की तरफ देखिए, "क्या वह कुत्ते का काम है?"

मैंने सहज ढंग से गला छुआ और दर्द से चिल्ला उठा। मेरे चारों तरफ लोग इकट्ठा हो गए। कुछ तो घोड़ों पर से उतर आए। उस जवान अफसर ने फिर शान्तिपूर्वक कहा, "मैंने जैसा कहा वही कहोगे—एक कुत्ता। अगर कुछ और कहा तो लोग हम पर हँसेंगे।"

मुझे एक घुड़सवार के पीछे बिठा दिया गया। हम म्यूनिख़ के गाँवों में से होते हुए आगे बढ़े। यहाँ एक गाड़ी खड़ी थी जिसमें मुझे बिठा दिया गया। वह मेरे होटल की तरफ बढ़ गई—जवान अफसर मेरे साथ था। एक अश्वारोही गाड़ी के पीछे था, बाकी सैनिक अपनी बैरकों में चले गए।

जब हम होटल पहुँचे तो डेलब्रुक तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरकर मुझसे मिलने आया।

स्पष्ट था कि वह मुझ आते हुए देख रहा था वह बड़ी आतुरता से मुझे हाथ पकड़कर ले गया। अफसर मुझे सैल्यूट करके लौटने वाला था कि मैं उसके सैल्यूट का मतलब समझ गया। मैंने ज़िद करके उसे अपने कमरे में बुलाया। वाइन के गिलास के साथ मेंने बड़ी गर्मजोशी के साथ उसका और उसके साथियों का जान बचाने के लिए शुक्रिया किया। उसने सीधे ढंग से जवाब दिया कि वह खुश था। डेलब्रुक ने खोज दल को खुश करने का पहले ही इन्तज़ाम कर दिया था। इस गूढ़ कथन पर होटल मालिक मुस्कराया, अफसर दूसरे काम की बात कहकर चला गया।

"पर मि. डेलब्रुक," मैंने पूछा, "सैनिकों ने मुझे क्यों और कैसे ढूँढ़ा? उसने अपने कन्धे उचकाए जैसे मामूली काम कर रहा हो और जवाब दिया, "मै खुश-किस्मत था कि जिस रेजीमेन्ट में काम कर चुका था उसके कमाण्डर से कहकर कुछ स्वयंसेवकों को छुट्टी दिलवा सका।

मैंने पूछा, "पर तुमने कैसे जाना कि मैं खो गया था"?

"कोचवान गाड़ी लेकर लौटा जो घोड़ों के भागने से टूट गई थी।"

"पर सिर्फ इस वजह से तो तुम निश्चित रूप से सैनिकों की टुकड़ी नहीं भेजते।"

"ओह नहीं!" उसने जवाब दिया; "पर कोचवान के लौटने से पहले मुझे तुम्हारे मेजबान सामन्त का तार मिला, उसने जेब से निकालकर मुझे जो तार दिया, वह मैने पढ़ा,

बिस्ट्रिज

मेरे मेहमान का ध्यान रखना—उसकी सुरक्षा मेरे लिए कीमती है अगर उसे कुछ हो जाये या वह खो जाए तो उसे ढूँढ़ने में कोई कसर मत छोड़ना। उसकी रक्षा करना। वह अंग्रेज है, अतः घुमक्कड़ है। रात के समय प्रायः बर्फ और भेडियो का ख़तरा रहता है। अगर तुम्हें उसे नुकसान का अन्देशा हो तो एक पल भी ख़राब मत करना। तुम्हारी मेहनत का मैं अपनी दौलत से जवाब दूँगा।

ड्रैकुला

हाथ में तार पकड़े मुझे लगा जैसे कमरा मेरे चारों तरफ घूम रहा है। होटल का मालिक नहीं पकड़ता तो मैं गिर जाता। यह सब कुछ इतना अजीब और अचानक था कि विश्वास करना मुश्किल था। मुझे ऐसा लगा कि मैं दो विरोधी ताकतों का खेल बन गया था—और इस विचार से मैं बेजान हो गया। कोई रहस्यमय मुझे अपनी सुरक्षा दे रहा था। ठीक समय पर, दूर देश से एक सन्देशा आया जो मुझे बर्फ की नींद के ख़तरे और भेड़िए के जबड़े निकाल लाया था।

झूलने वाले घोड़े का विजेता

डी. एच. लॉरेन्स

एक बहुत सुन्दर औरत थी, जिसने ज़िन्दगी की शुरूआत लाभ से की, पर उसकी किस्मत अच्छी नहीं थी। उसने जिस प्यार के लिए शादी की, वह धूल में मिल गया। उसके बच्चे सुन्दर और तन्दुरुस्त थे पर उसे लगता था वे उस पर लादे गए थे ओर वह उन्हें प्यार नहीं कर सकती थी। बच्चे उसे ठंडी नज़र से देखते थे, उसमें गलतियाँ ढूंढते थे। वह अपने अन्दर के दोषों को छिपा लेना चाहती थी, हालाँकि वह यह भी नहीं जानती थी कि उसे छिपाना क्या था। जो भी हो, जब उसके बच्चे मौजूद होते थे तो उसे लगता था जैसे उसका दिल पत्थर हो गया हो, और इससे वह और भी परेशान होती थी। बच्चों के प्रति उसका व्यवहार बहुत कोमल होता था, वह उनकी बहुत फिक्र करती थी, जैसे उन्हें बहुत प्यार करती हो। पर खुद जानती थी कि उसके दिल के अन्दर बीचोंबीच एक सख्त जगह थी। वह प्यार महसूस नही कर पाती थी, नहीं, किसी के लिए भी नहीं। उसके बारे में सब लोग कहते थे "वह बहुत अच्छी माँ है, अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है।" सिर्फ वह खुद और उसके बच्चे जानते थे कि ऐसा नहीं हैं। वे एक-दूसरे की आँखों में इस सच्चाई को पढ़ते थे।

उसके दो लड़कियाँ और एक लड़का था। वे एक खुशनुमा घर में रहते थे, जिसमें बगीचा भी था। उनके नौकर होशियार थे। वे अपने को पड़ोसियों से ऊँचा समझते थे।

वे भले ही शानशौकत से रहते थे, पर उन्हें हर वक्त लगता था कि घर मे कोई चिन्ता थी। पैसा कभी काफी नहीं होता था। माँ की आमदनी थोड़ी थी, पिता की भी, और वह इतनी नहीं थी कि वे समाज में अपना स्थान बना सकते। पिता शहर के एक दफ्तर में जाता था। उसकी किस्मत अच्छी होते हुए भी वह कभी

सफल नही हुआ। ऊपरी आडम्बर हमेशा रखा गया, पर पैसे की कमी की चुभन भी हमेशा थी।

आखिर माँ ने कहा; "मैं देखूँ कि कुछ पैसे बना सकती हूँ या नहीं।" पर कहाँ से शुरू करे यह नहीं समझ पा रही थी। उसने बहुत दिमाग लगाया, कई तरह की कोशिशें कीं पर किसी में सफल नही हो पाई। असफलता ने उसके चेहरे पर गहरी लकीरें बना दीं। उसके बच्चे बड़े हो रहे थे, रुपया और ज्यादा चाहिए था। खूबसूरत पिता महँगे शौक रखता था, पर कुछ कर नहीं पा रहा था। माँ को अपने ऊपर बहुत विश्वास था, वह भी सफलता नहीं पा सकी। उसके भी शौक महँगे थे।

घर में एक अनकही बात छाई हुई थी—"और पैसा चाहिए, और पैसा आना चाहिए", यह बात ऊँचे न बोलने पर भी बच्चों को सुनाई देती रहती थी। ईसामसीह के जन्मदिन के मौके पर बच्चों का कमरा महँगे, खूबसूरत खिलौनों से भर दिया गया था पर बच्चों को वही बात सुनाई दे रही थी। चमकते आधुनिक झूलने वाले घोडे, बढ़िया गुड़ियों के घर के पीछे यही आवाज़ फुसफुसाती लगती थी, "और पैसा चाहिए! और पैसा होना चाहिए!" बच्चे खेलना बन्द करके सुनने लगते, एक दूसरे को देखता कि क्या उसने भी सुना। हरेक को दूसरे की आँखों से पता चल जाता कि उसने भी सुना था "और पैसा चाहिए! और पैसा होना चाहिए!"

अभी तक हिलते झूलने वाले घोड़े के स्प्रिंग से यही फुसफुसाहट आ रही थी। आगे झुके लकड़ी के घोड़े ने वह सुनी। अपनी बच्चा गाड़ी में गर्व से बैठी, बडी सी गुलाबी गुड़िया को भी सुनाई दिया। वह बेवकूफ कुत्ते का पिल्ला, जो भालू की जगह आ गया था, और भी बेवकूफ लग रहा था क्योंकि उसने भी घर में एक रहस्यपूर्ण आवाज सुनी थी, "और पैसा होना चाहिए!" फुसफुसाहट सब जगह होने पर भी किसी ने ऊँची आवाज़ में नहीं कहा इसलिए कोई नहीं बोला। जैसे यह सच है कि हम हर समय साँस लेते रहते हैं, पर कोई कहता नहीं है कि "हम साँस ले रहे है।"

एक दिन बेटे पॉल ने कहा, "माँ हम अपनी कार क्यों नहीं रखते? क्यों हमेशा अकल की कार या टैक्सी लेते हैं?"

"क्योंकि हम परिवार के गरीब सदस्य हैं।" माँ ने कहा।

"पर क्यों माँ?"

उसने धीरे से कड़वाहट भरे शब्दों में कहा, "क्योंकि तुम्हारे पिता की किस्मत अच्छी नहीं है?"

लड़का कुछ देर चुप रहा। फिर उसने डरते हुए पूछा, "क्या किस्मत पैसा है, माँ?"

'नहीं पॉल। ऐसा नहीं हैं। पर किस्मत से पैसा आता है।"

'ओह!' पॉल ने कहा। "जब अंकल ऑस्कर ने कहा 'फिल्थी लकर' तो मेने सोचा कि उनका मतलब पैसे से था।"

'फिल्थी लूकर का मतलब पैसा होता है'' माँ ने बताया, ''पर वह लूकर होत है, लकर नहीं।''

'ओह!' लड़का बोला, ''फिर किस्मत क्या होती है माँ?''

''उसकी बदौलत पैसा आता है। अगर तुम किस्मत वाले हो तो पैस आएगा। इसीलिए रईसी में पैदा होने से ज्यादा अच्छा किस्मत लेकर पैदा होना होत है। अगर तुम रईस हो तो पैसा खो सकते हो। पर अगर किस्मत वाले हो तो हमेश और पैसा मिलता रहेगा।''

''ओह! तो क्या तुम किस्मत वाली हो, और पिताजी नहीं हैं?''

उसने कड़वाहट से कहा, ''मैं कहूँगी बहुत बदकिस्मत हैं।''

लड़का उसे शक से देखता रहा।

''क्यों?''

''मैं नहीं जानती। कोई नहीं जानता कि एक आदमी खुशकिस्मत और दूसर बदकिस्मत क्यों होता है।''

''नहीं जानते? कोई नहीं जानता? क्या कोई नहीं जानता?''

''शायद भगवान् जानता होगा ; पर वह कभी बताता नहीं।''

''पर उन्हें बताना चाहिए। माँ क्या तुम भी किस्मतवाली नहीं हो?''

''मैं हो ही नहीं सकती क्योंकि मैंने बदकिस्मत पति से शादी की है।''

''पर वैसे, अपने आप तुम क्या हो?''

''मैं शादी से पहले सोचती थी कि बहुत खुशकिस्मत हूँ, पर अब लगता है बहुत बदकिस्मत हूँ।''

''क्यों?''

''छोड़ो! शायद यह सच नहीं है,'' वह बोली।

लड़के ने उसे देखा क्या वह सच में ऐसा मानती है, पर उसे लगा जैसे माँ के मुँह की लकीरें बता रही थीं कि वह उससे कुछ छिपाना चाह रही थी।

फिर वह दृढ़ता से बोला, ''कुछ भी हो, मैं खुशकिस्मत हूँ।''

माँ ने अचानक हँसकर पूछा, ''क्यों?''

उसने माँ को घूरा। पता नहीं क्यों उसने ऐसा कहा पर फिर ढिठाई से बोला, ''भगवान् ने मुझसे कहा है।''

वह हँसते हुए पर कड़वाहट से बोली, ''मैं आशा करती हूँ कि उसने कहा हो।''

''उसने कहा है माँ।''

''बढ़िया'', माँ ने अपने पति का प्रिय शब्द दुहराया।

लड़के ने देखा माँ ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया या कहो उस पर ध्यान ही नहीं दिया। इससे वह गुस्से से भर उठा क्योंकि वह चाहता था कि माँ

उसकी बात पर ध्यान दे

वह बच्चे की तरह किस्मत की खोज में अपने आप में डूब गया। औरों की तरफ ध्यान न देते हुए वह अपने अन्दर किस्मत को तलाशने लगा। वह किस्मत पाना चाहता था, हासिल करना चाहता था। अपने कमरे में जब दोनों लड़कियाँ गुडियो से खेलतीं, तब वह अपने बड़े से झूलने वाले घोड़े पर बैठकर उसे ज़ोर से हिलाता रहता था, इतनी ज़ोर से कि लड़कियाँ घबराकर उसे देखने लगतीं। घोड़ा झूलते वक्त उसके काले बाल लहराने लगते थे, उसकी आँखों में एक अजीब तरह की चमक आ जाती थी। छोटी बहिनें उससे बात करने की हिम्मत भी नहीं करती थीं।

अपनी पागलपन से भरी यात्रा ख़त्म कर चुकने के बाद वह घोड़े से उतरकर, उसके सामने खड़ा होकर, उसके झुके हुए मुँह को घूरता था। उसका लाल मुँह थोडा खुला होता और बड़ी आँखें शीशे की तरह चमकती और खुली हुई होती थीं।

"अब!" वह घोड़े का आदेश देता, "अब मुझे वहाँ ले चलो जहाँ किस्मत है' अब लेकर चलो।"

फिर वह उस छोटी चाबुक से जो उसने अपने मामा ऑस्कर से मँगवाई थी, उसके गले पर वार करता। वह सोचता था कि अगर वह जोर डाले तो घोड़ा उसे खुशकिस्मती तक ले जा सकता है। अतः वह दुबारा घोड़े पर चढ़ता और उसी तरह गुस्से से उसकी सवारी करने लगता, क्योंकि उसे यह उम्मीद थी कि वह वहाँ पहुँच पाएगा। वह जानता था कि उस पर चढ़कर वह वहाँ पहुँच सकता है।

नर्स कहती थी, "पॉल, तुम अपना घोड़ा तोड़ दोगे!"

बड़ी बहन जोअन कहती, "यह हमेशा ऐसे ही चलाता है! काश यह ऐसे न चलाता!" पर वह चुपचाप उन्हें घूरता रहता था। नर्स ने कहना छोड़ दिया। वह उसको समझ नहीं पाती थी। वैसे भी वह उसके काबू से बाहर होता जा रहा था।

एक दिन वह उसी तरह घोड़ा चला रहा था। तब उसकी माँ और मामा अन्दर आए। पर उसने उनसे बात नहीं की।

"हलो, जौकी!* जीतनेवाले घोड़े की सवारी कर रहे हो?" मामा ने पूछा। माँ बोली, "क्या तुम झूलने वाले घोड़े के लिए बड़े नहीं हो गए हो? तुम जानते हो कि तुम अब छोटे लड़के नहीं रह गए हो।"

पर पॉल सिर्फ अपनी बड़ी आँखों से उन्हें घूरता रहा। जब वह इस रंग मे होता था तब किसी से बातचीत नहीं करता था। उसकी माँ फिक्र के साथ उसे देखती रहती थी।

अचानक उसने घोड़े को तेज़ी से हिलाना बन्द किया और उस पर से उतर आया।

---

* घोड़े के साथ दौड़नेवाला पेशेवर आदमी

"मै वहा गया था!" उसने तज़ी स कहा, उसकी नीला आखे तब भी जल रही थीं और टाँगें दूर दूर थीं।

माँ ने पूछा, "कहाँ गए थे?"

उसने पलटकर जवाब दिया, "जहाँ मैं जाना चाहता था।"

ऑस्कर मामा बोला, "ठीक है बेटा! तुम वहाँ पहुँचने से पहले रुकना नही। घोडे का नाम क्या है?"

लड़के ने कहा, "उसका कोई नाम नहीं है"

मामा ने पूछा, "नाम के बिना ठीक चल रहा है?"

"उसके कई नाम हैं, पिछले हफ्ते उसे सैन्सोविनो कहते थे।"

"क्या सैन्सोविनो? जो ऐस्कॉट प्रतियोगिता जीता था। तुम्हें उसका कैसे पता है?"

जोअन बोली "यह हर वक्त बैसेट के साथ घोड़ों की दौड़ की बातें करता रहता है।"

मामा यह जानकर बहुत खुश हुआ कि उसका छोटा सा भांजा घुड़दौड़ की ख़बरें रखता है। बैसेट इनका माली है। लड़ाई में उसके बाएँ पैर में चोट आई थी, आस्कर की सिफारिश पर वह यहाँ काम करता है। वह ऑस्कर का सहायक ही नहीं, उसी घास का तिनका था। वह घुड़दौड़ में जीता था। छोटा लड़का पॉल उसके साथ लगा रहता था।

"मास्टर पॉल आकर मुझसे पूछते हैं। सर, मैं बताने के अलावा क्या कर सकता हूँ।" बैसेट इतनी गम्भीरता से कह रहा था जैसे किसी धार्मिक मसले की बात हो रही हो।

"क्या वह कभी अपनी पसन्द के घोड़े पर भी बाज़ी लगाता है?"

"मैं उनके रहस्य को तोड़ना नहीं चाहता—वह अच्छा खिलाड़ी है। उन्हें इसमे आनन्द मिलता है। सर, अगर आप बुरा न मानें तो सीधे उनसे बात कर लें। उन्हे इस खेल में आनन्द मिलता है पर मैं नहीं चाहता कि उन्हें लगे कि मैंने उनका रहस्य आपको बताया है।"

बैसेट ऐसे गम्भीर था जैसे चर्च में हो।

मामा भांजे के पास लौटा और उसे कार में घुमाने ले गया।

"पॉल क्या तुमने कभी घोड़े पर बाज़ी लगाई है?" मामा ने पूछा। लड़के ने ध्यान से उस खूबसूरत आदमी को देखा।

फिर वापिस पूछा, "क्यों? आपको लगता है नहीं लगानी चाहिए?"

ऐसा बिल्कुल नहीं है! बल्कि मैं सोच रहा था कि तुम मुझे भी लिंकन के बारे में सलाह दो।"

कार मामा के हैम्पशायर वाले घर की तरफ तेज़ी से बढ़ रही थी।

"मेरी कसम?" भांजे ने पूछा।

"तुम्हारी कसम, बेटा!" मामा बोला

"फिर डैफ़ोडिल"

"डैफोडिल? मुझे शक है बेटा। मिर्ज़ा कैसा रहेगा?"

"मैं सिर्फ जीतनेवाले को जानता हूँ, वह डैफोडिल है।" लड़के ने कहा।

"डैफोडिल?"

कुछ देर चुप्पी रही। औरों की तुलना मे डैफोडिल मामूली था।

'मामा!'

"हाँ बेटा।"

"इस बार में किसी को कुछ मत बताना। मैंने बैसेट से वायदा किया था।"

"बैसेट भाड़ में जाए! उसका इससे क्या ताल्लुक है?"

"हम पार्टनर हैं। शुरू से साझीदार हैं। उसीने मुझे पहले पाँच शिलिंग उधार दिए थे, जो मैं हार गया था। मैंने उससे कसम खाई थी कि यह बात सिर्फ मेरे ओर उसके बीच रहेगी; पर तुमने मुझे जो दस शिलिंग दिए थे, उन्हीं से मैंने जीतना शुरू किया था। मुझे लगा कि तुम खुशकिस्मत हो। आगे तुम किसी से नहीं कहोगे ना?"

लड़का अपनी बड़ी नीली आँखों से मामा को घूरता रहा। मामा हिला। वह हल्का सा हँसा पर उसको लड़के का यह रंग ढंग अजीब लगा।

"तुम ठीक कह रहे हो बेटा! मैं तुम्हारी बात अपने तक रखूँगा। डैफोडिल, हे ना? तुम उस पर कितना लगाओगे?"

"बीस पाउंड बचाकर बाकी सारे लगा दूँगा। उतने मैं बचाकर रखता हूँ' लडका बोला। मामा को यह एक अच्छा मज़ाक लगा।

"अच्छा तुम बीस पाउंड बचाकर रखते हो। बड़े रोमांटिक हो। कितने लगाओगे?"

लड़के ने गम्भीरता से कहा, "तीन सौ पाउंड, पर कसम खाइए कि यह बात मेरे आपके बीच में रहेगी।"

मामा ठहाका लगाकर हँसा।

हँसते हुए बोला, "हॉ 'नैट गोल्ड', यह मेरे और तुम्हारे बीच रहेगा। पर तुम्हारे तीन सौ पाउंड कहाँ हैं?

"बैसेट के पास। हम साझीदार हैं।"

अच्छा तुम साझीदार हो! बैसेट डैफोडिल पर कितने लगाएगा?"

"मैं सोचता हूँ उतने नहीं लगाएगा जितने मैं लगाऊँगा। शायद वह डेढ़ सौ लगाएगा।"

"क्या डेढ़ सौ पेनी?" मामा हॅसा।

बच्चे ने मामा की तरफ आश्चर्य से देखा और कहा 'पाउंड'। वह मुझसे ज्यादा

अलग रखता है।"

ताज्जुब और हँसी के बावजूद मामा ऑस्कर चुप रहा। उसने इस बारे में और बात नहीं की, पर उसने तय किया कि अपने भांजे को लिंकन की दौड़ में ले जाएगा

"बेटा, मैं मिर्ज़ा पर बीस और जिस पर तुम कहो पाँच पाउंड लगाऊँगा। तुम क्या चुनते हो?" मामा बोला।

"मामा, डैफोडिल।"

"नहीं, डैफोडिल पर पाँच नहीं लगाऊँगा।"

"अगर मेरे होते तो मैं लगा देता," बच्चे ने कहा।

"अच्छा! अच्छा! तुम ठीक कह रहे हो। मेरी और तुम्हारी तरफ से डैफोडिल पर पाँच पाँच पाउंड लगाएँगे।"

लड़का कभी घुड़दौड़ में नहीं गया था, उसकी आँखें नीली आग की तरह थीं। वह कसकर मुँह बन्द किए देख रहा था। उनके सामने वाले फ्रांसीसी आदमी ने लैंसलोट घोड़े पर अपना पैसा लगाया था। वह उत्तेजित होकर बाँहें उठा उठाकर फ्रांसीसी लहज़े में चिल्ला रहा था, "लैंसलौट, लैंसलौट।"

डैफोडिल अव्वल आया, फिर लैंसलौट और तीसरे नम्बर पर मिर्ज़ा था। बच्चे का चेहरा लाल और आँखें जलती हुई थीं, पर वह शान्त था। उसके मामा उसके लिए एक के बदले में चार पाँच पाउंड के नोट लेकर आए। नोटों को लड़के की आँखों के सामने नचाते हुए वह बोला, "मैं इनका क्या करूँ?"

लड़के ने कहा, "मेरे ख्याल से मैं बैसेट से बात करूँगा। मेरे हिसाब से अब मेरे पास पन्द्रह सौ पाउंड हो गए। बीस अलग जमा हैं और बीस यह हुए।"

उसके मामा कुछ देर उसे देखते रहे। फिर बोले, "देखो बेटा! तुम बैसेट ओर पन्द्रह सौ पाउंड के बारे में गम्भीर तो नहीं हो?"

"हाँ, मैं हूँ। पर मामा, यह मेरे और तुम्हारे बीच की बात है, कसम खाते हो ना?"

"ठीक है बेटा, कसम खाता हूँ! पर मुझे बैसेट से बात करनी पड़ेगी।"

"मामा, अगर आप चाहो तो आप भी हमारे साझीदार बन सकते हो। सिर्फ आपको यह कसम खानी होगी कि बात हम तीनों के बीच ही रहेगी। बैसेट और मै तो खुश किस्मत हैं, आप भी हो क्योंकि आपके दिए हुए रुपयों से मेरा जीतना शुरू हुआ।"

एक दोपहर को ऑस्कर मामा बैसेट और पॉल को रिचमंड पार्क ले गए। वे बातचीत कर रहे थे।

बैसेट ने कहा, "यह ऐसा था सर कि मास्टर पॉल मुझसे घुड़दौड़ के बारे मे बातें करते रहते थे और हवाई किले बनाते थे। वे हमेशा जानना चाहते थे कि मै जीता या हारा। कोई साल भर पहले मैंने 'ब्लश ऑफ डॉन' पर उसकी तरफ से

पाँच शिलिंग लगाइ और मैं हार गया। फिर आपसे मिले पैसों से किस्मत बदल गई। उन पैसों को हमने सिंहल पर लगाया और तब से सब कुछ देखते हुए हमारी खुशकिस्मती चल रही है। आप क्या कहते हैं मास्टर पॉल?"

"जब हमें निश्चित रूप से पता होता है तब हम जीतते हैं," पॉल बोला, "जब नहीं तब हम हारते हैं।"

बैसेट बोला, "पूरी तरह न जानने पर हम सावधान रहते हैं।"

मामा ने मुस्कराते हुए पूछा, "पर तुम पूरी तरह कब जानते हो?"

बैसेट ने रहस्यपूर्ण, धार्मिक विश्वासपूर्ण आवाज़ में कहा, "यह मास्टर पॉल बताते हैं, सर। ऐसा लगता है उन्हें स्वर्ग से पता चलता है। जैसे लिंकन दौड़ में डैफोडिल पूरी तरह निश्चित था।"

ऑस्कर ने पूछा, "क्या तुमने डैफोडिल पर लगाया था?"

"हाँ सर, और मैंने पैसे कमाए।

"और मेरे भांजे ने?"

बैसेट ने पॉल की तरफ देखा और ढिठाई से चुप रहा।

"मैंने बारह सौ बनाए, है ना बैसेट? मैंने मामा को बताया था कि मैंने डैफोडिल पर तीन सौ लगाए थे।"

बैसेट ने सिर हिलाते हुए कहा, "यह ठीक है।"

मामा ने पूछा, "पर पैसा कहाँ है?"

"मैं उसे सँभालकर रखता हूँ, सर। मास्टर पॉल जिस पल चाहें माँग सकते हैं।"

"क्या पन्द्रह सौ पाउंड?"

"और बीस! चालीस और जो उन्होंने बीस से बनाए।"

मामा बोला, "ताज्जुब है।"

बैसेट ने कहा, "मुझे माफ कीजिएगा, सर, पर अगर मैं आपकी जगह होता तो मास्टर पॉल के कहने पर साझीदार बन जाता।"

ऑस्कर सोचने लगा।

फिर बोला, "मैं पाउंड देखना चाहता हूँ।"

वे फिर घर गए और बैसेट बगीचे वाले घर में जाकर सारे रुपए ले आया। पूरे पन्द्रह सौ के नोट थे। बाकी पाउंड जो अलग जमा रखने थे वे टर्फ कमीशन डिपोज़िट में 'जोगली' के पास जमा थे।

"मामा, जब मैं पूरी तरह जानता हूँ तब सब ठीक होता है तभी हम जीतते हैं, हैं ना बैसेट?"

"हाँ मास्टर पॉल।"

"और हम पूरी तरह कब जानते हैं?" मामा ने हँसते हुए पूछा।

लड़के ने कहा, "कभी-कभी मैं पूरी तरह जानता हूँ जैसे डैफोडिल की बार, कभी कभी कुछ ध्यान में आता है और कभी कुछ भी नहीं आता, है ना बैसेट? तब हम ध्यान रखते हैं क्योंकि तब हम हारते हैं।"

"अच्छा! पर डैफोडिल की तरह निश्चिन्त कैसे होते हो बेटा?"

"मैं नहीं जानता।" बच्चे ने कहा, "मामा, मुझे लगता है आप समझ गए होगें।"

बैसेट ने फिर दुहराया, "लगता है इन्हें स्वर्ग से पता चलता है।"

मामा बोला, "ऐसा होगा?"

पर वह साझीदार बन गया जब 'लेजर' दौड़ होने वाली थी तब पॉल 'लाइवली स्पार्क' के बारे में निश्चित था, हालाँकि वह ऐसा घोड़ा था कि कोई उसके बारे मे सोच भी नहीं सकता था। लड़के ने उस पर एक हज़ार पाउंड लगाने की ज़िद की, बैसेट ने पाँच सौ और ऑस्कर ने दो सौ लगाए। 'लाइवली स्पार्क' पहले नम्बर पर आया जबकि उसके लिए एक पक्ष में तो दस विरोध में थे। पॉल ने दस हज़ार जीते।

वह बोला, "इसके बारे में मैं पूरी तरह निश्चित था।

ऑस्कर को भी दो हज़ार मिले।

वह बोला, "देखो बेटा, ऐसी बात से मुझे घबराहट होती है।"

"मामा, घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है! हो सकता है काफी दिन तक मैं फिर किसी के बारे ऐसे न सोच पाऊँ।"

मामा ने पूछा, "तुम इस रुपए का क्या करोगे?"

लड़के ने जवाब दिया, "मैंने यह माँ के लिए शुरू किया था। वह कह रही थी कि पिता की बदकिस्मती के कारण वे भी बदकिस्मत हैं। तब मुझे लगा कि अगर खुशकिस्मती मुझ तक आ जाए तो शायद घर फुसफुसाना बन्द कर दे?"

"क्या फुसफुसाना बंद कर दे?"

"हमारा घर। मुझे अपने घर के फुसफुसाने से नफरत है।"

"क्या फुसफुसाता है?"

लड़का हिलने लगा, "यह तो मैं नहीं जानता। पर मामा, यह तो आप जानते हो कि हमारे यहाँ पैसों की कमी हमेशा रहती हैं।"

"जानता हूँ बेटा, मैं जानता हूँ।"

"आप जानते हो कि लोग माँ को हुक्मनामे भेजते हैं, जानते हो न मामा?" मामा बोला, "हाँ, मैं जानता हूँ।"

"और फिर घर फुसफसाता है, जैसे लोग हमारी पीठ पीछे हँसते हैं। मैंने सोचा अगर मैं खुशकिस्मत हो जाऊँ..."

"तो तुम शायद उसे रोक सको," मामा ने जोड़ा।

लड़के ने सिर्फ अपनी नीली आँखों से उसे देखा, उनमें अस्वाभाविक आग

थी। पर वह एक शब्द भी नहीं बोला।

"फिर!" मामा बोला, "अब हम क्या करें?"

लड़के ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि माँ को मेरी खुशकिस्मती का पता चले।"

"क्यों बेटा?"

"वह मुझे रोकेंगी।"

"मुझे नहीं लगता कि वह रोकेंगी।"

"ओह!" लड़के ने अजीब ढंग से हिलते हुए कहा, "मैं नहीं चाहता कि उन्हे पता चले, मामा।"

"ठीक है, बेटा! हम उसके जाने बिना चला लेंगे।"

वे बड़ी आसानी से चलाते रहे। पॉल ने मामा की सलाह के हिसाब से उन्हे पॉच हज़ार पौंड दिए, जो उन्होंने पारिवारिक वकील के पास जमा किए, जिसे पॉल की माँ को बताना था कि एक रिश्तेदार उसके लिए पाँच हज़ार पौंड वकील के पास रख गया है। अगले पाँच साल तक हर साल उनके जन्म दिन पर उन्हें हज़ार पाउड देने को कह गया है।

ऑस्कर मामा ने कहा, "सो पाँच साल तक हर जन्मदिन पर उसे हज़ार पाउंड मिलते रहेंगे। मुझे उम्मीद है कि बाद में उसके लिए ज्यादा मुश्किल नहीं होगी।"

पॉल की माँ का जन्मदिन नवम्बर में था। इन दिनों घर पहले से ज्यादा फुसफसाने लगा था। खुशकिस्मती के बावजूद पॉल यह सहन नहीं कर पा रहा था। माँ को हजार पाउंड की भेट देने वाले पत्र का उन पर क्या प्रभाव होगा, यह देखने को वह बेचैन था।

पॉल अब बच्चों से ऊँचे स्तर पर आ गया था इसलिए जब मेहमान नहीं होते थे तो माता-पिता के साथ खाना खाता था। उसकी माँ हर दिन शहर जाती थी। अब वह यह जान गई थी कि वह पोशाकों के स्केच बनाने में माहिर थी। अत वह छिपकर एक मशहूर कपड़ों के व्यापारी के लिए काम करने लगी थी। उसकी मित्र प्रमुख कपड़ों के व्यापारी की मुख्य कलाकार थी जो अखबारों मे विज्ञापन के लिए स्त्रियों के फर पहने या रेशमी पोशाक पहने आकार चित्रित करती थी। यह युवा कलाकार साल में कई हज़ार पाउंड कमाती थी। उसी के स्टूडियों में काम करके पॉल की माँ कुछ सौ कमा पाती थी, इसलिए वह नाखुश थी। वह किसी भी क्षेत्र मे अव्वल आना चाहती थी पर नहीं आ पाई। यहाँ तक कि कपड़ों के विज्ञापन के स्केच बनाने में भी पहले नम्बर पर नहीं आ पाई।

अपने जन्मदिन पर वह नाश्ते के लिए बैठी थी और अपने पत्र पढ़ रही थी। पॉल उसके चेहरे को देख रहा था। वह वकील के पत्र को जानता था। माँ जब वह पत्र पढ़ रही थी तब उसका चेहरा और सख्त तथा भावविहीन होता गया। फिर उसके चेहरे पर एक निश्चय की झलक आयी। उसने उस पत्र को दूसरे पत्रो के

ढेर के नीचे छिपा दिया। उसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

"माँ, क्या तुम्हें जन्मदिन के लिए डाक में कुछ अच्छा नहीं मिला?" पॉल ने पूछा।

ठंडी और खोई सी आवाज़ में माँ बोली, "हाँ, थोड़ा अच्छा है" और ज्याद कुछ कहे बिना शहर चली गई।

लेकिन दोपहर में ऑस्कर मामा आए। उन्होंने बताया कि पॉल की माँ ने वकील से लम्बी बातचीत की और पूछा कि उस पर कर्ज है इसलिए क्या पूरा पाँच हजार एक साथ नहीं मिल सकता?"

लड़के ने पूछा, "आप क्या सोचते हो, मामा?"

"बेटा, मैं तुम पर छोड़ता हूँ।"

"तो उन्हें ले लेने दो। हमें और मिल जाएगा।" लड़का बोला।

मामा ने कहा, "हाथ की एक चिड़िया भी झाड़ी की दो से बेहतर है।।"

"पर मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि ग्रैंड नेशनल या लिंकनशायर या डरबी, किसी न किसी का तो पता चलेगा ही।" पॉल बोला।

अतः मामा ने राज़ीनामे पर हस्ताक्षर कर दिए और पॉल की माँ को पूरा पैसा मिल गया। फिर एक बड़ी अजीब बात हुई। घर में आने वाली आवाजें पागल हो गई, जैसे बसन्त की शाम को मेंढक एक सुर में बोलने लगे हों। कुछ नए पर्दे वगैरह आए, पॉल के लिए ट्यूटर आया। वह पतझड़ में सचमुच ईटन जा रहा था जो उसके पिता का स्कूल था। सर्दियों में सब तरफ फूल थे। पॉल की माँ को जिस ऐश की आदत थी, वह पूरा मिल रहा था। पर फिर भी घर में आवाज़ें थीं। बादाम और छुई मुई के पेड़ों के पीछे से, सतरंगी गद्दियों के ढेर के नीचे एक उत्तेजित आवाज बराबर चीखती-सी रहती थी, "और रुपया होना चाहिए! ओह—बहुत पैसा होना चाहिए, ओह, अभी, अभी! अभी और पैसा चाहिए! पहले से ज्यादा।"

"पहले से ज्यादा?"

इन आवाज़ों से पॉल बहुत डर रहा था। वह अध्यापक से लैटिन और ग्रीक पढ रहा था, उसका ज्यादा वक्त बैसेट के साथ बीत रहा था। ग्रैण्ड नेशनल निकल गया। उसे अन्दर से कोई आवाज नहीं आई। वह सौ पाउंड हार गया। गरमी आ रही थी। लिंकन के लिए वह बहुत परेशान था पर उसे कुछ पता नहीं चला। वह फिर पचास पाउंड हार गया। वह अजीब सा हो गया। उसे लगता जैसे उसके अन्दर कुछ फट पड़ेगा।

ऑस्कर मामा समझाते थे, "छोड़ दे, बेटा! यह सोचकर परेशान मत हो।" पर ऐसा लगता था कि लड़के को मामा की बात सुनाई भी नहीं दे रही थी।

"डर्बी के लिए मेरा जानना ज़रूरी है! मुझे जानना है!"

बच्चा जोर देकर कहता, उसकी आँखों में एक पागलपन सा था। उसकी माँ

ने देखा कि वह बहुत परेशान लग रहा है।

उसका दिल बच्चे के लिए एक अजीब भारीपन से भर उठा। वह चिन्तित हो उसे देखती हुई बोली, "तुम समुद्र तट पर हो जाओ। इन्तजार क्यों करना चाहते हो? अभी क्यों नहीं जाते? मैं सोचती हूँ तुम अभी हो आओ।

बच्चे ने अपनी अस्वाभाविक नीली आँखें उठाईं।

वह बोली, "माँ मैं डर्बी से पहले नहीं जा सकता। बिल्कुल नहीं जा सकता।'

"क्यों नहीं?" वह बोली। अपनी बात न मानने की वजह से उसकी आवाज भारी हो उठी थी। "क्यों नहीं? तुम चाहो तो समुद्र तट से भी मामा के साथ डर्बी के लिए जा सकते हो। यहाँ इन्तज़ार करने की क्या ज़रूरत है। इसके अलावा मुझे लगता है कि तुम इन दौड़ों के बारे में ज़रा ज्यादा सोचने लगे हो। यह बुरे लक्षण है। मेरा परिवार जुआरी रहा है, पर जब तक तुम बड़े नहीं हो जाते तब तक यह नही समझ सकते कि इसका कितना नुकसान हुआ है। मुझे बैसेट को हटाना पडेगा और मामा से कहना पड़ेगा कि तुमसे दौड़ों के बारे में तब तक बातें न करें, जब तक कि तुम यह वायदा नहीं करते कि तुम इनके बारे में सामान्य रुचि रखोगे; समुद्रतट पर जाओ और इसके बारे में भूल जाओ। तुम इन दिनों बहुत परेशान और घबराए हुए दिखाई देते हो।

लड़का बोला, "माँ, अगर तुम मुझे डर्बी से पहले नहीं भेजोगी तो मैं वही करूँगा जो तुम कहोगी।"

"भेज कहाँ रही हूँ? सिर्फ इस घर से ही तो जाने को कह रही हूँ?"

वह उसे घूरता हुआ बोला, "हाँ।"

"अजीब लड़के हो, तुम्हें अचानक इस घर की इतनी फिक्र क्यों हो गई है? नही जानती थी कि तुम इसे इतना प्यार करते हो।"

वह बिना बोले माँ को घूरता रहा। उसके रहस्य में भी रहस्य था जो उसने बेसैट या ऑस्कर मामा तक को नहीं बताया था।

उसकी माँ कुछ देर तक बिना कुछ तय किए, थोड़ी नाराज़ सी खड़ी रही फिर बोली, "तब ठीक है! अगर तुम नहीं चाहते हो तो डर्बी तक मत जाओ, पर वायदा करो कि तुम अपने को परेशान नहीं करोगे और घुड़दौड़ के बारे में बहुत नहीं सोचोगे।"

लड़के ने सहज ढंग से कहा, "नहीं माँ, मैं ज्यादा नहीं सोचूँगा। तुम फिक्र मत करो। मैं तुम्हारी जगह होता तो फिक्र नहीं करता।"

"अगर तुम मेरी जगह और मैं तुम्हारी जगह होते तो हम न जाने क्या करते।"

"माँ, तुम्हें फिक्र करने की ज़रूरत नहीं हैं। समझ गई ना?" लड़के ने दुहराया।

उसने थकी आवाज़ में कहा, "समझ जाऊँ, तो बहुत खुश होऊँ।"

"ओह, तुम समझ सकती हो। मेरा मतलब तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हें फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है।" उसने फिर ज़ोर देकर कहा।

वह बोली, "ऐसा है क्या? चलो, फिर मैं देखती हूँ।"

पॉल के रहस्यों में रहस्य उसका लकड़ी का घोड़ा था, वो बिना नाम का था। जब से वचपन मे देखभाल करने वाली नर्स से छुटकारा पाया तब से उसने अपना घोड़ा घर के सबसे ऊपर वाले कमरे में रखवा लिया था। माँ ने डाँटते हुए कहा था, "निश्चय ही तुम झूलने वाले घोड़े के लिए बड़े हो गए हो।"

उसने चतुराई से जवाब दिया, "देखो माँ, जब तक मैं असली घोड़े के लायक बडा नहीं हो जाता, तब तक मुझे कोई जानवर तो चाहिए ना?"

माँ ने हँसकर कहा, "क्या वह तुम्हें साथ देता है?"

पॉल बोला, "ओह हाँ! वह बहुत अच्छा है। मैं जब भी उसके पास होता हूँ, वह मेरा साथ देता है।"

और वह भद्दा-सा घोड़ा लड़के के सोने वाले कमरे में पिछली टाँगें उठाए ज्यो का त्यों खड़ा रहा।

डर्बी पास आती जा रही थी। लड़का फिक्र में डूबा दिखता था। उससे कुछ कहो तो वह सुनता नहीं था। वह कमज़ोर हो गया था। उसकी आँखें अस्वाभाविक लगने लगी थी। उसकी माँ उसकी चिन्ता में बेचैन थी। कभी-कभी वह आधा-आधा घण्टे तक उसके बारे में सोचकर इतनी 'घबरा जाती थी कि चिन्ता में पड़ जाती थी। उसे लगता था कि वह फौरन भागकर घर जाए और पता लगाए कि बेटा ठीक है।

डर्बी से दो रात पहले वह शहर में एक बडी पार्टी में गई थी। उसी वक्त अपने पहले बच्चे की चिन्ता ने उसका दिल पकड़-सा लिया। वह बोल भी नहीं पा रही थी। वह व्यावहारिक औरत थी इसलिए जीजान से डर की इस भावना से लडती रही। पर वह भावना इतनी तेज़ हो गई थी कि वह नाच छोड़कर नीचे गई ओर घर फोन किया। बच्चों की आया रात में आए फोन से चौंकी और अचम्भे में पड गई।

"मिस विलमॉट, बच्चे ठीक हैं?"

"जी हाँ, वे बिल्कुल ठीक हैं।"

"मास्टर पॉल? वे ठीक हैं?"

"वे बिल्कुल ठीक ठाक सोने गया है। क्या मैं उसे देखने जाऊँ?"

पॉल की माँ ने बेमन से कहा, "नहीं, परेशान मत होओ। ठीक है इन्तज़ार मत करना। हम जल्दी ही घर पहुँच जाएँगे।" वह नहीं चाहती थी कि कोई उसके बेटे के एकान्त में खलल डाले।

गवर्नेस बोली, "बहुत अच्छा।"

जब पॉल के माता-पिता घर आए तब रात का एक बजा था। सब शान्त था। पॉल की माँ अपने कमरे में गई, सफेद फर का कोट उतारा। उसने अपनी नौकरानी

से इन्तजार करने को मना किया था उसके पति व्हिस्की मे सोडा मिला रहे थे।

वह दिल में फिक्र के कारण चुपचाप ऊपर बेटे के कमरे में गई। पर यह हल्की सी आवाज़ किसकी थी? वह दरवाज़े के बाहर खड़ी सुनती रही। वह एक अजीब भारी आवाज़ थी। और ऊँची नहीं थी। उसका दिल रुक गया। यह बिना आवाज की आवाज़ थी। कोई बड़ी चीज़ चुपचाप पर तेज़ी से हिल रही थी, दौड़ती-सी तेज। क्या हो सकती है? हे भगवान्, वह क्या है? फिर उसे लगा, वह यह आवाज़ जानती है। वह जानती है यह किसकी है।

पर वह ठीक से याद नहीं कर पा रही थी। वह ठीक से कह नहीं सकती थी कि वह क्या थी जो पागलों की तरह चलती ही जा रही थी।

फिक्र और डर से मरकर, उसने धीरे से दरवाजे का हैंडल घुमाया। कमरा अँधेरे मे डूबा था, पर खिड़की के पास उसे कुछ हिलता दिखाई दिया। वह डर और आश्चर्य से घूरती रही।

फिर उसने बत्ती जला दी। देखा कि उसका बेटा हरा पाज़ामा पहने हुए झूलने वाले घोड़े को पागलों की तरह हिला रहा था। अचानक हुई रोशनी में पॉल घोड़े को आगे चलाता दिखाई दिया था, रोशनी में हरे रंग की पोशाक पहने माँ भी दरवाज़े मे खड़ी दिखाई दी।

"पॉल"! वह चिल्लाई "तुम क्या कर रहे हो?"

"मलाबार!" वह अजीब सी आवाज़ में पूरी ताकत से चीखा, "वह मलाबार है।"

उसने घोड़ा हिलाना बन्द कर दिया, पलभर को उसकी आँखें बिना समझे अजीब ढग से माँ की तरफ उठीं। फिर वह ज़मीन पर गिर पड़ा, डरी हुई माँ ममता के आवेग में उसे उठाने को दौड़ी।

पर वह बेहोश हो चुका था और बेहोश ही रहा। उसे दिमागी बुखार हो गया था। वह छटपटाता और बोलता रहता था, माँ उसके पास पत्थर बनी बैठी थी।

"मलाबार! वह मलाबार है! बैसेट, बैसेट, मैं जानता हूँ! वह मलाबार ही है," बच्चा यही चिल्लाता रहता था, उठने की कोशिश करता ताकि झूलने वाले घोड़े को आगे बढ़ा सके।

थमे हुए दिल से माँ ने पूछा, "मलाबार से इसका क्या मतलब हैं?"

पिता पथरीले ढंग से कहता, "मैं नहीं जानता।"

उसने अपने भाई से पूछा "मलाबार से उसका क्या मतलब है?"

जवाब था, "डर्बी में भागनेवाला एक घोड़ा है।"

न चाहते हुए भी ऑस्कर ने बैसेट को बताया और खुद भी मलाबार पर एक हजार लगाया। चौदह पर एक। तीसरे दिन बीमारी और बढ़ गई। वे बदलाव का इन्तज़ार कर रहे थे।

लड़का अपने लम्बे घुंघराले बालों वाले सिर को बराबर तकिए पर पटक रह था। न वह सोया, न उसे होश आया, उसकी आँखें नीले पत्थर जैसी लग रही थी उसकी माँ उसके पास बैठी थी, उसे लग रहा था उसका दिल भी पत्थर हो गय था।

शाम को ऑस्कर नहीं आया, पर बैसेट ने सन्देश भेजा कि क्या वह पलभर के लिए आ सकता है, सिर्फ एक पल? पॉल की माँ को किसी का आना अच्छा नहीं लग रहा था, पर फिर सोचकर हामी भर दी। लड़का पहले जैसा ही था। शायद बैसेट के आने से उसे होश आ जाए।

छोटी-छोटी भूरी मूँछें और भूरी आँखों वाला, ठिगना सा आदमी, वह माली दबे पाँव कमरे में आया, पॉल की माँ की तरफ सिर झुकाया और पलंग के पास गया, अपनी चमकती छोटी आँखों से वह मरते हुए बच्चे को देखने लगा।

"मास्टर पॉल!" वह फुसफुसाया। "मास्टर पॉल, मलाबार अव्वल आया है, उसकी जीत हुई है, मैंने वही किया जो तुमने कहा था। तुम सत्तर हज़ार पाउंड जीते हो। अब तुम्हारे पास करीब अस्सी हज़ार हो गए। मलाबार पहले नम्बर पर आया मास्टर पॉल!"

"मलाबार! मलाबार! माँ क्या मैंने मलाबार कहा था? क्या मैंने मलाबार ही कहा था? माँ, क्या तुम मुझे खुशकिस्मत मानती हो? मैं मलाबार के बारे में जान गया था, है ना? अस्सी हज़ार से ऊपर पाउंड! मैं इसे किस्मत कहूँगा। माँ, तुम नही कहोगी? अस्सी हज़ार से ज्यादा पाउंड! मैं जान गया था। क्या मैं नहीं जानता था? मलाबार ही अव्वल आया। अगर मैं पूरी तरह जानने तक अपने घोड़े पर बैठा रहूँ तभी जानता हूँ। फिर मैं तुम्हें बताता हूँ, बैसेट, और तुम कितना भी ऊँचा दाँव लगा सकते हो। क्या तुमने मलाबार पर लगाया बैसेट?"

"मैंने एक हज़ार लगाया था, मास्टर पॉल।"

"मैंने, मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया कि अगर मैं अपने घोड़े पर चढ़ता हूँ तो मे पूरी तरह निश्चित—पक्की तरह—जान जाता हूँ। माँ, क्या मैंने कभी तुम्हें बताया? मै किस्मत वाला हूँ!"

माँ बोली, "नहीं, तुमने कभी नहीं बताया।" पर उसी रात लड़का मर गया।

उसका शव अभी पड़ा था। उसकी माँ से उसका भाई कह रहा था। "हे भगवान्, हेस्टर, तुमने अस्सी हज़ार पाउंड पा लिये, पर बेटा खो दिया। बेचारा अभागा, पर उसके लिए इस जीवन से जाना ही अच्छा था, जहाँ उसे जीतने के लिए झूलने वाले घोड़े पर सवार होना पड़ता था!"

जानवर का निशान

रूडयार्ड किपलिंग

तुम्हारे भगवान् और मेरे भगवान्—क्या तुम
या मैं जानते हैं कि कौन ज्यादा ताकतवर है?

—एक देसी कहावत

कुछ का मानना है कि स्वेज़ के पूर्व में ईश्वर की कृपा का सीधा काबू खत्म हो जाता है, वहाँ आदमी एशिया के देवताओं और राक्षसों की ताकत के अधीन हो जाता है और किसी किसी अंग्रेज आदमी को कभी-कभी इंग्लैण्ड के चर्च के भगवान् की कृपा अपनी सुरक्षा देती है।

यह मत भारत में जीवन में होने वाली बेकार की डरावनी बातों के कारण है, इससे मेरी कहानी की व्याख्या हो सकती है।

इस मामले में मेरा दोस्त पुलिसकर्मी स्ट्रिकलैण्ड, जो भारतवासियों के बारे में उतना जानता है जितना जानना अच्छा होता है, तथ्यों का साक्षी हो सकता है। हमारे डॉक्टर डुमो ने भी उतना देखा जितना मैंने और स्ट्रिकलैण्ड ने देखा। उसने इन प्रभाव से जो निष्कर्ष निकाला वह बिल्कुल गलत था। अब वह मर चुका है; वह बड़े अजीब ढंग से मरा था, इस बारे में कहीं और लिखा है।

फ्लीट जब हिन्दुस्तान आया तब उसके पास थोड़ा पैसा और हिमालय के निकट धर्मशाला के करीब थोड़ी सी जमीन थी। दोनों जायदादें उसे अपने चाचा से विरासत मे मिली थीं। वह उन्हीं का इन्तजाम करने आया था। वह शरीर से बड़ा और भारी भरकम, खुशमिजाज, किसी से झगड़ा न करने वाला इन्सान था। उसकी भारतीयो के बारे में जानकारी बहुत सीमित थी और वह भाषा की परेशानी की शिकायत करता रहता था।

वह अपनी पहाड़ी जगह से उस जगह नया साल मनाने के लिए आया था

और स्ट्रिकलैण्ड के साथ ठहरा था। नए साल की पूर्व संध्या को क्लब में बहुत बड़ी दावत थी। रात गीली-सी थी। जब लोग राज्य की सीमाओं से इकट्ठा होते हैं तो उन्हे ऊधम मचाने का हक होता है। सरहद से 'जिन्दा पकड़ने वालों' की एक टुकडी भेजी गई थी जिन्होंने साल भर में बीस भी गोरे चेहरे नहीं देखे थे, उन्हें खाना खाने के लिए पन्द्रह मील दूर अगले किले पर जाना पड़ता था, शराब पीने की जगह ख़ैबरी गोली खाने का ख़तरा होता था। यहाँ के सुरक्षित वातावरण में वे खुश थे। बाग मे मिले एक ऐंठे हुए झाऊ चूहे को लेकर सामूहिक जुआ खेलने की कोशिश कर रहे थे। उनमें से एक निशान लगाने वाले यन्त्र को अपने दाँतों में दबाकर कमरे मे घूम रहा था। दक्षिण से गए आधा दर्जन कृपक एशिया के सबसे बड़े झूठे के साथ जो उनकी सब कहानियों को दबाने की कोशिश कर रहा था, मसखरी कर रहे थे। सब वहाँ इकट्ठा थे और पिछले साल में हमारे कितने आदमी मारे गए और कितने लाचार हुए इसका हिसाब-किताब कर रहे थे। वह एक बहुत गीली रात थी ओर मुझे याद है कि हम पोलो चैम्पियनशिप के कप में पैर रखकर, सितारों के बीच सिर ऊँचा किए, पुराने वक्त की प्यारी याद में गीत गा रहे थे, और दोस्ती की कसमे खा रहे थे। फिर हममें से कुछ गए और वर्मा को साथ मिला लिया, कुछ सूडान की तरफ गए जहाँ सूडान के उत्तरपूर्व में स्थित सुआकीम के बाहर उनकी वहाँ के लडाके योद्धाओं से मुठभेड़ हुई। कुछ को सितारे मिले, कुछ को पदक, कुछ ने शादी कर ली जोकि बुरी बात थी, पर कुछ ने इससे भी बुरे काम किए। हममें से कुछ आपस में जुड़े रहे और थोड़े बहुत अनुभवों से पैसा बनाने की कोशिश करते रहे।

फ्लीट ने रात की शुरूआत शेरी तथा बिटर्ज़* से की। भोजन के अन्त मे मीठे पर पहुँचने तक वह शैम्पेन पीता रहा, फिर कच्ची तीखी कैंप्री जिसमें व्हिस्की जैसी ताकत होती है। इसके बाद कॉफी के साथ बेनेडिक्टीन ली, चार पाँच व्हिस्की और सोडा लिये जिससे खेल की बाज़ी बेहतर हो, ढाई बजे बीयर और बोन्स लिया और फिर ब्रान्डी से पीना खत्म किया। जब सुबह साढ़े तीन बजे वह बाहर आया तो चौदह डिग्री कोहरा था। वह अपने घोड़े के खाँसने से बहुत नाराज़ हुआ और कूदकर उस पर चढ़ना चाहता था कि घोड़ा भागकर अपने घुड़साल में चला गया। अब मुझे और स्ट्रिकलैण्ड को उसे घर ले जाने की परेशानी उठानी पड़ी।

हमारी सड़क बाज़ार के बीच से, एक छोटे से हनुमान मन्दिर* के पास से जाती थी। देवताओं में उनकी बड़ी इज्जत है। हर देवता में कुछ विशेषताएँ होती हे और हर पुजारी में भी। मैं व्यक्तिगत तौर पर हनुमान को बहुत महत्त्व देता हूँ ओर उनकी जाति अर्थात्—पहाड़ों के बड़े बन्दरों—के प्रति दयालु हूँ। कौन जाने कब

---

* नशीला पेय जिसमें कड़वी जड़ी-बूटियाँ खूश्बू के लिए डाली जाती हैं

* बन्दरों के देवता

दास्त की जरूरत पड जाए

जब हम मन्दिर के पास से निकले तब मन्दिर में रोशनी थी और कुछ लोग भजन गा रहे थे। एक देसी मन्दिर में पुजारी को रात के किसी भी वक्त भगवान् के लिए उठना पड़ता है। इससे पहले कि हम रोकें फ्लीट सीढ़ियों पर चढ़कर गया, दो पुजारियों की पीठ थपथपायी और बड़ी गम्भीरता से सिगार के टुकड़े की राख, लाल पत्थर की हनुमान की मूर्ति के माथे पर रगड़ दी।

स्ट्रिकलैण्ड ने उसे खींचकर हटाने की कोशिश भी, पर वह बैठ गया ओर गम्भीरता से बोला, "वह देख रहे हो? जानवर का निशान? मैंने बनाया है! अच्छा नही है?"

आधे मिनिट में मन्दिर में शोर मच गया। स्ट्रिकलैण्ड जानता था कि देवताओ को भ्रष्ट करने से क्या होता है अतः बोला कि अब कुछ होगा। उस प्रदेश में काफी पुराना अधिकारी होने के नाते, आसपास के लोगों से मिलने की कमज़ोरी होने के नाते, पुजारी को जानने की वजह से उसे बहुत बुरा लग रहा था। फ्लीट जमीन पर बैठा था और हिलने को राज़ी नहीं था। वह बोला, "अच्छे हनुमान का तकिया बड़ा नरम बनता है।"

तभी बिना चेतावनी के देवता की मूर्ति के पीछे से एक चाँदी जैसा सफेद आदमी निकला। इस तेज़ ठंड में भी वह पूरी तरह नंगा था। उसका शरीर जमी हुई चाँदी जैसा चमक रहा था। वह बाइबल में वर्णित 'एक कोढ़ी ऐसा सफेद जेसी बर्फ' जैसा था। कई सालों से बुरी तरह कोढ़ होने के कारण उसका चेहरा नहीं रहा था। हम दोनों झुके कि फ्लीट को उठा लें, मन्दिर में ऐसी भीड़ होती जा रही थी जैसे इन्सान जमीन में से निकल रहे हों, तभी हमारी बाँहों के नीचे से ऊदबिलाव जैसे गुर्राता हुआ वह कोढ़ी आया, फ्लीट को कमर से पकड़ा और हमारे छुड़ाने से पहले उसने फ्लीट की छाती पर अपना सिर दे मारा। फिर वह एक कोने में चला गया और बैठा हुआ गुर्राने लगा। भीड़ ने सारे दरवाज़े रोक दिए।

पुज़ारी बहुत नाराज़ थे पर कोढ़ी के पकड़कर मारने के बाद से थोड़ा शान्त हो गए थे।

कुछ मिनिट की चुप्पी के बाद एक पुजारी आया और स्ट्रिकलैण्ड से शुद्ध अंग्रेजी मे बोला, "अपने दोस्त को ले जाओ। उसने हुनमान से जो करना था कर लिया, पर हनुमान ने अभी नहीं किया।" भीड़ ने रास्ता बना दिया और हम फ्लीट को उठाकर सड़क पर ले गए।

स्ट्रिकलैण्ड बहुत नाराज़ था। वह,बोला, "हम तीनों को छुरा मारा जा सकता था, फ्लीट को अपनी किस्मत सराहनी चाहिए कि वह बिना चोट खाए बच गया।"

फ्लीट ने किसी को धन्यवाद नहीं दिया, वह बोला कि वह सोना चाहता है। वह बुरी तरह नशे में था।

हम चल दिए, स्ट्रिकलैण्ड चुप था पर बहुत नाराज़ था। तभी फ्लीट बुरी तरह काँपने लगा और पसीना पसीना हो गया। वह बोला "बाज़ार से तेज़ बदबू आ रही है।" उसे अचरज था कि अंग्रेजों के घर के पास कसाई खाना कैसे मौजूद था। "क्या तुम्हें खून की गन्ध नहीं आ रही है?" उसने पूछा।

आख़िर हमने उसे बिस्तर पर लिटा दिया, तब सुबह हो रही थी। स्ट्रिकलैंड ने मुझे एक गिलास व्हिस्की के लिए आमन्त्रित किया। पीते पीते हम मन्दिर में हुई गड़बड़ी की बात कर रहे थे। पूरी घटना ने उसे बुरी तरह परेशान कर दिया था। स्ट्रिकलैण्ड का काम देसी लोगों के हथकण्डों का पूरा जवाब देना था। अगर उनका कोई काम उसे ताज्जुब में डाले तो उसे नफरत होती थी। अभी तक वह अपने काम मे पूरी तरह सफल नहीं हुआ था पर पन्द्रह बीस साल में कुछ सफलता मिलने की उम्मीद थी।

वह बोला, "उन्हें तो हमें ख़त्म कर देना चाहिए था, पर उसकी जगह वे गुर्रा रहे थे। पता नहीं वे क्या चाहते थे। मुझे यह सब जरा भी अच्छा नहीं लगा।"

मैंने कहा, "मेरे ख्याल से मन्दिर की प्रबन्धक समिति, उनके धर्म का अपमान करने के जुर्म में हमारे खिलाफ कार्यवाही करेगी। भारतीय दण्ड संहिता में फ्लीट द्वारा किए गए जुर्म की सज़ा थी।" स्ट्रिकलैण्ड ने कहा कि वह यही उम्मीद और प्रार्थना करता है कि वे ऐसा करें। लौटने से पहले मैं फ्लीट को देखने गया। देखा कि वह दाई करवट लेटा, हुआ, छाती की बाईं तरफ खुजा रहा था। सुबह सात बजे, उदास, नाखुश और सर्दी से मारा मैं भी बिस्तर पर गया।

एक बजे मैं फ्लीट के सिर के बारे में जानने के लिए स्ट्रिकलैण्ड के घर गया, क्योंकि मैं सोचता था कि उसका सिर बहुत दुख रहा होगा। फ्लीट नाश्ता कर रहा था। वह बहुत ठीक नहीं दिख रहा था। पर उसका मिजाज़ ठीक था क्योंकि वह रसोइए को ठीक नाश्ता न देने के लिए गालियाँ दे रहा था। एक आदमी ठंडी रात के बाद कच्चा मांस खा सके यह अचरज की बात है। मेरे यह कहने पर फ्लीट हँस पड़ा।

"इस जगह अजीब मच्छर हैं", वह बोला, "एक ही जगह पर वे मुझे बुरी तरह खा गए हैं ।"

स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "दिखाओ कहाँ काटा है, शायद अब ठीक हो गया हो।

जितनी देर में नाश्ता आ रहा था, फ्लीट ने कमीज़ खोली और हमें दिखाया। उसकी छाती पर बाईं तरफ चीते की खाल के से गोलाकार पाँच या छह बेतरतीब धब्बे थे जो काले गुलाव के दुगने आकार के थे। स्ट्रिकलैण्ड ने देखकर कहा, "सुबह ये गुलाबी थे, अब काले हो गए हैं।"

फ्लीट शीशे की तरफ भागा तथा उधर देखकर बोला, "ये तो बड़े भयानक दिख रहे हैं। क्या हैं?

हम कोई जवाब नहीं दे पाए। इतने में नाश्ता आ गया। चापें लाल और रसीली थीं। फ्लीट ने घृणास्पद ढंग से तीन निकाल लीं। वह दाईं तरफ की दाढ़ों से चबा रहा था। मास काटते वक्त उसका सिर भी दाएँ कन्धे की तरफ झुका था। खत्म करने पर उसने अपने अजीब व्यवहार के लिए माफी-सी माँगते हुए कहा, "मेरे ख्याल से मैं जीवन में कभी इतना भूखा नहीं हुआ। मैंने शुतुरमुर्ग की तरह निगल लिया।"

नाश्ते के बाद स्ट्रिकलैण्ड ने मुझसे कहा, "कहीं मत जाओ। आज रात यही बिता लो।"

मेरा घर उसके घर से तीन मील भी दूर नहीं था, अतः उसका यह कहना बेवकूफी भरा लग रहा था। पर स्ट्रिकलैण्ड ज़िद करने लगा। वह कुछ कहने वाला था कि फ्लीट ने शर्मिन्दगी से कहा कि उसे फिर भूख लग रही है। स्ट्रिकलैण्ड ने एक आदमी भेजकर मेरे घर से मेरा बिस्तर और घोड़ा मँगवा लिया। हम तीनों स्ट्रिकलैण्ड के अस्तबल की तरफ गए ताकि घुड़सवारी के लिए जाने से पहले कुछ समय वहाँ बिता लें। जिसे घोड़ों से प्यार हो वह घंटों उन्हें देखकर भी थकता नहीं है। ओर जब दो आदमी वक्त काटने के लिए ऐसा कर रहे हों तो एक दूसरे से झूठ सच बोलते रहते हैं।

अस्तबल में पाँच घोड़े थे। जब हम वहाँ पहुँचे तो जो दृश्य था उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। लगा कि जैसे घोड़े पागल हो गए थे। वे ज़ोर से हिनहिना रहे थे, ऐसा लग रहा था कि खूँटे उखाड़ देंगे; वे पसीने से नहा रहे थे, काँप रहे थे, मुँह से झाग निकल रहा था, डर से परेशान थे, स्ट्रिकलैण्ड के घोड़े उसे उतनी ही अच्छी तरह पहचानते थे जितना कि उसके कुत्ते। इसलिए और अचरज हो रहा था। उनको इतना डरा हुआ और परेशान देखकर हम वहाँ से निकल आए। फिर स्ट्रिकलैण्ड मुडा और उसने मुझे बुलाया। घोड़े तब भी डरे हुए थे पर हमें सहलाने दे रहे थे और अपना सिर हमारी छाती पर रख रहे थे।

स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "ये हमसे नहीं डर रहे। अगर 'आउटरेज' (घोड़े का नाम) बोल सकता होता तो मैं अपनी तीन महीने की तनख्वाह देने को तैयार हो जाता।"

पर आउटरेज गूँगा था। वह सिर्फ अपने मालिक से लिपट सकता था, नथुने बजा सकता था क्योंकि घोड़ों का बात करने का यही तरीका होता है। अभी हम अस्तबल में ही थे कि फ्लीट दुबारा वहाँ आया। उसे देखते ही घोड़े फिर डर से परेशान हो गए। इससे पहले कि वे हमे लात मारते हम वहाँ से भागे। स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "ऐसा लगता है कि वे तुम्हें पसन्द नहीं करते।"

फ्लीट बोला, "बेकार बात, मेरी घोड़ी मेरे पीछे कुत्ते की तरह आती है।" वह उसके पास गया। वह खुले अस्तबल में थी, जैसे ही उसने डण्डा हटाया, वह आगे बढ़ी, फ्लीट को गिराया और बगीचे की तरफ भाग गई। मैं हँस पड़ा, पर स्ट्रिकलैण्ड

को हसी नही आइ . वह दोना हाथो से अपनी मूछे इतनी देर तक खीचता रहा कि वे उखड़ने वाली हो गईं। फ्लीट अपनी घोड़ी को पकड़ने जाने की जगह उबासी लेकर बोला कि उसे नींद आ रही थी। वह घर गया और लेट गया। नए साल का दिन बिताने का यह बेवकूफी भरा ढंग था।

स्ट्रिकलैण्ड घुड़साल में मेरे साथ बैठा रहा। उसने मुझसे पूछा कि मुझे फ्लीट के आचरण में कोई ख़ास बात दिखी। मैंने कहा कि वह जानवर की तरह खा रहा था; पर उसका कारण यह हो सकता है कि वह पहाड़ों पर अकेला रहता है जहाँ हमारे जैसे ऊँचे और सभ्य समाज से उसका वास्ता ही नहीं पड़ता। स्ट्रिकलैण्ड को हँसी नहीं आई। मुझे लगता है वह मेरी बात सुन ही नहीं रहा था क्योंकि उसका अगला वाक्य फ्लीट की छाती पर बने निशान के बारे में था। मैंने कहा कि हो सकता है किसी ज़हरीली मक्खी ने काट लिया हो या कोई जन्म का निशान हो जो अब दिखाई दे रहा था। हम दोनों ने यह ज़रूर माना कि वह देखने में अच्छा नहीं था। स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे बेवकूफ कहा।

वह बोला, "मैं क्या सोचता हूँ, यह अभी नहीं बताऊँगा, क्योंकि तब तुम मुझे पागल कहोगे, पर हो सके तो अगले कुछ दिन तुम मेरे पास रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम फ्लीट पर नज़र रखो। पर जब तक मैं अपने नतीजे पर न पहुँचूँ मुझे कुछ नहीं बताना।

मैंने कहा, "लेकिन मैं आज रात को बाहर खाना खाऊँगा।"

स्ट्रिकलैण्ड बोला, "मैं भी, और फ्लीट भी, अगर वह अपना दिमाग न बदले तो।"

हम बगीचे में घूमते रहे और पाइप पीते रहे। जब तक पाइप ख़त्म नहीं हुआ हम कुछ नहीं बोले क्योंकि हम दोस्त थे और बोलने से अच्छे तम्बाकू का मज़ा चला जाता है। फिर हम फ्लीट को जगाने गए। वह जाग रहा था और अपने कमरे मे बेचैनी से घूम रहा था।

हमें देखकर वह बोला, "मैं कह रहा था कि मुझे कुछ और चापें चाहिए। क्या मिलेंगी?"

हम हँसे और कहा, "जाओ कपड़े बदल लो, पलभर में घोड़े आ जाएँगे।"

"ठीक है", उसने कहा। "मैं चलूँगा पर चाप मिलने के बाद—वे कुछ कम पकी होनी चाहिए।"

वह काफी गम्भीर लग रहा था। चार बजे थे। हमने एक बजे नाश्ता किया था, फिर भी वह काफी देर से कम पकी चापें माँग रहा था। फिर उसने घुड़सवारी के लिए कपड़े पहने, बाहर बरामदे में गया। उसकी घोड़ी तो पकड़ी नहीं जा सकी—उसे पास नहीं जाने दे रहा थी। तीनों घोड़े बेकाबू हो रहे थे—डर से पागल—आखिर फ्लीट ने कहा कि वह घर पर ही रुकेगा और यहीं कुछ खा लेगा। स्ट्रिकलैण्ड और मै

घुड़सवारी के लिए निकले। हम सोच में डूबे थे। जैसे ही हम हनुमान मन्दिर के पास से निकले, वह सफेद आदमी आया और हम पर म्याऊँ, म्याऊँ करने लगा।

स्ट्रिकलैण्ड ने कहा कि 'यह मन्दिर के पुराने पुजारियों में से नहीं है। मेरा मन करता है कि यह मेरे हाथ लग जाए।''

उस शाम हमारा घुड़सवारी में कोई उत्साह नहीं था। घोड़े भी बिना उत्साह के ऐसे चल रहे थे जैसे पहले चलने से थके हों।

स्ट्रिकलैण्ड बोला, "नाश्ते के बाद का झटका इनके लिए बहुत हो गया।" बाकी का पूरा रास्ता वह कुछ नहीं बोला। मेरे ख्याल से एक-दो बार कसम खाई होगी पर वह बातों की गिनती में नहीं होगा।

सात बजे अँधेरा होने पर हम लौट आए तो देखा कि बंगले में कोई बत्ती नहीं जल रही थी। स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "मेरे नौकर बड़े बदमाश और लापरवाह है।"

मेरा घोड़ा पगडण्डी पर हिनहिनाया, फ्लीट आकर ठीक उसकी नाक के नीचे खड़ा हो गया था।

स्ट्रिकलैण्ड ने पूछा, "तुम यहाँ बगीचे में क्या कर रहे हो?"

इतने में ही दोनों घोड़े ऐसे भागे कि हमें गिरा ही देते। अस्तबल के पास हम उतरे और वायस फ्लीट के पास आए जो घुटनों और हाथों के भार सन्तरे के झाड़ के नीचे था।

स्ट्रिकलैण्ड बोला—"तुम्हें क्या हुआ है?"

फ्लीट ने जल्दी-जल्दी भारी आवाज़ में जवाब दिया, "कुछ नहीं, तुम जानते हो मैं बागबानी कर रहा था। मिट्टी की खुशबू बहुत अच्छी आ रही है। मेरे ख्याल से में सारी रात सैर करने—लम्बी सैर करने जाऊँगा।" तब मुझे लगा, कहीं बहुत गड़बड़ है। मैंने स्ट्रिकलैण्ड से कहा, "मैं बाहर खाना खाने नहीं जाऊँगा।"

स्ट्रिकलैण्ड ने फ्लीट से कहा, "उठो तुम्हें बुखार आ जाएगा। अन्दर चलो खाना खाएँगे, रोशनी करेंगे। हम सब घर पर ही खाएँगे।"

फ्लीट बेमन से उठा और बोला, "लैम्प नहीं—लैम्प नहीं। यहाँ ज्यादा अच्छा है। हम बाहर बैठकर खाते हैं। कुछ और चापें—ढेर सारी और कम पकी हुई—लाल और कुरकुरी।"

उत्तरी भारत में दिसम्बर के महीने में काफी ठंड होती है, फ्लीट का सुझाव एक पागल का सुझाव था।

स्ट्रिकलैण्ड ने सख़्ती से कहा, "अन्दर आओ, फौरन अन्दर आओ।"

फ्लीट अन्दर आया। लैम्प आने पर हमने देख कि वह सिर से पैर तक मिट्टी और गन्दगी से लथपथ था। वह शायद बगीचे में कलाबाज़ियाँ खा रहा था। रोशनी आते ही वह सिमट उठा और अपने कमरे में चला गया। उसकी आँखें भयानक लग रही थीं, उनमें कुछ नहीं था पर उनके पीछे हरी रोशनी थी। उसका नीचे का होंठ

लटका हुआ था।

स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "आज रात को भयानक परेशानी आने वाली है। तुम कपड़े मत बदलना।"

हमने खाना मँगवाया और फ्लीट के आने का इन्तज़ार करते रहे। वह अपने कमरे में चक्कर लगा रहा था, पर बत्ती नहीं जलाई थी। तभी कमरे से भेड़िए की लम्बी रोने की आवाज़ आई।

लोग बाग खून ठंडा होने और बाल खड़े हो जाने की बात बड़े हल्के ढंग से लिख या कह देते हैं। पर दोनों अुनभव बड़े भयानक हैं। उन्हें हल्के ढंग से नही लेना चाहिए। मेरा दिल ऐसे रुक गया जैसे उसमें चाकू घुसा दिया गया हो, स्ट्रिकलैण्ड मेज पर बिछे कपड़े जैसा सफेद पड़ गया।

एक बार फिर वह रोने की आवाज़ आई और खेतों के पार से उसका जवाब आया।

इससे डर और बढ़ गया। स्ट्रिकलैण्ड फ्लीट के कमरे की तरफ भागा, मैं पीछे भागा। हमने देखा फ्लीट खिड़की से निकल रहा था। उसके गले से जानवरों की सी आव़ाज़ निकल रही थी। जब हम उस पर चिल्लाए तो वह जवाब नहीं दे पाया। उसने थूका।

मुझे याद नहीं कि फिर क्या हुआ, पर मैं सोचता हूँ कि स्ट्रिकलैण्ड ने जरूर उसे जूते उतारने वाले लम्बे उपकरण से मारकर अचम्भे में डाल दिया होगा, नही तो मैं कभी भी उसकी छाती पर नहीं बैठ सकता था, फ्लीट कुछ बोल नहीं पा रहा था, सिर्फ गुर्रा रहा था। उसकी गुर्राहट भेड़िए जैसी थी, इन्सान जैसी नहीं। उसके अन्दर का आदमी शायद सारा दिन लड़ने के बाद मर गया होगा। अब हमारा वास्ता उस जानवर से था जो कभी फ्लीट था।

पूरी घटना किसी इन्सान के विवेकपूर्ण अनुभव से परे थी। मैं हाइड्रोफोबिया (पागल कुत्ते के काटने की बीमारी) कहना चाहता था, पर शब्द मेरे गले से नही निकल रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि वह झूठ है।

हमने इस जानवर को पंखे की चमड़े की रस्सी से बाँधा, और उसके हाथ के अँगूठे और पैर के अँगूठे को साथ-साथ बाँध दिया, जूते पहनने के हॉर्न को मुँह मे फँसा दिया, अगर उसे लगाना जानते हो तो वह बहुत असरदार होता है। फिर हम उसे खाने वाले कमरे में ले गए। और एक आदमी को डुमो डॉक्टर के पास भेजा और कहा कि वे फौरन आ जाएँ। आदमी के जाने के बाद हमने साँस ली। तब स्ट्रिकलैण्ड बोला, "उससे कुछ नहीं होगा, यह डॉक्टर के बस का काम नही है। मैं जानता था कि वह ठीक कह रहा था।

जानवर का सिर आज़ाद था। वह उसे इधर-उधर फेंक रहा था। कोई कमरे मे घुसता तो यही सोचता कि हम भेड़िए की खाल पका रहे थे।

स्ट्रिकलैण्ड अपनी हथली पर ठाड़ा टिकाए बेठा उस जानवर का ज़मीन पर रेगते हुए देख रहा था, पर कुछ कह नहीं रहा था। खींचातानी में कमीज़ फट गई थी और छाती पर बने काले निशान दिख रहे थे। वे छाले जैसे दीख रहे थे।

हम चुपचाप बैठे देख रहे थे कि हमें बाहर कोई आवाज़ सुनाई दी। वह मादा ऊदबिलाव की सी थी। हम दोनों खड़े हो गए, और चाहे स्ट्रिकलैण्ड के बारे में नही पर अपने बारे नें कह सकता हूँ कि मुझे लगा जैसे मैं बीमार हूँ, सच में शरीर से बीमार हूँ। हमने एक दूसरे से कहा कि वह बिल्ली है।

डुमो आया। मैंने कभी किसी व्यावसायिक आदमी को इस कदर डरा हुआ नही देखा। उसने कहा कि यह तो हाइड्रोफोबिया का दिल दहलानेवाला केस है। इसमें अब कुछ नहीं किया जा सकता। शान्ति देने वाले उपायों से उसकी तकलीफ ओर लम्बी होगी। जानवर के मुँह से झाग निकल रहा था। हमने डुमो को बताया कि फ्लीट को एक दो बार कुत्ते ने काटा था। कोई भी आदमी जो कुत्ते पालता हे, कभी कभी उनके द्वारा काटा भी जाता है। डुमो कोई मदद नहीं कर सका सिवाय इसके कि वह यह प्रमाणपत्र दे सकता था कि फ्लीट कुत्ते के काटे से मर रहा था। तब तक जानवर शू हार्न (जूता पहनने का छोटा-सा उपकरण) थूकने में कामयाब होकर अव गुर्रा रहा था। डुमो ने कहा अन्त तय था और वह उसका कारण प्रमाणित करने को तैयार था। वह अच्छा आदमी था और हमारे साथ रुकने को राजी था, पर स्ट्रिकलैण्ड ने इससे इनकार कर दिया। वह उसका नए साल का दिन खराब नही करना चाहता था। उसने सिर्फ इतना कहा कि फ्लीट की मृत्यु का असली कारण लोगों को न बताया जाए।

परेशान डुमो लौट गया। जैसे ही उसकी गाड़ी के पहियों की आवाज़ ख़त्म हुई, स्ट्रिकलैण्ड ने फुसफुसाते हुए मुझे अपने मन का शक बताया। पर उसे यह खुद ही इतना अविश्वसनीय लग रहा था कि वह इस बारे में ज़ोर से बोल भी नही रहा था; मैं जो स्ट्रिकलैण्ड के हर विश्वास को मानता था, इसे मानने पर इतना शर्मिन्दा था कि अविश्वास का दिखावा कर रहा था।

"अगर कोढ़ी ने फ्लीट को हनुमान की मूर्ति को भ्रष्ट करने के लिए जादू किया भी है तो इतनी जल्दी दण्ड कैसे मिला?"

जब मैं यह फुसफुसा रहा था तभी घर के बाहर से फिर आवाज़ आई, ओर वह जानवर नए सिरे से ताकत लगाने लगा, हमें डर था कि कहीं वह चमड़े के पट्टे तोड न डाले।

"देखो!" स्ट्रिकलैण्ड बोला, "अगर ऐसा छह बार हुआ तो मैं कानून अपने हाथ में ले लूँगा। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।"

वह अपने कमरे में गया और कुछ ही मिनिट बाद एक पुरानी शॉटगन की नली, मछली पकड़ने वाले काँटे का टुकड़ा, एक मोटी रस्सी और पलंग के लकडी

के भारी पाए लेकर आया। मैंने बताया था कि उस चीख के दो सेकेण्ड के बाद जानवर को दौरे पड़ते थे। अब वह कमज़ोर होता दिखाई दे रहा था।

स्ट्रिकलैण्ड बड़बड़ाया, "पर वह किसी की जिन्दगी नहीं ले सकता! वह ज़िन्दगी नहीं ले सकता!"

जानते हुए भी कि मैं अपने विश्वास के खिलाफ बोल रहा था, मैंने कहा "वह बिल्ली हो सकती है। वह बिल्ली ही होगी। अगर वह कोढ़ी ज़िम्मेवार होता तो यहाँ आने की हिम्मत कैसे करता?"

स्ट्रिकलैण्ड ने लकड़ी चूल्हे में रखी, बन्दूक की नली आग की लौ पर रखी, मेज पर रस्सी फैलाई और एक बेंत के दो टुकड़े किए। मछली पकड़ने वाली डण्डी एक गज़ की थी, आगे तार लगा था जैसा मछली पकड़ने में होता है, उसने दोनो सिरे इकट्ठे बाँधकर एक फन्दा बनाया।

फिर वह बोला, "हम उसे कैसे पकड़ें? उसे ज़िन्दा और सही सलामत पकडना है।"

मैंने कहा, "हमें नियति पर विश्वास करना होगा। पोलो खेलने वाली लकड़ी लेकर धीरे से घर के सामने वाले झाड़ में जाना होगा। चीखने वाला आदमी या जानवर बार-बार घर के चारों तरफ ऐसे चक्कर लगा रहा था जैसे चौकीदार हो। हम झाडियो मे इन्तज़ार करते रहेंगे और पास आने पर उस पर झपट पड़ेंगे।"

स्ट्रिकलैण्ड ने सुझाव मान लिया। हम गुसलखाने की खिड़की से आगे वाले बरामदे से होते हुए, पगडण्डी पर उतरकर झाड़ियों में चले गए।

चाँदनी में हमें वह कोढ़ी घर के कोने से आता दिखाई दिया। वह बिल्कुल नगा था, बीच बीच में गुर्राता था और रुककर अपनी परछाई के साथ नाचता था। वह बड़ा भद्दा दृश्य था और यह सोचकर कि इस बुरे आदमी ने फ्लीट की क्या हालत बना दी है, मैंने अपने सब शक छोड़कर स्ट्रिकलैण्ड की मदद करने का निश्चय किया, और तय किया कि गरम की हुई बन्दूक की नली से लेकर फन्दा बनी रस्सी—जाँघ से सिर तक वापस ले जाने—ज़रूरत पड़ने पर किसी भी तरह की यन्त्रणा देने मे पीछे नहीं हटूँगा।

जैसे ही कोढ़ी पलभर को हमारे सामने रुका, हम छड़ी लेकर उस पर कूद पडे। वह बहुत ताकतवर था और हमें डर था कि हमारे पकड़ने से पहले भाग न जाए या घायल न हो जाए। हमारा यह ख्याल कि कोढ़ी कमज़ोर होते हैं, गलत निकला। स्ट्रिकलैण्ड ने उसकी टाँगों में धक्का मारा और मैंने उसके गले पर पैर रख दिया। वह बुरी तरह गुर्राने लगा। अपने घुड़सवारी के जूतों के नीचे से भी मैं महसूस कर रहा था कि उसकी खाल स्वस्थ आदमी की खाल नहीं है।

वह अपने हाथ-पैर के ठूँठों से हमें मारने की कोशिश कर रहा था। हमने कुत्ते की रस्सी उसकी बगलों के नीचे से डालकर फन्दे में बाँध लिया था, फिर उल्टा घसीटते

हुए हॉल से होते हुए, खाने वाले कमरे में ले गए, जहाँ वह जानवर पड़ा था। वहाँ हमने उसे बक्से के कुण्डे से बाँध दिया। उसने छूटने की कोशिश नहीं की, पर गुर्राता रहा।

जब हम कोढ़ी को जानवर के सामने ले गए, उस समय के दृश्य का वर्णन नही किया जा सकता। जानवर धनुष की तरह पीछे दुहरा हो गया जैसे किसी ने उसे ज़हर दे दिया हो, और दर्दनाक ढंग से कराहने लगा। फिर बहुत कुछ हुआ जो मैं यहाँ लिख नहीं सकता।

"मेरे ख्याल से मैं सही था, स्ट्रिकलैण्ड बोला, "अब हम उससे इसे ठीक करने को कहेंगे।"

कोढ़ी केवल गुर्रा रहा था। स्ट्रिकलैण्ड ने अपने हाथ पर एक तौलिया लपेटा ओर आग से बन्दूक की नली निकाली। मैंने छड़ी का आधा हिस्सा मछली पकडने की डोरी के फंदे में डाला और आराम से कोढ़ी को स्ट्रिकलैण्ड के पलंग के पाए से बॉध दिया। अब मैं समझा कि कैसे आदमी औरत और छोटे बच्चे तक एक चुडैल को ज़िन्दा जलाते देखना सहन कर लेते हैं; जानवर ज़मीन पर कराह रहा था। कोढी का चेहरा नहीं था पर चेहरे की जगह जो पत्थर सा था उस पर भयानक भाव गुजर रहे थे, बिल्कुल ऐसे जैसे लाल गरम लोहे पर गरमाई की लहरें खेलती हैं—उदाहरण के लिए बन्दूक की नली।

स्ट्रिकलैण्ड ने पलभर के लिए अपनी आँखों पर हाथों से छाया की और हम काम में लग गए। यह हिस्सा छापने के लिए नहीं है।

जब कोढ़ी बोला तब सुबह होने वाली थी। उस वक्त तक वह गुर्रा रहा था, जिससे हमें कोई तसल्ली नहीं मिल रही थी। जानवर थककर बेहोश हो गया था, घर में सन्नाटा था। हमने कोढ़ी को खोला और उससे कहा कि वह बुरी आत्मा को ले आए। वह रेंगकर जानवर तक गया, उसने अपना हाथ उसकी छाती पर बाई तरफ रखा। बस इतना ही। फिर वह मुँह के भार गिर गया, और साँस अन्दर खींचते हुए रोने लगा।

हम जानवर का चेहरा देख रहे थे, और देखते-देखते उसकी आँखों में फ्लीट की आत्मा लौट आई। फिर माथे पर पसीना आ गया और उसने आँखें—इन्सानी ऑखें—बन्द कर लीं। हमने एक घण्टा इन्तज़ार किया, पर फिर भी फ्लीट सोता रहा। हम उसे उसके कमरे में ले गए और कोढ़ी से जाने को कहा, उसे पलंग का पाया, चादर जिससे वह अपने नंगेपन को ढक सके, दस्ताने और तौलिया जिनसे हमने उसे छुआ था और वह चाबुक जो उसके बदन के चारों तरफ लपेटी हुई थी, दे दी। उसने चादर से अपने को लपेटा और बहुत सुबह बिना बोले बिना गुर्राए चला गया।

स्ट्रिकलैण्ड ने अपना मुँह पोंछा और बैठ गया। दूर शहर में घण्टा बजा। सात बजे थे।

स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "पूरे चौबीस घण्टे! मैंने नौकरी से निकाले जाने और हमेशा के लिए पागलखाने भेजे जाने लायक काफी कुछ किया है। तुम्हें विश्वास है कि हम जाग रहे हैं?"

लाल दहकती बन्दूक की नली ज़मीन पर गिरकर कालीन जला रही थी। उसकी गन्ध सच्ची थी।

उस दिन सुबह ग्यारह बजे हम दोनों साथ-साथ फ्लीट को जगाने गए। हमने देखा कि उसकी छाती पर चीते की खाल जैसे जो काले धब्बे बने थे, वे गायब हो गए थे। वह थका हुआ और नींद में था। पर जैसे ही उसने हमें देखा तो बोला, "ओह! सत्यानाश! नया साल मुबारक हो। कभी शराब मिलानी नहीं चाहिए। मैं मरने वाला हो गया था।"

"तुम्हारी कृपा के लिए धन्यवाद, पर तुम आगे निकल गए हो। आज दो तारीख़ की सुबह है। तुम पूरे चौबीस घण्टे सोये हो।"

दरवाज़ा खुला, डॉक्टर डुमो ने झाँका, वह पैदल आया था। उसने सोचा था कि हम फ्लीट को नीचे उतार रहे होंगे।

"मैं एक नर्स लाया हूँ", उसने कहा, "मेरे ख्याल से वह जो ज़रूरत हो कर सकती है..."

फ्लीट ने खुशी से भरकर बिस्तर पर बैठते हुए कहा, "ज़रूर, अपनी सब नर्से ले आओ।"

डॉक्टर गूँगा हो गया। स्ट्रिकलैण्ड उसे बाहर ले गया और समझाया कि शायद उसके बीमारी जानने में कोई गलती हो गई होगी। वह चुप ही रहा और जल्दी से चला गया। उसे अपनी व्यावसायिक इज्ज़त की फिक्र हुई होगी। स्ट्रिकलैण्ड भी बाहर चला गया। जब वह लौटा तो उसने बताया कि वह हनुमान मन्दिर गया था। उसने देवता को भ्रष्ट करने का हरजाना देने को कहा। और उन्हें बताया कि कभी किसी गोरे आदमी ने मूर्ति को नहीं छुआ और यह भी कि वह आदमी सारे गुणों से भरा है पर वह किसी धोखे में पड़ गया था। स्ट्रिकलैण्ड ने पूछा, "तुम क्या सोचते हो?"

मैंने कहा, "और भी बातें हैं..."

पर स्ट्रिकलैण्ड को मेरी इस उक्ति से नफरत है। वह कहता है मैंने इसके बहुत प्रयोग से इसे घिसा दिया है।

एक और अजीब बात हुई, जिसने उस रात को हुई सारी घटनाओं जितना ही मुझे डराया। जब फ्लीट कपड़े पहनकर खाने वाले कमरे में आया तो सूँघने लगा। सूँघते समय वह अपनी नाक अजीब ढंग से हिलाता था। "यहाँ कुत्ते की भयानक गन्ध है। तुम्हें अपने इन कुत्तों को बेहतर ढंग से रखना चाहिए। स्ट्रिक, गन्धक का प्रयोग करके देखो।"

स्ट्रिकलैण्ड ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने कुर्सी का पीछे का हिस्सा पकड़ा

और अचानक बिना किसी चेतावनी के हिस्टीरिया के आश्चर्यजनक दौरे से ग्रस्त हो गया। एक ताकतवर आदमी को इस तरह दौरे के काबू में देखकर बहुत बुरा लगता है। फिर मुझे याद आया कि इसी कमरे में हमने फ्लीट की आत्मा को छुड़ाने के लिए कोढ़ी से लड़ाई की थी। हमने अंग्रेज़ों को हमेशा के लिए बदनाम कर दिया था। याद आते ही मैं भी स्ट्रिकलैण्ड की तरह शर्मनाक ढंग से हँसते-हँसते हाँफने और गुर्राने लगा। फ्लीट ने सोचा हम दोनों पागल हो गए। हमने उसे कभी नहीं बताया कि हमने क्या किया था।

कुछ साल बाद स्ट्रिकलैण्ड ने शादी कर ली और पत्नी के प्रभाव में समाज का चर्च जाने वाला सदस्य बन गया। हमने इस पूरी घटना के बारे में तटस्थता से सोचा और स्ट्रिकलैण्ड को लगा कि मुझे यह घटना जनता के सामने लानी चाहिए।

मैं नहीं जानता कि इस कदम के उठाने से रहस्य की गुत्थी सुलझेगी; क्योंकि पहली बात तो यह है कि कोई इस अरुचिकर कहानी पर विश्वास ही नहीं करेगा, और दूसरे हर बुद्धिमान व्यक्ति को पता है कि मूर्तिपूजकों के भगवान् पत्थर और पीतल के होते हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार करने की कोशिश को निश्चित रूप से निन्दनीय माना जाता है।

जादुई टोपी

ह्यू वॉलपोल

अब मैं सोचता हूँ कि उस वक्त मैं एक अजीब बच्चा था, स्वभाव से अजीब, पर वह शायद इसलिए था कि मैंने अपना बचपन अपने से बहुत बड़ी उम्र के लोगो के बीच बिताया था।

जिन घटनाओं का मैं अब ज़िक्र करने जा रहा हूँ उन्होंने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। तब से अब तक में मैं उन साधारण लोगों जैसा हो गया हूँ जो कुछ प्रश्नो के बारे में इतने निश्चित होते हैं कि बदल ही नहीं सकते।

संसार के ज्यादातर लोग जिन चीज़ों के बारे में शक करते हैं, वे इन लोगो के लिए सच हैं और उनके बारे में कोई बहस नहीं की जा सकती; उनका यह विश्वास उन पर ऐसी छाप लगाता है कि वे उन लोगों जैसे हैं जो कल्पना में जीते हैं और सच और कहानी में फ़र्क नहीं जानते। उनकी यह विलक्षणता उन्हें औरों से अलग करती है। मैं पचास की उम्र पर हूँ, पर मेरे बहुत कम दोस्त है। काफी अकेला हूँ। अगर आप चाहें तो बताऊँ कि यह इसलिए है क्योंकि चालीस साल पहले रॉबर्ट चाचा की अजीब ढंग से मृत्यु हुई, जिसका मैं गवाह था।

1890 में क्रिसमस से एक दिन पहले शाम को फेल्डाईक हॉल में जो अजीब घटनाएँ घटीं, उनका अब से पहले मैंने कभी ज़िक्र भी नहीं किया। एक या दो लोगो को वे घटनाएँ अब भी याद हैं। रॉबर्ट चाचा की मृत्यु की बात एक कहानी की तरह नई पीढ़ी तक पहुँचाई गई। पर मेरी तरह कोई जीवित गवाह नहीं था। अब मुझे लगता है कि वक्त आ गया है जब सारी बात मैं कागज़ पर उतार दूँ।

मैं सब कुछ बिना अपनी टिप्पणी जोड़े लिख रहा हूँ। मैं कुछ कम नहीं कर रहा हूँ और न ही कुछ छिपा रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि मैं किसी भी ढंग से बदले की भावना वाला आदमी नहीं हूँ, पर मेरी रॉबर्ट चाचा से छोटी-सी भेंट और उनकी

मृत्यु की परिस्थितियों ने उस छोटी उम्र पर मेरे जीवन को जो मोड़ दे दिया उसके लिए मैं आसानी से माफ नहीं कर सकता।

जहाँ तक मेरी कहानी में अति-प्राकृतिक तत्त्व की बात है तो सबको अपने आप तय करना होगा। हम अपने स्वभाव के अनुसार या मजाक उड़ाएँगे या विश्वास करेंगे। अगर हम ठोस व्यावहारिक तत्त्व से बने हैं तो सम्भव है कि कोई भी प्रभाव चाहे वह कितना ही निश्चित, कितना ही हमारा देखा-सुना क्यों न हो, हमें विश्वास नही दिला पाएगा। अगर हम रोजमर्रा में स्वप्न देखते हैं तो एक और स्वप्न मुश्किल से हमारे यथार्थ के भाव को हिला पाएगा।

जो भी हो। मेरी कहानी ऐसे है।

मेरे आठवें से तेरहवें साल तक मेरे माता-पिता भारत में थे। मैंने उन्हें सिर्फ दो बार तब देखा था जब वे इंग्लैण्ड आए थे। मैं इकलौता बच्चा था। माता-पिता दोनों मुझे बहुत चाहते थे, पर वे एक दूसरे को और भी ज्यादा चाहते थे। वे पुराने ढंग के और बहुत भावुक लोग थे। मेरे पिता भारतीय सिविल सर्विस में थे। वे कविता लिखते थे। उन्होंने 'टैंटलस : चार अध्यायों में एक कविता' नाम से एक महाकाव्य लिखा और उसे अपने पैसों से छपवाया।

एक और सच्चाई यह थी कि मेरे पिता ने जब माँ से शादी की तब वे बीमार समझी जाती थीं। इस वजह से मेरे माता-पिता को लगता था कि उनमें 'ब्राउनिंग्स' के साथ बड़ा साम्य था। मेरे पिता ने प्यार से उनका जो नाम रखा था, वह प्रसिद्ध पर गन्दे ''बा'' शब्द की-सी ध्वनि का था।

मैं बचपन में कमज़ोर था और आठ साल की उम्र पर मिस्टर फर्गुसन की प्राइवेट एकेडेमी में भेजा गया था। छुट्टियाँ मैं अनचाहे मेहमान की तरह विभिन्न रिश्तेदारों के पास बिताता था।

'अनचाहा' क्योंकि मैं सोचता हूँ कि मैं ज़रा मुश्किल बच्चा था, मतलब मुझे समझना मुश्किल था। मेरी एक बुढ़िया दादी फोकस्टोन में रहती थीं; दो बुआ थी जो केंसिंग्टन में एक छोटे घर में साथ-साथ रहती थीं; दो चाचा कम्बरलैण्ड में रहते थे। दोनों चाचाओं के अलावा मैं सभी रिश्तेदारों के पास काफी समय रहा था। उनमे से किसी के लिए मुझमें ज्यादा प्यार नहीं था।

उस समय में अब की तरह बच्चों को उतने ध्यान से समझने की कोशिश नही की जाती थी। मैं दुबला पतला, पीले से रंग का, चश्मे वाला बच्चा था, जो प्यार पाने को तरसता था, पर यह नहीं जानता था कि कैसे पा सकता है; बाहर से न दिखाने पर भी अन्दर से बहुत भावुक और संवेदनशील था, नज़र कमज़ोर होने के कारण मैं खेल में अच्छा नहीं था, इतना पढ़ता था जितना मेरे लिए अच्छा नही था। सारा दिन और कुछ देर रात को भी अपने आपको कहानियाँ सुनाता रहता था।

मैं सोचता हूँ मेरे सब रिश्तेदार मुझसे तंग आ चुके थे। अन्त में तय हुआ कि कम्बरलैण्ड वाले चाचाओं को भी अपना हिस्सा पूरा करना है। वे दोनों मेरे पिता के सबसे बड़े भाई थे। उनका परिवार बहुत बड़ा था, जिनमें मेरे पिता सबसे छोटे थे। मेरे विचार से मेरे ताऊ रॉबर्ट प्रायः सत्तर वर्ष की आयु के रहे होंगे, और ताऊ कास्टेन्स उनसे पाँच साल छोटे थे। मुझे याद है कि मुझे हमेशा आदमी का नाम कास्टेन्स मज़ाकिया लगता था।

मेरे ताऊ रॉबर्ट फेल्डाइक हॉल के मालिक थे; वह बास्टवॉटर झील और सीस्केल के छोटे से शहर के बीच में समुद्रतट पर एक कस्बे में था। छोटे ताऊ बहुत साल से बड़े ताऊ के साथ रहते थे। परिवार में चिट्ठियाँ लिखने के बाद यह फैसला किया गया था कि 1890 की क्रिसमस मैं फेल्डाइक हॉल में बताऊँगा।

उस वक्त मैं सिर्फ ग्यारह वर्ष का पतला दुबला निकले माथेवाला, बड़ा चश्मा लगाए, घबराया-सा शर्मीले स्वभाव का लड़का था। मैं हमेशा डर और पूर्वानुमान के मिले-जुले भाव से नई यात्रा पर निकल जाता था। हमेशा सोचता था, शायद इस बार कोई चमत्कार हो जाए, मुझे कोई दोस्त या खज़ाना मिल जाएगा जो मुझे अनहोने गौरव से भर देगा और आख़िर मैं हीरो बनूँगा जो मैं हमेशा बनना चाहता था।

मैं खुश था कि मुझे क्रिसमस पर किसी और रिश्तेदार के, खासकर चेल्थनहॉम वाले चचेरे भाई बहनों के, पास नहीं जाना था क्योंकि वे मुझे चिढ़ाते और सताते थे। उनके आस पास हमेशा कान फोड़नेवाला शोर रहता था। मैं ज़िन्दगी में सबसे ज्यादा सिर्फ शान्ति से पढ़ने का मौका चाहता था। मैं जानता था कि फेल्डाइक मे बढिया लाइब्रेरी थी।

मेरी बुआ ने मुझे ट्रेन में बिठाया। फूफा ने हैरीसन ऐसवर्थ का भद्दा सा रोमांटिक उपन्यास 'दि लंकाशायर विचेज़' दिया। मेरे पास पाँच चॉकलेट क्रीम बार थी, सो मेरा सफर मेरी कल्पना के हिसाब से आनन्ददायक था। मैं शान्ति से पढ़ सकता था और जीवन में उस समय मुझे और ज्यादा की ज़रूरत नहीं थी।

फिर भी, जैसे जैसे ट्रेन उत्तर की तरफ बढ़ने लगी, नया प्रदेश मुझे आकर्षित करने लगा। मैं इंग्लैण्ड के उत्तरी हिस्से में कभी नहीं गया था। इसलिए जो खुलापन और ताज़गी मिली, मैं उसके लिए तैयार नहीं था।

नंगी, बेतरतीब पहाड़ियाँ, हवा की ताज़गी जिस पर खुशी से भरी चिड़ियाँ तैर रही थीं, पत्थर की दीवारें जो बंजर भूमि के चारों तरफ सिलेटी रिबन की तरह दौड रही थीं और इन सबसे ऊपर आकाश का खुला विस्तार जिसकी सतह पर बादल ऐसे तैर रहे थे, दौड़ रहे थे, भँवर खा रहे थे, फैल रहे थे, जैसे मैंने कभी नहीं देखा था .

मैं गाड़ी की खिड़की के बाहर देख रहा था, उन्हीं दृश्यों में खो गया था, डूबा हुआ था। अँधेरा होने के काफी बाद आखिर दरबान ने आवाज़ लगाई 'सी स्केल'।

मै तब भी एक तरह रोमांटिक स्वप्न म डूबा था जब मे छोटे से सकरे प्लेटफाम पर उतरा तो नमकीन समुद्री हवा ने मेरा स्वागत किया। अब उत्तरी प्रदेश से मेरा सच्चा परिचय पूरा हो गया। इस समय मैं उसी कम्बरलेण्ड के दूसरे हिस्से से लिख रहा हूँ। मेरी खिड़की से दूर आसमान के नीचे मज़बूत और नंगे पहाड़ों की शृंखला है, और नीचे झील है जो स्किडौ (Skiddow) के पैरों में पड़ी शीशे के एक सफेद टुकड़े जैसी लगती है।

अब मैं जो अजीब कहानी सुनाने जा रहा हूँ, हो सकता है कि मेरे मन मे इस प्रदेश को लेकर जो रहस्यात्मकता है, उसी से उसका जन्म हुआ हो, या ऐसा न हो। क्योंकि मेरा विश्वास है कि सीस्केल में मेरी पहली शाम ने ही मुझमें फर्क ला दिया था, इसलिए तब से संसार भर का कोई भी सौन्दर्य—काश्मीर के लाल पानी से लेकर हमारे अपने कॉर्निश तट के ऊबड़ खाबड़ सौन्दर्य तक—मेरे लिए कबरलेण्ड की पहाड़ियों की तीखी और ताकतवर लचीली वनस्पति से मुकाबला नहीं कर सकता।

उस शाम फैल्डाइक तक की घोड़ागाड़ी की सवारी जादुई थी। बहुत ठंड थी पर मुझे बुरी नहीं लग रही थी। मेरे लिए सब कुछ जादुई था।

शुरू में ही मुझे सर्दियों की रात के हल्के बादलों के सामने 'ब्लैक कॉम्ब' के हल्के कूबड़ जैसे काले पत्थर दिखे। फिर समुद्र का पछाड़ खाना और बाड़ की झाडियो मे नंगी टहनियों की हल्की सरसराहट सुन पा रहा था।

उस रात मुझे जीवन भर के लिए मित्र मिला। गाड़ीवान बॉब आर्मस्ट्रांग ने तब से कई बार मुझे बताया (क्योंकि चाहे वह धीमा और बहुत कम बोलने वाला आदमी है, उन बातों को जिन्हें वह महत्त्वपूर्ण समझता है, बार-बार दुहराता है) कि उस शाम सीस्केल के स्टेशन पर मैं उसे खोया सा दिखाई दिया था। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं हैं कि मैं उस समय कमज़ोर और सर्दी का मारा लग रहा हूँगा। जो भी हो वैसा दिखना मेरी खुश किस्मती रही होगी क्योंकि वहीं उसी वक्त मैंने आर्मस्ट्राग का दिल जीत लिया, जो वह लौटा नहीं पाया।

मुझे उस रात वह बहुत बड़ा लगा था। मुझे विश्वास था कि संसार में उसकी सबसे चौड़ी छाती रही होगी। वह उसके लिए अभिशाप था क्योंकि कोई भी सिली हुई कमीज़ उसे नहीं आ सकती थी।

मैं सर्दी के कारण उससे चिपककर बैठा था, वह बहुत गरम था। मैं उसके मोटे कोट में बराबर धड़कती घड़ी जैसे धड़कते दिल को महसूस कर रहा था। उस रात वह मेरे लिए धड़क रहा था, और मुझे यह बताने में खुशी है कि तब से आज तक वह दिल मेरे लिए धड़क रहा है।

सच्चाई यह है कि जैसी बातें बाद में हुईं, मुझे एक दोस्त की बहुत ज़रूरत थी। मेरा छोटा सा शरीर जब गाड़ी से उतारा गया, तब तक बिल्कुल अकड़ गया था और मैं प्रायः सो गया था। मुझे फौरन एक बड़े हॉल मैं ले जाया गया वहाँ

मारे गए जानवरों के सिर घूर रहे थे और घास फूँस की गन्ध आ रही थी। जब मुझे बड़े से बिलियर्ड वाले कमरे में ले जाया गया जहाँ पत्थर की अँगीठी में तेज आग राक्षसी ढंग से दहक रही थी तब थकान के कारण मुझे अपने ताऊ दुगुने आकार के लगे।

हर तरह से वे एक अजीब जोड़ा थे। मेरे रॉबर्ट ताऊ जी छोटे कद के थे। उनके बाल भूरे और बिखरे थे, उनकी तेज़ छोटी आँखों पर दो घनी भौंहें थीं। मुझे आज भी कल की बात की तरह याद है कि वे भद्दे उड़े हुए रंग के कपड़े पहने हुए थे और उनकी एक उँगली में लाल रंग की पत्थर जड़ी अँगूठी थी।

उनके प्यार करने पर (मुझे किसी के प्यार करने से नफरत थी) एक बात मुझे फौरन पता चली कि उन पर से एक हल्की खुशबू आ रही थी, जो मेरे दिमाग मे अजवायन के बीज से जुड़ी थी। मैंने यह भी देखा कि उनके दाँत बदरंग और पीले थे।

कांस्टेंस ताऊजी मुझे फौरन पसन्द आए। वे मोटे, गोल, स्वभाव से दोस्ताना ओर साफ थे। वे बड़े बाँके लग रहे थे। उन्होंने कोट में फूल लगाया हुआ था और उनके कपड़े भाई के मुकाबले में सफेद थे।

उस पहली मुलाकात में ही मुझे लगा कि मुझसे बात करने और मेरे कन्धो पर मोटी बॉह रखने से पहले उन्होंने अपने भाई की तरफ ऐसे देखा जैसे अनुमति ले रहे हों। आप कहेंगे कि मेरी उम्र के लड़के के लिए यह सब इतने ध्यान से देख पाना अस्वाभाविक था। पर सच यह है कि मैंने उस वक्त सब कुछ देखा। उम्र और आलस्य के बढ़ने के साथ अब मेरी देखने की शक्ति कुछ कम हो गई है।

II

उस रात मैंने एक भयानक सपना देखा और मैं चीखता हुआ उठ गया। बॉब ने आकर मुझे शान्त किया।

मेरा कमरा, मेरे देखे हुए बाकी कमरों की तरह खाली था। लम्बा चौड़ा फर्श था और बिलियर्ड वाले कमरे की तरह इसमें भी एक पत्थर की अँगीठी थी। बाद मे मुझे पता चला कि वह कमरा नौकरों के कमरों के पास था। बॉब का कमरा मेरे साथ वाला और श्रीमती स्पेडर जो घर सँभालती थीं, उनका कमरा उसके साथ वाला था।

बॉब उस समय और आज भी कुँवारा था। वह मुझे बताता था कि वह इतनी औरतों को प्यार करता था कि एक को चुन सकना मुश्किल था। इधर बहुत सालो से वह मेरा अंगरक्षक है। वह मेरे रंग-ढंग का आदी और इतना आलसी हो गया

है कि वह अपने को बदल नहीं सकता वैसे भी वह सत्तर वर्ष का हो गया है

मैंने सपने में यह देखा था। उन्होंने मेरे लिए आग जलाई थी (वह ज़रूरी थी क्योंकि मेरा कमरा बर्फ़ की तरह ठंडा था) और मैंने सपने में आग की लपटों को बुझने से पहले पूरी तेज़ी से उठते देखा। आग की चमक में मैंने देखा कि मेरे कमरे में कुछ घूम रहा था, जिसे देखने से पहले मैंने उसके घूमने की आवाज़ सुनी थी।

मैं बैठ गया, मेरा दिल धड़क रहा था। उस पीले देसी कुत्ते ने जो बहुत भयानक था और दूर वाली दीवार के पास से जा रहा था, मेरे डर को और बढ़ा दिया।

उस पीले कुत्ते का डर बताना मुझे हमेशा मुश्किल लगता है। वह डर कुछ तो उसके बेकार रंग से था और कुछ गन्दी हड्डियों वाले शरीर से था, पर सबसे ज्यादा उसके भयानक सिर से था—जो चपटा था, जिसकी छोटी-छोटी तीखी आँखे थी और नुकीले पीले दाँत थे।

जब मैंने उसकी तरफ देखा, तो उसने अपने दाँत निकाल लिए और धीरे धीरे मेरे बिस्तर की तरफ आने लगा। पहले मैं डर से काठ हो गया फिर जब वह मेरे पलंग के पास आया उसकी छोटी आँखें मुझ पर गड़ी थीं, दाँत निकले थे, मैंने चीखना शुरू कर दिया।

अगली बात मुझे यह पता है कि आर्मस्ट्रांग मेरे पलंग पर बैठा था, उसकी मजबूत बाँहें मेरे काँपते हुए छोटे से शरीर को थामे थीं। मैं सिर्फ एक ही बात कह पा रहा था, "वह कुत्ता! वह कुत्ता! वह कुत्ता!"

वह मुझे माँ की तरह शान्त करता रहा।

"देखो वहाँ कोई कुत्ता नहीं है! यहाँ कोई नहीं है सिर्फ मैं हूँ! कोई नहीं है, बस मैं हूँ!"

मैं काँपता रहा, फिर वह मेरे साथ बिस्तर में लेटा, मुझे अपने से चिपटा लिया और उसकी आरामदेह बाँहों में मैं सो गया।

III

सुबह जब मैं उठा तो ताज़ी हवा और चमकता हुआ सूर्य और ढलान वाले बगीचे की पीछे की पत्थर की दीवार के सहारे हिलते नारंगी, लाल और काले रंग के गुलदाऊदी (क्राइसेन्थमम) के फूल दिखे। मैं अपने सपने के बारे में सब भूल गया था। पर यह जानता था कि इस दुनिया में मैं बॉब आर्मस्ट्रांग को सबसे ज्यादा प्यार करता था।

आने वाले दिनों में सभी मेरे प्रति दयालु थे। मैं इस ग्रामीण प्रदेश से खुश

था, वह मेरे लिए इतना नया था कि शुरू में तो मैं इसके अलावा कुछ सोच भी नहीं पाता था। बॉब आर्मस्ट्रांग सिर से पैर तक पूरी तरह यहीं का था। उसकी छोटी बातचीत में और घुरघुराने में यहाँ की धरती का रंग होता था।

सब तरफ रोमांस था। चाहे वह तस्कर व्यापारियों का ब्रिग और सीस्केल से चोरी का माल लाना ले जाना हो, या गॉसफोर्थ चर्च का पुराना सलीब हो, समुद्री पक्षियों से घिरा रैवेनग्लास जो कभी एक सुन्दर बन्दरगाह हुआ करता था, मनकास्टर कासल, ब्राउटन और वास्टवाटर, जिसकी ढलान पर लुढ़कने वाले पत्थर थे, ब्लैक कॉम्ब जिसकी चौड़ी पीठ पर हर समय छायाएँ नाचती रहती थीं—यहाँ तक कि सीस्केल का छोटा सा स्टेशन भी जो समुद्री हवाओं के सामने खुला था, जिसकी किताबों की दूकान से मैंने 'वीकली टेलीग्राफ' नामक प्रकाशन खरीदा था जिसमें हर हफ्ते ससार की सबसे रोमांचक कहानी की किश्त आती थी।

सब तरफ रोमांस था—रेतीली गलियों में चलती गायें, ड्रिग तट पर गरजता समुद्र, सिर पर बादलों की टोपी खींचे गेबल और स्काफैल, वहाँ के किसानों का धीमी आवाज़ में अपने पशुओं को बुलाना, गॉसफोर्थ चर्च में बजती घण्टियाँ—सब तरफ रोमांस और सौन्दर्य था।

जल्दी ही जैसे मैं प्रदेश से परिचित होता गया, आसपास के लोग, ख़ासकर मेरे दोनों ताऊ मेरा ध्यान खींचने लगे, मेरी बेचैन उत्सुकता को जगाने लगे। वास्तव मे वे काफी अजीब थे।

फेल्डाइक हॉल अपने आप में अजीब नहीं था, सिर्फ काफी भद्दा था। मेरा अनुमान है कि वह 1830 के आसपास बना होगा। वह एक चौकोर सफेद इमारत थी जो एक सादे चेहरे वाली भारी-भरकम बदगुमान औरत जैसी लगती थी। बडे बड़े कमरे थे, अनगिनत गलियारे थे, सब कुछ भद्दी सफेदी से ढका था। उस सफेदी पर पुरानी तसवीरें टँगी थीं जो वक्त के साथ धुँधली और पीली पड़ गई थीं, उनके रग ख़राब हो गए थे। मेज़कुर्सी मज़बूत पर भद्दे थे।

फिर भी वहाँ एक रोमांटिक चीज़ थी और वह एक छोटा सा स्लेटी बुर्ज था जहाँ मेरे रॉबर्ट ताऊजी रहते थे। यह बुर्ज बगीचे के अन्त में और वास्टवाटर के पीछे स्कैफेल ग्रुप की तरफ से ढलान वाले खेत की तरफ था। इसे सैकड़ों साल पहले स्कॉट लोगों से सुरक्षा के लिए बनाया गया था। यह सालों से रॉबर्ट का पढ़ने और सोने का कमरा था। यहाँ उनका साम्राज्य था; सिवाय उनके पुराने नौकर हाकिंग के वहाँ कोई नहीं जा सकता था। हाकिंग झुका हुआ, सूखा सा, मैला और छोटा सा आदमी था जो किसी से बात नहीं करता था। रसोई में बातें होती थीं कि वह जिन्दगी बिना सोचे काटता था। वह रॉबर्ट ताऊजी की देखभाल करता था और उनके कमरे और कपड़े साफ करता था।

मैं जिज्ञासु और रोमांटिक विचारधारा का लड़का था, इसलिए जल्दी ही उस

बुज के बारे मे वैसी ही उत्सुक उत्तेजना से भर उठा जेसा ब्लूबीयर्ड की पत्नी के मन में निषिद्ध कमरे के बारे में थी। बॉब ने मुझसे कहा था कि मैं चाहे कुछ भी करूँ पर उस कमरे में कभी पैर भी नहीं रखूँ।

और तब मैंने एक और बात जानी--कि बॉब मेरे रॉबर्ट ताऊजी से नफरत करता था, उनसे डरता था पर उन पर गर्व भी करता था; उसे उन पर गर्व इसलिए था कि वे परिवार के मुखिया थे और उसके कहे अनुसार वे संसार के सबसे चतुर आदमी थे।

बॉब ने बताया कि वे भले ही देखने को कुछ नहीं कर रहे होते थे, पर उन्हे किसी का देखना पसन्द नहीं था।

इन सब बातों से बुर्ज को अन्दर से देखने की उत्सुकता मुझमें और बढ़ गई थी, हालॉकि मैं उन्हें प्यार नहीं करता था।

यह कहना मुश्किल है कि शुरू के उन दिनों में मैं उन्हें नापसन्द करता था। वे मुझसे जब मिलते थे, अच्छी तरह मिलते थे, और खाने के वक्त जब मैं अपने दोनों ताऊओं के साथ उस बड़े, खाली सफेदी हुए खाने वाले कमरे में लम्बी मेज़ पर बैठता था तो वे फिक्र रखते थे कि मैं ज्यादा खाऊँ। फिर भी वे मुझे कभी पसन्द नही थे; शायद इसलिए कि वे साफ नहीं थे। बच्चे ऐसी चीजों के बारे में बहुत महसूस करते हैं। शायद मुझे हर वक्त उनके ऊपर से आने वाली वह सड़ी और सफेद ज़ीरे वाली टिकिया की सी खुशबू अच्छी नहीं लगती थी।

फिर वह दिन आया जब उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाकर जादुई टोपी के बारे में बताया।

धूप की पीली, तिरछी परछाइयाँ गुलदाऊदी के फूलों और पत्थर की दीवारों, लम्बे खेतों और धुँधली पहाड़ियों पर पड़ रही थीं। मैं अकेला गुलाब के बगीचे के पास की छोटी सी नदी के किनारे खेल रहा था। तभी पीछे से बिना आवाज़ किए रॉबर्ट ताऊजी आए। यह उनकी आदत थी। उन्होंने मेरे कान की चुटकी भरी और पूछा कि क्या मैं उनके साथ ऊपर उनके कमरे में जाना चाहूँगा। मैं उत्सुक तो था पर डरा हुआ भी था, ख़ासकर जब मैंने हकिंग की कुतरी हुई सी शक्ल को खिडकी नुमा पतली सी दरार में से झाँकते देखा।

जो भी हो, हम अन्दर गए, मेरा हाथ रॉबर्ट ताऊजी के रूखे गरम हाथ में था। अन्दर जाने पर, सच तो यह है कि देखने को बहुत कुछ था ही नहीं—सब गन्दा और सीलन से भरा था, दरवाज़ों और कोने में रखे खाली बक्सों तथा जग खाए पुराने लोहे पर जाले लगे थे, और उनके कमरे में जो पढ़ने की बड़ी सी मेज थी उस पर हज़ारों चीज़ें थीं—किताबें जिनकी जिल्दें लटकी हुई थीं, चिपकती हरी बोतलें, एक शीशा, एक तराज़ू, एक ग्लोब, एक पिंजरा जिसमें चूहे थे, एक नगी औरत का बुत, एक रेत घड़ी—हर चीज पुरानी, दागदार और धूल भरी थी।

रॉबर्ट ताऊजी ने मुझे अपने पास बिठाया, और बहुत सी रोचक कहानियाँ सुनाई--दूसरी कहानियों के साथ जादू की टोपी की कहानी भी सुनाई थी।

जादुई टोपी एक ऐसी चीज़ थी जिसे अपने सिर पर पहन लेने पर व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार जानवर बन सकता है। उन्होंने मुझे 'बोटान' नामक देवता की कहानी सुनाई कि कैसे उसने उस बौने को छेड़ा था जिसके पास जादुई टोपी थी। उसने बौने से कहा कि वह अपने आपको चूहा या कोई ऐसा जानवर नही बना सकता; इससे बौने के अहंकार को चोट पहुँची। उसने अपने आप को चूहा बना लिया, जिसे देवता ने आसानी से काबू में करके उसकी जादुई टोपी चुरा ली।

मेज़ पर सारे कूड़े के बीच में एक मरी-सी मखमल की तंग टोपी थी।

रॉबर्ट ताऊजी ने हँसते हुए कहा, "वह मेरी जादुई टोपी है। मेरा पहनना पसन्द करोगे?"

पर मैं अचानक डर गया, बहुत डर गया। रॉबर्ट ताऊजी को देखकर मुझे लगा, मुझे कुछ हो जाएगा। कमरा गोल गोल घूमने लगा। पिंजरे में चूहे चिचियाने लगे। कमरा इतना बन्द था कि कोई भी लड़का बीमार हो सकता था।

मैं सोचता हूँ जैसे ही रॉबर्ट ताऊजी ने वह जादुई टोपी उठाने के लिए हाथ बढाया, उसी पल से मैं फिर कभी फेल्डाइक हाल में खुश नहीं रह पाया। उनका यह काम सीधा-सादा और दोस्ती भरा था पर इससे बहुत सी बातों के बारे में मेरी आँखें खुल गईं।

अब क्रिसमस में दस दिन बाकी थे। उस समय और सच कहूँ तो अब भी क्रिसमस का विचार मुझमें खुशी भरता है। यात्रा की निराशावादिता के बावजूद उसकी सुन्दर कहानी करुणा, प्रेम, खुशी और सद्भावना जगाती है अब भी मुझे उपहार देना और लेना, पार्सल देखना, उसका कागज़, उस पर बँधा धागा और वह खूबसूरत आश्चर्य बहुत खुश करता है।

इसलिए मैं उत्सुकता से क्रिसमस का इन्तज़ार कर रहा था। मुझे 'वाइटहेवन' (Whiteheaven) ले जाकर उपहार खरीदवाने का वायदा किया गया था। गॉसफोर्थ के गाँववालों के लिए एक पेड़ और नाच का इन्तज़ाम किया जाना था। रॉबर्ट ताऊजी के बुर्ज में जाने के बाद से मेरी इन्तज़ार की खुशी गायब हो गई थी। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे और मैं एक के बाद चीज़ देखता गया, मुझे लगता है अगर बॉब न होता तो मैं भागकर अपनी बुआ के पास केंसिंग्टन चला जाता।

दरअसल यह आर्मस्ट्रांग ही था, जिसने मुझे देखने-सुनने की प्रेरणा दी जो इतने भयानक ढंग से खत्म हुई; क्योंकि जब उसे पता चला कि रॉबर्ट ताऊजी मुझे अपने बुर्ज में ले गए थे तो उसके गुस्से की सीमा नहीं रही। मैंने इससे पहले उसे कभी इतना नाराज़ नहीं देखा था, उसका भारी शरीर काँप रहा था, उसने मुझे पकड़कर इतनी ज़ोर से चिपटाया कि मैं चीख पड़ा।

उसने मुझसे वायदा करने को कहा कि मैं फिर कभी उस बुर्ज में नहीं जाऊंगा रॉबर्ट ताऊजी के साथ भी नहीं; खासकर उनके साथ कभी नहीं। फिर अपनी आवाज धीमी करके, चारों तरफ देखकर कि कोई सुन तो नहीं रहा, वह रॉबर्ट ताऊजी को गालियाँ देने लगा। इससे मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि बॉब का कानून था कि अपने मालिकों के प्रति ईमानदार होना है। मैं अब भी अपने आपको देख सकता हूँ, उस समय धुँधलका उतर रहा था, हम घुड़साल के पत्थरों पर खडे थे, घोड़े अपने थान पर पैर पटक रहे थे और छोटे-छोटे तारे उड़ते हुए बादलों के बीच, एक के बाद एक चमक रहे थे।

"मैं यहाँ नहीं रहूँगा," मैंने उसे अपने आप से कहते सुना, "मैं दूसरों की तरह हो जाऊँगा, मैं भी नहीं रहूँगा। एक बच्चे को इसमें लाना..."

उस पल के बाद से उसने मेरा खासतौर पर पूरा दायित्व ले लिया। वह मुझे दिखाई न भी दे तो भी मुझे लगता था कि उसकी दयालु नज़र मुझ पर होती थी। पर उसका यह सोचना कि मुझे सुरक्षा की ज़रूरत है मुझे और भी परेशान और बेचैन कर रहा था।

एक और चीज़ जो मैंने देखी वह यह थी कि सारे नौकर महीने दो महीने से ज्यादा पुराने नहीं, बल्कि नए थे। फिर क्रिसमस से एक हफ्ता पहले घर की देखभाल करने वाली औरत भी चली गई। कांस्टेंस ताऊजी इन घटनाओं से बहुत परेशान थे। पर रॉबर्ट ताऊजी पर इनका कोई असर नहीं था।

अब मैं कांस्टेंस ताऊजी के बारे में बताता हूँ। ताज्जुब की बात है कि इतनी पुरानी बात होते हुए भी मुझे सब बिल्कुल साफ दिखाई देता है। उनका मोटापा, उनकी चमकती सफाई, उनका बाँकपन, उनके कोट में लगा फूल, उनके पैरों में चमकते बढिया जूते, उनकी बारीक जनानी आवाज़। मैं सोचता हूँ अगर उनमें हिम्मत होती तो वे मेरे प्रति दयालु होते, पर कुछ था जो उन्हें रोक रहा था। मुझे जल्दी ही पता चल गया कि वह क्या था; वह रॉबर्ट ताऊजी का डर था।

मुझे यह जानने में ज्यादा देर नहीं लगी कि वे अपने भाई से डरते थे। वह कुछ भी कहने से पहले देखते थे कि रॉबर्ट ताऊजी क्या सोचते हैं, वे अपने भाई से पहले सहमति पाये बिना कोई योजना नहीं बनाते थे; ताऊजी के चिढ़ने का कोई इशारा मिलने पर वे ऐसे डर जाते थे जैसा मैंने किसी को नहीं देखा।

मैंने यह भी जान लिया कि रॉबर्ट ताऊजी को भाई को डराने में बड़ा मज़ा आता था। मैं उनके बारे में इतना नहीं जानता था कि रॉबर्ट के द्वारा क्या हथियार इस्तेमाल किया जा रहा था यह समझ पाऊँ पर यह समझने के लिए मैं बहुत छोटा और नादान नहीं था कि वे हथियार बड़े तीखे और चुभनेवाले थे।

क्रिसमस से एक हफ्ते पहले की स्थिति यह थी। मौसम बड़ा ख़राब था, हवा तेज थी, सारी प्रकृति में हंगामा था। रात में जब मैं बिस्तर पर लेटता था तब समुद्रतट

पर पछाड़ खाती लहरों की आवाज़ मेरी चिमनी से आती थी, वास्टवाटर का काला पानी स्क्रीज के नीचे सफेद और जमा सा दिखता था। मैं जगा हुआ लेटा रहता था और चाहता था कि बॉब आर्मस्ट्रांग मेरे पास हो—उसकी बाँहों की ताकत उसकी छाती की गरमाई चाहता था। पर मैं यह इच्छा इसलिए बताना नहीं चाहता क्योंकि मै अपने को एक बड़ा लड़का समझता था।

मुझे याद है कि हर घड़ी मेरा डर बढ़ता जा रहा था। उसे बढ़ाने और लाने वाला क्या था, कौन जाने। मैं बहुत अकेला था, अब मुझे अपने ताऊ से बहुत डर लगने लगा था, मौसम बिगड़ा हुआ था, घर के कमरे बहुत बड़े और खाली थे, नौकर रहस्यमय थे, गलियारों की दीवारें सफेदी के कारण अस्वाभाविक चमक से भरी थीं। आर्मस्ट्रांग मुझ पर नज़र रखता था। पर उसके अपने काम भी थे और वह हर वक्त मेरे साथ नहीं रह सकता था।

मैं रॉबर्ट ताऊजी से ज्यादा डरने और उन्हें नापसन्द करने लगा था। सब तरफ उनके प्रति डर और नफरत थी, पर वे फिर भी धीमे और नरमाई से बोलते थे। फिर क्रिसमस से कुछ दिन पहले वह घटना घटी जिसने मेरे डर को दहशत में बदल दिया।

मैं लाइब्रेरी में श्रीमती रेडक्लीफ की जंगल का रोमांस (रोमांस ऑफ दि फौरेस्ट) पढ रहा था जो एक पुरानी भूली हुई किताब थी और दुबारा ताज़ा करने लायक थी। लाइब्रेरी एक अच्छे कमरे में थी, जहाँ ज़मीन से छत तक किताबों की आलमारियाँ थी, खिड़कियाँ छोटी और अँधेरी थीं, पुराने धूमिल कालीन में छेद थे। दूर एक मेज पर लैम्प जल रहा था, दूसरा लैम्प मेरे पास की छोटी सी ताक पर था।

तभी किसी चीज़ ने, मालूम नहीं किसने, मुझे ऊपर देखने को मजबूर किया। जो मुझे दिखा वह आज भी याद आने पर मेरा दिल रूकने को हो जाता है। लाइब्रेरी के दरवाज़े के पास एक पीला कुत्ता था, जो बिना हिले कमरे की लम्बाई की दूरी से मुझे घूर रहा था।

मैं उस डर, उस पागल कर देने वाली दहशत का जिसने मुझे पकड़ा हुआ था, वर्णन करने की कोशिश भी नहीं करूँगा। मेरे विचार से मुझे लगा कि वो मैने पहली रात को इस जगह देखा था। मेरे विचार से मुझे लगा कि जो मैंने पहली रात को इस जगह देखा था वह सपना नहीं था। इस वक्त भी मैं सो नहीं रहा था। जो किताब मैं पढ़ रहा था वह ज़मीन पर गिर गई थी, लैम्प अपनी रोशनी फैला रहे थे, खिड़की के शीशे पर लता के टकराने की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी। नही, यह स्वप्न नहीं; सच्चाई थी।

कुत्ते ने एक लम्बी भद्दी टाँग उठाकर अपने को खुजाया। फिर कालीन पर बहुत धीरे और चुपचाप मेरी तरफ आने लगा।

मैं न चीख सका, न हिल सका, इन्तज़ार करता रहा। जानवर पहले जितना

भयानक लगा था अब उससे भी ज्यादा लग रहा था। सपाट सिर, नुकीली आखो और काले दाँत वाला वह कुत्ता लगातार मेरी तरफ आ रहा था। वह एक बार फिर अपने को खुजाने के लिए रुका, फिर बिल्कुल कुर्सी पर ही आ गया।

वह दाँत निकालकर मेरी तरफ देखता रहा, पर अब मानो वह मुझ पर हँस रहा था। फिर वह चला गया। उसके जाने के बाद हवा में सड़ी हुई अजवायन के बीजों की खुशबू थी।

IV

अब पीछे देखने से मैं सोचता हूँ कि मैंने जो एक पीला, घबराया-सा बच्चा था, जो हर आवाज़ पर काँप उठता था, उस स्थिति का सामना कैसे किया। मैंने किसी इन्सान को कुत्ते के बारे में नहीं बताया, यहाँ तक कि बॉब को भी नहीं। मैंने अपने डर को--उस हैवानी और अस्वस्थ कर देने वाले डर को—अपनी छाती में छिपाए रखा। मुझमें इतनी अक्ल थी कि मैं समझ रहा था—इतना समय बीत जाने पर भी मैं नही जानता कि हवा में इस जानकारी को मैं कैसे महसूस कर पा रहा था--कि इस चरम स्थिति में मेरा भी छोटा सा हिस्सा था। यह स्थिति महीनों से तैयार हो रही थी ठीक ऐसे जैसे गेबल पर बादल।

समझ लीजिए कि इसमें मैं शुरू से आखिर तक कोई सफाई नहीं दे रहा। शायद अब भी मैं पूरी तरह निश्चित नहीं हूँ कि सफाई देने को कुछ नहीं हैं। मेरे रॉबर्ट ताऊजी सहज ही मरे—पर अब मैं आपको बताऊँगा।

इस बारे में कोई शक या प्रश्न नहीं उठ सकता था कि लाइब्रेरी में मैंने जब कुत्ता देखा तब से रॉबर्ट ताऊजी का मेरे प्रति व्यवहार बदल गया था। हो सकता है यह संयोग ही हो। मैं सिर्फ यह जानता हूँ कि आदमी जैसे जैसे उम्र में बढता है, वैसे वैसे संयोग को कम मानता है।

जो भी हो, उस रात खाने के वक्त रॉबर्ट ताऊजी बीस साल ज्यादा बड़े लग रहे थे। वे झुके हुए, सिकुड़े हुए से लग रहे थे, कुछ खा नहीं रहे थे, जो बोलता था उस पर गुर्राते थे, ख़ासकर मुझसे आँखें चुरा रहे थे। वह बड़ा दुखदाई खाने का समय था। उसके बाद मैं और कान्स्टेंस ताऊजी अकेले, पुराने पीले कागज़ वाली बैठक में बैठे थे जहाँ दो घड़ियाँ एक दूसरे से होड़ लगा रही थीं—कि एक अद्भुत बात हुई। मैं और कान्स्टेंस ताऊजी शतरंज जैसा खेल खेल रहे थे। अचानक उन्होने जो गोटी चलने के लिए उठाई थी वह नीचे रख दी और रोने लगे।

एक बच्चे के लिए किसी बड़े को रोते हुए देखना बहुत मुश्किल बात होती है। मुझे तो आज भी किसी आदमी को रोते देखने में बहुत परेशानी होती है। मै

ताऊजी को रोते देखकर हिल गया, वे अपने गोरे मोटे हाथों में अपना सिर पकड़े बैठे थे। मैं भागकर उनके पास गया, उन्होंने मुझे कसकर चिपका लिया जैसे कभी नहीं छोड़ेंगे। वे सिसकते हुए मुझे बचाने, मेरी देखभाल करने...उस राक्षस को देखने वगैरह की बातें कर रहे थे जो मेरी समझ में नहीं आ रही थीं।

मुझे याद है कि राक्षस शब्द पर मैं भी काँपने लगा था। मैंने अपने ताऊजी से पूछा, "कौन सा राक्षस?" पर वे बड़बडाते रहे जो मेरी समझ से परे था। वे नफरत की और अपने में साहस न होने की बात करते रहे और यह भी कि अगर उनमे हिम्मत होती...

फिर कुछ सँभलकर मुझसे सवाल पूछने लगे। मैं कहाँ गया था? क्या उनके भाई के बुर्ज में हो आया हूँ? क्या मैंने कुछ डरावनी चीज़ देखी? अगर हाँ तो क्या मै फौरन उन्हें बताऊँगा? और फिर वे बड़बड़ाने लगे कि अगर वे जानते कि बात इतनी आगे बढ़ जाएगी तो मुझे यहाँ आने ही नहीं देते। यह भी बोले की मेरा इसी रात लौट जाना बेहतर होगा और यह कि अगर वे डरते नहीं तो...फिर वे दरवाजे की तरफ देखकर काँपने लगे। मै भी काँपने लगा। उन्होंने मुझे अपनी बाँहों में बॉध लिया; हमें लगा कोई आवाज़ हुई है और हम सिर उठाकर सुनने लगे, हमारे दिल धडक रहे थे, पर वह सिर्फ घड़ियों की आवाज़ थी और उस हवा की थी जो ऐसे चीख रही थी जैसे घर को टुकड़ों में फाड़ डालेगी।

जो भी हो, उस रात जब बॉब बिस्तर पर आया तो उसने देखा मैं पहले से वहॉ था। मैंने फुसफुसाकर कहा कि मुझे डर लग रहा था, मैंने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं और उससे विनती की कि वह मुझे वापिस न भेजे। उसने वायदा किया कि वह नहीं भेजेगा और मैं उसकी ताकत की सुरक्षा मे सारी रात सोया रहा।

फिर भी मैं उस डर की सही तसवीर कैसे दे सकता हूँ जो अब मेरे पीछे पडा था? क्योंकि बॉब और कांस्टेंस ताऊजी के कहने से मैं इतना जान गया था कि वास्तव में ख़तरा था, वह मेरी कल्पना या सपना नहीं था। अव रॉवर्ट ताऊजी के दिखाई न देने से वह डर और बढ़ गया था। वे बीमार थे, अपने बुर्ज में ही रहते थे, उनका बूढ़ा नौकर उनकी देखभाल करता था। पर कहीं न होते हुए भी वे सब जगह थे। मैं जब सम्भव होता था तो बॉब के साथ रहता था, पर अभिमानवश हर वक्त लड़कियों की तरह उसके कोट से चिपका नहीं रह सकता था।

उस जगह मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था। न कोई हँसता था, न गाता था, न कोई कुत्ता भौंकता था, न कोई चिड़िया गाती थी। क्रिसमस से ठीक दो दिन पहले गहरे कोहरे ने ज़मीन को अपनी गिरफ्त में ले लिया। खेत सख्त हो गए थे, आसमान स्लेटी रंग में जम गया था, जैतूनी रंग के बादलों के नीचे स्कैफेल और गेबल काले लग रहे थे।

क्रिसमस से एक दिन पहले की बात है।

मुझे याद है कि उस दिन सुबह मैं श्रीमती रेडक्लीफ के बनाए दृश्यों के कुछ बचकाने चित्र बनाना चाह रहा था। तभी दोनों दरवाज़े खुले, सामने रॉबर्ट ताऊजी खडे थे। वे झुके हुए, सिकुड़े से, सूखे से दिख रहे थे। उनके लम्बे बाल उनके कॉलर पर गिर थे, उनकी घनी भौंहे आगे को निकली हुई थीं। उन्होंने अपना पुराना हरा सूट पहना हुआ था, उनकी उँगली पर वही भारी लाल अँगूठी थी। मैं डर गया था पर मुझे उन पर तरस भी आ रहा था। वह इस बड़े खाली घर में बहुत बूढ़े, कमजोर और छोटे लग रहे थे।

मैं एकदम उठा। मैंने धीरे से पूछा, "ताऊजी, क्या आप ठीक हो?" वे और नीचे झुके, ऐसा लगा कि वे हाथों और पैरों पर हो गए थे, उन्होंने मुँह ऊपर करके मुझे देखा, अपने पीले दाँत निकाले और जानवर की तरह गुर्राए। फिर दरवाजा बन्द हो गया।

धीरे धीरे चुपके से वह मटमैली दोपहर आई। मैं बॉब के किसी काम से उसके साथ गॉसफोर्थ गाँव तक गया। हमने हॉल के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। मैने उसे बताया कि वह मुझे याद दिलाता है कि मैं उसे कितना प्यार करता हूँ और हरदम उसके साथ रहना चाहता हूँ। उसने जवाब दिया, "शायद ऐसा ही हो जाए।" वह जरा भी नहीं जानता था कि उसकी भविष्यवाणी सच होगी। दूसरे बच्चों की तरह मैं भी जहाँ नहीं था वहाँ के बारे में भूलने की क्षमता रखता था, और मैं बर्फ से लदी सड़कों पर बॉब के साथ चलता गया, मेरे कुछ डर खत्म हो गए थे।

पर बहुत देर के लिए नहीं। जब हम उस पीली सी बैठक में आए तब अँधेरा हो चुका था। ड्यौढ़ी से निकलते वक्त मैं गॉसफोर्थ गाँव के चर्च में बजती घन्टियो की आवाज़ सुन रहा था।

पलभर में डरी-सी चीखती सी आवाज गई। "वो कौन? कौन है?' वे कांस्टेस ताऊजी थे जो खिड़की के पीले रेशमी पर्दे के सामने खड़े बाहर उतरते अँधेरे को देख रहे थे। मैं उनके पास गया। उन्होंने मुझे लिपटा लिया।

"सुनो!" वे फुसफुसाए, "क्या तुम कुछ सुन रहे हो?" मैं जिस दरवाजे से घुमा था, वह आधा खुला था। पहले मुझे सिर्फ घड़ी की और बर्फ से जमी सडक पर से जाती गाड़ी की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। उस समय हवा नहीं थी।

ताऊजी की उँगलियों ने कसकर मेरा कन्धा पकड़ लिया। वे फिर बोले, "सुनो!" और तब मैंने सुना। बैठक के बाहर से पत्थर के फर्श पर जानवर के पैरों की आवाज आ रही थी। हमने एक दूसरे की तरफ देखा। उस नज़र में हमने मानो एक-दूसरे से कबूल किया कि हमारा एक ही रहस्य है। हम जानते थे कि हमें क्या दिखेगा।

पलभर में वह वहाँ था, दरवाजे में कुछ झुका हुआ खड़ा था और हमें एक पागल और बीमार नफरत से घूरता हुआ—एक बीमार जानवर दिखा जो दुःख से पागल नफरत से भरा था। पर उसमें अपने दुःख से ज्यादा हमारे प्रति नफरत थी।

धीरे धीरे वह हमारी तरफ आने लगा, मेरी कल्पना में कमरे में अजवायन के बीजों की सड़ान्ध भर गई।

मेरे ताऊ चीखे, "पीछे रहो! पीछे रहो!"

अजीब बात यह थी कि मैं रक्षक बन गया।

मैंने आवाज़ लगाई, "ताऊजी, उसे अपने को मत छूने दो! मत छूने दो।"

पर जानवर आगे आता गया।

पलभर को वह एक छोटी मेज़ के पास रुका जिस पर शीशे के गुम्बद के नीचे मोम के मुरझाए फल रखे थे। वह वहीं रहा, नाक नीची किए ज़मीन सूँघता रहा। फिर हमें देखता हुआ आगे बढ़ने लगा।

हे भगवान्! इतने साल बाद यह लिख रहा हूँ पर लगता है कि वह सब अभी हो रहा है। वह चपटा सिर, वह भयानक रंग वाला शरीर, वह घृणित गन्ध। उसने अपना जबड़ा चलाया, फिर दाँत निकाल लिए।

मैं चीखा, मैंने ताऊजी की छाती में मुँह छिपा लिया। पर देखा कि उनके काँपते हाथ में एक पुराने ज़माने का भारी भरकम मोटा-सा रिवाल्वर था।

वे फिर चिल्लाए, "लौट जाओ रॉबर्ट, लौट जाओ!"

जानवर आगे आता गया। उन्होंने गोली चला दी। धमाके से कमरा हिल गया। कुत्ता घूमा। उसके गले से खून टपक रहा था, वह ज़मीन पर रेंगने लगा।

वह दरवाज़े पर रुका, घूमा, हमें देखा, फिर दूसरे कमरे में चला गया।

मेरे ताऊजी ने रिवाल्वर फेंक दी; वे रो रहे थे, नाक सुड़क रहे थे; वे मेरा माथा थपथपाते हुए कुछ बोलते रहे।

आखिर एक-दूसरे से चिपके हुए, हम खून के धब्बों का पीछा करते हुए कालीन पर से होते हुए दरवाज़े से निकले।

बाहर की बैठक में एक कुर्सी के सहारे, मेरे रॉबर्ट ताऊजी पड़े हुए थे, एक टाग उनके नीचे मुड़ी हुई थी। उनके गले में गोली लगी थी।

उनके पास ज़मीन पर स्लेटी टोपी पड़ी थी।

राक्षस का प्रवेश द्वार

डब्ल्यू. एच. हौजसन

हमेशा की तरह कार्नेकी के रात के खाने और कहानी सुनने के बुलावे के जवाब मे मैं फौरन चेन वॉक पहुँचा। वहाँ तीन और लोग जो हमेशा ऐसे मौकों पर बुलाए जाते थे, मुझसे पहले पहुँचे हुए थे। पाँच मिनिट बाद कार्नेकी, आर्कराइट, जेसप टेलर ओर मैं खाने के अच्छे काम में लग गए।

मैंने अपना सूप ख़त्म करते हुए कहा, "इस बार तुम बहुत दिन के लिए नही गए थे।" कुछ देर को मैं भूल गया कि कार्नेकी जब तक खुद कहानी सुनाने को तैयार न हो तब तक उसे कहानी का छोर छूना भी नापसन्द हैं। तब तक वह अपने शब्दों को खर्च नहीं करता।

उसने संक्षेप में कहा, "नहीं;" मैंने बात बदलते हुए कहा कि "मैंने नई बन्दूक खरीदी है।" इस ख़बर पर उसने मुस्कराकर गरदन हिलाई। मैं समझ गया कि वह मेरे जानबूझकर बात बदल देने से खुश हो गया और इसीलिए प्रशंसा में गरदन हिला रहा था।

बाद में जब खाना ख़त्म हो गया, कार्नेकी पाइप लेकर अपनी बड़ी आरामदेह कुर्सी पर बैठ गया और बहुत कम घुमाव के अपनी कहानी शुरू कर दी।

"जैसा अभी डॉजसन ने कहा, मैं बहुत कम दिन के लिए बाहर गया था क्योंकि थोडी दूर ही गया था। मुझे डर है कि मैं ठीक जगह नहीं बता सकूँगा पर वह यहॉ से बीस मील से भी कम दूर है। मैं सिर्फ नाम बदलूँगा जिससे कहानी पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। यह कहानी ही है! यह एक ऐसी अदभुत बात है जैसी मैंने कभी नही देखी।"

"मुझे पन्द्रह दिन पहले एक आदमी की चिट्ठी मिली जिसे मैं आगे एंडर्सन कहूँगा। वह मुझसे मिलना चाहता था। मैंने वक्त तय किया। जब वह आया तब

पता चला कि एक पुराना और सच्चा मामला उसे बार-बार तंग कर रहा था। वह चाहता था कि मैं देखूँ कि उसे सुलझा सकूँगा या नहीं। उसने मुझे पूरा ब्यौरा दिया। वह मुझे इतना अनूठा लगा कि मैंने मामले को लेने का निश्चय किया।

दो दिन बाद मैं उस घर पर पहुँचा जहाँ की बात की गई थी। देर दोपहर का वक्त था, मैंने देखा कि वह एक बहुत पुराना घर था। उस पूरी जगह में वह अकेला घर था। एंडर्सन खानसामे के पास चाभी छोड़ गया था। उसने अपने न होने का बहाना बताते हुए, मेरी खोजबीन के लिए पूरा घर छोड़ दिया था।

यह साफ था कि खानसामा मेरे आने का कारण जानता था। रात के खाने के समय मैं अकेला था। मैंने काफी विस्तार से उससे पूछताछ की। वह उम्रवाला और ख़ास नौकर था और 'ग्रे रूम' के इतिहास की विस्तृत जानकारी रखता था। एडर्सन ने जिन दो बातों के बारे में बहुत लापरवाही से थोड़ा बहुत कहा था, इसने ज्यादा बताया। पहली बात यह कि रात की गहराई में ग्रेरूम का दरवाज़ा खुलता और जोर से बन्द होता था, हालाँकि खानसामा जानता था कि दरवाज़ा बन्द होता था और उसके ताले की चाभी का गुच्छा रसोई में रहता था। दूसरी बात यह थी कि पलंग पर से सारे कपड़ों को उतारकर कोने में ढेर लगा दिया जाता था।

खानसामा दरवाजे के ज़ोर से बन्द किए जाने से ज्यादा परेशान था। उसने बताया कि कई बार वह जागता हुआ, सुनता रहता था और डर से काँपता रहता था। क्योंकि रात में कई बार दरवाज़ा धड़! धड़! धड़ बजता रहता था—ऐसे में नींद असम्भव थी।

एंडर्सन से मुझे पता चला था कि उस कमरे की कहानी डेढ़ सौ साल से भी पुरानी थी। उस कमरे में तीन आदमियों एंडर्सन के पूर्वज, उसकी पत्नी और बच्चे का गला घोंटकर मारा गया था—यह बात सच थी—मैंने बहुत मुश्किल से इस बारे मे जानकारी ली थी। आप कल्पना कर सकते हैं कि मुझे मामला रोचक लगा। मै खाने के बाद ऊपर गया ताकि 'ग्रेरूम' पर एक नज़र डाल सकूँ।

खानसामा पीटर्स मेरे ऊपर जाने की बात से थोड़ा घबरा रहा था। वह मुझे विश्वास दिला रहा था कि पिछले बीस सालों में जब से वह यहाँ नौकरी कर रहा था, कोई भी रात के समय उस कमरे में नहीं गया। उसने मुझसे एक पिता की तरह प्यार से विनती की कि सुबह तक इन्तज़ार करूँ, तब कोई ख़तरा नहीं होगा और वह भी मेरे साथ चलेगा।

मैंने उससे परेशान न होने को कहा, और उसे समझाया कि सिवाय इधर-उधर देखने और कुछ चीज़ों पर मुहर लगाने के मैं कुछ नहीं करूँगा। उसे डरने की ज़रूरत नही है। मुझे ऐसी बातों की आदत है। पर जब मैं यह कह रहा था वह तब भी गरदन हिला रहा था।

उसने परेशानी के बावजूद गर्व से मुझे समझाया, "सर, हमारे भूतों जैसे बहुत

भूत नही होते।" आर तुम दखोग कि वह सहां था।

मैंने कुछ मोमवत्तियाँ लीं, चाभी का गुच्छा लेकर पीटर्स मेरे पीछे-पीछे आया। उसने दरवाज़े का ताला खोला, पर मेरे साथ अन्दर नहीं गया। ज़ाहिर था कि वह बहुत डरा हुआ था। उसने मुझसे फिर विनती की कि मैं दिन में तहकीकात करूँ। मै उस पर हँसा और उससे कहा कि वह दरबान की तरह बाहर खड़ा रहे, ओर जो कमरे से बाहर निकले उसे पकड़ लो।

"सर, वह बाहर कभी नहीं आता," उसने बड़ी गम्भीरता से कहा जो मुझे मजेदार लगा। पर वह किसी तरह मुझमें यह भावना जगाने में सफल हो गया कि मुझे फौरन ही कुछ सिहराने वाली चीज दिखेगी। जो भी हो, वह तो घबरा ही रहा था।

उसे वहीं छोड़कर मैं कमरा देखने लगा। वह एक बड़ा कमरा था और अच्छी तरह सजा था, उसमें दीवार के आखिर की तरह सिरहाना करके एक बड़ा पलग डाला हुआ था। दीवाल-गिरि पर दो मोमबत्ती थीं और कमरे में रखी तीनों मेज़ों पर दो-दो मोमबत्तियाँ थीं। मैंने सबको जलाया तब कमरा कुछ कम मनहूस लगने लगा। वेसे वह हर तरह काफी ताज़गी भरा और साफ-सुथरा था।

सब तरफ अच्छी तरह देखने के बाद मैंने खिड़की पर से दीवार के साथ, फोटो के ऊपर से होते हुए अँगीठी पर से, दीवार में लगी आलमारियों पर से पतले रिबन से सील कर दिया। मैं जितनी देर काम कर रहा था, खानसामा बाहर खड़ा रहा। रिबन खींचते खींचते इधर से उधर जाते हुए थोड़ा मज़ाक करने पर भी मैं किसी तरह उसे अन्दर आने को तैयार नहीं कर सका। थोड़ी थोड़ी देर में वह कहता था, "मुझे विश्वास है सर कि आप माफ कर देंगे। सर, मैं चाहता हूँ कि अब आप बाहर आ जाएँ। मुझे आपके लिए डर लग रहा है।"

मैंने उससे कहा कि तुम्हें इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। पर वह अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार था। उसने कहा कि वह मुझे अकेला छोड़कर नहीं जा सकता। उसने माफी माँगते हुए स्पष्ट किया कि मैं उस कमरे के ख़तरे को समझ नहीं रहा हूँ। मैं देख रहा था कि वह सचमुच डरता जा रहा था। पर मेरे लिए यह देखना जरूरी था कि कमरे में कुछ आता है या नहीं। इसलिए मैंने उससे कहा कि जब तक सचमुच कुछ सुनाई न दे तब तक मुझे तंग न करे।

वैसे ही कमरे का माहौल काफी ख़राब था, उस पर से वह मुझे परेशान कर रहा था।

मैं कुछ देर और काम करता रहा, मैं ज़मीन से कुछ ऊपर रिबन खींचकर उन्हें सील कर रहा था जिससे अगर कोई अँधेरे में कमरे में आकर शैतानी करना चाहे, तो उसके छूने से रिबन टूट जाए।

इस सब काम में मुझे ग्यारह बजने का पता चला। मैंने काम शुरू करते वक्त

कोट उतार दिया था, अब जो मैं करना चाह रहा था वह ख़त्म होने को था इसलिए मै दीवान की तरफ बढ़ा जहाँ मैंने कोट रख दिया था। मैं कोट पहनने वाला था। कि बूढ़े खानसामे की तेज़ और डरी हुई आवाज़ सुनाई दी, "सर, जल्दी से बाहर आ जाइए! कुछ होने वाला है!" वह पिछले एक घण्टे से एक शब्द भी नहीं बोला था। मैं चौंक उठा और उसी पल पलंग की बाईं तरफ की मोमबत्ती बुझ गई। ऐसा हवा से हुआ या क्या, मुझे नहीं मालूम। पर पलभर के लिए मैं ऐसा चौंका कि दरवाजे की तरफ भागा, मुझे खुशी है कि वहाँ तक पहुँचने से पहले ही रुक गया। अब तक खानसामे को बहादुरी का उपदेश देने के बाद मैं उसके सामने जाकर सब गड़बड़ नही कर सकता था। मैं मुड़ा, अँगीठी पर से दोनों मोमबत्तियाँ उठाई, पलंग के पास वाली मेज़ तक गया। मुझे कुछ नहीं दिखा। मैंने जलती हुई मोमबत्ती बुझाई, फिर दूसरी दोनों मेज़ों के पास जाकर, उन पर रखी मोमबत्ती भी बुझाई। तभी दरवाजे के बाहर से बूढ़ा पुकारने लगा, "मैं बता रहा हूँ सर, मैं कह रहा हूँ।"

"अच्छा पीटर्स!" मैंने कहा, पर मेरी आवाज़ उतनी सधी हुई नहीं थी जितनी मे चाहता था। मैं दरवाजे की तरफ बढ़ा। मैंने मुश्किल से अपने को भागने से रोका। पर आप कल्पना कर सकते हैं कि कितने लम्बे डग भरे होंगे। घुसने की जगह के पास मुझे अचानक लगा कि कमरे में बड़ी ठंडी हवा है। जैसे खिड़की खुल गई हो। मेरे दरवाज़े तक पहुँचने पर खानसामा एक कदम पीछे हट गया।

"पीटर्स, मोमबत्ती पकड़ो!" मैंने तेज़ी से कहा और उसे पकड़ा दी। फिर मुड़कर हैंडल से पकड़कर ज़ोर से दरवाज़ा बन्द किया। पर न जाने क्यों मुझे लग रहा था कि कोई दरवाज़े को पीछे खींच रहा था। शायद मेरी कल्पना रही होगी। मैंने ताले मे चाभी घुमाई और फिर दरवाज़े पर दूसरा ताला भी लगा दिया।

अब मुझे बेहतर लगने लगा। मैंने दरवाज़ा भी सील कर दिया। दरवाज़े पर अपना कार्ड लगा कर चाभी जेब में रखी और नीचे चला गया—मेरे आगे डरा हुआ पीटर्स बिल्कुल चुपचाप चल रहा था। बेचारा! उस वक्त तक मैं यह नहीं समझ पाया था कि वह पिछले दो तीन घण्टों से कितनी परेशानी सह रहा होगा।

आधी रात के करीब़ मैं बिस्तर पर गया। मेरा कमरा उस गलियारे के आख़िर मे था जिसमें ग्रेरूम का दरवाज़ा खुलता था। मेरे और उस कमरे के बीच पाँच दरवाजे थे। और आप समझ सकते हैं कि निश्चित रूप से मुझे इसका कोई अफसोस नही था।

कपड़े बदलते-बदलते मेरे दिमाग में एक और विचार आया। मैंने अपनी मोमबत्ती उठाई और पाँचों कमरों के दरवाज़े सील कर दिए जिससे रात में जो भी दरवाजा खुलेगा तो मुझे पता चल जाए।

मैं अपने कमरे में लौटा, अन्दर से ताला लगाया और बिस्तर पर लेट गया। गलियारे में कुछ ज़ोर से गिरने की आवाज़ से मैं गहरी नींद में से जाग गया। मैने

बिस्तर पर बैठकर सुनने की कोशिश की पर कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर मैंने अपनी मोमबत्ती जलाई, जब जला रहा था तभी गलियारे में दरवाज़ा बन्द होने की तेज़ आवाज आइ।

मैं पलंग से कूदा, अपनी रिवाल्वर ली, दरवाज़े का ताला खोला और बाहर निकला, मोमबत्ती ऊपर उठाई हुई थी, रिवाल्वर तैयार थी। तभी एक अजीब बात हुई। मैं ग्रे रूम की तरफ एक कदम भी नहीं उठा सका। तुम सब जानते हो कि मै डरपोक नहीं हूँ। कई बार भूत-प्रेतों से जुड़े मामलों पर काम कर चुका हूँ, पर उस दिन मैं एक बच्चे की तरह डर गया। उस रात हवा में कुछ डरावना था। मैं अपने सोने वाले कमरे में लौट आया, दरवाज़ा बन्द करके ताला लगाया, फिर मै सारी रात बिस्तर पर बैठा गलियारे में होते धमाके सुनता रहा। पूरे घर में वे आवाजे गूँज रही थीं।

आख़िर दिन निकला मैंने नहाकर कपड़े बदले। प्रायः एक घण्टे से दरवाजा नही बजा था। मेरी हिम्मत लौट रही थी। मुझे अपने पर शरम आ रही थी, पर यह बेवकूफी थी क्योंकि जब आप ऐसी चीजों से उलझते हो तो कभी-कभी घबराहट तो होती ही है। जब तक दिन की रोशनी नहीं आती तब तक आप सिर्फ चुपचाप बैठकर अपने को डरपोक समझते हैं। कभी-कभी यह डर से ज्यादा कुछ होता हे। मुझे कभी तो यह विश्वास होने लगता है कि कोई चेतावनी दे रहा है या कभी कोई हमारे लिए लड़ता है। पर ऐसे वक्त के बाद मुझे हमेशा बहुत बुरा लगता है। मै अपने आपको बहुत नीच सोचता हूँ।

खैर, उस दिन जब दिन पूरी तरह निकल आया था, तब मैंने अपना दरवाजा खोला, रिवाल्वर हाथ में लिये मैं गलियारे में निकला। रास्ते में सीढ़ियों का ऊपरी हिस्सा पड़ता था। जहाँ से मुझे दिखा कि बूढ़ा खानसामा काफी का प्याला लिये आ रहा था। उसने रात वाली कमीज़ ही पैंट के अन्दर डाल ली थी, पैरों में पुराने स्लीपर थे।

मैं उसे देखकर ऐसे खुश हुआ जैसे कोई खोया हुआ बच्चा किसी करीबी जिन्दा इन्सान को देखकर होता है। मैंने कहा, "हलो, पीटर्स! यह नाश्ता कहाँ ले जा रहे हो?"

बूढ़ा ऐसे चौंका कि कॉफी छलक गई। उसने मुझे घूरा और मैंने देखा कि वह बेहद थका और सफेद सा लग रहा था। वह सीढियाँ चढ़कर आया और वह छोटी ट्रे मेरी तरफ बढ़ा दी।

वह बोला, "सर आपको सही-सलामत देखकर मुझे तसल्ली हुई। एक वक्त तो मुझे यह डर लगा कि शायद आप फिर उस कमरे में जाने का ख़तरा उठाएँ। सर, दरवाज़े की आवाज़ की वजह से मैं सारी रात जागता रहा। जब दिन निकला तो मैंने सोचा कि आपके लिए कॉफी बना दूँ। मैं जानता था कि आप सील देखने

जाएँगे—मुझे लगा एक से दो बेहतर रहेंगे।''

मैंने कहा, ''पीटर्स, तुम बहुत अच्छे हो। तुमने मेरा बड़ा ख्याल रखा।'' मैंने कॉफी पी। उसे ट्रे लौटाते हुए कहा, ''चलो देखें, शैतानों ने क्या किया है, रात में तो मेरी हिम्मत नहीं हुई।''

''बहुत शुक्रिया, सर,'' उसने जवाब दिया, ''शैतानों के खिलाफ हाड़ मास वाला इन्सान क्या कर सकता है। और रात को उस कमरे में वही होते हैं।''

मैंने रास्ते के सब दरवाज़ों की सील देखी। वह ठीक थी। पर जब उस कमरे तक पहुँचा तो वहाँ की सील टूटी थी। चाभी के छेद पर लगा मेरा कार्ड ज्यों का त्यों था। उसे फाड़कर ताला खोलकर अन्दर गया, आप कल्पना कर सकते हैं कि कितनी सावधानी से अन्दर गया होऊँगा पर कमरे में डराने वाला कुछ नहीं था, ओर बहुत रोशनी थी। मैंने मुहर देखी, एक भी टूटी नहीं थी। मेरे पीछे खानसामा था। अचानक वह बोला, ''बिस्तरा, सर!''

मैं पलंग तक भागा और सच ही, चादर वगैरह सब पलंग की बाईं तरफ पड़े थे। आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि मुझे कितना अजीब लगा होगा। कोई कमरे में आया था। थोड़ी देर मैं पलंग से ज़मीन पर पड़े कपड़ों तक देखता रहा। मुझे कुछ भी छूने की इच्छा नहीं हुई। पर बूढ़े पीटर्स पर ऐसा कोई असर नहीं दिखा। वह कपड़ों के ढेर की तरफ गया कि उन्हें उठा ले, क्योंकि वह पिछले बीस बरस से यही कर रहा होगा। मैंने उसे रोका। मैं चाहता था कि मेरे परीक्षण के बिना कुछ भी छुआ नहीं जाए। इसमें मुझे एक घण्टा लगा होगा और तब मैंने पीटर्स को बिस्तरा ठीक करने दिया। उसके बाद हम बाहर गए और मैंने दरवाजे पर ताला डाल दिया, क्योंकि उस कमरे में मुझे परेशानी हो रही थी।

मैंने थोड़ी सैर की, फिर नाश्ता किया, इससे मुझे लगा मैं सहज हो गया। फिर उसी कमरे में आया, पर सब ठीक था फिर भी मैं आपसे विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि कल रात यहाँ कुछ असामान्य था।

फिर सब चीज़ों पर सील लगाकर मैं बाहर गया और पहले की तरह दरवाजे पर भी सील लगा दी।

उस रात खाने के बाद पीटर्स ने और मैंने अपनी कुछ चीज़ें खोलीं। मैंने उस कमरे के दरवाज़े की दूसरी तरफ अपना कैमरा और फ्लैश लगाई और दरवाज़े की तरफ वाली फ्लैश के घोड़े पर एक धागा बाँधा, जिससे अगर कोई दरवाज़ा खोलता तो रोशनी पड़ती और हो सकता था कि सुबह हमें अद्भुत तसवीरें देखने को मिलती।''

जाने से पहले आख़िरी काम मैंने यह किया कि कैमरे के लेन्स को खुला छोड दिया और उसके बाद मैं अपने सोने वाले कमरे में बिस्तर पर पड़ गया। मैंने अलार्म लगाया ताकि मैं आधीरात को जाग सकूँ और मोमबत्ती जली छोड़ दी।

घड़ी ने बारह बजे मुझे जगा दिया। मैं उठा, ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहने।

दाहिनी जेब मे अपनी रिवाल्वर रखी और अपना दरवाज़ा खोला। फिर मैंने अपने अँधेरे कमरे (डार्क रूम) का लैम्प जलाया और कैमरे का छेद बन्द करने वाला हिस्सा खिसकाया ताकि साफ रोशनी दिख सके। उसे गलियारे में तीस फीट तक ले गया, फिर उसे ज़मीन पर रखा, उसका खुला हिस्सा अपने से दूर रखा ताकि अँधेरे गलियारे मे अगर कुछ आ रहा हो तो मुझे दीख जाए। फिर मैं वापिस गया और अपने कमरे के दरवाज़े में रिवाल्वर तैयार करके बैठा रहा। मैं उस तरफ देखता रहा जिधर कमरे के बाहर मेरा कैमरा रखा था।

मैं सोचता हूँ मैं शायद डेढ़ घण्टे तक उस तरफ देखता रहा। तभी अचानक मुझे गलियारे में हल्की-सी आवाज़ सुनाई दी। मुझे सिर के पीछे के हिस्से में अजीब-सी चुभन होने लगी, हाथों में पसीना आ गया। अगले पल सहसा फ्लैश के चमकने से गलियारे का आखिरी हिस्सा दिखाई देने लगा। उसके बाद अन्धेरा हो गया। मैंने घबराते हुए गलियारे में देखने की कोशिश की, बेचैनी से सुनने की कोशिश कर रहा था और जानना चाहता था कि मेरे लैंप की धुँधली लाल रोशनी के पीछे क्या है, उसकी रोशनी फ्लैश की तेज़ चमक से बहुत धुँधली लग रही थी...और फिर जैसे ही मैं आगे देखता हुआ, सुनने की कोशिश करते करते झुका, ग्रेरूम से कुछ गिरने की आवाज़ आई। ऐसा लगा कि वह आवाज़ पूरे गलियारे में भर गई और फिर पूरे घर में गूँजती चली गई, मैं आपको बताऊँ मुझे सब कुछ बहुत डरावना लगा—जैसे मेरी हड्डियाँ पानी हो गई हों। भयानक! मैंने कैसे देखने और सुनने की कोशिश की। तभी वह फिर आई, धड़, धड़, धड़ और फिर एक ऐसा सन्नाटा हो गया जो आवाज से भी ज्यादा भयानक था। क्योंकि मैं कल्पना कर रहा था कि कोई भयानक चीज गलियारे में से होती हुई मेरे ऊपर आती जा रही थी।

अचानक मेरा लैम्प बुझ गया, मुझे गज भर दूर का भी कुछ दिखाई नही दे रहा था। सहसा मुझे लगा कि मैं वहाँ बैठकर बेवकूफी कर रहा हूँ और मैं कूद पडा। ऐसा करते करते भी मुझे बाहर गलियारे में एक आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा वह बिल्कुल मेरे पास थी। मैं एक छलाँग में अपने कमरे में घुस गया और धड़ाम से दरवाज़ा बन्द करके ताला लगा लिया।

मैं पलंग पर बैठकर दरवाज़े को घूरता रहा, मैंने हाथ में रिवाल्वर पकड़ी तो हुई थी पर वह बिल्कुल बेकार लग रही थी। क्या आप समझ सकते हैं? मुझे लगा कि वह मेरे दरवाज़े पर ज़ोर डाल रहा है, यह भी लगा कि वह चीज नरम है। ऐसा मुझे लग रहा था। अगर सोचो तो यह कितनी अजीब बात थी।

फिर मैंने अपने को सँभाला और जल्दी से पॉलिश किए हुए फर्श पर चौक से पाँच कोनों वाला तारा बनाया और सुबह होने तक उसमें बैठा रहा। पूरा समय ऊपर गलियारे में ग्रेरूम का दरवाज़ा भयानक ढंग से थोड़ी थोड़ी देर में बजता रहा। वह एक परेशानी भरी डरावनी रात थी।

सुबह होने के साथ दरवाज़ा बजना बन्द हो गया। आखिर मैंने हिम्मत बटोरी और धुँधली रोशनी में ही गलियारे में गया ताकि अपने कैमरे का लैंस लगा सकूँ। मैं आपसे सच कह रहा हूँ कि इतना करने के लिए भी मुझे हिम्मत जुटानी पड़ी थी, पर अगर ऐसा न करता तो मेरी तस्वीरें खराब हो जातीं। मैं उन्हें बचाने को बेहद आतुर था। वापिस अपने कमरे में जाकर मैंने वह पंचकोण सितारा मिटाया जिसमें रात भर बैठा था।

आधा घण्टे बाद मेरा दरवाज़ा खटका। पीटर्स मेरी कॉफी लेकर आया था। जब मैंने पी ली तब हम दोनों उस कमरे की तरफ गए। जाते वक्त मैंने रास्ते में दूसरे कमरों के दरवाज़े की सील देखी तो जैसी की तैसी थीं पर ग्रेरूम की सील टूटी थी। फ्लैश लाइट पर बँधा धागा टूटा था पर ताले के छेद पर लगा कार्ड ज्यों का त्यों था। मैंने उसे उतारा और दरवाज़ा खोला। कुछ भी गड़बड़ नहीं थी। हम बिस्तर तक पहुँचे तो पिछले दिन की तरह बाएँ हाथ के कोने में बिस्तर का ढेर बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था जैसा पहले दिखा था, मुझे बड़ा अजीब लगा पर मै सील देखना नहीं भूला—एक भी नहीं टूटी थी।

मैंने मुड़कर पीटर्स की तरह देखा, वह सिर हिलाता हुआ मुझे देख रहा था। मैंने कहा, "यहाँ से निकल चलते हैं! यह जीवित इन्सानों के लिए बिना सुरक्षा के रहने की जगह नहीं है।"

नाश्ते के बाद मैंने तसवीरें धोईं। उनमे सिर्फ ग्रेरूम का आधा खुला दरवाज़ा दिख रहा था। मैं घर से निकला। मुझे जीवन और मन के लिए कुछ सामान चाहिए था क्योंकि अगली रात मैं ग्रेरूम में बिताना चाहता था।

अपने सामान के साथ मैं साढ़े पाँच बजे टैक्सी पर सवार हुआ। फिर मैं और पीटर्स सारा सामान उस कमरे तक ले गये। मैंने सावधानी से सब कुछ फर्श के बीचोंबीच ढेरी बनाकर रख दिया। सामान में एक बिल्ली भी थी। सब कुछ ऊपर पहुँचाकर दरवाज़े पर ताला और सील लगाकर मैं अपने कमरे की तरफ गया और पीटर्स से कहा कि रात को मैं खाना खाने नहीं आऊँगा। 'अच्छा' कहकर वह नीचे चला गया। उसने सोचा होगा कि मैं भी अपने कमरे में गया। मैं उसे यही विश्वास दिलाना चाहता था। क्योंकि मैं जानता था कि ऐसा न होने पर वह खुद अपने को ओर मुझे फिक्र में डाले रहेगा। मैं नहीं चाहता था कि उसे पता भी चले कि मैं आगे क्या करने वाला हूँ।

मैंने सिर्फ अपना कैमरा और फ्लैश लिया और उस कमरे में लौट गया। अन्दर घुसकर दरवाज़ा बन्द किया और रात से पहले जो तैयारी करनी थी। वह करने लगा। सबसे पहले मैंने फर्श पर से सारे रिबन हटाए; अब तक टोकरी मे बन्द बिल्ली को ले जाकर दूर वाली दीवार के पास छोड़ दिया। फिर कमरे के बीच में वापस गया, इक्कीस फुट का दायरा नापा, उसे झाड़ू से झाड़ा, उस गोल चक्कर पर पैर न रखने

का ध्यान करते हुए, उस पर चॉक से एक गोला बनाया।

चॉक के दायरे के बाहर चारों तरफ लहसुन के गुच्छे को घिसते हुए एक चोडी पेटी सी बनाई। जब यह काम हो गया तो बीच में रखे सामान में से एक तरह के पानी का छोटा सा जार निकाला; उसकी सील तोड़ी, ढक्कन हटाया अपनी बाई तर्जनी को उसमें डुबोया, उस गोल दायरे के चारों तरफ गया फिर चॉक की लकीर के अन्दर (Saamaa रिचुअल) का दूसरा निशान बनाया। बाएँ हाथ से धनुष का सा आकार बनाते हुए दोनों को बड़ी सावधानी से जोड़ दिया। मैं आपको बताऊँ कि यह सब करने और पानी का घेरा बनाने के बाद मैं कुछ शान्ति महसूस करने लगा।

इसके बाद मैंने कुछ और सामान खोला। हर धनुष के आकार के गड्ढे में एक मोमबत्ती जलाकर रख दी। इसके बाद एक पाँच कोनों वाला सितारा बनाया, जिसका हर कोना चौक के घेरे को छू रहा था। पाँचों कोनों पर एक किस्म की रोटी के पॉच हिस्से करके, कपड़े में लपेटकर रखा, पाँचों गड्ढों में पाँच खुली हुई पानी की बोतलें रखीं। यह वही पानी था जिससे मैंने घेरा बनाया था, इसके साथ ही सुरक्षा का पहला दौर ख़त्म हो गया।

कोई भी जो आपकी तरह मेरे तहकीकात के तरीके को नहीं जानता, इन्हे बेकार का वेबकूफी से भरा अन्धविश्वास मानेगा। पर आपको काले पर्दे वाला केस याद होगा। मुझे विश्वास है कि इन्हीं सुरक्षा उपायों से मैं बचा था। और मेरा मजाक उडाने वाला एस्टर अन्दर नहीं आया था और मर गया था।

मुझे सुरक्षा का यह उपाय सिगसैंड की पांडुलिपि से मिला जहाँ तक मेरा ख्याल है यह किताब चौदहवीं शताब्दी में लिखी गई होगी। जैसा कि स्वाभाविक था पहले मैने सोचा कि यह उसके समय के अन्धविश्वासों का ज़िक्र है पर पढ़ने के कुछ दिन बाद मेरे दिमाग में आया कि इसे आज़माना चाहिए। जैसा कि मैंने अभी बताया, काले पर्दे वाले केस में मैंने इसे प्रयोग में लिया। आप जानते ही हैं कि क्या हुआ था। उसके बाद मैंने इसे कई बार आजमाया और हर बार सुरक्षित रहा जब तक कि नोविंगफर (Noving फर) केस आया। उस बार मैं बाल बाल बचा, पंच कोण सितारे में मरने को हो गया था।

उसके बाद मुझे प्रोफेसर गार्डर की पुस्तक 'माध्यम के साथ प्रयोग' मिली। जब उन्होंने उस माध्यम को शून्य के कम्पन के घेरे में रखा तो वह अपनी जगह खो बैठा—जैसे उसे अशरीरी तत्त्व से अलग कर दिया गया हो। इससे मैं सोचने लगा ओर तब वह बिजली का पंचकोण बनाया जो ऐसी चीज़ों से बचाव का बढ़िया उपाय है। मैंने इस सुरक्षा सितारे का बचाव के लिए इस्तेमाल किया क्योंकि मुझे इस पुराने जादुई आकार में कोई अद्भुत गुण लगा। बीसवीं शताब्दी के आदमी के लिए इस पर विश्वास करना अजीब लगता है, है ना? पर जैसा कि आप सब जानते हैं मैने कभी भी अपने को लोगों के मजाक से अन्धा नहीं होने दिया ना होने दूँगा। मै

प्रश्न पूछता हूँ और अपनी आँखें खुली रखता हूँ!

इस मामले में मुझे शक कम था कि मेरा मुकाबला एक असामान्य राक्षस से था इसलिए मैं हर तरह की सावधानी बरतने वाला था। मुझे बहुत खतरा लग रहा था।

अब मैं बिजली का पंचकोण लगाने को मुड़ा। मैं उसे ऐसे लगाना चाहता था कि वह फर्श पर बने पंचकोण के हर कोण और हर गड्ढे से जुड़ जाए। मैंने उसे बैटरी से जोड़ा और अगले ही पल जुड़ी हुई ट्यूबों में हल्की नीली चमक आने लगी।

मैंने अपने सब तरफ नज़र डाली, तसल्ली की साँस ली और सहसा जाना कि शाम होने को थी क्योंकि खिड़की स्लेटी सी हो गयी थी। मैंने फिर उस बड़े खाली कमरे को देखा, बिजली और मोमबत्ती की रोशनी में मुझमें एक अजीब सी भावना आई। ऐसा लगा, हवा में कुछ आमानवीयता थी। कमरे में कुचले हुए लहसुन की गन्ध थी। उससे मैं नफरत करता था।

अब मैंने कैमरा देखा, फ्लैश वगैरह सब ठीक था। फिर मैंने सावधानी से अपना रिवाल्वर देखा, हालाँकि मैं जानता था कि उसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। पर असामान्य जीव के लिए किस किस चीज़ की ज़रूरत पड़ सकती है, कोई नहीं कह सकता, और मैं नहीं जानता था कि मैं कैसी भयानक चीज़ देखने या उसकी मौजूदगी महसूस करने वाला था। यह भी हो सकता था कि आख़िर तक मुझे किसी भौतिक चीज से ही लड़ना पड़ता। कुछ भी न जानने की वजह से मुझे हर बात के लिए तैयार रहना था। मैं यह कभी नहीं भूल पाया था कि मेरे पास वाले पलंग पर तीन लोगो को गला घोटकर मारा गया था। दरवाज़े की धड़धड़ाहट मैंने स्वयं सुनी थी। मुझे इसमें कोई शक नहीं था कि मैं एक ख़तरनाक और गन्दे मामले की जाँच कर रहा था।

अब तक रात हो गई थी (हालाँकि कमरे में जलती मोमबत्तियों की रोशनी थी मैं लगातार अपने पीछे और पूरे कमरे पर नज़र रखे था। उस चीज़ के कमरे मे आने का इन्तज़ार बहुत परेशानी भरा था।

सहसा मुझे लगा मेरे पीछे से ठंडी हवा आ रही थी। मेरे सिर के पीछे के हिस्से में एक चुभन सी हो रही थी। फिर मैंने अपने को झटका दिया, और जिधर से हवा आ रही थी, उधर घूरने लगा। वह कमरे के उस कोने से आ रही थी जो पलंग के बाई-ओर था, जहाँ पहले दो बार बिस्तर का ढेर मिला था। पर कुछ भी असामान्य दिखा नहीं था, कुछ नहीं!

अचानक लगा कि उस अस्वाभाविक हवा में मोमबत्ती की लौ काँपने लगी थी। मैं जानता हूँ कि कुछ देर मैं वहीं बैठा, डरे हुए, काठ हुए ढंग से देखता रहा। मै आपको कभी बता नहीं सकता कि उस गन्दी ठंडी हवा में बैठना कितना भयानक था! फिर-झपक! झपक! झपक! बाहर के घेरे के चारों तरफ की मोमबत्तियाँ बुझ

गइ और वहा मे उस ताला लगे, सील बन्द कमरे मे बिना किसी रोशनी के था, सिर्फ बिजली के पंचकोण की हल्की नीली रोशनी आ रही थी।

वह वक्त बहुत ही परेशानी भरा निकला, पर अब भी मेरे ऊपर से हवा चल रही थी। तभी अचानक मुझे लगा कि पलंग की बाईं तरफ के कोने में कुछ हिला। मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी थी। और न ही कुछ दिखाई दिया था, पर अन्दर से किसी शक्ति ने मुझे यह चेतना दी। पंचकोण से निकलने वाली रोशनी का दायरा कुछ देखने के लिए बहुत कम था। रोशनी बहुत हल्की थी। फिर भी जैसे मैं देख रहा था, मेरी नज़र के सामने धीरे-धीरें कुछ पनपने लगा--एक हिलती हुई छाया जो और छायाओं से कुछ ज्यादा गहरी थी। फिर वह अस्पष्ट हो गई, पल दो पल के लिए मैं तेज़ी से इधर-उधर देखने लगा क्योंकि अब मुझे नए ख़तरे की आशंका हुई। मेरा ध्यान फिर पलंग की तरफ खिंचा। पलंग की चादर धीरे-धीरे खींचकर उतारी जा रही थी। मैं कपड़े के धीरे से खींचे जाने की सरसराहट सुन रहा था पर खीचने वाला दिखाई नहीं दे रहा था। मैं अपने अन्दर से महसूस कर रहा था कि वह नीचे मेरे पास है, मेरे सिर में चुभन सी हो रही थी। पर मानसिक तौर पर मैं अब पहले की अपेक्षा कुछ शान्त था, यहाँ तक कि अब अपने हाथों के ठंडे पसीने को महसूस कर पा रहा था, फिर कुछ सजगता से मैंने रिवाल्वर दूसरे हाथ में लेकर दाएँ हाथ को घुटने पर रगड़कर सुखाया। यह सब करते हुए भी मैंने उन हिलते हुए कपड़ो पर से नज़र नहीं हटाई। पलंग से आती हल्की आवाजें एक बार बन्द हुईं। फिर वहॉ एक घना सन्नाटा छा गया, सिर्फ मेरे सिर में खून की धड़धड़ाहट हो रही थी। पर तभी मुझे फिर से बिस्तर से कपड़े खींचे जाने की आवाज़ सुनाई दी। अपनी घबराहट में भी मुझे कैमरे की याद आई। मैंने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया, पर पलंग पर से नज़र नहीं हटाई। इसके बाद एक पल में पूरा बिस्तर बड़ी हिंसात्मकता से उतारकर कोने में फेंक दिया गया, और मुझे उनके फेंके जाने की आवाज़ तक सुनाई दी।

फिर शायद कुछ पल के लिए पूरी तरह चुप्पी छा गई। आप समझ सकते हैं कि मुझे कैसी भयानक अनुभूति हो रही होगी। कपड़े इतनी बर्बरता से फेंके गए थे। उसने मेरे सामने सब कुछ बड़े घृणित और अस्वाभाविक ढंग से किया।

अचानक मुझे दरवाज़े के पास एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी—ऐंठने की आवाज़—फिर फर्श पर कुछ गिरने की आवाज़ आई। एक बहुत रोमांचक अनुभूति मेरी रीढ़ की हड्डी से दौड़ती हुई मेरे सिर के पीछे तक पहुँच गई। क्योंकि दरवाजे पर लगाई मुहर तोड़ दी गई थी। वहाँ कुछ था, मैं दरवाज़ा नहीं देख सकता था, इसलिए यह कहना असम्भव था कि क्या मैंने सच में देखा और क्या मेरी कल्पना ने जोड़ा। मुझे सिर्फ स्लेटी दीवारें दीख रही थीं...फिर मुझे लगा कि कुछ काली धुँधली चीज अँधेरे में हिल रही थी।

फिर लगा कि दरवाज़ा खुल रहा था। मैं कोशिश करके अपने कैमरे की तरफ बढ़ा; पर इससे पहले कि मैं उसे इस्तेमाल करता, दरवाजा इतनी जोर से बजा कि पूरा कमरा गूँज उठा। मैं डरे हुए बच्चे की तरह उछल पड़ा। उस आवाज़ के पीछे ऐसी ताकत थी कि लगा कोई बड़ी निरंकुश ताकत आज़ाद थी। क्या आप समझ सकते हैं?

फिर दरवाजा नहीं छुआ गया; पर फौरन बाद में बिल्ली वाली टोकरी से आवाज आई। मैं आपको बताऊँ मेरी पूरी पीठ मे सिहरन होने लगी। मैं जान गया कि कुछ वहाँ था वह ज़िन्दगी के लिए ख़तरनाक है या नहीं, मुझे पता चलने वाला है। बिल्ली की भयानक आवाज़ आई और सहसा बन्द हो गई। और फिर—मैंने फ्लैश लाइट जलाई—पर देर हो चुकी थी। उसकी तेज़ रोशनी में मैंने देखा कि टोकरी उल्टी पडी थी, ढक्कन खुला था, बिल्ली आधी अन्दर और आधी ज़मीन पर पड़ी थी। मैंने और कुछ नहीं देखा पर मैं पूरी तरह जान गया कि मैं किसी ऐसे जानवर या चीज़ की मौजूदगी में हूँ जिसमें नाश करने की ताकत है।

अगले दो तीन मिनिट तक अजीब-सा सन्नाटा था। आपको यह याद दिला दूँ कि उस समय फ्लैश की रोशनी की वजह से मैं अन्धा सा हो गया था, पंचकोण से परे पूरी जगह गहरे अँधेरे में डूबी हुई थी। सब कुछ बहुत भयानक लग रहा था। मैं उस सितारे के नीचे घुटने टेककर बैठा था, घुटनों पर ही घूम घूमकर देखने लगा कि कोई मुझ पर आ तो नहीं रहा।

धीरे धीरे मेरी दृष्टि लौटी, मैंने अपने पर काबू किया। सहसा वह देखा जो देखना चाहता था, वह पानी के घेरे के पास थी। वह बड़ी, बड़े से मकड़े की अस्पष्ट छाया के समान हवा में टँगी थी। जो रुकावट मैंने बनाई थी, वह उससे परे अजीब ढग से हिल रही थी। ऐसा लगा कि वह फुर्ती से घेरा पार कर मुझ तक आना चाहती थी पर बड़े अजीब ढंग से झटके खाती हुई पीछे हट गई, ऐसा लगा जैसे किसी ज़िन्दा आदमी ने लोहे की तपती सलाख छू ली हो।

वह और मैं गोल गोल घूम रहे थे। पंचकोण में जो घाटी सी बनती है वह उसके सामने से रुकी जैसे ताकत लगाने से पहले तैयारी कर रही हो। वह खाली जगह की रोशनी के परे जाकर सीधी मुझ पर आई, ऐसा लगा कि आते आते उसने ठोस आकार ले लिया था। उसके हिलने के पीछे जीतने का निश्चय था। मैं अपने घुटनों पर था, बढ़ती हुई चीज़ से बचने की कोशिश करते हुए झटका खाकर मै बाएँ हाथ और कूल्हे पर गिरा, दाएँ हाथ से मैं पागलों की तरह अपनी रिवाल्वर ढूँढ रहा था जो मेरे हाथ से गिर गई थी। लहसुन और पानी के घेरे के ऊपर से वह निष्ठुर चीज़ एक झपट्टे में पंचकोण की घाटी तक आई। मेरे ख्याल से मैं चीखा। तभी जैसे अचानक वह आई थी वैसे ही लगा कि किसी अनदेखी ताकत ने उसे पीछे धकेल दिया।

कुछ देर बाद मे समझ गया कि मै सुरक्षित हू, मन पचकोण क बीच मे अपने को सँभाला, मैं बुरी तरह थका और टूटा हुआ था, रुकावट के घेरे के बाहर का सब देखता जा रहा था, पर वह चीज़ गायब हो चुकी थी। अब मैं यह जान गया था कि ग्रेरूम में किसी पिशाच का हाथ है।

सहसा जब मैं झुका बैठा था तो मैंने देखा कि पंचकोण में इधर-उधर हिलते वक्त मुझसे पानी का एक जार खिसक गया था। नतीजा यह हुआ कि पाँच दरवाजो मे से एक असुरक्षित रह गया, यही वह जगह थी जहाँ से उस राक्षस ने अन्दर आने की कोशिश की थी। मैंने जल्दी से उसे वापिस रखा और लगा कि मैं फिर सुरक्षित हूँ, क्योंकि मुझे कारण पता चल गया था और बचाव का तरीका अभी भी मज़बूत था। अब मुझे फिर उम्मीद होने लगी थी कि सुबह होती देखूँगा। जब मैंने उस चीज को इतने करीब से देखा था और लगा था कि वह जीत जाएगा। तब मुझे अजीब सी भयानक कमज़ोर कर देने वाली अनुभूति हुई थी और लगा था कि कोई भी रुकावट ऐसी ताकत से मुझे बचा नहीं सकती। आप समझ रहे हैं ना?

बहुत देर तक मुझे कोई हाथ नहीं दिखा, फिर एक-दो बार लगा जैसे दरवाजे के पास अँधेरे में कुछ हिला हो। कुछ देर बाद एक हिंसक गुस्से से भरकर किसी ने बिल्ली के मरे हुए शरीर को उठाकर फर्श पर पटका। मुझे अजीब सा लग रहा था।

पलभर बाद दरवाज़ा खुला और दो बार पूरी ताकत से मारा गया। अगले ही पल उस चीज़ ने एक तेज़ और भयानक वार में छाया से निकलकर मुझ पर वार किया! सहज ज्ञान से मैं उससे बचने को एक तरफ झुका। मेरा हाथ जो गलती से बिजली के पंचकोण पर गिरा था, हट गया। राक्षस फिर पंचकोण से दूर जा गिरा। मेरी गलती से वह दूसरी बार बाहर की रुकावट पार करने में सफल हुआ था। मैं आपको बताऊँ, मैं डर से काँप उठा था। मैं घुटने टेककर अपने को जितना छोटा कर सकता था करके, पंचकोण के बीच में आ गया।

जब मैं बैठ गया, तब मुझे उन दो दुर्घटनाओं पर अचरज हुआ जिनके कारण वह राक्षस मुझ तक पहुँच सकता था। क्या कोई मेरे अवचेतन को प्रभावित कर मुझसे ऐसे काम करवा रहा था जो मुझे ख़तरे में डाल रहे थे? यह विचार मुझ पर हावी हो गया, अब मैं अपना हर काम बड़े ध्यान से देखने लगा। सहसा मैंने अपनी थकी टाँग को लम्बा किया तो पानी का एक जार गिर गया। कुछ पानी फैल भी गया पर क्योंकि मैं ध्यान रखे था, मैंने तभी उसे सीधा करके वापिस उसकी जगह रख दिया। मेरे इतना करने तक में एक बड़ा काला हाथ साकार हुआ और अँधेरे से निकलकर मेरे चेहरे की तरफ लपका। वह मेरे पास पहुँचने वाला ही था कि तीसरी बार किसी बड़ी ताकत ने उसे पीछे धकेल दिया। स्तब्ध कर देने वाले डर के अलावा मुझे लगा जैसे उस अमानवीय तत्त्व के पास आने की वजह से मेरी आत्मा में जो

कोमल, सुन्दर आन्तरिक गरिमा थी, उसे चोट पहुँची। यह दर्द शारीरिक दर्द से ज्यादा भयानक था। इससे मुझे ख़तरे की सीमा और निकटता का पता चला और काफी देर तक मैं अपनी आत्मा पर उस ताकत के निष्ठुर प्रहार से डरा रहा। मैं किसी तरह उसे बता नहीं सकता।

मैं पंचकोण के बीच में झुका हुआ अपने को उतने ही ध्यान से देख रहा था जितने से राक्षस देख रहा होगा। अब मैं जान गया था कि अगर मैंने अपना ध्यान नहीं रखा तो मैं ख़त्म हो जाऊँगा। आप समझ सकते हैं कि वह कितना भयानक रहा होगा।

मैंने बाकी रात डर के साए में काटी। मैं इतना डरा हुआ था कि कोई सहज हरकत नहीं कर पा रहा था—मैं इतना घबरा गया था कि कुछ करने की इच्छा आते ही मुझे लगता कि कहीं यह मुझ पर हावी प्रभाव के असर से तो नहीं है। रुकावट के बाहर वह भयानक चीज़ चक्कर लगाए जा रही थी, हवा में मुझे पकड़ने की कोशिश कर रही थी। दो बार फिर उस मरी हुई बिल्ली के शरीर को सताया गया। दूसरी बार तो मैंने उसके शरीर की हर हड्डी के टूटने की आवाज़ सुनी। पूरा समय वह भयानक हवा कमरे के कोने से मेरे ऊपर से होती हुई पलंग की बाईं तरफ जाती रही।

जैसे ही आकाश में सुबह की पहली किरण आई, वह अस्वाभाविक हवा पलभर मे बन्द हो गई। उस हाथ का नामोनिशान नहीं रहा। धीरे धीरे सुबह आई और फिर हल्की रोशनी कमरे में भरने लगी। अब बिजली के पंचकोण की मलिन रोशनी अजीब लगने लगी। फिर भी जब तक दिन पूरी तरह नहीं निकला मैंने उसमें से निकलने की कोई कोशिश नहीं की। क्योंकि मुझे लगा कि अचानक हवा के रुकने मे मुझे पंचकोण से निकालने की तरकीब न हो।

आखिर जब सुबह पूरी चमक के साथ आ गई तब मैंने आखिरी बार चारो तरफ एक नज़र डाली, फिर दरवाज़े की तरफ दौड़ा। बड़े डरे हुए और फूहड़ ढंग से मैंने ताला खोला, फिर जल्दी से लगाया और अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेटकर अपने को सँभालने की कोशिश करने लगा। जब पीटर्स कॉफी लाया तो पीकर मैने उससे कहा कि रात भर जगने के कारण मैं सोना चाहता हूँ। वह चुपचाप ट्रे लेकर चला गया। फिर अपने दरवाज़े पर ताला लगाने के बाद मैं आख़िर सो गया।

मैं दोपहर को उठा और खाना खाने के बाद ग्रेरूम में गया। पंचकोण से लगी बिजली को बन्द किया जो मैं वैसी ही छोड़ गया था। फिर बिल्ली के शव को हटाया। आप समझ सकते हो कि मैं नहीं चाहता था कि कोई उसे देखे।

फिर मैंने सावधानी से उस कोने की छानबीन की जहाँ पर बिस्तरा फेंका गया था। लकड़ी के कई छेद टटोले, पर कुछ नहीं मिला। अब मुझे लगा कि दीवार के किनारे के नीचे अपना औज़ार डालूँ। ऐसा करने पर मुझे लगा कि तार किसी धातु

से टकराया है। मैने उसका काँटे वाला हिस्सा डालकर उस चीज़ को ढूढ़ना चाहा दूसरी बार में वह मुझे मिल गई। वह एक छोटी सी चीज़ थी जिसे मैं खिड़की तक ले गया। वह स्लेटी-सी धातु की अजीब सी अँगूठी थी। ताज्जुब की बात यह थी कि वह जादुई पंचकोण के आकार की थी, पर उसमें बचाव वाले सितारे की नोके नही थीं, न ही उस पर कुछ खुदा या बना हुआ था।

आप मेरी उत्तेजना समझ सकते हैं क्योंकि मेरे हाथ में एंडर्सन परिवार की प्रसिद्ध किस्मत वाली अँगूठी थी जो भूतों के इतिहास से गहराई से जुड़ी थी। यह अँगूठी पीढ़ियों से पिता द्वारा पुत्र को दी जाती रही थी, और किसी प्राचीन पारिवारिक परम्परा की मान्यता के अनुसार हर बेटे से हमेशा उसे कभी न पहनने का वचन लिया जाता रहा था। मेरा विचार है कि कुछ ख़ास परिस्थितियों में यह अँगूठी किसी धर्मयोद्धा द्वारा घर लाई गई होगी, वह कहानी यहाँ बताने के लिए बहुत लम्बी है।

ऐसा पता चला कि एंडर्सन के एक पूर्वज सर हलबर्ट ने एक शाम शराब पीते वक्त यह शर्त लगाई कि वह उस रात अँगूठी पहनेगा। उसने वैसा ही किया। सुबह उसकी पत्नी तथा बच्चा उसी कमरे मे जहाँ मैं खड़ा था, गला घोंटकर मारे गए मिले। बहुत से लोगों ने सोचा कि सर हलबर्ट ने शराब के नशे में खुद ही यह किया था। वे अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए दूसरी रात फिर उसी कमरे में सोए। उन्हें भी उसी तरह गला घोटकर मार दिया गया।

तब से सिवाय मेरे किसी ने उस कमरे में रात नहीं बिताई। इतने दिनो से वह अँगूठी खो गई थी। अब उसके होने की बात कहानी बन गई थी। और इस समय उसे हाथ में लेकर खड़े होना मेरे लिए कितना अनूठा रहा होगा, यह आप समझ ही सकते हैं।

उस अँगूठी को देखते देखते मेरे मन में एक विचार आया कि कहीं वह घुसने का माध्यम न हो। अगर मैं अपनी बात दूसरी तरह कहूँ तो यह कि कहीं वह संसार की बाड़ में घुसने का आधार न हो। यह एक अजीब विचार था और मैं जानता हूँ कि शायद मेरा अपना नहीं था बल्कि बाहरी शक्ति द्वारा दिमाग में दिया गया था।

कमरे में जहाँ अँगूठी मिली थी, हवा उधर से ही आती थी। मैं इस बारे मे सोचता रहा। अँगूठी का वह आकार–पंचकोण का अन्दरूनी भाग था। उसमे कोई नोकें नहीं थी। सिगसैण्ड की हस्तलिखित प्रति में लिखा था : "वह नोकें पाँच सुरक्षा के पहाड़ हैं। वह न होने का मतलब राक्षस को ताकत देना है और निश्चित रूप से उन बुरी चीज़ों को बढ़ावा देना है।" आप समझे? अँगूठी का आकार बहुत महत्त्वपूर्ण था। मैंने उसे आजमाने का निश्चय किया।

मैंने अपने पंचकोण को मिटाया, क्योंकि जिसको बचाना होता है उसके आसपास नए सिरे से उसे बनाना चाहिए। फिर मैं बाहर गया और दरवाज़ा बन्द करके कुछ

खरीदने के लिए घर से निकला। दूसरी बार पंचकोण बनाने के लिए वही धागा, आग और पानी दुबारा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। मैं चीज़ें खरीदकर साढ़े सात बजे लौटा और ऊपर कमरे में ले गया। पिछली रात की तरह मैंने पीटर्स को भेज दिया। जब वह नीचे चला गया तो मैं कमरे में गया, ताला लगाया और दरवाजे पर सील लगाई। मैं कमरे के बीच में गया, वहाँ सब सामान रखा और जल्दी जल्दी अपने और अँगूठी के आसपास वह रुकावट बनाई।

मुझे याद नहीं कि मैंने आपको बताया या नहीं, पर मैंने सोचा कि अगर अँगूठी किसी तरह अन्दर आने का माध्यम है और वह मेरे साथ बिजली के पंचकोण मे होगी तो वह उससे अलग हो जाएगी। क्या आप समझे? वह ताकत जो एक हाथ के आकार में दिखाई दी थी उसे रुकावट से दूर रखना होगा, क्योंकि वही असामान्य से सामान्य को अलग करती है उसे घुसने का रास्ता ही नहीं मिलेगा।

जैसा मैं कह रहा था, मैं पूरी तेज़ी से अपने और अपनी अँगूठी के चारों तरफ रुकावट बनाने लगा, क्योंकि तब तक भी सुरक्षा के बिना उस कमरे में रहने के लिए देर हो चुकी थी। मुझे यह भी लग रहा था कि उस रात अँगूठी वापिस पाने के लिए बहुत कोशिश की जाएगी। मुझे लग रहा था कि अँगूठी साकार होने के लिए ज़रूरी थी। आप देखोगे कि मैं ठीक था या नहीं।

करीब एक घण्टे में मैंने वह रुकावट बना ली। मुझे अपने चारों और पंचकोण की हल्की रोशनी देखकर कितनी तसल्ली हुई होगी इसका आप अन्दाजा लगा सकते है। उस वक्त से मैं प्रायः दो घण्टे तक उस कोने की तरफ मुँह किए बैठा रहा जहॉ से हवा आई थी।

ग्यारह बजे के करीब मुझे अजीब-सी अनुभूति हुई, लगा कुछ मेरे पास है। पर उसके बाद एक घण्टे तक कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक वह अजीब ठंडी हवा मुझ पर आने लगी। मुझे ताज्जुब हुआ कि अबकी बार वह मेरे पीछे से आ रही थी। मैंने डरकर एकदम पलट कर देखा हवा सीधी मेरे चेहरे पर पड़ी। वह ज़मीन से ऊपर मेरे पास आ रही थी। मैं नए डर की उलझन में पड़ गया। अब मैंने क्या कर दिया! अँगूठी मेरे पास जहाँ मैंने रखी थी वहीं थी। सहसा मेरे देखते देखते अँगूठी मे कुछ अजीब सा दिखा—उसके पास अजीब हरकतें और बल पड़ रहे थे। मैं बेवकूफो की तरह उन्हें देखता रहा, अचानक मुझे लगा कि मेरे ऊपर अँगूठी से हवा आ रही थी। एक अजीब धुँधला धुआँ दिखाई दिया। ऐसा लगा कि वह धुँआ अँगूठी से उठकर हिलती हुई छायाओं के साथ मिल रहा था। मुझे लगा कि मैं जानलेवा ख़तरे मे हूँ, क्योंकि अँगूठी के आसपास की बलखाती छायाएँ एक आकार ले रही थीं, और पंचकोण के अन्दर मौत का एक पंजा आकार ले रहा था। हे भगवान्, क्या आप समझ रहे हैं? मैं पंचकोण में प्रवेश द्वार को ले गया था। और राक्षस उससे अन्दर आना चाह रहा था—इस भौतिक संसार में ऐसे आ रहा था जैसे नली के

मुह से गैस निकल रही हा

शायद कुछ देर मैं डर से सुन्न बैठा रहा। फिर पागलों जैसी हरकत करते हुए लपक कर वह अँगूठी उठानी चाही ताकि उसे पंचकोण से बाहर फेंक सकूँ। पर वह मेरी पकड़ में नहीं आ रही थी, जैसे कोई जीवित अदृश्य वस्तु उसे इधर से उधर झटक रही थी। आखिर मैंने उसे पकड़ लिया पर उसी पली एक दानवी ओर अविश्वसनीय ताकत से वह मेरे हाथ से छीन ली गई। एक बड़ी काली छाया ने उसे ढक लिया और वह हवा में ऊपर उठकर मेरी तरफ आने लगी। मैंने देखा वह एक बड़ा पूरा हाथ था। मैं पागलों की तरह चीखा और निराश होकर दरवाजे की तरफ दौड़ा। मैं बेवकूफों की तरह बेकार चाभी से जूझता रहा, पूरा समय मे रुकावट की तरफ देखता रहा, मेरा डर पागलपन की हद तक पहुँच चुका था। हाथ मेरी तरफ आता जा रहा था; पर जैसे अँगूठी बाहर होने के कारण वह पंचकोण मे घुस नहीं पा रहा था, उसी तरह अब जब अँगूठी अन्दर थी तो वह बाहर नही जा पा रहा था। राक्षस बन्दी हो गया था, जैसे कोई भी जानवर जंजीरों से बँधने पर हो जाता हैं।

उस पल भी मुझे यह ज्ञान हुआ, पर मैं इतना डरा हुआ था कि विवेक काम नही कर रहा था, जैसे ही मैं चाभी लगाने में सफल हुआ, मैं गलियारे में निकला और मैंने ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। किसी तरह ताला लगाकर मैं अपने कमरे मे गया, मैं ऐसे काँप रहा था कि खड़े होना मुश्किल था। अपने को अन्दर बन्द करके, किसी तरह मैंने मोमबत्ती जलाई, फिर मैं पलंग पर लेटा, घण्टा दो घण्टा चुपचाप लेटा रहा फिर थोड़ा स्थिर हुआ।

उसके बाद मैं थोड़ी देर सोया, पीटर्स के कॉफी लाने पर मैं जागा। पीने के बाद मैं बेहतर महसूस करने लगा, फिर पीटर्स को लेकर उस कमरे तक गया, दरवाजा खोलकर मैंने अन्दर झाँका। दिन की रोशनी में जलती मोमबत्ती, उनके पीछे बिजली के पंचकोण की पीली चमकती रोशनी थी। उसके बीच में राक्षस के घुसने का माध्यम वह अँगूठी ऐसे पड़ी थी जैसे कोई मामूली शान्त अँगूठी हो।

कमरे में कुछ छुआ नहीं गया था और मैं जान गया कि वह राक्षस पंचकोण से बाहर नहीं निकल पाया था। मैंने बाहर निकलकर ताला लगा दिया।

फिर कुछ घण्टे सोकर मैं घर से निकला। दोपहर को टैक्सी से लौटा। मैं अपने साथ दो गैस के सिलेण्डर और एक ऑक्सीहाइड्रोजन का जेट लेकर आया। इन्हे मै उस कमरे में ले गया। बिजली के पंचकोण के बीच में मैंने एक छोटी-सी भट्ठी लगाई। पाँच मिनिट बाद खुशकिस्मती की वह अँगूठी जो अब एंडर्सन परिवार के विनाश का कारण बन चुकी थी, उस भट्ठी में जलने के बाद केवल गरम धातु का टुकड़ा रह गई।

कार्नेकी ने अपनी जेब टटोली। कागज़ में लिपटी कोई चीज़ निकाली, मुझे

दी। मैंने खोला तो देखा कि एक छोटी सी गोलाकार चीज़ थी जिसका रंग स्लेटी था जो सीसे जैसी धातु की पर उससे ज्यादा सख्त और चमकीली दिख रही थी।

उसे अच्छी तरह देखकर मैंने उसे औरों की तरफ बढ़ाते हुए पूछा "क्या उससे प्रेत का आना रुका?"

कार्नेकी ने गरदन हिलाते हुए कहा, "हाँ, लौटने से पहले मैं तीन रात उसी कमरे में सोया। मैं क्या करना चाहता हूँ, यह जानने पर पीटर्स बेहोश होने को था पर तीसरी रात तक वह समझ गया कि अब वह घर भी सुरक्षित और आम घरों जैसा हो गया था। आपसे सच कहूँ? मुझे लगता है वह दिल से इसके पक्ष में नहीं था।

कार्नेकी ने खड़े होकर हाथ हिलाना शुरू किया और खुशी खुशी कहा, "अब बाहर निकलो!"

और हम सोचते हुए अपने घरों की तरफ चल दिए।

युवक गुडमैन ब्राउन

नैथेनियल हॉथॉर्न

सूर्यास्त के वक्त युवा गुडमैन ब्राउन सालेम गाँव की सड़क पर आया, पर आने से पहले सिर पीछे घुमाकर उसने अपनी छोटी उम्र वाली पत्नी से विदा लेते हुए उसका चुम्बन लिया। पत्नी फेथ का नाम बिल्कुल उपयुक्त था, उसने अपना सुन्दर सिर आगे करके पति को पुकारा, हवा उसकी टोपी के गुलाबी रिबनों से खेलती रही।

वह धीरे से अपने होंठ उसके कान के पास लाकर, उदासी से भरकर फुसफुसाई, "प्रियतम, मैं कहती हूँ भोर होने तक अपनी यात्रा रोक दो। आज रात अपने बिस्तर पर सोओ। कभी कभी एक अकेली औरत कुछ सपनों और विचारों से परेशान हो जाती है। मेरी विनती है कि साल की सब रातों में से सिर्फ आज की रात, मेरे पति, मेरी बात मान जाओ।"

"मेरे प्यार, मेरी फेथ," युवक गुडमैन ब्राउन ने जवाब दिया, "साल की सब रातों में से आज की रात ही मेरा तुमसे दूर जाना ज़रूरी है। मेरी यात्रा अभी से सुबह के बीच होनी ज़रूरी है। मुझे सिर्फ जाना और आना है। मेरी प्यारी सुन्दर पत्नी, अभी हमारी शादी को सिर्फ तीन महीने हुए हैं। क्या तुम अभी से मुझ पर शक कर रही हो?"

गुलाबी रिबन वाली फेथ ने कहा, "भगवान् तुम पर कृपा करें! तुम्हें लौटने पर सब अच्छा मिले।"

गुडमैन ब्राउन ज़ोर से बोला, "आमीन! प्रिय फेथ तुम प्रार्थना करना और दिन छिपते ही बिस्तर पर चली जाना, तुम्हारा कुछ बुरा नहीं होगा।"

इस तरह वे अलग हुए; युवक अपने रास्ते पर चलने लगा, नुक्कड़ वाले घर तक पहुँचने पर उसने मुड़कर देखा। गुलाबी रिबनों के बावजूद उदास फेथ अभी तक उसे देख रही थी।

उसका दिल दुखी होने लगा। वह सोच रहा था, बेचारी फेथ। मैं कितना बुरा हूँ जो ऐसे काम के लिए उसे छोड़कर जा रहा हूँ! वह सपने की बात कर रही थी। मेरे ख्याल से जब वह बोल रही थी तब उसके चेहरे पर उदासी थी, जैसे सपने ने उसे आज रात में होने वाले काम के बारे में चेतावनी दी हो पर नहीं! नहीं! उस बारे में जानकर तो वह मर ही जाएगी। वह धरती पर एक पवित्र देवदूत के समान है, आज रात के बाद मैं सिर्फ उसी से जुड़ा रहूँगा और उसके पीछे स्वर्ग तक जाऊँगा।''

भविष्य के बारे में यह अच्छा निश्चय करने के बाद गुडमैन आज के बुरे काम के लिए जल्दी जाने को ठीक समझने लगा। उसने सुनसान सड़क पकड़ी जो जंगल के घने पेड़ों के बीच होने के कारण अँधेरी सी थी। पेड़ों के बीच एक पतली सी पगडण्डी भर की जगह थी जो पीछे से बन्द लगती थी। वह जितनी सुनसान हो सकती थी उतनी थी, पर ऐसे अकेलेपन में भी एक विशेषता होती हैं, यात्री को पता भी नहीं होता कि उन असंख्य तनों और घनी डालों मे क्या छिपा है अकेले पैरों से वह एक अनदेखे समाज से गुजरेगा।

गुडमैन ब्राउन अपने आसपास डरा हुआ सा देखता हुआ मन में सोच रहा था, ''हर पेड़ के पीछे कोई राक्षसी वृत्ति वाला व्यक्ति हो सकता है।'' फिर उसे लगा, ''क्या पता मेरी कोहनी के पास ही स्वयं कोई शैतान हो?''

उसने सिर घुमाया, सड़क पर एक मोड़ पार किया, सामने देखा तो अच्छे कपडे पहने हुए एक आदमी पेड़ के नीचे बैठा था, गुडमैन के पहुँचने पर वह उठा, और उसके साथ-साथ चलने लगा।

वह बोला, ''गुडमैन ब्राउन, तुम्हें देर हो गई है। जब मैं बॉस्टन से निकल रहा था तब बड़ा घण्टा बज रहा था। इस बात को पन्द्रह मिनिट हो गए।''

''फेथ ने मुझे कुछ देर रोक लिया था'' युवक ने जवाब दिया, उसकी आवाज मे अचानक मिले व्यक्ति को देखने से थोड़ी कँपकँपाहट आ गई थी हालाँकि वह बिना जानकारी के वहाँ नहीं था।

अब जंगल में पूरी तरह अँधेरा छा गया था। जिस हिस्से में ये दोनों चल रहे थे, वहाँ सबसे ज्यादा अँधेरा था। जितना देखकर जाना जा सकता था, उस हिसाब से दूसरा यात्री लगभग पचास साल का था, गुडमैन ब्राउन के ही वर्ग का लग रहा था। देखने में नहीं पर भाव-भंगिमा में दोनों काफी मिलते-जुलते लगते थे। उन्हें पिता-पुत्र समझा जा सकता था। बड़ी उम्र वाला आदमी युवक की तरह साधारण कपड़ों मे था, व्यवहार में भी वैसा ही साधारण था, पर उसमें एक अवर्णनीय भंगिमा जैसी दुनिया को जानने वालों में होती थी। अगर उसे अपने काम से जाना पड़ता तो न वह गवर्नर के साथ खाना खाने में शर्मिंदा होता और न ही राजा विलियम के दरबार मे झिझकता। उसके पास एक अद्भुत चीज़ वह उसका डण्डा थी, जो बड़े और काले साँप जैसा था। वह ऐसा बना हुआ था कि जीवित साँप की तरह मुड़ता, ऐंठता

दिखाई देता था। पर वह निश्चित रूप से धुँधली रोशनी के कारण नज़र का धोखा रहा होगा।

साथी यात्री ने कहा, "चलो गुडमैन ब्राउन! सफर की शुरूआत के लिए यह बहुत धीमी चाल है। अगर तुम इतनी जल्दी थक गए हो तो मेरा डण्डा ले लो।"

ब्राउन ने धीमी चाल को रोकते हुए कहा, "दोस्त, तुमसे यहाँ मिलने का वायदा पूरा करने के बाद मैं जहाँ से आया हूँ मुझे वहाँ लौट जाना चाहिए। तुम्हारा काम छूने में मुझे झिझक हो रही है।"

साँप के बेंत वाला मुस्कारते हुए बोला, "तुम ऐसा कहते हो? फिर भी चलते चलो, चलते हुए मैं तुम्हें बताऊँगा। अगर तुम्हें सही न लगे तो लौट जाना। अभी हम जंगल में थोड़ी दूर ही आए हैं।"

"बहुत दूर, बहुत दूर!" गुड़मैन ने कहा, फिर अनजाने ही दुबारा चलने लगा। "मेरे पिता कभी ऐसे कामों के लिए जंगल नहीं जाते थे, न उनसे पहले उनके पिता गए थे। शहादत के दिनों में हम अच्छे ईसाई और ईमानदार इन्सानों की जाति के रहे हैं। क्या मैं पहला ब्राउन होऊँगा जिसने यह रास्ता अपनाया और—"

बड़ी उम्र के आदमी ने उसकी चुप्पी को शब्द देते हुए कहा, "ऐसा साथ पकडा, तुम यही कहना चाहते हो ना? गुडमैन ब्राउन! मैं भी तुम्हारे परिवार से बहुत अच्छी तरह परिचित रहा हूँ, वह परिवार निष्ठावान प्यूरिटनों* मे से एक था; और यह मामूली बात नहीं है। तुम्हारे बाबा जो कांस्टेबल थे, उन्होंने जब सालेम की गलियों में उस क्वेकर* औरत को चाबुक मारी थी तब मैंने उनकी सहायता की थी, और यह मै ही था जिसने तुम्हारे पिता को देवदारू की फेंकनेवाली गाँठ लाकर दी जिसे मेरी ही अँगीठी में जलाया गया ताकि राजा फिलिप की लड़ाई के समय उससे हिन्दुस्तानी गॉव को जलाया जा सके। वे दोनों मेरे अच्छे दोस्त थे। हमने कई बार इस रास्ते पर बड़ी अच्छी सैर की और आधी रात के बाद खुशी-खुशी लौटे। मैं उनकी ख़ातिर तुमसे दोस्ती करूँगा।"

गुडमैन ने जवाब दिया, "अगर तुम जो कह रहे हो, वैसा है, तो मुझे ताज्जुब है कि उन्होंने कभी इस बारे में बात नहीं की। ओह, मैं नहीं सोचूँगा, क्योंकि इस तरह की हल्की सी अफवाह भी फैलती तो उन्हें न्यू इंग्लैण्ड से निकाल दिया गया होता। हम प्रार्थना करने वाले लोग हैं और पूरी तरह अच्छे काम करते हैं, कोई धूर्तता नहीं करते।"

"धूर्तता या नहीं," यात्री अपना डण्डा घुमाते हुए बोला, "मैं न्यू इंग्लैण्ड में

---

* प्रोटेस्टेंट का सदस्य

* सोसाइटी ऑफ फ्रेंड्स का सदस्य

मामूली पहचान रखता हू। कइ चर्चो के डीकनो ने मेरे साथ मदिरा पी है; शहर के चुने हुए लोग मुझे अपना अध्यक्ष चुन चुके हैं; ऊँची और सामान्य कचहरी मेरे काम की समर्थक है। गवर्नर और मैं—पर ये स्टेट की गुप्त बाते हैं।''

अपने शान्त साथी को ताज्जुब से घूरते हुए गुडमैन बोला, ''क्या सचमुच ऐसा हुआ है? जो भी हो, मुझे उनसे क्या लेना देना; वे अपने ढंग से चलते हैं, मेरे जैसे सीधे-सादे पति के लिए उनके कोई नियम नहीं हैं। पर अगर मैं आपके साथ जाता हूँ तो सालेम गाँव के अपने अच्छे पादरी से कैसे आँख मिलाऊँगा? ओह! विश्राम का दिन (सैवथ डे) हो या भाषण का दिन, उनकी आवाज़ से मैं काँप उठूँगा।''

अब तक वह प्रौढ़ यात्री गम्भीरता से सुन रहा था, पर अब वह अपनी हँसी नहीं रोक पाया। उसे हँसी का दौरा-सा पड़ा। वह ऐसे हँस रहा था कि शरीर हिल रहा था और मानो सहानुभूति में उसका साँपवाला डण्डा साथ-साथ हिल रहा था।

वह बार-बार चिल्ला रहा था, ''हाँ! हाँ! हाँ!'' फिर अपने पर काबू करके बोला ''हाँ, गुडमैन ब्राउन, बोलते रहो, बोलते रहो, पर मुझे हँसाकर जान से मत मार देना।''

गुडमैन खिसियाकर बोला, ''तब मामला फौरन ख़त्म करने की बात कहता हूँ, वहाँ मेरी पत्नी फेथ है। उसका दिल टूट जाएगा। मैं इससे बेहतर अपने दिल का टूटना समझूँगा।''

''नहीं, अगर ऐसा ही है तो गुडमैन, तुम अपने रास्ते जाओ।'' दूसरे ने जवाब दिया। ''हमारे सामने जो बीस बूढ़ी औरतें लड़खड़ा रही हैं, उनके लिए भी मैं फेथ को कोई तकलीफ नहीं देना चाहूँगा।''

उसने बोलते-बोलते अपने डण्डे से रास्ते की एक औरत की तरफ इशारा किया, गुडमैन ने देखा, वह औरत पवित्रता का उदाहरण थी, उसी ने उसे जवानी में ईसाइयो की प्रश्नोत्तरी सिखाई थी और अब भी पादरी और उससे नीचे पद वाले की नैतिक ओर आध्यात्मिक सलाहकार थी।

वह बोला, ''सच में, यह एक अजीब बात है कि रात को इस वीराने में गॉव से इतनी दूर गुडी क्लोयस मौजूद है! पर दोस्त, जब वह ईसाई औरत पीछे छूट जाएगी तब मैं तुमसे विदा लूँगा। तुम्हारे लिए अजनबी होने के कारण वह पूछ सकती है कि मैं किसके साथ हूँ और कहाँ जा रहा हूँ।''

साथी बोला, ''वैसा ही करो, तुम जंगल में जाओ, मैं सड़क पर ही रहूँगा।''

उसके कहे के अनुसार युवक एक तरफ हो गया, पर अपने साथी पर नजर रखे रहा, जो धीरे धीरे सड़क पर बढ़ रहा था, फिर वह बूढ़ी औरत से एक डण्डे के फासले पर था। वह औरत उम्र के देखते काफी तेज़ी से चल रही थी और साथ ही कुछ अस्पष्ट शब्द बड़बड़ा रही थी जो शायद प्रार्थना के हों। यात्री ने अपना

---

* पुराने गिरजा घरों मे तीसरें दर्जे का अधिकारी (विशप और प्रास्ट के बाद)

डण्डा आगे किया और उसकी सिकुड़ी हुई गरदन को साप की पूछ नेसे डण्डे स छुआ।

"शैतान!" वह चिल्लाई।

यात्री ने उसके सामने पहुँचकर, उसे देखते हुए, अपनी मुड़ी हुई छड़ी पर टिककर कहा, "तो गुडी क्लोयस अपने पुराने मित्र को पहचानती है?"

"निश्चय ही, क्या यह तुम्हारी साधना है? हाँ, सच ही, ठीक मेरी पुरानी गप जैसी जो अब के बेवकूफ गुडमैन ब्राउन के बाबा के साथ थी। पर क्या तुम विश्वास करोगे कि मेरी झाड़ अजीब ढंग से गायब हो गई। मुझे शक है कि वह खो गई और उस गुडी कोर्टी ने जिस चुड़ैल को फाँसी नहीं हुई थी, चुराई होगी। यह तो तब है जब मैं जंगली चौलाई, मीठे ज़हर और पंचपत्ती के रस से अभिसिक्त थी–"

बूढ़े गुडमैन ब्राउन के आकार ने कहा, "उसके साथ बारीक गेहूँ और नए पैदा हुए बच्चे की चर्बी भी मिली थी।"

"ओह", वह बुढ़िया ज़ोर से बोली, "तुम सब कुछ जानते हो, मैं जो कह रही थी, मैं मिलने के लिए पूरी तरह तैयार थी। पर सवारी के लिए कोई घोड़ा न होने के कारण मैं पैदल ही चल दी; उन्होंने मुझे बताया कि आज रात एक भला जवान आदमी धर्मसभा में लिया जाएगा। पर अब तुम मुझे अपनी बाँह का सहारा देकर पलक झपकते वहाँ पहुँचा दोगे।"

उसके मित्र ने कहा, "वह नहीं हो पाएगा। मैं तुम्हें अपनी बाँह नहीं दूँगा गुडी क्लोयस, पर अगर तुम चाहो तो छड़ी दे सकता हूँ।"

ऐसा कहकर उसने छड़ी उसके पैरों के पास फेंकी, जहाँ वह जीवन्त हो गई क्योंकि यह वह लकड़ी थी जो उसके मालिक ने पहले मिस्र के पुजारी को उधार दी थी। पर गुडमैन ब्राउन इस बात को समझ नहीं पा रहा था। उसने ताज्जुब से ऊपर देखा फिर नीचे देखा। न गुडी क्लोयस दिखी न वह साँप के आकार का डण्डा। वहाँ उसका साथी अकेला खड़ा था और इस शान्ति से उसका इन्तजार कर रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

ब्राउन बोला, "उस बुढ़िया ने मुझे धार्मिक प्रश्नोत्तरी सिखाई थी।" इस साधारण कथन में गहरा अर्थ छिपा था।

दोनों आगे बढ़ने लगे। प्रौढ़ यात्री अपने साथी को तेज़ चलने के लिए ऐसे समझा रहा था, इतने अच्छे ढंग से उपदेश दे रहा था कि उसके तर्क उसके सुझाव श्रोता को अपने अन्दर से आते लग रहे थे। चलते चलते उसने बेंत की तरह इस्तेमाल करने के लिए मेपिल पेड़ (मेपल) की एक डाल तोड़ ली। फिर उसकी छोटी शाखाएँ और पत्तियाँ उतारनी शुरू कीं। डाल पर शाम की ओस पड़ी थी। उसकी उँगलियो के स्पर्श-मात्र से वे अजीब ढंग से मुरझा गई और ऐसे सूख गई जैसे एक हफ्ते से धूप में रखी हो। दोनों तेज़ी से चल रहे थे कि तभी अचानक ब्राउन सड़क के

किनारे गड्ढे में एक पेड़ के ठूँठ पर बैठ गया और आगे बढ़ने से बिल्कुल मना कर दिया।

वह ज़िद्दी ढंग से बोला, "दोस्त, मैंने सोच लिया है, अब इस काम के लिए मै एक कदम भी आगे नहीं बढ़ूँगा। अगर एक ख़राब बुढ़िया शैतान के पास जाना तय करती है जबकि मैं सोच रहा था कि वह स्वर्ग जाएगी, तो इससे क्या! क्या यह भी कोई कारण है कि मैं अपनी प्रिय फेथ को छोड़कर उसके पीछे जाऊँ?"

उसके साथी ने शान्ति से कहा, "तुम इस बारे में धीरे-धीरे ज्यादा अच्छी तरह सोच सकोगे। यहाँ बैठकर थोड़ा आराम करो। जब तुम फिर चलना चाहोगे तो मेरा डण्डा तुम्हारी मदद करेगा।"

कुछ कहे बिना उसने अपनी छड़ी दोस्त की तरफ फेंक दी और इतनी तेजी से नज़र से ओझल हो गया जैसे गहराते अँधेरे में गायब हो गया हो। युवक कुछ देर सड़क के किनारे बैठा रहा फिर मन ही मन अपनी तारीफ करने लगा और सोचने लगा कि कल सुबह की सैर के वक्त वह साफ मन से अपने पादरी से मिल सकेगा और भले आदमी गुकिन से आँखें मिलाने में भी झिझकेगा नहीं। उसकी रात की नीद कितनी शान्त होगी जबकि दुष्टतापूर्ण होने वाली थी। अब वह पवित्र और मीठी तथा फेथ की बाँहों में कटेगी! वह इस अच्छे सोच में डूबा ही था कि उसे घोडे की टापों की आवाज़ सुनाई दी। उसने सड़क से उतरकर जंगल के किनारे में अपने को छिपाना बेहतर समझा, क्योंकि जंगल में आने के कारण से वह शर्मिन्दा था, चाहे अब उसने खुशी-खुशी उधर से ध्यान हटा लिया था।

घोड़ों की टापों और सवारों की आवाज़ आ रही थी, आवाज़ें दो बड़े लोगों की थीं। जैसे-जैसे पास आ रहे थे, आवाज़ साफ होती जा रही थी। ये आवाज़ें सडक से आ रही थीं और युवक के छिपने की जगह से कुछ ही गज़ की दूरी पर थीं। उस जगह ख़ास अँधेरा होने की वजह से यात्री या घोड़े दिखाई नहीं दे रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे किनारे की झाड़ियों तक को छू रहे थे पर वे जहाँ से जा रहे थे वहाँ पर झुरमुट से झाँकते चमकीले आसमान की हल्की सी चमक को भी वे ढक नही रहे थे। गुडमैन ब्राउन कभी नीचे होकर बैठता, कभी पंजों पर खड़ा होता, डालियो को एक तरफ करके जितना सिर आगे ले जा सकता था ले जाता, पर कुछ भी देख नहीं पा रहा था। उसे बहुत खीझ हो रही थी। क्योंकि वह कसम खा सकता था कि उसे पादरी और डीकन गुकिन की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जो अब ऐसे चुपचाप जा रहे थे जैसे किसी दीक्षा या धार्मिक सभा के लिए जा रहे हों। अभी उनकी आवाज सुनाई दे रही थी कि एक घुड़सवार ने रुककर पेड़ की एक टहनी तोड़ी।

डीकन की-सी आवाज़ वाले ने कहा, "आदरणीय महोदय, अगर दो में से एक चुनना हो तो मैं दीक्षा वाले भोज को भले ही छोड़ दूँ, पर आज की बैठक नहीं छोडना चाहूँगा। वे लोग कह रहे थे कि हमारे सम्प्रदाय के कुछ लोग फॉलमाऊथ और उससे

परे से और कुछ दूसरे लाग कनकटीकट और रोड द्वीप से आएगे, इसके अलावा बहुत से भारतीय जादू-टोने वाले, जो अपने ढंग से हममें जो बहुत होशियार भूत-विद्या जानने वाले हैं, उतना ही जानते हैं। इसके अलावा आज एक अच्छी युवती को इसमें शामिल किया जाएगा।''

पादरी ने अपनी गम्भीर आवाज़ में कहा, ''बहुत बढ़िया, डीकन गुकिन! तेज चलो, नहीं तो हमें देर हो जाएगी। तुम जानते ही हो कि जब तक मैं ज़मीन पर नही पहुँचता, तब तक कुछ नहीं किया जा सकता।''

फिर टापों की आवाज़ आई, फिर बोलने की आवाज़ जैसे खाली हवा में तैरती हुई जंगल में से गुज़री। जंगल में कोई चर्च नहीं था, न ही किसी ईसाई ने कभी प्रार्थना की थी। फिर ये पवित्र आदमी इस वीराने में कहाँ की यात्रा कर रहे थे? युवक गुडमैन ने एक पेड़ का सहारा लिया, वह दिल के बोझ और थकान के कारण बेहोश होने को था। उसने ऊपर आसमान की तरफ देखा, उसे शक था कि उसके ऊपर सचमुच स्वर्ग है भी या नहीं। पर ऊपर नीला विस्तार था जिसमें तारे चमक रहे थे।

''ऊपर स्वर्ग और नीचे फेथ, मैं शैतान के ख़िलाफ जमकर खड़ा होऊँगा,'' गुडमैन ने कहा।

अभी वह ऊपर आकाश की तरफ देख ही रहा था और अपने हाथ जोड़कर प्रार्थना करने वाला था कि एक बादल (हालाँकि हवा नहीं चल रही थी) ऊपर से निकला और चमकते सितारों को ढक लिया। नीला आकाश अब भी दिखाई दे रहा था, सिवाय बिल्कुल ऊपर के जहॉ से वह काला बादल तेज़ी से उत्तर की ओर बढ रहा था। ऐसा लगा कि बादलों की गहराई में से, हवा पर से होकर अजीब सन्देहास्पद आवाज़ें आ रही थीं। एक बार सुनने वाले ब्राउन को लगा कि उसे अपने शहर के धार्मिकों और दुष्टों, आदमियों और औरतों की आवाज़ सुनाई दे रही थी जिनसे वह धार्मिक सभाओं या सराय के हुल्लड़ में मिलता रहा था। अगले ही पल वे आवाजे इतनी अस्पष्ट हो जातीं कि उसे लगता उसने वे सुनी भी थीं या केवल जंगल की आवाज़ें ही थीं। फिर उन पहचानी आवाज़ों की लहर सी आई जो वह सालेम गॉव मे दिन की रोशनी में सुनता था पर कभी रात को बादलों में नहीं सुनी थी। एक जवान औरत की अनिश्चित दर्द भरी विलाप की आवाज़ आ रही थी। वह किसी ऐसी कृपा के लिए विनती कर रही थी जो उसे दुखी ही करती। धार्मिकों और पापियो की पूरी भीड़ उसे आगे बढ़ने को बढ़ावा दे रही थी।

गुडमैन ब्राउन दर्द और निराशा से भरकर चिल्लाया, 'फेथ'!'' जंगल में वह आवाज़ गूँजकर उसका मज़ाक उड़ाने लगी, ''फेथ, फेथ!'' जैसे सब बुरे लोग जगल मे उसे ढूँढ़ रहे थे।

अप्रसन्न पति जवाब के लिए साँस रोक खड़ा था, तभी रात को चीरती दु:ख,

गुस्से और डर की एक चीख सुनाई दी, एक चीख जो फौरन दूसरी आवाज़ों में डूब गई, दूर से आती हँसी की आवाज़ों में खो गई, और वह काला बादल गुडमैन के ऊपर साफ मौन आकाश छोड़कर चला गया। पर कुछ हवा में उड़ता हुआ आकर पेड़ की डाल में फँस गया। युवक ने उसे झपटकर ले लिया, वह गुलाबी रिबन था।

एक सुन्न कर देने वाले पल के बाद वह चिल्लाया, "मेरी फेथ चली गई। धरती पर कुछ अच्छा नहीं है। पाप का ही नाम है। आओ शैतानो! क्योंकि यह ज़मीन तुम्हारे हवाले है।"

निराशा से पागल होकर वह ज़ोर से ऊँची आवाज़ में हँसता रहा, फिर उसने अपना डण्डा उठाया और इतनी तेज़ी से आगे बढ़ा जैसे उस जंगल के रास्ते पर चलने या दौड़ने की जगह वह उड़ रहा था। सड़क धीरे धीरे ज्यादा वीरानी और जंगली होती जा रही थी। शुरू में ही वह मुश्किल से दिखाई दे रही थी, फिर दिखाई देनी बन्द हो गई। अब वह उस अँधेरे जंगल के बीच अकेला रह गया था, पर आगे ही भागता जा रहा था मानो उसका अन्तर्मन उस नश्वर इन्सान को शैतान की तरफ लिये जा रहा था। पूरे जंगल में डरावनी आवाज़ें आ रही थीं, पेड़ भी आवाज़ कर रहे थे, जंगली जानवर रो रहे थे, इंडियन्स* चिल्ला रहे थे; फिर कभी ऐसी आवाज़ आती थी जैसे दूर चर्च में घण्टियाँ बज रही हों। कभी युवक के आसपास ऐसी तेज़ आवाज़ें आती थीं जैसे पूरी प्रकृति उसका मज़ाक उड़ाकर हँस रही हो। पर उस पूरे दृश्य में वह स्वयं सबसे ज्यादा डरावना था, अतः और डरावनी चीज़ों से डर नहीं रहा था।

जब हवा उस पर हँसी तो वह भी हँसा, "हाँ! हाँ! ज़रा सुनते हैं कौन ज्यादा ज़ोर से हँसता है! अपनी शैतानी से मुझे डराने की कोशिश मत करना! चुड़ैल, भूत, जादूगर, खुद शैतान आ जाए! इधर गुडमैन ब्राउन आ रहा है। जैसे वह तुमसे डरता है, तुम उससे डरो!"

यह सच भी था कि उस भुतहे जंगल में गुडमैन ब्राउन से ज्यादा भयानक कुछ नहीं था। काले चीड़ के पेड़ों के बीच से वह पागलों की तरह अपने डण्डे को हिलाता हुआ उड़ता जा रहा था, कभी भयानक रूप से धर्म की निन्दा करने लगता तो कभी इतने ज़ोर से हँसता कि उसकी राक्षसी गूँज उसके चारों तरफ फैल जाती। आदमी की छाती में गुस्से के राक्षस का आकार जितना भद्दा होता हैं, उतना खुद राक्षस का नहीं होता। वह राक्षस अपने रास्ते पर बढ़ रहा था, तभी उसे पेड़ो के बीच एक लाल रोशनी दिखाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे पेड़ के काटे गए तने, डाल वगैरह को आग लगा दी गई हो, और वे आधी रात में अपनी लपटें आसमान की तरफ फेंक रहे हों। वह रुका जैसे उसके अन्दर का तूफान जो उसे आगे धकेल रहा था, कुछ शान्त हुआ हो, तभी दूर से बहुत सारी आवाज़ों में उसे एक धार्मिक

* अमरीका के आदिवासी।

गीत की आवाज़ सुनाई थी। वह उस धुन को पहचानता था; यह वही धुन थी जो गॉव की भजन मंडली में गाई जाती थी। शब्द डूब गए, एक सामूहिक आवाज़ आ रही थी, इन्सानों की नहीं रात के सन्नाटे की, जो भद्दी समवेतता से गूँज रही थी। गुडमैन ब्राउन चिल्लाया और उसकी आवाज जंगल की आवाज़ के साथ मिलकर उसके कानों तक भी नहीं गई।

सन्नाटे के बीच वह आगे बढ़ा तभी तेज़ रोशनी उसकी आँखों पर पड़ी। खुली जगह के एक छोर पर जहाँ जंगल का विस्तार किनारे पर था, एक पहाड़ी थी जो पूजा की वेदी के आकार से मिलती जुलती लग रही थी। उसके चारों कोनों पर चीड़ के पेड़ थे जिनका ऊपरी हिस्सा जल रहा था पर डालें आग से अछूती थीं। देखकर लग रहा था जैसे शाम की धार्मिक सभा में मोमबत्तियाँ जल रही हों। पहाड़ की चोटी पर जो घास पात थी, वह सब जल रही थी। रात के अँधेरे में उसकी ऊँची उठती लपटें पूरे मैदान को अच्छी तरह रोशनी से भर रही थी। फिर एक एक डाल ओर पत्ती जलने लगी। लाल रोशनी कभी तेज़ होती कभी धीमी, उसके साथ बहुत-सी धार्मिक परिषदें चमकतीं फिर अँधेरे में डूब जातीं। जब वे अँधेरे से निकलतीं तो लगता था कि वीरान जंगल में धर्म सभा हो रही हो।

गुडमैन ब्राउन, "एक गहरे रहस्य में लिपटा जनसमूह है।"

सच में वे ऐसे ही थे। उनके बीच उदासी और खुशी के बीच आगे-पीछे कॉपते चेहरे थे जो अगले दिन प्रदेश की परिषद् सभा में दिखने वाले थे, और वे थे जो एक रविवार से दूसरे तक पूरी भक्ति के साथ स्वर्ग की तरफ देखते रहते थे। वे धरती के पवित्रतम आसन गिरजाघर के भरे हुए घटहरों की ओर अच्छी नज़र से देखते थे। कुछ कह रहे थे कि वहाँ राज्यपाल की पत्नी थी। कम से कम उनकी परिचित उच्च वर्ग की औरतें तो थीं ही और बड़ी संख्या में इज्ज़तदार आदमियो की औरतें, विधवाएँ, बूढ़ी औरतें और सुन्दर युवतियाँ थीं, जो इस डर से काँप रही थी कि उनके घरवाले उन्हें देख न लें। या तो उस नामालूम सी खुली जगह पर सहसा चमकने वाली रोशनी ने गुडमैन ब्राउन की आँखों को चकाचौंध कर दिया या वह सालेम गाँव के चर्च के ऐसे बीसियों लोगों को पहचान पा रहा था जो अपनी विशेष पवित्रता के लिए प्रसिद्ध थे। डीकन गुकिन आ चुका था और ब्राउन के आदरणीय पादरी के पास खड़ा था। पर इन गम्भीर, इज्ज़तदार, धार्मिक लोगों और गिरजाघर के बुजुर्गों, धार्मिक स्त्रियों और कुमारियों के पास ही भ्रष्ट लोग, कलंकित औरते, सब तरह के दोषों और नीचता से युक्त लोग, यहाँ तक कि ऐसे लोग भी मौजूद थे जिन पर भयानक कुकर्मों का सन्देह था, अजीब बात यह थी कि अच्छे लोग बुरों से घबरा नहीं रहे थे और बुरे लोग धार्मिकों के आगे शर्मिन्दा नहीं थे। भारतीय साधु या जादूगर गोरी चमड़ी वाले अपने दुश्मनों के बीच फैले हुए थे, उन्होंने बहुत बार अंग्रेज़ी जादू-टोने से ज्यादा भयानक जादू से औरों को डराया था।

गुडमैन ने सोचा, 'पर फेथ कहाँ है?' हृदय में आशा लिये वह काँप उठा।

पवित्र प्रेम की बात कहते एक और भजन के बोल धीमी लय में उठे, पर उसमें ऐसे शब्द भी थे जिनसे इन्सान के स्वभाव के पाप के बारे में इशारा मिलता था। मामूली आदमी के लिए शैतान की गाथा समझना मुश्किल है। एक के बाद एक पद गाया जा रहा था, पर उसके बीच में किसी बड़े वाद्य की गहरी आवाज की तरह रेगिस्तान का कोरस उठ रहा था। उस भयानक गीत के अन्तिम सुरों के साथ तेज़ हवा, दौड़ती नदियों, रोते जानवरों और जंगली की दूसरी आवाज़ों में दोषी लोगों की आवाज़ मिल गई थी, जैसे अपराधियों के सरताज को श्रद्धांजलि दे रही हो। चारों जलते हुए चीड़ तेज़ लपटें फेंक रहे थे। उनसे निकलते धुएँ से इस अपवित्र भीड़ के ऊपर भयानक आकृतियाँ बन रही थीं। उसी समय पहाड़ के ऊपर की लाल आग आगे लपकी और नीचे एक चमकीली महराब बना दी जहाँ अब एक आकृति दिखाई देने लगी। इज्ज़त से कहा जाना चाहिए कि वह आकृति आकार या व्यवहार में न्यू इंग्लैण्ड चर्च की किसी भी धार्मिक आत्मा से कोई मेल नहीं रखती थी।

तभी जंगल में फिसलती, खेतों में गूँजती आवाज़ आई, "धर्मपरिवर्तन वालों को आगे लाया जाए।"

इन शब्दों पर गुडमैन पेड़ों की छाया से निकलकर आगे आया, वह धर्मपरिषद् की तरफ बढ़ा, जिनसे दिल में वैसी ही दुष्टता के कारण उसे भाईचारे की भावना लग रही थी। वह कसम खा सकता था कि नीचे से उठते धुएँ के आकार में उसे अपने मृत पिता की आकृति आगे बढ़ने को कह रही थी, पर एक औरत के निराश चेहरे की धुँधली आकृति हाथ फैलाकर उसे पीछे रहने की चेतावनी दे रही थी, क्या वह उसकी माँ थी? पर जब पादरी और डीकन जैसे अच्छे आदमी उसे बाँह पकड़कर जलती हुई पहाड़ी की तरफ ले जा रहे थे तब उसमें पीछे कदम हटाने की ताकत कैसे होती। वह तो अपने विचारों तक को नहीं हटा पा रहा था। तभी वहाँ धार्मिक शिक्षिका गुडी क्लोयस और मार्था कैरियर जिसे शैतान ने नरक की रानी बनाने का वादा दिया था, एक पतली घूँघट वाली युवती को पकड़े हुए आईं। मार्था कैसी भयानक बुढ़िया थी! आग के चन्दोबे के नीचे धर्म बदलने वाले खड़े थे।

उस काले आकार ने कहा, "तुम्हारी कब्र के धर्म परिषद् में तुम्हारा स्वागत है, मेरे बच्चो! जवान होते हुए भी तुम्हें तुम्हारी नियति मिल गई हैं। बच्चो, पीछे देखो।"

वे मुड़े और आग की चादर की तरह लपकते हुए दुष्ट भक्त दिखाई दिए। हर चेहरे पर स्वागत की मुस्कान थी।

फिर उस काले आकार ने कहा, "वहाँ वे सब हैं जिनको तुम जवानी से इज्जत देते रहे हो। तुमने हमेशा उन्हें ज्यादा पवित्र समझा, तुम अपने पापों के कारण झिझकते

रहे, हमेशा उनके धार्मिक कृत्यों से अपनी तुलना करते रहे जो उन्होंने स्वर्ग जाने की इच्छा से किए थे। पर देखो, वे सब यहाँ मेरी पूजा के सम्मेलन में इकट्ठा है। आज की रात तुम्हें उनके रहस्यमय कारनामों का पता चलेगा; कैसे सफेद दाढ़ी वाले चर्च के बुजुर्गों ने अपने घर में काम करने वाली जवान लड़कियों के कानों में अश्लील बातें कहीं; कितनी औरतों ने विधवा की घासपतवार पाने की आतुरता में पति को बिस्तर में ऐसा पेय पिलाया कि वह उसकी छाती के पास हमेशा के लिए सो गया, कैसे जवानों ने पिता की दौलत पाने की जल्दी की; कैसे सुन्दर युवतियों ने शरमाओ नहीं; प्यारो!--बगीचे में छोटी कब्रें खोदकर बच्चों को दफनाने के लिए सिर्फ मुझे बुलवाया। इन्सान के दिल में पाप के लिए जो हमदर्दी है उससे तुम सब जगह जहाँ अपराध किया गया होगा--वह चर्च हो या शयन कक्ष, गली, खेत, या जंगल हो--सूँघ लोगे, और तब देखोगे कि पूरी धरती एक कलंक का धब्बा है, एक बड़ा सा खून का धब्बा है, उससे भी बहुत ज्यादा है! तुम हर छाती में झाँक सकोगे, और पाप के रहस्य को, सारे बुरे कामों के फव्वारे को, जो बिना थके इन्सानों में बुराई भरता हे, उन्हें बुरे कामों में बदलता है, जान लोगे। और अब मेरे बच्चो, तुम एक दूसरे का देखो।

उन्होंने देखा ; नरक की धधकती रोशनी में वह बुरा आदमी उसकी फेथ को पकड़े था, पत्नी ने पति को देखा, वह पाप की वेदी के सामने काँप रही थी।

"ये तुम खड़े हो मेरे बच्चो," उस आकार ने गम्भीर और उदास आवाज़ मे कहा, उसकी आवाज़ में ऐसी निराश भयानकता थी जैसे वह अपनी पहले की दैवी वृत्ति के कारण हमारी पापी जाति के लिए दुखी हो रहा हो। "एक-दूसरे के दिल पर निर्भर करने के कारण तुम सोचते रहे कि सद्गुण सपना नहीं है, क्या अब भी तुम बिना धोखा खाए हुए हो? मानवता का स्वभाव ही दुष्टतापूर्ण है। उसी बुराई मे तुम्हारी खुशी है, मेरे बच्चो, फिर से तुम्हारा तुम्हारी अपनी जाति की परिषद् मे स्वागत है।"

"स्वागत", दुष्ट भक्तों ने दुहराया, उनकी आवाज़ में निराशा और जीत दोनो थीं।

वे दोनों वहाँ खड़े थे, ऐसा लग रहा था कि इस अन्धकारपूर्ण दुनिया में वही एक जोड़ा था जो अब भी शैतानियत की कगार पर झिझक रहा था। पहाड़ी में एक प्राकृतिक गड्ढा था। क्या उसमें पानी था जो उस भयानक रोशनी से लाल था? या वह खून था? या पिघली हुई लपट थी? शैतान के आकार ने उसमें हाथ डुबोया और उनके माथे पर ईसाई धर्म में दीक्षा का निशान बनाने को तैयार हुआ ताकि वे पाप के रहस्य में भाग ले सकें। विचार और कर्म से अपने से ज्यादा औरों के दोषों को जान सकें। पति ने एक नज़र अपनी पीली पड़ी हुई पत्नी पर डाली और पत्नी ने उस पर। दूसरी नज़र में वे एक दूसरे के बारे में न जाने क्या भ्रष्ट बुराइयाँ

देखेंगे जिसे देखकर और जानकर वे काँप उठेंगे?

पति चिल्लाया, "फेथ! फेथ! स्वर्ग की तरफ देखो, शैतान से बचो।"

उसे नहीं पता कि फेथ ने कहना माना या नहीं। इतना कहते ही उसने अपने को अकेला और शान्त रात में हवा की आवाज़ सुनते पाया जो धीरे धीरे जगल मे मर रही थी। वह पहाड़ी के सहारे लड़खड़ाया और देखा कि वह ठंडी और नीली थी। एक लटकती डाल जो पहले जल रही थी, उसने उसके गाल पर ठंडी ओस छिड़क दी।

अगली सुबह गुडमैन ब्राउन धीरे धीरे सालेम गाँव की गली में आया। वह भौचक्का-सा इधर-उधर घूर रहा था। प्रौढ़ भला आदमी पादरी कब्रिस्तान में सैर कर रहा था, ताकि नाश्ते के लिए भूख लगे और वह उपेदश देने के लिए साधना कर सके। जैसे ही वह उनके पास से गुजरा, उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। वह उस सन्त से बचना चाह रहा था जैसे वह अभिशाप हो। डीकन गुकिन अपने घर में पूजा कर रहा था। खुली खिड़की से उसकी प्रार्थना के पवित्र शब्द बाहर तक सुनाई दे रहे थे। "यह जादूगर किस भगवान् की पूजा कर रहा है?" गुडमैन बोला।

गुडी क्लोयस, वह अच्छी ईसाई स्त्री सुबह की धूप में खड़ी दूध लाने वाली छोटी लड़की को धार्मिक प्रश्नोत्तरी सिखा रही थी, गुडमैन ने उस लड़की को ऐसे खींचा जैसे शैतान के हाथों से छुड़ा रहा हो। उस धार्मिक प्रार्थनास्थल से मुड़ते ही उसे फेथ का सिर दिखाई दिया, उसने गुलाबी रिबन बाँधा हुआ था। वह चिन्ताकुल हो उसकी राह देख रही थी, उसे देखते ही खुशी से दौड़ती हुई गली मे आई और पूरे गाँव के सामने ही पति का चुम्बन लेने को बढ़ी ही थी कि गुडमैन ने उसकी तरफ बड़ी सख़्ती और उदासी से देखा और बिना कुछ बोले बढ़ गया।

क्या वह जंगल में सो गया था और उसने भूत-प्रेतों की सभा का सिर्फ सपना भर देखा था ?

चाहे वही रहा हो। पर हाय! युवक गुडमैन के लिए वह सपना एक बुरा शकुन बन गया। उस डरावने सपने के बाद से वह एक रूखा, उदास, गहरे क्षोभ में डूबा हुआ, निराश न भी हो तो अविश्वासी व्यक्ति बन गया। रविवार को जब सब धार्मिक भजन गा रहे थे, वह सुन भी नहीं पा रहा था क्योंकि उसके कानों में पाप के गीत की आवाज़ इतनी तेज़ी से गूँज रही थी कि अच्छी आवाज़ डूबती जा रही थी। जब पादरी वेदी से हाथों में खुली बाइबल लिये धर्म के पवित्र सत्य बता रहे थे और अच्छे भाषण द्वारा सन्तों के जीवन और मौत को जीतने वालों के बारे में बता रहे थे, भविष्य की अनकही खुशी या दुःख की बात बता रहे थे, तब गुडमैन पीला पड गया। उसे यह डर लगा कि उस धर्मभ्रष्ट वक्ता और सुनने वालों पर छत गिर पडेगी। बहुत बार वह आधीरात को जाग जाता था, फेथ से परे हट जाता था। सुबह या शाम जब परिवार प्रार्थना के लिए घुटने टेकता था तो वह मुँह बनाकर अपने

आप से बड़बड़ाता रहता था। फिर वह पत्नी की तरफ घूरकर देखता और मुड़ जाता। उसके बहुत साल जी लेने के बाद उसकी बूढ़ी लाश को कब्र तक ले जाया गया। शव के पीछे पीछे फेथ चल रही थी। अब वह एक बूढ़ी औरत थी, बच्चे, बच्चों के बच्चे, पड़ोसी—एक अच्छा जुलूस था—उन्होंने उसकी कब्र के पत्थर पर कोई आशापूर्ण कविता नहीं लिखी; क्योंकि उसका आखिरी वक्त उदासी भरा था।

वह प्रार्थना

वॉयलेट हन्ट

यह एक हारी हुई बाज़ी को दे देना है।

—फिलास्टर

I

"आओ श्रीमती अर्न—प्रिय ऐसे हिम्मत नहीं छोड़ते! सच ही आप यह सहन नहीं कर सकतीं! कुमारी केट के साथ चली जाओ—अब जाओ!" नर्स ने अपनी बहुत ज्यादा मातृत्वपूर्ण आवाज़ में कहा।

"हाँ एलिस, श्रीमती जॉयस ठीक कह रही हैं। तुम चलो—तुम इस तरह सिर्फ अपने को बीमार कर रही हो। सब ख़त्म हो गया है, तुम अब कुछ नहीं कर सकतीं! ओह, चलो!' श्रीमती अर्न की बहन ने विनती की, वह उत्तेजना और घबराहट से काँप रही थी।

कुछ ही पहले डॉक्टर ग्राहम ने एडवर्ड अर्न की नब्ज पर से अपनी पकड़ छोड़ दी थी और निराशापूर्ण ढंग से भौंहे हिलाई जिसका मतलब था मौत।

नर्स ने मौके के हिसाब से लाचारी का इशारा किया। छोटी साली ने अपने हाथों में मुँह छिपा लिया। पत्नी ज़ोर से चीखी जिससे बाकी सब लोग हिल गए—वह पलंग पर पड़े मृत पति के ऊपर गिर पड़ी। वह वहीं पड़ी रही, उसकी चीखें भयानक थीं, उसका पूरा शरीर सिसकियों से हिल रहा था।

तीनों उस पर तरस खा रहे थे, पर समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या करें। नर्स अपने हाथ मोड़ती हुई डॉक्टर की तरफ उसके निर्देश के लिए देखने लगी। डॉक्टर पलंग के सिरहाने उँगलियों से ड्रम बजाता रहा। युवती डरी हुई-सी बहिन के कन्धे को सहलाती रही जो उसके स्पर्श के नीचे उठ गिर रहा था।

"जाओ! चले जाओ!" उसकी बहिन बराबर कहती रही। उसकी आवाज़ थकान और भावावेग से भर्रा रही थी।

आखिर नर्स ने फुसफुसाकर कहा, "मिस केट, उन्हें अकेला छोड़ दो। शायद वे अपने आप सबसे अच्छी तरह सँभल पाएँगी।"

उसने लैम्प धीमा किया, जैसे दृश्य पर पर्दा डाल रही हो। एलिस कोहनी पर टिककर ऊँची हुई, भावनाओं से लाल चेहरे पर आँसुओं के दाग थे।

"क्या? गए नहीं?" उसने सख़्ती से कहा, "चली जाओ, केट, चली जाओ। यह मेरा घर है। मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, मैं किसी को नहीं चाहती—मैं अपने पति से बात करना चाहती हूँ। मुझे एक घण्टा—आधा घण्टा—पाँच मिनिट दो!"

उसने विनती करते हुए डॉक्टर की तरफ बाँहें फैलाईं।

"अच्छा"...डॉक्टर ने जैसे अपने आप से कहा।

उसने दोनों औरतों को हट जाने का इशारा किया, और खुद भी उनके पीछे गलियारे में निकल आया। उसने आदेशात्मक ढंग से कहा, "अभी वक्त है, जाकर कुछ खा लो। हमें इसको सँभालने में मुश्किल होगी। मैं ड्रेसिंग रूम में इन्तज़ार करूँगा।"

डॉक्टर ने पलंग पर पड़ी औरत को देखा, कन्धे उचकाए और साथ वाले कमरे मे चला गया। पर बीच का दरवाज़ा बन्द नहीं किया। वह आग के पास आरामकुर्सी खींचकर बैठा और आँखें बन्द कर ली। एडवर्ड अर्न के मामले का व्यावसायिक पहलू पूरी रुचिपूर्ण उलझनों के साथ सामने आ गया।

एलिस अनजाने में ही डॉक्टर तथा नर्स दोनों के व्यावहारिक रुख से नाराज थी। उनकी पूरी दया के बावजूद वह अपने पति में उनकी वैज्ञानिक रुचि को जानने के कारण गुस्सा थी, क्योंकि उनके लिए उसका पति सिर्फ एक अजीब और उलझा हुआ केस था, आज जब उस पर आघात हो ही गया तो उसे वे दोनों हत्यारे लग रहे थे। उसकी एक इच्छा थी जो वह अपने अन्धे और विचारहीन दुःख के कारण बिना शर्म के पूरी ईमानदारी से सबके सामने कह रही थी—अपने मृत पति के साथ अकेली रहना चाहती थी, उनकी घृण्य मौजूदगी से छूटना चाहती थी!

वह डॉक्टर की धीमी मर्दानी आवाज़—नर्स के आमतौर पर लोगों से तारीफ पाने के लिए अपनाए जाने वाले अपनेपन—छोटी बहिन की बचकानी तसल्ली (क्योंकि उसने न प्यार किया था न शादी अतः दुख क्या है जानती नहीं थी)—से थक चुकी थी। उनकी सहानुभूति उसे चोट पहुँचा रही थी, उठाने की कोशिश में अपने शरीर पर उनके हाथों का स्पर्श उसे नस नस में डंक सा चुभो रहा था।

उनके जाने पर तसल्ली की साँस लेकर उसने अपना सिर तकिए में गड़ा लिया और स्थिर होकर पति से सटकर लेटी रही।

उसकी सिसकियाँ थम गईं।

लैम्प झपककर बन्द हो गया। लौ लपकी और बुझ गई। उसने सिर ऊँचा

किया फिर असहाय ढंग से अपने चारों ओर देखा, फिर दुबारा झुकी और मृत आदमी के कान के पास होंठ लगा दिए।

फुसफुसाकर बोली, ''एडवर्ड, प्रिय एडवर्ड! तुम मुझे क्यों छोड़ गए? प्रिय, क्यो? मै तुम्हारे बिना नहीं रह सकती--तुम तो जानते हो। मैं अभी जवान हूँ। हमारी शादी को सिर्फ एक साल हुआ है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह रिश्ता एक साल के लिए ही है। 'हम मृत्यु तक अलग नहीं होंगे!' हाँ, यही कहते हैं, पर कोई इस बारे में तो सोचता भी नहीं है। मैं, तुम्हारे साथ मरना चाहती थी!

''नहीं—नहीं--मैं नहीं मर सकती—मुझे अपने बच्चे के पैदा होने से पहले मरना नहीं चाहिए। तुम उसे कभी नहीं देख पाओगे। क्या तुम देखना नहीं चाहते? नही? ओह एडवर्ड, बोलो! कुछ तो बोलो प्रिय, एक शब्द—एक छोटा सा शब्द! एडवर्ड! एडवर्ड! क्या तुम यहाँ हो ? भगवान के लिए मुझे जवाब दो, जवाब दो! ओह प्रिय, मै इन्तज़ार करते करते थक गई हूँ। प्रियतम, सोचो। कितना कम समय है। उन्होने मुझे सिर्फ आधा घण्टा दिया है। आधा घण्टे में वे आकर तुम्हें दूर ले जाएँगे--वहाँ जहाँ मैं तुम तक नहीं आ सकती—अपने सारे प्यार के बावजूद नहीं आ सकती। मैने वह जगह देखी है--सिर्फ एक बार देखी है। कब्रों से भरी वह जगह बड़ी अकेली है, वहाँ छोटे-छोटे पेड़ों पर बराबर लन्दन की गन्दी बरसात होती रहती है।...गैस के लैम्प सब तरफ जलते रहते हैं।...पर जहाँ कब्र होती है वहाँ बड़ा अन्धेरा होता है सब जगह एक-सा लम्बा स्लेटी पत्थर होता है। तुम वहाँ कैसे रह सकते हो?--अकेले—बिल्कुल अकेले--मेरे बिना?

''तुम्हें याद है एडवर्ड, हमने क्या कहा था—कि हममें से जो भी पहले मरेगा, वह आत्मा रूप में वापस आकर दूसरे का ध्यान रखेगा? मैंने तुमसे और तुमने मुझसे वायदा किया था। हम कैसे बच्चे थे! मौत वह नहीं है जो हमने सोची थी। उस वक्त यह कहने में हमें अच्छा लगा था।

अब कुछ नहीं है—कुछ नहीं--उससे भी बुरा! मुझे तुम्हारी आत्मा नहीं चाहिए—न मै उसे देख सकती हूँ न महसूस कर सकती हूँ--मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, मैं चाहती हूँ तुम्हारी आँखें मुझे देखें, तुम्हारे होंठ मुझे चूमें।

उसने पति की बाँहें उठाई और अपनी गरदन के इर्दगिर्द लपेट ली और वहीं लेटकर बड़बड़ाती रही, ''ओह, मुझे चिपटा लो, अगर कर सको तो मुझे प्यार करो। क्या मैं नफरत के लायक हूँ? यह मैं ही तो हूँ ये तुम्हारी बाँहें हैं...''

साथ वाले कमरे में डॉक्टर कुर्सी पर हिला। आवाज़ से वह अपने सपने से जाग गई, उसने एक मृत बाँह को अपनी गरदन से हटाया और दुखी होकर कलाई पकड ली।

''हाँ मैं इसे अपने आसपास लपेट सकती हूँ, पर मुझे इसे पकड़कर रखना होगा। यह ठंडी है—इसे किसी की चिन्ता नहीं है। ओह प्रिय, तुम्हे चिन्ता नहीं है।

तुम अब ज़िन्दा नहीं हो। मैं तुम्हें चूमती हूँ पर तुम मुझे नहीं चूम रहे। एडवर्ड! एडवर्ड! ओह, भगवान् के लिए मुझे एक बार चूमो। सिर्फ एक बार!

नहीं नहीं इससे नहीं होगा—यह काफी नहीं है! यह कुछ नहीं है! तुम मेरे लिए वापस आ जाओ, मुझे तुम पूरे चाहिए...मैं क्या करूँ? मैं बहुत बार प्रार्थना करती हूँ...आह अगर कोई ईश्वर है और वह प्रार्थना सुनता है तो वह मेरी प्रार्थना का जवाब दे--मेरी एकमात्र प्रार्थना का—मैं फिर कुछ नहीं माँगूँगी—तुम्हें मुझको लौटा दे। जैसे तुम थे--जैसे तुमको मैं प्यार करती थी—मैं तुम्हें पूजती थी! उसे सुनना होगा। मेरे प्रभु, मेरे प्रभु, यह मेरा है—मेरा पति, मेरा प्रिय—इसे मुझे लौटा दो!"

"आधा घण्टे से शव के साथ अकेला छोड़ा हुआ है! यह ठीक नहीं है!"

सीढ़ियों के ऊपर से नर्स की बड़बड़ाहट सुनाई दी। वह वहाँ पिछले कुछ मिनिट से खड़ी थी। डॉक्टर वहीं आ गया।

"चुप, मिसेज जोयेस? मैं अब उसके पास जा रहा हूँ।"

उसने धीरे से दरवाजा खोला पर वह चरमराया, फिर वह अन्दर चला गया। मिसेज़ अर्न चीखी, "क्या है? क्या है? डॉक्टर, डॉक्टर! मुझे मत छुओ। या मैं भी मरूँगी या इसे जिन्दा होना होगा!"

"क्या तुम अपने को मारना चाहती हो, श्रीमती अर्न?" डॉ. ग्राहम ने आगे आते हुए सख्ती से कहा, "यहाँ से चलो!"

"मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूँ कि वह मर चुका है। एक घण्टा पहले वह मर गया था! महसूस करो, ठंडा हो गया है!" वह मुँह नीचे किए पड़ी थी, डॉक्टर ने उसे उठाना चाहा, तभी उसका हाथ मृत आदमी के गाल से छू गया—वह ठंडा नहीं था! उसका हाथ फौरन नब्ज़ की तरफ गया।

"रुको!" वह बेहद उत्तेजित होकर चिल्लाया, "श्रीमती अर्न, अपने पर काबू रखो!"

पर श्रीमती अर्न बेहोश होकर पलंग की दूसरी तरफ गिर गई थी। फौरन उसकी बहन को बुलाया गया ताकि वह उसका ध्यान रखे और जिस आदमी को वे मृत घोषित कर चुके थे, वह फिर से हल्की साँस लेता हुआ, अनिच्छा से कराहता सा, फिर से जीवन की ओर खींच लिया गया था।

II

एस्थर ग्राहम ने पूछा, "एलिस, तुम हमेशा काले कपड़े क्यों पहनती हो? मैं तो नहीं जानती कि तुम्हारे यहाँ कोई शोक है!"

वह डॉक्टर ग्राहम की इकलौती बेटी और श्रीमती अर्न की एकमात्र सहेली

थी चेल्सिया के घर की उदास सी बैठक मे वह श्रामती अर्न के साथ बठी थी। वह चाय के लिए आई थी। एक वही थी जो कभी चाय के लिए आती थी।

वह मुँहफट, रूखी पर दयालु होते हुए भी, कभी-कभी बड़ी अनुपयुक्त बात कह देती थी। छः साल पहले श्रीमती अर्न एक घण्टे के लिए विधवा हो गई थी। उसके पति किसी भयानक बीमारी के कारण मर गए थे और एक घण्टा मृत पडे रहे। तभी सहसा वे जैसे नींद से जागे। छः हफ्तों तक उनकी सेवा करने के बाद इस झटके से वह मरने वाली हो गई थी। एस्थर ने यह सब अपने पिता से सुना था। वह श्रीमती अर्न से उनके बच्चे के पैदा होने के बाद ही मिली थी। उसके पति की बीमारी और वे दुखदाई परिस्थितियाँ तब तक उम्मीद थी कि भुलाई जा चुकी थी, उसके प्रश्न का कोई जवाब उसके सामने बैठी पीली सी औरत ने नहीं दिया। उसकी निस्तेज आँखें आग की हरी नीली नाचती लपटों पर टिकी हुई थीं। उसने पॉच मिनिट तक श्रीमती अर्न के दुबारा बातचीत शुरू करने का इन्तज़ार किया उसके बाद उसका अधैर्य उस पर हावी हो गया।

उसने कहा, "कुछ तो बोलो एलिस!"

श्रीमती अर्न ने कहा, "एस्थर, मुझे माफ करना! मैं सोच रही थी।"

"क्या सोच रही थी?"

"मैं नहीं जानती।"

"नहीं, तुम नहीं जानती होगी। जो लोग बैठकर आग को घूरते रहते है वे सचमुच कुछ नहीं सोचते। वे सिर्फ चिन्ता करके अपने को बीमार करते रहते हैं और यही तुम कर रही हो। तुम किसी चीज़ में रुचि नहीं लेती, तुम कभी बाहर नही जातीं—मुझे पक्का पता है कि तुम आज घर से बाहर नहीं निकली होगी?

"नहीं—हाँ—नहीं। इतनी ठंड है।"

"अगर तुम सारा दिन घर में बैठी रहोगी, तो तुम्हें निश्चित रूप से ठंड लगेगी, और तुम बीमार पड़ोगी। ज़रा अपने को देखो!"

श्रीमती अर्न उठी, चिमनी के ऊपर रखे इटालियन शीशे में अपने को देखने लगी। वह ईमानदारी से इसके पीलेपन को दिखा रहा था। उसके काले बाल और ऑखें, उसकी लम्बी बरौनियाँ, उसके नथुनों की तीखी बनावट, उसकी कोमल कमान जैसी भौंहें जो एक पतली काली लकीर जैसी और इतनी साफ थीं कि प्रायः अस्वाभाविक लग रही थीं।

उसने विश्वास से कहा, "हाँ, मैं बीमार लगती हूँ।"

"कोई ताज्जुब नहीं। तुम अपने को जीते जी दफनाए हुए हो।"

"कभी-कभी मुझे सचमुच लगता है कि मैं कब्र में रह रही हूँ। मैं छत की तरफ देखती हूँ तो मुझे लगता है यह मेरे ताबूत का ढक्कन है।"

मिस ग्राहम ने आपत्ति की। श्रीमती अर्न की छोटी बेटी की ओर इशारा करते

हुए कहा, ऐसी बाते मत करो. मै साचती हू डाली की ख़ातिर तुम्हे ऐसी अस्वस्थ्य बाते नहीं सोचनी चाहिए। उसके लिए तुम्हें हमेशा इस हाल में देखना अच्छा नही है।

दूसरी थोड़ी जीवन्तता के साथ बोली, "ओह एस्थर, मुझे डाँटो मत! मैं आशा करती हूँ कि मैं अपनी बेटी के लिए अच्छी माँ हूँ।"

"हाँ, तुम आदर्श माँ हो—और आदर्श पत्नी भी। पिताजी कहते हैं कि तुम जैसे पति का ध्यान रखती हो वह आश्चर्यजनक है, पर तुम्हें नही लगता कि तुम्हे अपने लिए थोड़ा खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए? क्या तुम ऐसी मनःस्थिति को बढ़ावा नहीं देती? क्या वात है? क्या यह इस घर की वजह से है?"

उसने अपने चारों ओर देखा—ऊँची छत, भारी बेलबूटेदार पर्दे, ऊँची ऊँची चीनी की आलमारियॉ, दीवारों पर लगी ओक की परत—उसे एक उपेक्षित अजायबघर की याद दिला रहा था। उसकी आँखें सबसे दूर के कोनों की तरफ गई, जहाँ हल्का धुँधलका उतर रहा था, जो आलमारी के दरवाजों के शीशे में चमक रहा था—फिर उसने ऊँची पतलो खिड़कियों की तरफ देखा—फिर वापस उसकी नजर शोक के कपडो मे लिपटी, आग के पास सहमी बैठी औरत की तरफ गई।

उसने तीखे स्वर में कहा, "तुम्हें ज्यादा बाहर जाना चाहिए।"

"मुझे—पति को छोड़ना अच्छा नहीं लगता।"

"ओह, मैं जानती हूँ कि वे अभी नाज़ुक हैं। पर फिर भी क्या वे तुम्हें उन्हे छोड कर जाने की अनुमति बिल्कुल नहीं देते? क्या वे खुद भी कभी बाहर नही जाते?"

"ज्यादा नहीं!"

"और तुम्हारे पास कोई पालतू जानवर भी नहीं है! यह बड़ी अजीब बात है। मैं उस घर की कल्पना नहीं कर सकती जहाँ जानवर न हों!"

श्रीमती अर्न ने उदास होकर कहा, "हमारे पास एक कुत्ता था, पर वह रोता रहता था, तो हमें दे देना पड़ा। वह एडवर्ड के पास नहीं जाता था...पर कृपया यह मत सोचना कि मैं दुखी हूँ! मेरे पास मेरी बच्ची है!" उसने अपने घुटने पर टिके भूरे बालों वाले सिर पर हाथ रखा।

मिस ग्राहम भौंहों में बल डालती हुई उठकर खड़ी हो गई।

"ओह, तुम बहुत ख़राब हो!" वह बोली, "तुम बिल्कुल एक बच्चे वाली विधवा जैसी हो जो अपने अनाथ बच्चे का सिर थपथपाते हुए कहती है, बेचारी बिना बाप की।"

वाहर आवाज़ें सुनाई दीं। मिस ग्राहम ने अचानक बोलना बन्द कर दिया और दीवालगिरि पर रखे अपने दस्ताने वगैरह उठाने लगी।

श्रीमती अर्न ने कहा, "एस्थर, जाने की ज़रूरत नहीं है, मेरे पति हैं।"

दूसरी ने अपने दस्ताने मफलर में लपेटते हुए, अपने पैर घबराहट में आगे पीछे करते हुए कहा, "ओह लेकिन देर हो रही है।"

उसकी मेज़बान ने एक कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा, "अगर जाना ही है तो अपने दस्ताने अच्छी तरह पहन तो लो–पर अभी काफी जल्दी है।" बच्चे ने कहा, "मिस ग्राहम, कृपया मत जाओ।"

"मुझे जाना पड़ेगा। तुम अच्छी लड़की की तरह जाकर अपने पापा से मिलो।" "मैं नहीं चाहती।"

"डॉली, तुम्हें ऐसे नहीं बोलना चाहिए।" डॉक्टर की लड़की ने अनजाने भाव से कहा। वह अब भी दरवाज़े की तरफ देख रही थी।

मिसेज अर्न उठी और अपनी मित्र के बड़े चोगे को बन्द किया। पत्नी का सफेद उदास और आतंकित चेहरा लड़की के खुश चेहरे के बहुत पास आया तब उसने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए कहा, "एस्थर, तुम्हें मेरे पति पसन्द नहीं है? मैंने देखा है क्यों?"

"बकवास है!" दूसरी इतना जोर देते हुए बोली जैसे कोई सच्चा दोषारोपण किए जाने पर बचने को कहता हैं। "मुझे पसन्द हैं, सिर्फ–"

"सिर्फ क्या?"

"यह मेरी बेवकूफी है पर मैं–उनसे थोड़ा डरती हूँ।"

"एडवर्ड से डरती हो?" उसकी पत्नी धीरे से बोली। "पर क्यों?"

"मैं–मैं सोचती हूँ औरतें अपनी सहेलियों के पतियों से थोड़ा डरती ही है।–नापसंद होने पर वे पलभर में अपनी पत्नी से उनकी दोस्ती तुड़वा सकते है। मुझे अब सच में जाना चाहिए! अलविदा, बच्ची, मुझे एक चुम्बन दो! एलिस, घण्टी मत बजाओ कृपया नहीं! मैं अपने आप दरवाज़ा खोल सकती हूँ।"

"क्यों?" श्रीमती अर्न ने कहा। "हॉल में एडवर्ड है, मैंने उसे फोस्टर से बाते करते सुना है।"

"नहीं; वह पढ़नेवाले कमरे में चला गया है। विदा वैरागिन!" उसने मिसेज अर्न को एक छोटा सा चुम्बन दिया और कमरे से बाहर चली गई। बाहर आवाजे बन्द हो चुकी थीं। और उसे उम्मीद थी कि वह मिसेज़ अर्न के पति द्वारा रोके बगैर दरवाज़े तक पहुँच जाएगी। पर वह उसे सीढ़ियों पर मिला। मिसेज़ अर्न आग के पास की अपनी सीट से बड़े ध्यान से उनके बीच की बातचीत को सुन रही थी। एस्थर ने झिझकते हुए एक दो जवाब दिए, फिर उन दोनों के साथ-साथ सीढ़ी उतरने की आवाज़ सुनाई थी। कुछ पल बाद एडवर्ड कमरे में आया और जो कुर्सी उसकी मेहमान ने खाली की थी उस पर बैठ गया।

उसने टाँग पर टाँग रखी और कुछ नहीं बोला। वह भी नहीं बोली। उसके पास आते ही वह औरत कई साल बड़ी दिखने लगती थी। वह पीले रंग की थी

जबकि आदमी का रंग अच्छा था, उसकी चमड़ी चिकनी थी जबकि औरत के चेहरे पर ध्यान से देखने से बारीक झुर्रियों का जाल सा बना था। आदमी सुन्दर था। उसके माथे पर नरम, अच्छी तरह देखभाल किए गए भूरे बालों की लटें पड़ीं थी, और उसकी नीली आँखों में शान्त चमक थी जो कि औरत की आँखों की निराशापूर्ण आग के विपरीत थी। औरत के सिर पर काले घुंघराले बालों का ढेर था। अपने घुटनों पर कोहनी टिकाए और हाथों पर ठोड़ी रखकर बैठी उस औरत की भौहो मे हमेशा के असन्तोष के कारण गहरी लकीरें पड़ी थी : कोई नहीं बोला। जब मिसेज अर्न के सिर के पीछे लगी घड़ी में सात बजे, तब सफेद एप्रन पहने नर्स का आकार दरवाजे में दिखाई दिया, बच्ची उठी और बड़ी कोमलता से उसने माँ को चूमा।

मिसेज़ अर्न का माथा सिकुड़ गया, उसने पति की तरफ कुछ परेशानी से देखा और बच्ची से कहा, "अपने पिता से शुभ रात्रि कहो!"

बच्ची ने कहना मानते हुए, पिता की दिशा में "शुभ रात्रि" कहा।

"उन्हें चुम्बन दो!"

"नहीं, प्लीज़ नहीं!"

उसकी माँ ने उदासी और अचरज से उसकी तरफ देखा।

"तुम शैतान और बिगड़ी हुई बच्ची हो! उसे माफ करना एडवर्ड!" उसने कहा।

ऐसा लगा जैसे उसने सुना भी नहीं।

पत्नी ने कड़वाहट से कहा, "अगर तुम्हें कोई चिन्ता ही नहीं हैं--चलो बेटा।" उसने बच्ची का हाथ पकड़ा और कमरे से चली गई।

दरवाजे पर उसने आधा मुड़कर पति को नज़र टिकाकर देखा। वह एक अजीब सदिग्ध दृष्टि थी जिसमें प्यार और नफरत मिले जुले थे। फिर वह काँप उठी और धीरे से दरवाज़ा बन्द कर गई।

आराम कुर्सी पर बैठे आदमी के व्यवहार में कोई फर्क दिखाई नहीं दिया। उसकी आँखें अनदेखे ढंग से आग पर टिकी थीं, उसने अपने सामने खाली हाथ बॉधे हुए थें। यह मुद्रा हमेशा की लग रही थी। नौकर रोशनी लाया और खिडकी बन्द की, पर्दे खींचे और आवाज़ें करता हुआ आग को तेज़ करने लगा, पर उसके मालिक ने उसे डाँटा नहीं।

जहाँ तक फोस्टर का सवाल था, एडवर्ड अर्न एक आदर्श मालिक था, वह सिगार के डिब्बे रखता था पर पीता नहीं था, फिर भी उन्हें बार-बार खरीदता था ताकि उसके पास रखे रहें। उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह क्या खा पी रहा था, हालाँकि और भद्र पुरुषों की तरह वह भी शराब का अच्छा सग्रह रखता था--फोस्टर इस बारे में भी जानता था। वह कभी बीच में दखल नहीं देता था। कुछ गिनता नहीं था, कोई परेशानी नहीं देता था। फोस्टर ऐसी आसान नौकरी कभी छोड़ने वाला नहीं था। सच है कि उसका मालिक बहुत स्नेहपूर्ण नहीं था; वह

बहुत कम बात करता था, ऐसा लगता था कि वह यह भी नहीं जानता था कि वह है, पर वह शिकायतें भी नहीं करता था। भले ही आग जले या नहीं, वह फोस्टर की आज़ादी में किसी तरह की बाधा नहीं डालता था। मिसेज़ अर्न की नौकरानी एन से उसकी जगह बेहतर थी, क्योंकि उसे तो आधी रात को भी बुलाकर मालकिन का माथा यू-डी-कोलोन से धोने का या घण्टों आराम देने के लिए लम्बे बालों मे ब्रश करने को कहा जाता था। स्वाभाविक था कि फोस्टर और एन आपस में बातचीत करते थे और सनकी पत्नी तथा आदर्श पति के बीच तुलना करते थे।

III

मिस ग्राहम दिखावे वाली औरत नहीं थी। घर लौटकर उसने अपने पिता को चौंका-सा दिया, वे अपनी पढ़ने वाली मेज़ पर बैठे, गहरी रुचि के साथ अपनी रोग निदान की किताब पढ़ रहे थे कि सहसा उसने ज़ोर से अचानक उन्हें जकड़ लिया।

"यह उत्तेजना क्यों?" उसने मुस्कराते हुए घूमकर पूछा। वे अपनी उम्र के हिसाब से छोटे दिखते थे; उनका पतला बदन, साफ रंग, उनके हल्की सफेदी से युक्त बालों के प्रमाण को झुठलाता था, और थके हुए झुर्रियों के निशान उन ऑखो की चमक को महत्त्व देते थे।

उसने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम! सिर्फ यह बात है कि आप इतने अच्छे और जीवन्त लग रहे हैं। जब मैं अर्न परिवार से मिलकर आती हूँ मुझे हमेशा ऐसा ही लगता है।"

"फिर उनसे मिलने मत जाया करो।"

"पिताजी, मुझे वह बहुत पसन्द है, और आप जानते ही हैं कि वह यहाँ मेरे पास कभी आएगी नहीं, नहीं तो कुछ भी मुझे उस मकबरे जैसे घर जाने और चलते फिरते शव जैसे उसके पति से बात करने को मजबूर नहीं कर सकता था। आज मै उससे हाथ मिलाए बिना आने में कामयाब हो गई। मैं हमेशा ऐसा करने में कतराती हूँ। पर पिताजी, मैं चाहती हूँ कि आप उसे देख आएँ।"

"क्या वह बीमार है?"

"नहीं, मेरे ख्याल से बीमार तो नहीं है, पर उसकी आँखें मुझे परेशान करती है। और वह ऐसी अजीब बातें करती है! मुझे नहीं मालूम कि उसे आप की ज़रूरत है या पादरी की, पर उसके साथ कहीं कुछ गड़बड़ है! वह चर्च के अलावा कभी कहीं नहीं जाती ; न वह किसी से मिलने जाती है, न किसी को अपने पास बुलाती हे। कोई कभी अर्न परिवार को दावत के लिए नहीं बुलाता, मैं उन्हें दोष भी नहीं देती—मेज पर उस आदमी की मौजूदगी किसी भी पार्टी को खराब कर सकती है—और

वे कभी किसी को बुलाते नही वह हर समय अकेली होती है दिन पर दिन मै जाकर देखती हूँ कि वह आग के पास बैठी कुछ सोच रही है। अगर किसी दिन वह पागल हो जाए तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा। पिताजी, यह क्या है? उस घर की क्या ट्रेजेडी है? यह मुझे पक्का विश्वास है कि कुछ है ज़रूर। हालाँकि मैं सालो से उस औरत की पक्की सहेली हूँ फिर भी मैं उसके बारे में सड़क के अनजान आदमी से ज्यादा कुछ नहीं जानती।''

डॉ. ग्राहम ने कहा, ''वह अपने रहस्य आलमारी में सुरक्षित रखती है। इसके लिए मैं उसकी इज्जत करता हूँ। और कृपा करके ट्रेजेडी के बारे में बकवास मत करो। एलिस अर्न सिर्फ बीमार है—वक्त की बीमारी है। और वह बहुत धार्मिक औरत है।''

''पता नहीं वह मि. ब्लीग से उस घृण्य पति के बारे में शिकायत करती है या नहीं। वह हमेशा उन्हीं के उपदेश के समय जाती है।''

''घृण्य?''

''हाँ घृण्य!'' मिस ग्राहम सिहर उठी। ''मैं उसे सहन नहीं कर सकती। मै उसके ठंडे मेंढक जैसे हाथों और मछलियों जैसी आँखों को देख भी नहीं सकती। उसकी वह खाली सी मुस्कान मुझे झुलसा देती है। पिताजी, ईमानदारी से बताना, क्या आपको वह पसन्द है?

''बेटी, मैं मुश्किल से उसे जानता हूँ! उसकी पत्नी को मैं बचपन से जानता हूँ, मैं तब कॉलेज का छात्र था। उसके पिता मुझे पढ़ाते थे। मैं छह साल पहले तक उसके पति को जानता भी नहीं था। तब उसने पति की गम्भीर बीमारी में मुझे इलाज के लिए बुलाया था। शायद वह इस बारे में बात नहीं करती। नहीं? वह बड़ी अजीब बात थी। मैं अब भी नहीं बता सकता कि वह कैसे ठीक हुआ। तुम लोगों से बात मत करना, क्योंकि इससे मेरी इज्ज़त पर फर्क पड़ेगा, पर मैंने उसे ठीक नहीं किया। मै कभी इस बारे में समझ ही नहीं पाया। वह आदमी मर चुका था।''

एस्थर ने तिरस्कारपूर्वक कहा, ''अब भी वह मरा ही समझो। मैंने अपने जीवन मे उसे कभी दो-चार वाक्यों से ज्यादा बोलते नहीं सुना।''

''हालाँकि वह अपने वक्त में ऑक्सफोर्ड का सबसे अच्छा आदमी था, वह बहुत बुद्धिमान जवान था—लड़कियाँ उसके पीछे भागती थीं, एलिस उससे शादी करने को पागल थी!''

''उस बेजान आदमी से प्यार करती थी? वह उस घर की तरह है जिसमे कोई मुर्दा हो, और जिसकी सब खिड़कियाँ बन्द हों!''

''एस्थर, ऐसी विकृत—बेवकूफी की बातें मत करो! तुम उस आदमी के प्रति ज़रा ज्यादा ही सख्त हो! उसमें क्या बुराई है? वह एक मामूली, आम ठंडी मिट्टी का बना इन्सानियत का उदाहरण है, थोड़ा बेवकूफ, थोड़ा स्वार्थी—जो आदमी गम्भीर

बीमारी से निकलता है वह ऐसा हो ही जाता है—पर कुल मिलाकर वह एक अच्छा पति, पिता और एक अच्छा नागरिक है।

एस्थर ने कहा, "हाँ, और उसकी पत्नी उससे डरती है। बच्ची उससे नफरत करती है।"

डॉ. ग्राहम तेज़ी से बोले, "बकवास! बच्ची बिगड़ी हुई है। इकलौते बच्चे ऐसे हो जाते हैं--और उसकी माँ को कुछ ताकत की दवाइयों तथा स्थान परिवर्तन की ज़रूरत है। जब मेरे पास वक्त होगा मैं जाकर उससे बात करूँगा। जाओ, जाकर कपड़े बदलो। क्या तुम भूल गई कि आज रात को जॉर्ज ग्राहम खाने के लिए आ रहा है?

उसके जाने के बाद डॉ. ग्राहम ने अपने ब्लॉटिंग पैड पर एक कोने में लिखा, "याद से—जाकर श्रीमती अर्न को देखना है।" और बात को अपने दिमाग से हटा दिया।

जॉर्ज ग्राहम डॉक्टर का भतीजा था, वह लम्बा दुबला पतला, दुर्गम जवान आदमी जो सनकी और तर्कहीन बातें करता था पर उसका व्यवहार इतना कोमल था कि वह विश्वास जगाता था। वह एस्थर से कई साल छोटा था। वह उसकी काम के दौरान देखी सुनी कुछ वैज्ञानिक, कुछ रोमांटिक बातों को सुनना बहुत पसन्द करती थी।

वह बड़े रहस्यात्मक ढंग से कहता, "ओह मैं ऐसी-ऐसी अजीब चीज़ें देखता हूँ! एक अजीब छोटी विधवा है।"

उस दिन रात के खाने के बाद एस्थर के पिता के पढ़ने वाले कमरे में चले जाने के बाद जब वे दोनों हमेशा की तरह बैठे थे तो पूछा, "मुझे उस छोटी विधवा के बारे में बाताओ!"

वह हँसा।

फिर सोचता हुआ बोला, "तुम मेरे पेशे से जुड़े अनुभवों को सुनना चाहती हो? उसमें मुझे सचमुच बड़ी रुचि है। वह अपने आप में एक अजीब मनोवैज्ञानिक केस है। मैं चाहता हूँ कि काश वह मुझे एक बार फिर मिले!"

"वह तुम्हें कहाँ मिली और उसका नाम क्या है?"

"मैं उसका नाम नहीं जानता, न जानना चाहता हूँ, वह मेरे लिए इन्सान नही, एक केस है। मुझे उसका चेहरा भी याद नहीं है। क्योंकि मैंने उसे शाम के धुँधलके में देखा था। पर मुझे उसकी बातचीत से लगा था कि वह चेल्सिया में कहीं रहती थी, क्योंकि वह बाँध पर सिर पर एक लेस की सी चीज़ पहन कर आई थी, मै सोचता हूँ वह कहीं दूर रहने वाली नहीं हो सकती।

एस्थर फौरन ध्यान देने लगी। वह बोली, "कहते जाओ।"

जॉर्ज ग्राहम बोला, "यह तीन हफ्ते पहले की बात हैं। मैं रात के 10 बजे

बाध के सहारे चल रहा था। कुछ चेयनवॉक और नदी के बीच के बगीचे को तुम जानती हो ना, मैं उसमें से गुज़र रहा था कि मुझे किसी के बुरी तरह सिसकने की आवाज सुनाई दी। मैंने देखा कि एक औरत अपने हाथों में अपना सिर थामे बैठी रो रही थी। मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने सोचा कि शायद मैं उसके लिए कुछ कर सकूँ, उसे पानी का गिलास या कुछ ला दूँ। मैंने उसे चरित्रहीन समझा—काफी अँधेरा था। तो मैंने उससे नरमाई से पूछा कि क्या मैं उसके लिए कुछ कर सकता हूँ, और तभी मेरी नज़र उसके हाथों पर पड़ी—वे बहुत सफेद गोरे और हीरों से भरे थे।"

एस्थर ने कहा, "तुम्हें अफसोस हुआ होगा कि तुम क्यों बोले।

उसने सिर उठाकर कहा, "मेरे ख्याल से वह हँसी थी—क्या तुम मुझसे यहाँ से चले जाने को कहोगे?"

"उसने तुम्हें पुलिसवाला समझा?"

"शायद—अगर उसने कुछ भी सोचा होगा—पर वह स्तब्ध थी। मैंने उससे अपने लौटने तक रुकने को कहा, और भागा हुआ कोने की दवाइयों वाली दूकान तक गया, वहाँ से सूँघने वाली दवा की बोतल लाया। उसने मुझे धन्यवाद दिया और उठकर चले जाने की थोड़ी कोशिश की। वह काफी कमज़ोर लग रही थी। मैंने उसे बताया कि मैं डॉक्टर हूँ और उससे बात करनी शुरू की।"

"और उसने तुमसे?"

"हाँ, बिल्कुल सीधे सीधे। तुम नहीं जानतीं कि औरतें हमेशा डॉक्टर को अपने जैसा इन्सान न मानकर कुछ अलग ही मानती हैं। यह आदमी के लिए बहुत प्रशंसनीय नहीं होता पर वह सब कुछ जान लेता है जो वैसे नहीं जान सकता। उसने अपने बारे में सब कुछ बताया—हालाँकि वह कुछ छिपाकर कह रही थी। इससे उसे शान्ति मिली—तसल्ली हुई—ऐसा लगता है उसने सालों से किसी से कुछ बात नहीं की थी।"

"एक अजनबी को सब बताया!"

"एक डॉक्टर को, आधा वक्त तो उसे पता भी नहीं था कि वह क्या कह रही थी। वह जैसे दौरे में थी। उसने क्या क्या बकवास की! उसने कहा कि वह एक ऐसी औरत थी जिस पर किसी आत्मा का परछाँवा था, उसे बदकिस्मती का अभिशाप था। वह किसी भयानक पारलौकिक दुर्घटना का शिकार थी, मैंने उसे बोलने दिया। वह इस सच्चाई को पूरी तरह मान रही थी कि उस पर कोई बदकिस्मती आ गई थी। वह बड़ा दुःखदाई था। फिर थोड़ी ठंड बढ़ गई—वह काँप रही थी—मैने उसे घर जाने को कहा। वह सिहर उठी; वह बोली "तुम्हें नहीं मालूम कि मैं घर से बाहर कितनी कम दुखी थी। मैं यहाँ बाहर हूँ! मैं साँस ले सकती हूँ, मैं जी सकती हूँ—मेरे लिए दुनिया यहीं जीवित है—मैं कब्र में रहती हूँ—ओह मुझे यही रहने दो।" वह निश्चित रूप से घर जाने में डर रही थी।

"शायद घर में उसे कोई सताता था।"

"शायद—पर उसका पति भी नहीं था, मर चुका था। वह उसे बहुत प्यार करती थी। उसने कहा—"

"क्या वह सुन्दर थी?"

"सुन्दर! मैंने देखा भी नहीं था, मुझे ध्यान करने दो! ओह हाँ, मेरे ख्याल से वह सुन्दर थी—नहीं, अब जब मैं सोचता हूँ, वह बहुत थकी और मुरझाई थी, उसे सुन्दर नहीं कह सकते।"

एस्थर मुस्कराई।

"हम एक घण्टा साथ बैठे रहे, फिर चेल्सिया के चर्च में ग्यारह के घण्टे बजे, वह उठी, बड़े सहज से अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसने अलविदा कहा, मानो हमारा मिलना और बातचीत साधारण से अलग नहीं थी। रास्ते पर जैसे एक मरा हुआ पत्ता चला जाता है वैसे ही वह चली गई।"

"तुमने उससे पूछा नहीं कि क्या तुम दुबारा मिल सकते हो?"

"वह एक तुच्छतापूर्ण फायदा उठाना होता।"

"तुम उसे घर तक तो छोड़ ही सकते थे।"

"वह ऐसा नहीं चाहती थी।"

एस्थर ने सोचकर कहा, "तुम कहते हो वह एक अच्छे घर की औरत थी। उसने क्या पहना हुआ था?"

उसने—मेरे ख्याल से शोक के प्रतीक काले कपड़े पहने थे। उसके काले घुँघराले बाल थे। उसकी भौंहे बड़ी पतली और घुमावदार थीं—धुँधलके में भी मैंने इतना देखा था।"

अचानक एस्थर उसे मेंटलपीस तक ले गई और बोली, "क्या वह इस तस्वीर जैसी थी?"

"शायद!"

"एलिस! ओह, यह नहीं हो सकता—वह विधवा नहीं है, उसका पति ज़िन्दा है—क्या तुम्हारी मित्र के कोई बच्चा था?"

"हाँ, उसने कहा था, एक"

"कितना बड़ा?"

"छः साल का, शायद उसने ऐसा ही कहा था। वह एक अनाथ बच्चे को पालने की जिम्मेदारी की बात कह रही थी।"

"जॉर्ज, क्या वक्त हुआ है" एस्थर ने अचानक पूछा।

"प्रायः नौ बजे हैं।"

"क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

"खुशी से। पर हम कहाँ जाएँगे?"

"सेन्ट एडेल्म तक! यहा से पास ही हे। वहा आज रात देर मे एक खास देर शाम की प्रार्थना है और मिसेज़ अर्न वहाँ ज़रूर आएगी।"

"आह एस्थर—जिज्ञासा!"

"नहीं—सिर्फ जिज्ञासा नहीं। तुम नहीं समझते कि अगर तुमसे इस तरह बात करने वाली मेरी सहेली एलिस थी तो यह मामला गम्भीर है? मैं काफी समय से उसे बीमार जान रही थी पर इतनी!"

सेंट एडेल्म चर्च में एस्थर ग्राहम ने एक खम्भे के पास घुटने टिकाए पूरी भक्ति के साथ बैठी औरत की ओर इशारा किया। वह घुटनों पर से उठी और उसने अपना भावपूर्ण चेहरा वेदी की तरफ उठाया जहाँ रेवरेन्ड शल्फ ब्लीग उपदेश दे रहे थे। जॉर्ज ग्राहम ने अपनी बहिन के कन्धे पर हाथ रखकर उसे श्रद्धालुओं के बीच से बाहर की ओर आने का इशारा किया।

वह बोला, "यही वह औरत है!"

IV

छह हफ्ते के बाद एक दिन डॉ. ग्राहम की नज़र अपने पैड पर लिखे नोट पर पड़ी, "मिसेज़ अर्न को देखने जाना है।" उनकी बेटी शहर से बाहर गई हुई थी। उसके जाने के बाद से उन्होंने उस परिवार के बारे में कुछ नहीं सुना था। उन्होंने जाकर उससे मिलने का वायदा किया था। उन्हें थोड़ी सी ग्लानि हुई। एक हफ्ता और बीतने के बाद उन्हें अपने गुरु की बेटी के पास जाने का समय मिला।

टीट स्ट्रीट के कोने पर उन्हें मिसेज़ अर्न के पति मिले, वे रुक गए। एक डॉक्टर की पेशेवर व्यावहारिक सहानुभूति उसकी व्यक्तिगत पसन्द नापसन्द से स्वतन्त्र होती है, या होनी चाहिए, और उन्होंने जिस अच्छे ढंग से एडवर्ड अर्न का अभिवादन किया उन्हें वैसा ही अच्छा जवाब मिला।

ग्राहम ने कहा, "आप कैसे हैं अर्न? मैं आपकी पत्नी को देखने जा रहा था।"

"ओह, अच्छा!" एडवर्ड अर्न ने नम्रता से कहा। उसकी नीली आँखें डॉक्टर के चेहरे पर टिकीं और उस पल भर में भी डॉक्टर ने उस दृष्टि में एक असह्य खालीपन को महसूस किया। पहली बार उनमें ऐसे पति की पत्नी के प्रति एक तीव्र सहानुभूति की भावना जागी।

"आप शायद क्लब जा रहे हैं?—अ—अलविदा!" उन्होंने सहसा कहा। दुनिया भर की सबसे अच्छी इच्छा होते हुए भी एडवर्ड अर्न से बात करना उसे असम्भव लगता है। एडवर्ड ने नमस्कार की जगह अपना हाथ उठाकर हैट के सिरे पर लगाया, बहुत प्यारे ढंग से मुस्कराया और चला गया।

"वह सचमुच बहुत सुन्दर है" डॉक्टर उसे देखते रहे, वह बड़े ध्यान से, या कह सकते हैं, फिक्र के साथ सड़क पार करके चला गया। डॉक्टर उसकी फिक्र का कारण नहीं समझ पा रहा था। और फिर भी उससे बात करने पर ऐसा लगता है जैसे उँगलियों के कोरों से शक्ति निकलती जा रही है। जल्दी ही मैं भी एस्थर की तरह उसके बारे में भद्दी कल्पनाएँ करने लगूँगा। वह रही वो छोटी लड़की! जब वे चेयन वॉक को मुड़े तो वह लड़की अपनी नर्स के साथ दिखाई दी। वह इनका ध्यान खींचने के लिए बहुत जोर से हाथ वगैरह हिला रही थी। "कम से कम यह तो हर हाल में जीवन्त है।"

डॉक्टर ने पूछा, "तुम्हारी माँ कैसी हैं डॉली?"

बच्ची ने जवाब दिया, "ठीक हैं, धन्यवाद। वह रो रही हैं। मैंने उन्हें देखा तो उन्होंने मुझे भेज दिया। इसलिए मैं आ गई। उनके गाल लाल हो गए है।"

"भागो—भागो और जाकर खेलो!" डॉक्टर ने घबराहट में कहा। वे घर की सीढ़ियाँ चढ़े और धीरे से घण्टी बजाई।

फोस्टर ने नम्रता का नाटक करते हुए कहा, 'नहीं—' पर डॉक्टर को देखकर रुक गया। डॉक्टर और उनकी बेटी इस घर में विशेष मान रखते थे। "मिसेज अर्न आपसे मिलेंगी, सर।"

"मिसेज़ अर्न अकेली नहीं हैं?" उन्होंने प्रश्न किया।

"जी सर, अकेली हैं। मैं अभी चाय देकर आया हूँ।" सीढ़ियों के ऊपर के कमरे में खुले दरवाजे से धीमी आवाजें आ रही थीं। वे रुके, सुना, जबकि उनके पास खड़ा फोस्टर सिर्फ यह बोला, "मिसेज़ अर्न कई बार अपने आप से बातें करती है।"

अब डॉक्टर मिसेज़ अर्न की आवाज़ पहचाने। वह एक स्वस्थ समझदार औरत की आवाज़ नहीं लग रही थी। उन्होंने फौरन अपने आप को यूँ ही मिलने आने वाले की जगह एक डॉक्टर की पेशेवर जाँच के लिए तैयार किया।

उन्होंने फोस्टर से कहा कि मेरे आने की सूचना मत दो। और चुपचाप पीछे वाली बैठक में प्रवेश किया जो भारी पर्दे से उस कमरे से अलग की गई थी जिसमे मिसेज़ अर्न मेज़ पर एक खुली किताब लिये बैठी थी। वह शायद उसमें से कुछ ऊँची आवाज़ में पढ़ रही थी। अब उसने अपने चेहरे पर कसकर हाथ रखे हुए थे। और जब उन्हें चेहरे से हटाकर किताब के पन्ने उलटने शुरू किए तब उसके गालों की लाली के किनारे उँगलियों के दबाव के कारण सफेद दिख रहे थे।

डॉक्टर सोच रहे थे कि पता नहीं वह उन्हें देख भी रही है या नहीं क्योंकि उनकी तरफ आँखें होने पर भी वह उन्हें पहचान नहीं थी। वह पढ़ती जा रही थी। जब आवाज़ डॉक्टर के कानों तक आई तब उन्होंने जाना कि वह टूटे फूटे शब्दो मे बीच बीच में जोश के साथ जो पढ़ रही थी वह दफनाए जाने के समय पढा

जाता है।

"क्योंकि आदम की तरह सबको मरना है। सब मरते हैं! यह सब कुछ कह देता है! क्योंकि उसे शासन करना है...आखिरी दुश्मन जिसे नष्ट करना है वह मृत्यु है। अगर मृत व्यक्ति कभी उठे ही नहीं तो वे क्या करेंगे! मैं रोज़ मरती हूँ...! रोज नही, नहीं,...अच्छा होगा कि इसे ख़त्म किया जाए...मृत और दफनाया गया...दृष्टि से ओझल...दिमाग से ओझल...एक पत्थर के नीचे। मृत लोग लौटते नहीं हैं। चलो! इसे ख़त्म करो। मैं ताबूत पर मिट्टी की आवाज़ सुनना चाहती हूँ और तब मैं जानूँगी कि वह हो गया। "मांस और खून उत्तराधिकार नहीं छिपाते!" ओह यह मैंने क्या किया? क्या किया? क्यों इतनी तीव्रता से चाहा? क्यों उसके लिए इतनी ईमानदारी से प्रार्थना की? भगवान् ने मेरी इच्छा पूरी की—"

डॉक्टर ने पुकारा, "एलिस! एलिस!"

उसने ऊपर देखा, "जब यह दूषणीय दोष से परे होगा—धूल में धूल, राख मे राख, मिट्टी में मिट्टी—हाँ, यही है। मृत्यु के बाद चाहे कीड़े शरीर को नष्ट कर देते हैं—"उसने किताब एक ओर फेंककर सिसकते हुए कहा, "इसी का तो मुझे डर था। मेरे प्रभु! मेरे प्रभु! हमेशा के लिए वहाँ नीचे—अँधेरे में—! मैं यह सोच भी सहन नही कर पा रही थी! मेरा एडवर्ड! और इसलिए मैं बीच में आई...और प्रार्थना की...और तब तक प्रार्थना की...ओह, मुझे सजा मिली। माँस और खून उत्तराधिकार नहीं पा सकते! मैंने उसे वहाँ रोका—मैं उसे जाने देना नहीं चाहती थी...मैंने उसे रोका... प्रार्थना की...मैंने उससे ईसाई ढंग से दफनाए जाने नहीं दिया...ओह मैं कैसे जान सकती थी ..

डॉ. ग्राहम आगे आए और बोले, "एलिस, इसका क्या मतलब है? मैंने सुना कि स्कूलों की लड़कियाँ अपने आप शादी की पूजा करती हैं पर दफन की—"

उन्होंने अपना हैट नीचे रखा और सख्ती से कहा, "तुम्हें इन चीजों से क्या लेना देना है? तुम्हारी बच्ची बढ़ रही है—तुम्हारा पति ज़िन्दा है और यहाँ—"

एलिस अर्न ने बीच में रोककर तेज़ी से कहा, "और किसने उसे यहाँ रोका?" बिना किसी टिप्पणी के उसकी मौजूदगी के तथ्य को स्वीकार किया।

डॉक्टर ने जल्दी से जवाब में कहा, "तुमने, अपनी फिक्र और कोमलता से। मै मानता हूँ कि वह आधा घण्टा जब उसके दिल ने काम करना बन्द किया होगा तुम्हारे शरीर की गर्मी उसके शरीर की गर्मी को बनाए रही। जब हमने उसे मृत समझ लिया था तब तुमने उसके पास लेटकर उसे गर्माई दी। तुम उसकी सबसे अच्छी डॉक्टर थीं और उसे वापस हम तक लाईं।"

"हाँ, यह मैं थी—मैं ही थी—आपको बताने की जरूरत नहीं है।"

डॉक्टर ने खुशी खुशी कहा, "ओ, भगवान् का शुक्रिया करो उस किताब को हटा दो और मुझे थोड़ी चाय दो। मुझे बहुत ठंड लग रही है।"

"ओह डॉ. ग्राहम, मैं कितनी लापरवाह हूँ!" मिसेज़ अर्न बोली। अपनी नम्रता पर जानबूझकर किए गए आघात के जवाब में बोली। वह लड़खडाती हुई घण्टी तक गई और डॉक्टर के जानने से पहले बजा दी।

उसने घण्टी के जवाब में फोस्टर के आने पर शान्तिपूर्वक कहा, "एक और प्याला"। फिर वह अपने ऊपर अचानक पड़े दबाव के कारण काँपने लगी।

डॉ. ग्राहम ने खुशमिजाजी से कहा, "हाँ, बैठो और मुझे सब बताओ।" साथ-साथ वे बारीकी से उस पर नज़र रखे रहे।

उसने सादगी से कहा, "बताने को कुछ नहीं है," फिर सिर हिलाते हुए व्यर्थ ही ट्रे में रखे प्यालों की जगह बदलने लगी। "वह सब सालों पहले हुआ था। अब कुछ नहीं हो सकता। क्या आप चीनी लेंगे?"

डॉक्टर ने चाय पी और बातचीत करते रहे। वे दाँते के उन भाषणों के बारे मे बात करते रहे जिन्हें सुनने वह जाती थी, बच्चों की क्लासों के बारे में विस्तार से पूछते रहे। उसे इन विषयों में रुचि नहीं थी। एक विषय था जिसके बारे में वह बात करना चाहती थी, डॉक्टर देख पा रहे थे कि उसकी ज़बान पर प्रश्न काँप रहा था, वे उसे उस तरफ ले जाने की कोशिश करते रहे।

उसने दूसरे प्याले पर शान्तिपूर्वक वह बात स्वयं शुरू की। "चीनी, डॉ. ग्राहम? मै भूल गई। डॉ. ग्राहम मुझे बताइए कि क्या आप मानते हैं कि प्रार्थना—चाहे वह दुष्ट और विवेकहीन प्रार्थना हो—पूरी होती है?"

उन्होंने मक्खन लगा ब्रेड का एक और टुकड़ा लिया फिर जवाब दिया, "यह विश्वास करना ज़रा मुश्किल लगता है कि हर बेवकूफ जिसके पास प्रार्थना करने को वाणी है और बेवकूफी की माँग करने को दिमाग है, उसे सृष्टि की व्यवस्था मे दखल देने की इजाज़त होगी। अगर आदमी के पास कानूनन अपनी माँग का दूरगामी असर देखने की ताकत होती तो शायद हममें से बहुत कम दखल देने की सोचते।

मिसेज़ अर्न कराह उठी।

ग्राहम जानते थे कि वह अच्छी, चर्च जाने वाली महिला थी, और वे उसका विश्वास किसी तरह तोड़ना नहीं चाहते थे इसलिए और कुछ नहीं बोले, पर अन्दर ही अन्दर सोचने लगे कि उसकी परेशानी का कारण सेन्ट एढेल्म के पादरी जो उसके आत्मिक सलाहकार थे, उनकी रूढ़ व्याख्या और धार्मिक अन्धविश्वास तो नहीं थे। फिर उसने दूसरा प्रश्न पूछा।

वे बोले "क्या? क्या मैं भूतों में विश्वास करता हूँ? मैं मान जाऊँगा अगर तुम कहोगी कि तुमने एक भूत देखा है।"

वह कहती गई, "आप जानते हैं डॉक्टर, मैं हमेशा भूतों से—आत्माओं से—अनदेखी चीजों से डरती थी। मैं उनके बारे में पढ़ भी नहीं सकती थी। अगर कमरे में कोई

हो और मैं उसे देख न पाऊँ तो भी मुझे सहन नहीं होता था। मेरे कमरे में एक अवतरण टँगा था : भगवान, तुम मुझे देख सकते हो। जब मैं बच्ची थी तो उससे भी डरती थी, चाहे मैं कुछ बुरा करूँ या नहीं। पर अब," वह सिहर उठी, "मुझे लगता है कि भूतों से भी बुरी चीजें हैं।"

डॉक्टर ने हँसते हुए पूछा, "कैसी चीजें? सूक्ष्म शरीर?"

वह आगे झुकी और अपना गरम हाथ उनके हाथ पर रखा।

"ओह डॉक्टर, मुझे बताओ, अगर कोई आत्मा—हमारे जाने हुए शरीर के बिना—कोई शरीर—" उसकी आवाज़ फुसफुसाहट में बदल गई, कोई शरीर—अकेला—इस धरती पर—बिना आत्मा के फँस जाए?"

वह चिन्तापूर्वक उनके चेहरे को देख रही थी। वे इस गन्दे दृश्य से एक तरफ तो हँसना चाह रहे थे, दूसरी तरफ बेचैनी महसूस कर रहे थे। वे पूरी बातचीत को कुछ खुशगवार बनाना चाहते थे पर अचानक बात बदलकर उसे नाराज़ नहीं करना चाहते थे।

आखिर उन्होंने जवाब दिया, "मैंने ऐसे लोगों के बारे में सुना है जो शरीर और आत्मा को जोड़ नहीं पाते, पर मैं नहीं जानता कि व्यावहारिक रूप में ऐसा बँटवारा हो सकता है। और अगर हम इस सिद्धान्त को मान लें कि आत्माविहीन शरीर होता है तो न जाने इस दुनिया में ऐसे कितने अनमेल आदमी घूम रहे होंगे।"

उसकी करुण दृष्टि उनकी गलत हँसी के आघात से बचना चाह रही थी। उन्होंने अपनी जगह छोड़ी और सोफे पर उसके पास बैठ गए।

"बेचारी बच्ची! बेचारी लड़की! तुम बीमार हो। तुम बहुत उत्तेजित हो। क्या बात है? मुझे बताओ। उनके पूछने में पिता की-सी कोमलता थी जिसे उसने बचपन मे ही खो दिया था। उसने अपना सिर उनके कन्धे पर टिका दिया।

उन्होंने कोमलता से पूछा "क्या तुम नाखुश हो?"

"हाँ!"

"तुम बहुत अकेली हो। अपनी माँ या बहिन को अपने पास रहने के लिए बुला लो।"

वह दुखी होकर बोली, "वे नहीं आएँगे। वे कहते हैं, घर कब्र की तरह है। एडवर्ड ने तहखाने में अपना पढ़ने का कमरा बना लिया है। वह एक भयानक सा कमरा है, पर वह अपनी सब चीज़ें वहाँ ले गया है, और मैं वहाँ उसके पास नही जा सकती—नहीं जाऊँगी।"

"तुम गलत हो। यह उसकी एक सनक है। जल्दी ही वह थक जाएगा। तुम्हे और लोगों से मिलना चाहिए। यह दुःख की बात है कि मेरी बेटी भी गई हुई है। क्या आज कोई तुमसे मिलने आया?"

"अठारह दिन से किसी ने इस घर की चौखट में कदम नहीं रखा।"

डॉक्टर ने कहा, "हमें यह सब बदलना चाहिए। इस बीच तुम खुश रहने की कोशिश करो। तुम्हें भूतों और कब्रों के बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है—उदास रहने की ज़रूरत नहीं हैं—तुम्हारा पति है, बच्चा है—

"हाँ, मेरा बच्चा है।"

डॉक्टर ने उसे कन्धों से पकड़ा और अपने से थोड़ा दूर रखा। उन्हें लगा, उन्हे उसकी परेशानी का कारण मिल गया है—जो उनके विचार से ज्यादा साधारण है।

उन्होंने गम्भीरता से कहा, "एलिस, मैं तुम्हें बचपन से जानता हूँ। मुझे जवाब दो। तुम अपने पति को प्यार करती हो, करती हो ना?"

"हाँ!" उसने ऐसे जवाब दिया जैसे गवाही के कठघरे में खड़े होकर कोई बेकार का जवाब दे रही हो। फिर भी उन्होंने उसकी आँखों में एक उत्तेजना देखी। वह यही थी कि वे उस बात तक पहुँच गए हैं जिससे वह डरती है पर जिसे आगे लाना चाहती है।

"और वे तुम्हें प्यार करते हैं?"

वह चुप रही।

"जब तुम दोनों एक-दूसरे प्यार करते हो तो तुम्हें और क्या चाहिए? तुम इतने बेहूदे ढंग से क्यों कहती हो कि तुम्हारे पास सिर्फ एक बच्चा है?"

वह फिर भी चुप रही, और उन्होंने उसे हल्का सा झटका दिया।

"मुझे बताओ कि क्या तुम दोनों में कोई मतभेद हुआ है? क्या कोई रिश्तो मे ठंडापन—कोई दोनों में अस्थाई विच्छेद हुआ है?"

संकोची मिसेज अर्न ने जैसे ज़ोर से बेवकूफों की तरह हँसना शुरू किया उसके लिए डॉक्टर तैयार नहीं थे। उठकर उनके सामने खड़ी हो गई। ऐसा लगा कि उस एक पल को उसके शरीर का सारा खून उसके पीले गालों की तरफ दौड रहा था।

"ठंडापन? अस्थाई सम्बन्ध विच्छेद? अगर वही सब कुछ होता! ओह, क्या मेरे अलावा सब अन्धे हैं? हम दोनों के बीच पूरी दुनिया है! इस दुनिया और दूसरी का फर्क है!

वह फिर डॉक्टर के पास बैठ गई और उसके कानों में फुसफसाने लगी। उसके शब्द आत्मा के नरक से आती गरम हवा के समान थे।

"ओह डॉक्टर, मैं छः साल से यह सह रही हूँ, अब मुझे बोलना है। कोई और औरत वह नहीं सह सकती जो मैंने सहा है, और फिर भी ज़िन्दा हूँ! मैं उसे इतना प्यार करती थी, आप नहीं जानते मैं उसे कितना प्यार करती थी! वही मेरा अपराध था—

"अपराध?" डॉक्टर ने दुहराया।

"हाँ, अपराध! वह पाप था, क्या आप नहीं समझ रहे? पर मुझे इसी की सजा दी गई। ओह डॉक्टर, आप नहीं जानते मेरा जीवन क्या है! सुनिए! सुनिए! मुझे आपको बताना होगा। एक साथ रहना एक–शुरू में जब मैं कल्पना नहीं कर पाई थी, तब मैं अपनी बाँहों में उसे जकड़ लेती थी, वह सिर्फ सह लेता था–फिर मुझे ज्ञान हुआ कि मैं किसे चूम रही हूँ! वह एहसास एक जिन्दा औरत को पत्थर बनाने को काफी है–क्योंकि मैं जिन्दा हूँ, हालाँकि मैं कभी-कभी यह भूल जाती हूँ। हाँ, मैं ज़िन्दा औरत हूँ, जो कब्र में रहती है। सोचो यह क्या है? हर रात को यही सोचना कि सुबह मैं जिन्दा होऊंगी भी या नहीं, हर रात एक खुली कब्र मे पडे रहना–हर कोने में मौत की गन्ध पाना–हर कमरे में–मौत की साँस लेना–उसे छूना..."

दरवाजे के सामने वाला पर्दा हिला, एक गोल डण्डे ने उसे हटाया, रंगबिरंगी लाल टाँगों पर टिके एक गोल सफेद बण्डल ने झाँका और अपने सामने एक गोल घेरे को धकेला। बच्चे ने कोई आवाज़ नहीं की। मिसेज़ अर्न ने फिर भी उसे सुना। डॉ. ग्राहम के पास सोफे पर बैठी मिसेज अर्न तेज़ी से घूमी, अभी उनके गरम हाथ डॉक्टर के हाथों में ही थे।

वह बोली, "आप डॉली से पूछो, वह भी जानती है–महसूस करती है।

डॉक्टर ने धीरे से उससे विनती करते हुए कहा, "नहीं, नहीं, एलिस, ऐसे नहीं चलेगा!" उन्होंने अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए बच्ची से कमरे से बाहर जाने को कहा। उन्होंने मिसेज़ अर्न के पैर ऊपर उठाते हुए उसे सोफे पर सीधा लिटा दिया, तब तक नौकरानी आ गई। एलिस बेहोश हो चुकी थी।

उन्होंने उसकी पलकें उठाकर देखा और कुछ तथ्य जिनके बारे में उन्हें हल्की सी आशंका थी उनके बार में देखकर सन्तुष्ट हो गए। जब मिसेज़ अर्न की नौकरानी लौटी तो उन्होंने उसे एलिस का ध्यान रखने को कहा और अपने आप एडवर्ड के तहखाने वाले नये पढ़ने वाले कमरे की तरफ चले गए।

उन्होंने अपने आप से बड़बड़ाकर कहा, "मार्फिया!" जैसे ही वे गैस से उज़ले गलियारे में डगमगाते लड़खड़ाते घुसे, चोरी-चोरी देखते नौकर अपने बिलों में छिप गए।

वे सोच रहे थे "यह अपने आपको यहाँ क्यों दफनाए हुए है? क्या उसके रास्ते से हटना चाहता है? ये एक डरपोक जोड़ा है!"

अर्न आग के सामने एक बड़ी आराकुर्सी में धंसा बैठा था। वहाँ और कोई रोशनी नहीं थी सिवाय उस हल्की सी परछाईं के जो सड़क से नीचे स्तर की खिड़की के सरियों से होकर आ रही थी।

कमरा आराम रहित और खाली था, वहाँ बहुत कम फर्नीचर था। अर्न के दाहिने हाथ पर एक किताबों की बड़ी आलमारी थी और एक मेज़ थी जिस पर

कुछ दूर एक टैंटलस* (Tantalus) था। वहाँ अँगीठी पर एलिस की एक फीकी-सी तसवीर थी। और उसके पास एक हीन पूरक पेन और स्याही से बनी परिवार के मुखिया की तसवीर थी। वे आकार और माध्यम में बिल्कुल अलग थीं, पर वे नवविवाहित लोगों की तरह एक दूसरे को नीरस एकाग्रह से देख रहे थे।

ग्राहम ने पूछा, "क्या अस्वस्थ हो अर्न?"

"हाँ आज कुछ ऐसा है। क्या आप मेरे लिए आग कुरेद देंगे?"

डॉक्टर ने खुश खुश कहा, "मैं तुम्हें कोई सात साल से जानता हूँ सो मैं सोचता हूँ मैं कर सकता हूँ...यह लो...और मैं यह भी सोचता हूँ—यह क्या है?"

उन्होंने एडवर्ड की उँगलियों के बीच से एक छोटी बोतल निकाली और भौंहे चढ़ाईं। एडवर्ड ने सहमति से दे दी थी। वह परेशान या नाराज़ नहीं था।

"मार्फिया! इसकी आदत नहीं है। मैं कल ही यह लाया हूँ—घर में ही मिली थी। एलिस सारा दिन उछलती सी रही है। मैं सोचता हूँ उसकी घबड़ाहट मुझ तक आ गई। मैं ऐसा नहीं था पर जानते हो ग्राहम, मैं भी ऐसा होता जा रहा हूँ—मै अब पहले से कहीं ज्यादा सब कुछ महसूस करने लगा हूँ, और इस बारे में बात करना चाहता हूँ।"

डॉक्टर ने लापरवाही से सिगरेट जलाते हुए कहा, "क्या, तुम्हारे अन्दर आत्मा पैदा हो रही है?"

अर्न ने धीरभाव से कहा, "भगवान् न करे! इतने साल से बिना उसके मै अच्छी तरह हूँ। पर मैं एलिस को प्यार करता हूँ, चाहे अपने ढंग से सही। जब मै जवान था, सब कुछ अलग था। मैं चीज़ों को बड़ी गहराई से लेता था और उन्हे लेकर उत्तेजित हो उठता था। हाँ उत्तेजित। मैं एलिस को लेकर पागल था, पागल। हॉ, पर वह यह सब भूल गई है।"

"ऐसा नहीं है, पर यह स्वाभाविक है कि वह कभी-कभी थोड़ा सा प्यार का दिखावा चाहती है...और अगर वह तुम्हें मार्फिया की बोतल से खिलवाड़ करते देखेगी तो बहुत परेशान होगी! तुम जानते हो अर्न कि पाँच साल पहले जब तुम बाल बाल बचे थे तब से मुझे और एलिस को यह सोचने का ठीक अधिकार है कि तुम्हारा जीवन हमारा है!"

एडवर्ड अर्न अपनी कुर्सी में ठीक से बैठा और झुँझलाकर बोला, "सब ठीक है, पर तुमने अपना काम ठीक से नहीं किया। तुमने मुझे इतना जीवन्त नहीं बनाया कि एलिस को पसन्द आ सकूँ। उसे नाराज़गी है कि मैं जब उसे बाँहों में लेता हूँ तो बहुत कसकर नहीं, मैं बहुत चुप हूँ, बहुत ढीला हूँ...छोड़ो ग्राहम, मेरे ख्याल से

---

* एक फ्रीजियन राजा जिसे उसके पापों की सजा के तौर पर ठोड़ी तक पानी में खड़ा रखा गया था। सिर पर फलों से लदी डालियाँ होते हुए भी वह न खा सकता था, न पी सकता।

वह चाहेगी कि मै (पार्लियामेन्ट, के लिए खड़ा हाऊ वह मुझे अपने ढग से जीने के लिए छोड़ क्यों नहीं देती? एक आदमी जो मेरी तरह की बीमारी झेलकर चुका है उसे आडम्बरों से छुटकारा क्यों नहीं दिया जा सकता? इस सारी चिन्ता का यह नतीजा हुआ कि मैंने उस दिन यहाँ नीचे अपना कमरा बनाने का निश्चय किया। और आ गया। मैं चिन्ता मुक्त हो गया—हर वक्त की चिन्ता, उसे परेशान देखने से मैं भी इतना गिरा हुआ महसूस करता था कि मुझे लगता कोई दवाई ले लूँ जिससे शान्ति मिले।''

ग्राहम ने कहा, ''शान्ति! यह चीज़ अगर ज्यादा मात्रा में ली जाए तो शान्ति से कुछ ज्यादा देगी। तुम्हारी इजाजत से इसे मैं लिये जाता हूँ और जैसा तुम चाहते हो वैसी कोई और चीज़ भेज दूँगा।''

अर्न ने जवाब दिया, ''मैं बहस नहीं कर सकता। अगर तुम्हें एलिस दिखे तो उससे कहना कि तुमने मुझे ठीक पाया और इस कमरे के खिलाफ कुछ मत कहना, मुझे यह पसन्द है। वह चाहे तो यहीं मुझसे मिल सकती है। मैं अच्छी आग जलाए रखता हूँ, उससे कहना...मुझे लगता है मुझे नींद आ रही है...

ग्राहम ने धीरे से कहा, ''तुम सो ही गए हो।'' अर्न सो गया था, उसकी गद्दी नीचे ढलक गई थी। डॉक्टर उसे ठीक करने के लिए झुके, उस पल उन्होंने लापरवाही से आदमी के घुटनों पर पड़े कम्बल पर मार्फिया की बोतल रख दी।

मिसेज अर्न अपनी शोक वाली पोशाक में हॉल पार करती हुई फोस्टर को कुछ आदेश दे रही थी तभी डॉक्टर तहखाने की सीढ़ियों से ऊपर आए। डॉक्टर के आते ही फोस्टर चला गया।

वे बोले, ''तुम फिर से काम में लग गईं, अच्छी लड़की हो!''

वह कहने लगी, ''ऐसे उत्तेजित होना मेरी बेवकूफी है! इतने वर्ष हो गए। इन्सान को समझ जाना चाहिए। पर अब सब खत्म हो गया, मैं वादा करती हूँ कि इस बारे में फिर कुछ नहीं कहूँगी।''

''हमने डॉली को बुरी तरह डरा दिया। मैंने उसे ऐसे बाहर जाने को कहा जैसे सैनिकों की टुकड़ी को आदेश दिया जाता है।''

''हाँ, मैं जानती हूँ। मैं उसी के पास जा रही हूँ।''

डॉक्टर के कहने पर कि उसे पहले अपने पति को देख लेना चाहिए। उसने सन्देहपूर्वक देखा।

''वहाँ नीचे!''

''हाँ, यह उसका शौक है। उसे रहने दो। वह अपने और तुम्हारे बारे में काफी परेशान है। तुम जैसा सोचती हो वह उससे कहीं ज्यादा देखता है। तुम उसे जिस रूप में उदासीन बताती हो वह वैसा नहीं है...इधर आओ!'' वे उसे अँधेरे खाने वाले कमरे में ले गए। ''तुम बहुत ज्यादा उम्मीद रखती हो। सचमुच! जो जिन्दगी तुमने

बनाई है, उससे बहुत कुछ माँगती हो।"

उसने तीखेपन से कहा, "उसे बचाया किसलिए था?" फिर कुछ धीरे से बोली, मैं जानती हूँ। अब मैं बदलूँगी।"

डॉ. ग्राहम ने प्यार से कहा, "तुम नहीं बदलोगी।" उसकी बेवकूफियों के बावजूद उन्हें उसके प्रति स्नेह था।, "मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम अन्त तक एडवर्ड की फिक्र करोगी, और–" उन्होंने उसे कन्धे पकड़कर ऐसे घुमाया कि उसका चेहरा हालाँकि रोशनी की तरह हो गया–"तुम मायावी हो, मुझे अच्छी तरह देखने दो।...हूँ! तुम्हारी आँखें कुछ घबराई सी हैं।"

उन्होंने ठंडी साँस लेकर उसे छोड़ दिया। कुछ किया जाना चाहिए...जल्दी ...सोचना पड़ेगा...उन्होंने अपना कोट उठाकर पहनना शुरू किया...

मिसेज़ अर्न मुस्कराई, उनका एक बटन बन्द किया और एक अच्छी मेज़बान की तरह मुख्य द्वार खोला। वे जल्दी से हैट हिलाकर चले गए। उसने बग्घी का दरवाजा बन्द होते हुए और "घर चलो" यह आदेश देते सुना।

उसके कमरे में घुसने पर पति ने कोमलता से पूछा "क्या उस चोर ग्राहम को विदा कर रही थीं?" उसकी मलिन आँखें घूर सी रही थीं, और पतले पतले हाथ पोशाक के आगे के हिस्से के साथ व्यस्त थे...

"चोर? क्यों? एक मिनिट! तुम्हारा स्विच कहाँ है? उसे वह मिल गया तो उसने जला दिया, तेज़ रोशनी से उसका पति जैसे सिकुड़ उठा।

"वह मेरी बोतल ले गया। मेरे ख्याल से उसे डर था कि मैं अपने को जहर न दे दूँ?"

पत्नी ने नीरस आवाज़ में कहा "या मेरी तरह मार्फिया की आदत न पड़ जाए।" वह रुकी। उसने कोई टिप्पणी नहीं की। फिर कम्बल पर पड़ी बोतल उठाकर बोली, "चोर तुम हो एडवर्ड, दरअसल यह मेरी है।"

"अच्छा? मैने उसे पड़ा देखा। मैं नहीं जानता था कि वह तुम्हारी है। अच्छा, क्या मुझे थोड़ा दोगी।"

"अगर तुम चाहो तो दे दूँगी।"

"अच्छा, तुम तय करो। तुम जानती हो मैं तुम्हारे और ग्राहम के हाथो मे हूँ। वह आज मुझे यही समझा रहा था।"

"बेचारा" वह व्यंग्यपूर्वक बोली। "मैं अपने डॉक्टर या पत्नी को यह नही बताने दूँगी कि मैं अपना अन्त कर सकती हूँ या नहीं।"

अर्न ने उबासी लेते हुए कहा, "ओह तुममें हिम्मत है। फिर भी मुझे थोडी सी दो और फिर आलमारी के ऊपर रख दो जिसका मुझे पता तो हो पर मैं वायदा करता हूँ कि कभी लूँगा नहीं।

"नहीं, तुम तो जिन्दा रहने के लिए भी हाथ न उठाओ, मरने के लिए क्या

उठाओगे।" वह बोली, "एडवर्ड, तुम ऐसे ही हो।"

"और तुम नहीं जानती मैं इसीलिए मरा था", उसने इतनी गम्भीरता से कहा जिसकी उसे उम्मीद भी नहीं थी। "और फिर दुर्भाग्य से तुमने और ग्राहम ने जोश दिखाया और प्रकृति को अपना काम नहीं करने दिया...मैं सोचता हूँ काश तुमने इतना अनधिकारपूर्ण कार्य न किया होता!"

उसने लापरवाही से कहा, "और तुम्हें मर जाने दिया होता। पर उस वक्त मे तुम्हारी इतनी चिन्ता करती थी कि मैं शायद अपने को भी मार देती या हिन्दू विधवा की तरह सती हो जाती।"

उसने पति की कुर्सी के हत्थे के पास रखी किताबों की आलमारी के नीचे के खाने में रखे आधे ग्लास पानी की तरफ हाथ बढ़ाया। "क्या इस गिलास से हो जाएगा? इसमें क्या है? सिर्फ पानी? तुम्हें कितना मार्फिया दूँ? ज्यादा खुश्क?"

"सच तो यह है कि मुझे इसकी परवाह नहीं है।"

वह दीन ढंग से बोली, "एडवर्ड, वह एक मज़ाक था।"

"मेरे लिए मज़ाक नहीं था। जीवन के अन्त के करीब मुझे कोई रुचि नही है। जो मैं करूँ उसमें मुझे रुचि होनी चाहिए, नहीं तो कोई फायदा नहीं। अब मै सासारिक जीव नहीं रहा हूँ। मैं जीवन का उपभोग नहीं करता, यहाँ अन्दर भोग करने को कुछ नहीं है–" उसने अपनी छाती पर हाथ मारते हुए कहा। "ऐसा है जैसे कोई दुर्घटनावश किसी नीरस पार्टी में पहुँच जाए। मेरी सिर्फ एक इच्छा होती है कि टैक्सी लेकर घर चला जाऊँ।" उसकी पत्नी एक हाथ में आधा भरा गिलास और दूसरे में बोतल लिये उसके पास खड़ी थी। उसकी आँखें फटी सी थीं...साँस फूल रही थी...उसने पूछा, "एडवर्ड! क्या सब इतना बेकार था?"

"क्या बेकार था? हाँ मैं जो तुम्हें बता रहा था, मैं जैसे सपने में चला जाता हूँ–एक बुरे, बुरे सपने नें, जैसे सपने मैं कॉलेज में बहुत ज्यादा काम करने पर देखता था। मैं होशियार था, एलिस, होशियार, तुम सुन रही हो? अब मुझे लोगों से नफरत है–साथ के लोगों से। मैं उन्हें छोड़ आया हूँ। वे आते हैं और जाते हैं–मैं उनसे बचना चाहता हूँ। पर वे पटरी पर भी मुझे इधर उधर धकेलते हैं। तुम जानती हो उन्हे कहाँ होना चाहिए?"

वह अपनी सीट से थोड़ा सा उठा–वह घबराकर एक तरफ को हुई, जैसे बोतल और गिलास को रख देगी। फिर वैसे ही पकड़े-पकड़े मशीनी ढंग से आगे बढ़ा दिया।

"उन्हें मेरे सिर पर होना चाहिए। मैं उन्हें और उनके पीछे निरर्थक जीने के ढग को पीछे छोड़ आया हूँ। मेरे लिए उनका कोई अर्थ नहीं है। मेरे लिए वे भूतो की तरह हैं। या शायद मैं उनके लिए भूतों जैसा हूँ? तुम यह नहीं समझ पा रही। मे सोचता हूँ यह इसलिए है कि तुम्हारे पास कल्पना नहीं है। तुम सिर्फ यह जानती हो कि तुम्हें क्या चाहिए और उसे पाने की पूरी कोशिश करती हो। तुम चर्च को

मानने वाली हो। अपने भगवान् के सामने अपनी माँग रख देती हो। तुम्हारे दिमाग में यह कभी नहीं आता कि तुम्हारी माँग असंगत है!"

एलिस अर्न मुस्कराई, जो चीज़ें उसने पकड़ी हुई थीं, उन्हें सँभाला। उसके पति ने गिलास में डाल देने को कहा, पर उसने ध्यान नहीं दिया; वह पूरे ध्यान से सुन रही थी। बीमारी के बाद से उसके होंठों से निकली यह बातचीत प्यार की बातचीत के सबसे करीब थी। वह कहता गया, धीरे धीरे अपने विषय के प्रति कुछ कम उत्साही होता गया—

"पर सबसे बुरी बात यह है कि एक बार इन्सानियत से जोड़ने वाली डोरी टूट जाए तो फिर जोड़ी नहीं जा सकती। आदमी सिर्फ रोटी के लिए नहीं जीता—.न ही तुम्हें निराश करने के लिए। अपने दीन व्यक्तित्व के बिना मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ...ऐसे मत घूरो, एलिस! मैंने युगों से इतनी ज्यादा और इतनी घनिष्ठता से बात नहीं की है, की है क्या? मुझे कोशिश करने दो और सब निकालने दो.. तुम कोई जल्दी में हो?"

"नहीं एडवर्ड।"

"वह चीज़ डालो और खत्म करो...एलिस, यह एक अजीब सी अनुभूति है, मै तुम्हें बताता हूँ। इन्सान ज़मीन की तरफ नज़र टिकाए उस इन्सान की तरह घूमता है जो सिर्फ उस पलंग को देखता है जिस पर सोने की कामना करता है। एलिस, धरती का ऊपरी हिस्सा मेरे और मेरी जगह के बीच में बाधा है। मैं अपने नाखूनो से इसे चीरकर कहना चाहता हूँ, "मुझे अपने पास आने दो। मैं वहीं का हूँ यह बड़ी भयानक अनुभूति है...जैसे कोई भूत लौट आया हो!..."

"क्या इसीलिए तुम तहखाने के इस कमरे में आने की ज़िद कर रहे थे?" उसने हाँफते हुए पूछा।

"हाँ, मैं ऊपर रहना सह नहीं पाता, यहाँ बन्द खिड़कियों और ठंडे फर्श पर...ऊपर गली में चलते लोगों के पैरों की आवाज़ें...आदमी को एक तरह की भ्रान्ति होती है..."

"ओह!" वह काँप उठी, उसकी आँखें पिंजरे में कैद जीव की तरह खाली कमरे में घूमीं और बन्द खिड़कियों पर ठहर गईं। उसकी नजर नीचे फर्श पर गई। टर्की के कालीन और उस पर रखी अर्न की कुर्सी से बाहर की जगह पत्थरों से बनी थी...फिर उसने दरवाज़े की तरफ देखा, जिसे उसने घुसते वक्त बन्द कर दिया था। उसकी भारी चिटकिनियाँ थीं, पर वे बन्द नहीं थीं हालाँकि उसकी आँखों से ऐसा लग रहा था कि वह कल्पना कर रही है कि वे बन्द हैं...

वह एक कदम आगे बढ़ी, अपने हाथ हल्के से हिलाए। फिर उसने हाथो मे पकड़ी चीज़ों की तरफ देखा...फिर उन चीज़ों की स्थिति बदली और बोतल को गिलास के ऊपर किया...

उसके पति ने कहा, "हाँ, डालो, अब क्या मुझे देने में सारा दिन लगा दोगी?"

एक झटके में उसने बोतल पानी में उलट दी और उसे पकड़ा दिया। वह दूसरी तरफ देखने लगी--दरवाज़े की तरफ...

उसने उसकी आँखों का पीछा करते हुए देखा और बोला, "हाँ, तुम्हारे निकलने का रास्ता।" फिर सावधानी से पी गया।

उसके हाथों से खाली बोतल गिर गई। वह हाथ मलती हुई बड़बड़ाती रही--"अगर मुझे पता होता!"

"क्या पता होता? यह कि मैं तुम्हें जिन्दगी में लौटा लाने के लिए कोसता हूँ?" उसने अपनी निस्तेज आँखें उस पर टिका लीं, मार्फिया उसकी जबान पर से धीरे धीरे अन्दर जा रहा था।..."या यह कि जो उपहार तुमने मुझे दिया था वह तुम अन्त में लौटा लोगी?"

●●●